Chap-3

तृतीय अध्याय : राजस्थानी लोकगीत

क्षेत्र विस्तार : हिंदी क्षेत्र की भाषाओं में राजस्थानी बड़ी ही समृद्ध और महत्वपूर्ण भाषा है। इसके उत्तर में पंजाबी, दक्षिण में गुजराती, पश्चिम में सिन्धी और पूर्व में कौरवी और ब्रज भाषा का क्षेत्र पाया जाता है। पश्चिम में राजस्थान की सीमा पाकिस्तान को छूती है।

उपभाषाएँ:[1] डॉ. मोतीलाल मेनारिया के अनुसार राजस्थानी भाषा की निम्नलिखित बोलियाँ अथवा उपभाषाएँ प्रसिद्ध हैं :

(1) मारवाड़ी (2) ढूढ़ाडी) (3) मालवी (4) मेवाती और (5) बागड़ी। इसमें मारवाड़ी का साहित्य सर्वाधिक समृद्ध है। राजस्थान की बोलियों की अधिकता के सम्बन्ध में यह दोहा प्रसिद्ध है-

बारस कोसाँ बोली पलटै; बनफल पलटै पाकाँ।
तीसां, छत्तीसां जोबन पलटै; लखण न पलटै लाखाँ।

मारवाड़ी राजस्थानी की बोलियों में सबसे प्रमुख है। आदर्श राजस्थानी का रूप इसी बोली का एक विकसित रूप है।

प्राचीन इतिहास:[2] राजस्थान का इतिहास बहुत प्राचीन है और भारतीय इतिहास के मध्यकाल में इसका अत्यधिक महत्व था। इतिहास में इस युग को 'राजपूत काल' कहा है। राजस्थान की धरा सदैव से भारत को वीर-प्रसविनी भूमि रही है। बप्पा रावल, राणा साँगा और महाराणा प्रताप ने जन्म लेकर इस भूमि को गौरव प्रदान किया है। अतएव इस प्रदेश में प्राचीन वीरों के शौर्यपूर्ण कार्यो की प्रशंसा में गाए जाने वाले गीतों की बहुलता का होना स्वाभाविक है। साथ ही श्रृंगार प्रधान गीतों की प्रचुरता भी मिलती है। सुप्रसिद्ध महारानी पद्मिनी की वीरतापूर्ण जौहर की गाथा से कौन अपरिचित है जिन्होंने अपने सतीत्व की रक्षा हेतु धधकती अगन ज्वाला में कूद अपने प्राणों का बलिदान दिया। धन्य है पद्मिनी और धन्य है वीरभूमि राजस्थान। नरोत्तमदास स्वामी ने 'राजस्थान रा दूहा' (दो भाग) का संपादन बडी योग्यता के साथ किया है।[3] नरोत्तमदास स्वामी, श्री सूर्यकरण पारीक और ठाकुर रामसिंह के द्वारा 'राजस्थान के लोकगीत' का संग्रह तथा संपादन दो भागों में हुआ है।[4] 'राजस्थान के ग्राम गीत' के संपादक श्री नरोत्तम स्वामी हैं, जिन्होंने बड़े आयास के साथ इन गीतों को अकाल काल कवलित होने से बचाया है। स्वर्गीय श्री सूर्यकरण पारीक ने 'राजस्थानी लोकगीत' नाम से सुंदर पुस्तक की रचना की है जिसमें उक्त प्रदेश के गीतों की विवेचना समास शैली में की गई है।[5] डॉ. सूर्यकरण पारीक का मानना है व मैं भी उनसे सहमत हूँ कि - लोकसाहित्य की उपज के लिए भारतवर्ष से बढ़कर उर्वर दूसरा देश पृथ्वीतल पर शायद ही कोई रहा है। इस देश के हर एक प्रांत में, हमारी प्रादेशिक बोलियों में हजारों गीत अब भी प्रचलित हैं। यह अमर संपत्ति धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही है, इसे हमें बचाना होगा।

---

1. डॉ. मोतीलाल मेनारिया
2. हिन्दी प्रदेश के लोक (ग्राम) गीत
3. पिलाणी राजस्थानी सीरीज, जयपुर
4. राजस्थान रिसर्च सोसायटी (1938), कलकत्ता
5. लोकसाहित्य की भूमिका : डॉ कृष्णदेव उपाध्याय

राजस्थानी लोकगीतों की विशेषता :[1]

हम लोग जिस युग में जी रहे हैं, वह विज्ञान और कम्प्यूटर का युग है। नित नई खोजें जो विज्ञान पर आधारित हैं, उस पर सभ्यता की विशाल इमारत खड़ी की जा रही है। इसी बाहरी चमक-दमक और चमत्कारों से प्रभावित हो मानव समाज अपनी आंतरिक द्रष्टि से दूर जा रहा है। नैसर्गिक व सादे जीवन से परे हटता जा रहा है। पुराने समय में मानव प्रकृति से जुडा प्रकृतिमय हो जीवन बिताता था जिसमें बाहरी दिखावे से वह कोसों दूर था। कृत्रिमता, झूठा दिखावा कहीं न था। ऐसे में कविता का स्वाभाविक, नैसर्गिक प्रवाह बहता था। उसका अवशिष्ट रूप आज हमें लोकगीत अथवा लोककाव्य के रूप में मिलता है। लोकगीत, लोंक द्वारा, लोक के लिए बनी हुई प्राकृतिक कविता है, जिसमें लोक के हृदय का निश्छल अभिव्यंजन हुआ है। मानवजीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं, कोई ऐसा विषय नहीं, जिस पर लोकगीतों की मधुर, स्वर्गिक रोशनी या छाया न पड़ी हो। हमारे समस्त जीवन की अभिव्यक्ति यदि कहीं है तो वह लोकगीतों में। लोकगीत हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण के साथी हैं।

राजस्थान प्रदेश लोक साहित्य की संपत्ति में किसी से कम नहीं है। राजस्थान का लोकगीत भंडार खूब भरापूरा है, संस्कारयुक्त है, आदर्शमय है और अपनी उत्तमता, विशुद्धता और मनोरमता के बल पर वह किसी भी प्रांत, देश अथवा भाषा के लोक साहित्य से टक्कर ले सकता है। राजस्थान के प्राचीन लोकगीत ही उत्तम हैं, सुरुचि संपन्न हैं, सत्साहित्य हैं और वही राजस्थान के लोकगीत कहलाने के अधिकारी हैं। उन्हीं को लक्ष्य करके यह उक्त विधान किया है।[2]

संपूर्ण संस्कृति में परिव्याप्त तथाकथित लोकमानस की सुख-दुःखमयी अनुभूतियों की सामूहिक भाव-भीनी गेय अभिव्यक्ति ही लोकगीत हैं।[3] लोकगीतों के बृहत क्षेत्र में प्रकृति, धरती और अनंत आकाश तो क्या मानव-मन की अनन्त कल्पनाओं का समावेश हो जाता है। नर और नारी के सभी रूप (पुत्र, मित्र, भाई, पिता, पति, माता, पुत्री, बहन, बुआ, सहेली, ननद, पत्नी, बहू, देवरानी, जेठानी आदि) इन गीतों में निरुपित हैं। कर्तव्य और मर्यादा क़ा बोध इन्हीं से कराया जाता है। ''मानव का शैशव लोरी के बहाने यहीं सोता है, यौवन इन्हीं के माध्यम से प्रेमोन्माद में प्रमत्त रहता है और वार्धक्य जीवन-यात्रा से श्रान्त हो इन्हीं गीतों से मन बहलाया करता है। ये लोकगीत लोक लीक के खींचनहार और प्रेमी हृदयों को प्रेम जल से सींचनहार हैं।''[4]

धर्म भावना का प्रचार इन्हीं से संभव है। कुरीतियों, अंधविश्वासों के उल्लेख के साथ-साथ उनका विरोध भी ये गीत ही करते हैं। ये लोकगीत पीडित हृदय को शांति प्रदान करते हैं, तिरस्कृत को संबल प्रदान करते हैं, पथ से भ्रष्ट हुओं का सही मार्ग निर्देशन करते हैं, श्रम की थकान को दूर करते हैं। ये गीत मानव जाति के जन्म जितने प्राचीन एवं नवजात शिशु जितने नवीन हैं। इन गीतों में मानव संस्कृति का संपूर्ण चित्रण मिलता है। इन लोकगीतों में हृदय की सरलता पराकाष्ठा पर वर्णित है।

---

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 1 से 7
2. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 6
3. राजस्थानी लोकसाहित्य का सैद्धांतिक विवेचन : डॉ. सोहनदान चारण
4. राजस्थानी लोकसाहित्य का सैद्धांतिक विवेचन : डॉ सोहनदान चारण

देश का सांस्कृतिक चित्रण इन्हीं गीतों में हुआ है। ऐतिहासिक वृत्तांतों ने परोक्ष अथवा प्रत्यक्ष रूप से यहीं यथार्थ स्वरूप ग्रहण किया है। लाला लाजपतराय के शब्दों में – 'देश का सच्चा इतिहास और उसका नैतिक और सामाजिक आदर्श इन गीतों में ऐसा सुरक्षित है कि इनका नाश हमारे लिए दुर्भाग्य की बात होगी।'[1]

राजस्थानी संस्कृति अपनी सतरंगी आभा के कारण अत्यंत निराली व अनूठी है। राजस्थानी भूमि को यहाँ की ऐतिहासिक उर्जा ने बहुआयामी तेजस्विता से आलोकित किया है। ''यहाँ शौर्य की उर्जस्विता, प्रेम की मधुरता, भक्ति की पवित्रता, शरणागत-वत्सलता की पवित्रता, मन व आचरण की विशुद्ध शीतलता, कष्ट सहिष्णुता का ताप तथा स्वाभिमान की रक्षा की उष्णता एक साथ दिखलाई देती है।'[2]

हजारों मील तक फैला लू की लपटों से लहराता रेतीला समुद्र और सैंकडों कोसों तक फैली अरावली की हरीभरी पहाडियों के बीच अपने स्वाभिमान की रक्षा हेतु, स्वतंत्र चेतना की रक्षा हेतु कभी सरलता से अपने प्राणों को न्योच्छावर किया है तो कभी धर्म रक्षार्थ सिर कटाने में भी झिझक महसूस नहीं की। ''यहाँ शीश कटने के बाद भी युद्ध लड़ते हैं और सतीत्व की रक्षार्थ धधकती ज्वाला चंदन रूप शीतल प्रतीत होती है। राजस्थानी लोकगीतों में 'स्व' नहीं 'सर्व', 'अहम्' नहीं 'इदम्', 'व्यष्टि' नहीं 'समष्टि' का संकल्प है।'[3]

राजस्थानी लोकगीतों की दुनिया में भारतीय संस्कृति के सारे आदर्शो की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति तथा चिंतन की सूक्ष्म सत्ता की व्यापकता भली भाँति परखी व समझी जा सकती है। इन गीतों में सांस्कृतिक आह्लाद कण-कण में प्रकाशित होकर अखंड ब्रह्मांड की व्याप्त लोकमानस की सुखद-दुखद अनुभूतियों की सरस रागात्मक अभिव्यक्ति होती है। ''इन लोकगीतों में मानव की भावनाएँ, हर्ष-उल्लास' शोक-विषाद, प्रेम-इर्ष्या, भय-आशंका, घृणा, ग्लानि, आश्चर्य, विस्मय, भक्ति, निवृत्ति आदि भाव सरल एवं विशुद्ध रागात्मक रूप में प्रकट होते हैं।''[4]

राजस्थानी लोकगीतों का वर्गीकरण :

राजस्थानी लोकगीत राजस्थानी जनता के स्वाभाविक साहित्यिक उद्‌गार हैं जिनका उद्‌भव सुख-दुख, वीरता और हर्ष-शोक आदि अलग-अलग अनुभूतियों के परिणामस्वरूप हुआ है। इन लोकगीतों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। अतः अध्ययन की सुविधा के लिए इनको वर्गीकरण की रेखाओं में बाँटना आवश्यक है। यद्यपि वर्गीकरण की सीमारेखा में लोकगीतों को बाँटना कठिन कार्य है। भिन्न-भिन्न विद्वानों ने इसका वर्गीकरण अपने ढंग से किया है। डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया ने इन गीतों का वर्गीकरण निम्न रूप से किया है[5]-

---

1. कविता-कौमुदी, भाग 5, रामनरेश त्रिपाठी, पृ 77 (लाला लाजपतराय के पत्र से उद्‌धृत)
2. राजस्थानी - डॉ. नंदलाल कल्ला (पुराने भारतीय लोकगीत : सांस्कृतिक अस्मिता), स. डॉ. सुरेश गौतम
3. राजस्थानी - डॉ. नंदलाल कल्ला (पुराने भारतीय लोकगीत : सास्कृतिक अस्मिता), सं. डॉ. सुरेश गौतम
4. राजस्थानी - डॉ. नंदलाल कल्ला (पुराने भारतीय लोकगीत : सास्कृतिक अस्मिता), सं. डॉ सुरेश गौतम
4. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ. पुरुषोत्तम मेनारिया, पृ 148

लोकगीत

|------------ |---------------|

धार्मिक लोकगीत

१. संस्कारों के लोकगीत
२. देवी-देवताओं के लोकगीत
३. व्रतों के गीत
४. रातीजगों के और स्फुट गीत

मनोरंजनात्मक लोकगीत

१. त्यौहारों के गीत
२. ऋतुओं के गीत
३. क्रीड़ाओं के गीत
४. फुटकर गीत

डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय ने अपनी पुस्तक लोकसाहित्य की भूमिका में राजस्थानी लोकगीतों का वर्गीकरण निम्न रूप से किया है।[1]

1. संस्कार संबंधी लोकगीत

- पुत्र जन्म
- मुंडन
- यज्ञोपवित
- विवाह
- गवना
- मृत्यु

2. ऋतु संबंधी गीत

- कजली
- हिंडोला
- होली
- चैता
- बारहमासा

3. व्रत संबंधी गीत

- नागपंचमी
- बहुरा
- गोधन
- पिंडिया
- छठी माता

4. जाति संबंधी गीत

- अहीरों के गीत
- दुसाधों के गीत
- चमारों के गीत
- गोंडो के गीत
- कहारों के गीत

---

1. लोकसाहित्य की भूमिका : डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, पृ. 31-32

- धोबियों के गीत

5. क्रिया संबंधी गीत

- रोपनी
- सोहनी
- जँतसार
- चरखा

6. विविध गीत

- झूमर
- अलचारी
- पूर्वी
- निर्गुण
- भजन
- खेल

इनके अलावा राजस्थानी लोकगीतों के विद्वान पारखी पं. सूर्यकरण पारीक ने अपनी पुस्तक राजस्थानी लोकगीत में इनका क्षेत्र विस्तार बताते हुए इन्हें उनतीस भागों में विभक्त किया है।[1] और इन्हीं के वर्गीकरणानुसार मैंने अपने गीतों को रखने का प्रयास किया है। इन वर्गीकरणों को देखने के पश्चात् हम लोकगीतों के मूल विषय पर आते हैं। सर्वप्रथम हम देखेंगे देवी-देवताओं और पितरों के गीत।

(1) देवी-देवताओं और पितरों के गीत :

यथा भगवान गणेश विनायकजी का गीत। राजस्थान में कोई भी कार्य आरंभ करने से पहले विघ्न विनाशक गौरीनंदन गणपति देव की आराधना की जाती है। जैसे उदाहरणतः-

गौरी को नंद गणेश मनावां
हिड़दै में सारद माई रै'जी
निवन करां म्हारे गुरां पितरां नै
गुरु म्हाने ग्यांन बताई
दिल का दाग परै कर भाई, रै जी।[2]

अर्थात् गौरी के नंद (सुत) गणेशजी को मनावें, हृदय में शारदा माई रहे। हमारे गुरु व पितरों को हम नमस्कार करते हैं। गुरु ने हमें ज्ञान बताया, दिल का दाग दूर करो भाई।

इसके अलावा विवाहादि मांगलिक अवसरों पर स्त्रियाँ विनायक का इस प्रकार स्मरण करती हैं-

अेक कोथलड़ी द्रब देइयो विनायक, लाडले के बाप नें।
वै तो खाय खरचै सो धन विलसै, जस रहवे परवार में।

---

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ 22 से 25 तक
2. राजस्थानी का इतिहास : पुरुषोत्तम मेनारिया, पृ 164

अेक जीभलडी जस देइयो विनायक, लाडले की माय नें।
वा तो मीठी सी बोलै निवँकर चालै, जस रहवे परवार में।
अेक गाजत घूमत आवो विनायक, साँवणिया के मेह ज्यूँ।
अेक भर्‌यो ए वतूळो आवो विनायक, बिणजारा के बैल ज्यूँ।
अेक तीन बसत निभाइयो विनायक, पवन, पाँणी, वसुन्धरा।
तूँ तो अली-गली मत जाइयो विनायक, सीधो ही आइयो सामी साल में।
गणपत पूजै लाड़लड़ैरी माय सवागण, ज्याँ घर विड़द उतावळी ॥[1]

अर्थात् हे गणपति, लाड़ले वर के पिता की थैली में द्रव्य भरो, जिससे वह खूब खावे, खरचे और ऐसा विलास करे जिससे परिवार की यशवृद्धि हो। हे विनायक, लाड़ले की माता की जीभ को यश देना, वह विनम्र होकर चले, मीठी बातें बोले, जिससे परिवार का यश बढ़े। हे विनायक, सावन के जल भरे मेघ की तरह गरजते-घूमते आओ, बनजारे के सामग्री से लदे बैल की तरह रिद्धि-सिद्धि से भरे भराए आओ; सर्वसुहागिन स्त्री के सँवारे हुए शीश की तरह सज-धज कर आओ। तुम्हारी कृपा से गृहस्थ में कभी इन तीन वस्तुओं की कमी न हो - स्वास्थ्यप्रद पवन, जीवनप्रद जल और अन्नधन देने वाली वसुंधरा। हे विनायक, तुम टेढ़े-मेड़े, अली गली में मत चले जाना; सीधे हमारे घर आना। गूगल धूप की सुगंधित वास आ रही है; कहो तो किस सुहागिन ने गणपति की पूजा की है? यह पूजा लाड़ले की सौभाग्यवती माता ने की है, जिसके घर में उनकी कृपा से खूब वृद्धि और मंगल हो रहा है।

जीण माता : जीण माता राजस्थान की सुप्रसिद्ध देवी हैं। इनका मंदिर राजस्थान में प्रसिद्ध तीर्थ स्थल माना जाता है। यह मंदिर शेखावटी के पहाड़ों में अवस्थित है। इस स्थान से कुछ दूरी पर हरस का पहाड़ है। जहाँ हरसनाथ भैरव का स्थान है। जीण माता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य की अपूर्व निधि है। इनकी लोक गाथा अत्यंत विस्तृत तथा लम्बी है। अतः इसका कुछ ही अंश यहाँ उद्‌धृत किया जाता है-

हरसा बीर मेरा रा, के थारे घर में रै पाँति माँगती?
के थारो लेती राज बँटाय?
जामण का रै जाया, किस विध विड़ारी रै छोटी भाण नै।
हरसा बीर मेरा रे, के तो मैं लेती धरम की चूनडी।
के तो मैं लेती आंगी बांय।
मेरी मा का रै जाया, देतो तो लेती रे पगांरी मोचड़ी।[2]

अर्थात् - हर्षा! (भाई) क्या मैं तुम्हारे घर में हिस्सा माँगती थी अथवा तुम्हारा राज्य बँटाती थी ? फिर छोटी बहन को इस तरह क्यों निकाल दिया? यदि तुम देते भी तो मैं चुन्दरी या कोई अंगिया, कंचुकी ले लेती अथवा अधिक से अधिक जूतियों की एक जोड़ी ही तो लेती?

---

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 23 से 24
2. राजस्थानी लोकगीत, भाग 1 - गंगाप्रसाद कमठान, पृ. 97

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

हरसा बीर मेरा रै! मारुंगी बादस्या नै गलघोट।
जामण कारै नाया! भूंरां कटवांवू रै जारी चामडी ।।
जीण जुग बाली ये! मारयां तो लागै थांने पाप।
भूंरां की ये राणी ।।
कुल में थे बाजो ये मिनख बिनासणी।
जीण जुग वाली ये जद हट वोल्यो यूं दिली रो बादस्या।
गुन्नो तो बगसो म्हांनै भूंरां की ये राणी ।
सेवक तो पडियो ये थारै बारणै।
जीण जुग बाली ये। ओटा चिणवांवूं ये मिंदर देवरा ।।
डूंगी घरवाद्यूं जांरी नीव
म्हांरी आद भुवानी ये। नीर छिड़का दूं गंगा माय रो ।।
जीण मेरी माता ये। नौपत चढ़वाय म्हांरी आद भुवानी ।।
जगमग जगवाद्यूं ये थारै देवरै।[1]

अर्थात् - जीवनी (जीण) माता ने कहा - भाई हर्ष मैं बादशाह को गला घोंट कर मारुंगी। उसकी चमड़ी भिंडो से कटवा डालूंगी। हर्ष ने कहा - बहिन जीवनी! उसे मारने से तुम्हें पाप लगेगा, संसार में तुम मनुष्य विनाशिनी कहलाओगी।

दिल्ली के बादशाह ने कुछ होश में आ कहा -

है भ्रमरों की रानी। (स्वामिनी) मेरा यह अपराध क्षमा करो। दास द्वार पर पड़ा है। हे देवी जीवनी। मैं मंदिर को चुनवा दूंगा। गंगाजल छिड़क दूंगा। माँ तेरे मंदिर में नौबत चढ़वा दूँगा। सोने के छत्र और कलश समर्पण कर दूँगा। ऊँचे बाँस पर ध्वजा बँधवा दूँगा, नौ मन का दीपक घडवा कर उसमें दस मन का तेल डलवा दूँगा। देवमंदिर जगमग करता रहेगा।

शीतला माता :

शीतला माता चेचक की अधिष्ठात्री देवी हैं। शीतला सप्तमी को ठंडा भोजन करने से (चेचक) नहीं निकलती है। शीतला पूजन का त्यौहार प्रांत व्यापी रूप में मनाया जाता है और शीतल माता के गीत गाये जाते हैं।

गीत : माता रे देवरे चढ़तां तमणयों सरक्यो ए मांय।
तेड़ो सोनीड़ा रो बेटो तमणयो ले आवे ए मांय।
पेरे मारी आद भवानी ऊँठाळा रानी।
बालूड़ा रखवारी ए मांय।
माता रे देवरे चुड़लो तडक्यो ए मांय।
तेड़ो खैरादी रो बेटो चुड़ला ले आवे ए मांय।

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग 1 - गंगाप्रसाद कमठान, पृ 114-115

पेरे मारी आद भवानी , ऊँटाला री राणी ।
बालूड़ा रखवारी ए मांय ।
माता रे देवरे चत्रतां झांझर खुलग्या ए मांय ।
तेड़ो सोनीड़ा रो बेटो झांझर ले आवे ऐ मांय ।
पेरे मारे आदभवानी ऊँटालारी राणी,
बालूड़ा रखवारी ए मांय ।
बालूड़ा रखवारी भवानी खेडा रखवारी ए मांय ।[1]

अर्थात् - माता के मंदिर पर चढते समय टेवटा (गले का सर्वण हांस) सरक गया। सुनार के बेटे को भेजो, टेवटा ले आए। मेरी आद्य भवानी, ऊँटाला की रानी, बालकों की रक्षक माता पहन रही है। माता के मंदिर पर चढ़ते चुड़ला (वलय) के तरेड़ हो गई है। हे माता! खरादी के बेटे को भेज दो, जो चुड़ला ले आवे। मेरी आद भवानी, ऊँटाला की रानी, बालकों की रक्षक पहन रही है।

माता के मंदिर चढ़ते बिंछिए खुल गए। अतः सोनी के पुत्रों को भेजो, जो बिंछिए ले आए। मेरी आद भवानी ऊँटाला की रानी, बालकों की रक्षक माता पहन रही है। बालकों की रक्षक माता, ग्राम की रक्षक माता।

शीतला माता का गीत :

एक गाँव में शीतला का प्रवेश हो गया है, एक ग्रामीण के छोटे बालक हैं। स्त्री अपने पति से गाँव छोड़कर अन्य गाँव को चले जाने के लिए सानुरोध सादर प्रार्थना करती है-

'हमै कांई करसाँ ओ हालरिया रा बाप,
माताजी चमकिया देस में।
गाड़ी जोतू ओ हालरिया री माय,
थे थाँरे जाऔ बाप रे॥
गाड़ी जोती ओ हालरिया रा बाप,
ऐ गधो पिलाणियो देवी सीतला।
मारग चाले ओ हालरिया रा बाप (ओ),
आ ऊजड़ चाले देवी सीतला॥
चंवटे उतरिया हालरिया रा बाप,
ओराँ में उतरी सीतला।
गीगो बैठो नानों-सा री गोद ए,
माताजी चमकिया देस में।
ठंडो राँदो ओ हालरिया री माय ऐ,
माताजी पूजो सीतला।

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग 1 - गंगाप्रसाद कमठान, पृ. 119-120

ठंडो झोली देसी माता सीतला ॥''[1]

सती माता का गीत :

सती माता! काठोड़ा रा बाजा बाजिया,
मोटाँ री जायी।
सती माता बिलाड़ा गढ़ रा बाजा बाजिया।
बिलाड़ा गढ़ रा घुरिया है नीसाँण ।
सैयाँ बीठोंड़ा रा बाजा बाजिया ॥
सती माता माथो तो धोयो पीली मेट सूँ
सती माता चोपड़ियो तेल (ए) चम्पेल,
मोटाँ री जायी ॥
सती माता मोतीड़ाँ री मांग भरावो;
मोटाँ री जायी ॥
सती माता राम भजो नै घोड़े थे चढो।
सती माता पेई तो खीली प्रेम री।
सती माता सजिया, सोल्ह सिंणगार।
सती माता ओ रोटियाँ पोवंतां करियो एड़ो विचार।[2]

सूर्यनारायण गीत (मारवाड़ी)

उग्यो-उग्यो के करो सुहेल्यो है
उग्यो राजा शिवजी को पूत सुहेल्यो है ॥
उग्यो राणी राणजी को कंथ सुहेल्यो है।
काला काला के करो सुहेल्यो हे,
काला रानी राणजी का केश सुहेल्यो है। उग्यो
तीखा तीखा के करो सुहेल्यो हे
तीखा राणी राणजी का नैन सुहेल्यो है।
गोरो गोरो के करो सुहेल्यो हे,
गोरो गोरो राणी राणजी को गात सुहेल्यो है।
बाबा घर गोर्याछ निशान सुहेल्यो है।
बीरां घर आन्द उछाब मुहेल्यो है,
उग्यो राजा का शिवजी को पूत सुहेल्यो है,
उग्यो राणी राणजी को कंथ सुहेल्यो है।[3]

1-2. राजस्थानी लोकगीत : शिवसिंह चोयल, पृ. 10-11, 12-13
3. मारवाड़ी गीत संग्रह : विश्वनाथ बुधिया, पृ. 32

साकम्भरी माता (मारवाडी गीत)

काये को तेरो भवन भवानी, साकम्भरी माता काये को दरवाजो।
सोने को तेरो भवन भवानी, रूपै को दरवाजो। तेरो भवन
मेरी माता भोग लगत है, भोग लगै सीरै को। तेरो भवन ..
माता बिपर जीमत है, मेरी जै जै मैया
रोक रूपयो दिछणा को। तेरे भवन...
मेरी माता जाती भी आवै,
जात्यांरी जोड़ सवाई। तेरे भवन मेरी माता
जातण भी आवै बांकी गोद सुरंगी महापत
राखल्यो भगता की सदापत
स्हाय थो सेवकांकी।..[1]

अर्थात् - हे साकंभरी माता, हे भवानी। तेरा भवन किसका बना है और दरवाजा किसका बना है? सोने का तेरा भवन है और रूपा का दरवाजा। मेरी माता तेरे भवन में भोग शीरे (हलुवे) का धराया, लगाया जाता है। तेरे भवन (दरबार) में निर्धन लोग भोजन करते हैं। मेरी माता की जय हो, रोकड़ा रुपिया दक्षिणा रूप में।

जीण माता (मारवाड़ी गीत)

माता के भवन मैं जीओ, नरेलारो बिडलो नरेलारो बिडले म्हारी जीणमाता बस रही।
माता की भवन मैं जीओ, सुपारी रो बिडलो, लूंगारे विड़ले जीण माता बस रही।
माता न ध्यावजी ओ सदा सुख पावै जीवो भोत सुख पावै,
जीवो भोत आनन्द पावै जाकै तो हृदय म्हारी जीण माता बस रही।[2]

शीतला माई (मारवाड़ी गीत)

काये का तेरा गाडी, ये पैया तो काये का बैल जुडाऊँ।
सुरई का बैल जुडाऊँ, ये मेरी ठण्डी रानी तेरा ही गुण गाऊँ
जै चढ़ आवे कलकत्ते की माता, भर कुंडवारो तनै पूजूये मेरी ठण्डी रानी, तेरा ही गुण गाऊँ
जै चढ़ आवै गुडगावां की माता, तो सिर पर सिगडी ल्याऊँ ये मेरी ढण्डी रानी तेरा ही गुण गाउँ।
जै चढ आवै राजगढ़ की माता, भरकुंडवारौ तने पूजूये मेरी ठण्डी रानी तेरा ही गुण गाऊँ।[3]

सत्यनारायण का गीत :

धिन घडी धिन भाग म्हारे सत्यनारायणजी आया ए।
सतनारायणजी आया म्हारे धन धन लिछमी लाया ए।
पूरण म्हारो भाग म्हारे प्रभूजी मंदर पधार्‌या ए।

1-2-3. मारवाड़ी गीत संग्रह - विश्वनाथ बुधिया, पृ. 40,41

म्हारै आंगण में चन्दन लिपावो जी।
गजमोतियन के चौक पुरावो जी, म्हारे कुंभ कळश ले आवोजी।
धिन घडी धिन भाग म्हारे सतनारायण जी आया ए।
म्हारै गोद झडूल्यो लाया ए। धिन घड़ी।[1]

बजरंग का गीत :

लाल लंगोटो हद बण्यो रे, तिलक बण्यो असमान,
सारां पहली रे, अंजणी को हणमान।
पहली कुण मनाइये रे, किए का लीजै नाम ,
माता पिता गुरु आपणा रे, पाछै हर को नाम।
सारां पहली सुमरिये रे, गौरी पुत्र गणेश,
पांच देव रिछ्या करै रे, बिरमा, विष्णु, महेस ।।[2]

गंगा स्नान कर आने के बाद भी राजस्थान में रात्रिजागरण कराने की परंपरा है। रात्रि जागरण को 'रतजगा' या 'रातीजगा' भी कहा जाता है। रातीजगा में 'गंगाजी' संबंधी लोकगीत गाए जाते हैं. उदाहरणतः

सांपड़ आया, भजन कर आया तो लीनो छै हरिनाम
प्रयागजी में सांपड़ आया।
चांवल रांधूली ऊजला, हरि सांपड़ आया।
तो हरिया मूंगां की दाल, धाराजी में सांपड आया।
घी बरताऊंली बावड़्यां, हरि सांपड़ आया,
तो ढ़ब से परसूंली खांड, धाराजी में सांपड़ आया।
जीमत निरखूंली आंगली, हरि सांपड़ आया,
बीजा तो पूरको बीजणी, हरि सांपड़ आया।
तो गढ़ मुथराजी को छै थाल, धाराजी सांपड़ आया।
ओछा तो पागा री ढोलणी, हरि सांपड आया।
तो उलट-पुलट की छै सौड, धाराजी में सांपड आया।[3]

अर्थात् - स्नान कर आए, भजन कर आए, तो लिया है हरि का नाम। प्रयागजी में स्नान कर आए। तुम्हारे लिए उजले चावल बनाऊँगी। हरिजी स्नान कर आए तो हरे मूंगों की दाल बनाऊँगी। धाराजी में स्नान कर आए तो ऊपर घी और चतुराई सेशक्कर परोसूंगी। धाराजी में स्नान कर आए, जीमते समय अंगुली देखूंगी, विजयपुर को पंखी करुंगी। गढ़ मथुराजी के थाल हैं, धाराजी में स्नान कर आए। छोटे पायों की ढोलनी खाट है तो उलट-पुलट की सोड़ हैं। धाराजी में स्नान कर आए।

1-2. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ 76
3. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 164-165

भोमियाजीः

'भोमियाजी' को भी देवताओं की श्रेणी में रखा जाता है। उनकी प्रशंसा का निम्न गीत है-

सरवर आवे, भोमिया सरवर जाय,
घुडला डकावे सरवरिया पाल।
तीखा सा नैणा रो भोम्यो प्यारो लागे।
जुगल म्हारा दिवला जुगल थारी बात।
काए को दिवलो, काये री बात?
काये रो धीरत बले सारी रात?
सोना रो दिवलो रेशम री बात,
सुरीली रो धीरत बले सारी रात।
भर सुवागण जोयो चौदस की रात,
तीखा सा नैणारा भोम्या प्यारा लागो राज।[1]

अर्थात्- भोमिया सरोवर आता है, सरोवर से जाता है। सरोवर की पाल पर घोडा कूदाता है। तीखे नयनों का भोमिया प्यारा लगता है। जुगल मेरा दीपक और जुगल तेरी बाती। किसका दीपक है और किसकी बाती है? किसका घी है जो सारी रात जलता है? सोने का दीपक है और रेशम की बाती है और सुरीली का घी सारी रात जलता है। सुहागिन ने दीपक को चौदस की रात जलाया है। तीखे नयनों का भोमिया प्यारा लगता है।

राव तेताजी : राव तेताजी का गीत इस प्रकार है -

कल में तो दोउ फुलडा बड़ा जी, एक सूरज दूजो चांद हो।
बासक राओ, तेताजी थे बड़ा जी,
सूरज री किरणां तपै जी, चन्दा री निरमल रात हो।
इन्दर तोबरसावे जी, धरती में निपजैला धान हो।
मायड़ जण जनम दीना, बाप लड़ाया छै लाड़ ओ।[2]

अर्थात् कलयुग में दो फूल बडे हैं। एक सूरज और दूसरा चाँध. वासुकि राव तेताजी तुम बड़े हो। सूरज की किरणें तपती हैं और चाँद की निर्मल रात होती है। इन्द्र बरसेगा और धरती में धान उत्पन्न होंगे। जिस मां ने जन्म दिया और जिस बाप ने प्यार किया, उसको धन्य है।

इस प्रकार देवी-देवताओं से संबंधित गीत राती-जगा (रात्रि जागरण) के समय विशेषतः गाये जाते हैं। पृथक-पृथक मांगलिक अवसरों पर भी गाये जाते हैं।

1-2. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 165-166

(2) ऋतुओं से संबंधित गीत :

ऋतु-संबंधी गीत वैसे तो सभी ऋतुओं के मिलते हैं, परंतु राजस्थान में सर्वोपयोगी और सर्वसुंदर ऋतु वर्षा होने के कारण, वर्षाऋतु के गीत बहुत हैं और वे बहुत सुंदर व मनोहारी हैं। अन्य ऋतुओं के गीत बहुत थोड़े हैं। वर्षाऋतु का आनंद गाँवों में अधिक अनुभव किया जा सकता है। वर्षा होते ही गाँव के बच्चे-बच्चे की हृदय कली खिल उठती है और उनका हृदय स्वतः गा उठता है। इधर उमड़ी हुई बदली, उधर उमड़ा हुआ हृदय - फिर गीतों की क्या कमी। वर्षा का आगमन हो चुका। बालिकाओं का झुंड घरों से बाहर निकल आंगन में गाता है-

वर्षाऋतु :

मोटी मोटी छांट्या ओसर्‌यो ए बदली, ओसर्‌यो ए बदली। (कोई) जोडा ढेलमढेल।
सुरंगी रूत आई म्हारे देस। भली रूत आई म्हारे देस।
ओकुण बीजे बाजरो ए बदली। बाजरो ए बदली।
ओ कुण बीजे मोठ मेवा मिसरी। सुरंगी रुत आई म्हारे देस। भली रुत.. ॥
ईसर बीजे बाजरो ए बदली। कानू बीजे मोठ मेवा मिसरी।
सुरंगी रुत आई म्हारे देस। भली रूत... ॥
ढहराँ ढहराँ काकडी ए बदली। (कोई) धोराँ गुड़स मतीर मिसरी।
सुरंकी रुत आई म्हारे देस। भली रुत आई म्हारे देस॥ [1]

अर्थात्- मोटी मोटी बूँदो वाला मेघ उमड़-घुमड़ कर बरसना शुरु हुआ है। ताल तलैया ठेलमठेल भर कर उतरा रहे हैं। हमारे देश में ये कैसी भली, कैसी मनोहर ऋतु आई है। इस ऋतु में मेवा और मिश्री के समान मीठे बाजरे और मोठ को यह कौन बो रहा है? अहा क्या सुंदर ऋतु आई है! भैया ईसर बाजरा बो रहा है औड़ भाई कानू मेवा-मिश्री के समान मीठे मोठ। नीची भूमि पर ककड़ी बोई जा रही है और टीबों पर गुड़ जैसे मीठे मतीरे। बलिहारी जाऊँ कैसी मनोरम ऋत आई है मेरे देश में!

शीतकाल :

राजस्थान के सूखे जलवायु में कड़ी से कड़ी शीत और कड़ी से कड़ी गरमी पडती है। राजस्थान में एक प्रचलित जनश्रुति है-

स्याले तो सीकरी भली, उन्हाळे अजमेर।
नागाणो तो नित भलो, सावण बीकानेर।[2]

वैसे तो विरहिणी के लिए हर एक ऋतु घातक होती है, परतु जाड़ा असहनीय होता है। गीत इस प्रकार है-

---

1-2. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 48,49

गीत : जाडो तो पडियो नणद बाई डूँगराँ
मारया मारया दादर मोर।
किस विध भुगताँ नणद बाई जाडे नें ॥
जाड़ो तो पड़ियो नणद बाई ढहराँ में।
मारया मारया हिरण पचास। किस विध...
जाडो तो पड़ियो जी नणद बाई बागाँ में।
मारया मारया दाड़म दाख॥ किस विध..
जाडो तो पड़ियो जी नणद बाई सहर में।
मारया मारया हटवा जी लोग। किस विध...
जाड़ो तो पड़ियो जी नणद बाई महलाँ में।
मारी मारी परदेस्यां री नार॥ किस विध...[1]

अर्थात् - ननद बाई, पर्वतों पर भयंकर शीत पड रहा है, जिससे हजारों सुंदर मोर मर गए। ऐसे कठोर जाड़े को किस प्रकार भुगतूँ ? ननद बाई, जंगलों में जाड़े का प्रकोप हुआ है, पचासों हिरन मारे गए हैं। भला, ऐसे कठोर जाड़े में पति वियोग में मैं एकाकिनी कैसे सहूँ? ननद बाई, बगीचों में भयंकर शीत पड रहा है। दाड़िम और दाख (अंगुर) के पेड़ झुलस गए हैं। शहर में खूब जाड़ा पड़ रहा है, बाजार के लोग मर रहे हैं। महलों को भी इस जाड़े ने छोड़ा नहीं, पर इसके प्रकोप से वही अभागिनी स्त्रियाँ मरीं जिनके पति परदेस में है। ननदी, बता, इस जाड़े को कैसे भुगतूँ ?

बारहमासा : कृषक के लिए उसका काम ही परमात्मा है। वह भगवान का रूप कौन-कौन सी विभूतियों में देखता है और उसकी उपासना किस ढंग की है, यह बात इस गीत से पता चलती है-

गीत : 'साड़ महीने बिरखा लागी, बाजरियाँ री वाह।
माऊं जी म्हारे भातो लावै, वाहरे साँई वाह॥
सावण महीने बाजर लागी, नीनाणाँ री नाह।
काचरियाँ री बेलाँ टाळाँ, वाह रे साँई वाह॥
भादू महीने भूँगा होसी, तीवणियाँ री ताह।
बाजरियाँ री रोटी खावाँ, वाह रे साँई वाह।
आसोजाँ में आसा लागी, हक्कालाँ री हाह।
राती बासे रोही रहस्याँ, वाह रे साँई वाह॥
काती महीने करडा सिट्टा, भावै इत्ता खाह।
काती महीने सिट्टा कीना, वाह रे साँई वाह॥
मिगसर महीने मोका महता, लेखो लेसी साह।

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 48,49

लेयर देयर दूरा होस्याँ, वाह रे साँई वाह ॥
पोह महीने पाळो पडसी, खालड़ी रो खोह।
खालड़ी रो खोह कीनो, वाह रे साँई वाह ॥
माह महीने पाळो पड़सी, पाणी, पत्थर खाह।
पाणी रो तो पत्थर कीनो, वाह रे साँई वाह ॥
फागण महीने फाग खेलै, गोपियाँ रो नाह।
महूड़े रो मद्द पीयो, वाह रे साँई वाह ॥
चैत महीने चंपा मोरी, चंचळ मोरया साह।
बिन बूठाँ ही हरिया होसी, वाह रे साँई वाह ॥
वैसाखाँ में धूम पड़सी, तावड़िये री ताह।
पड़छायाँ में पड़िया रहस्याँ, वाह रे सॉई वाह ॥
जेठ महीने धूप पडसी, तावड़िये री ताह।
खेजड़ चढ़र खोखा खास्याँ, वाह रे साँई वाह ॥ [1]

अर्थात् – आषाढ़ महीने में वर्षा का आरंभ होता है, कृषक खेत में काम करता है और उसकी माता उसे रोटी पहुँचाती है। सावन में बाजरा फूटता है, खेत निराया जाता है, 'काचर मतीर' की बेलें बचा दी जाती हैं। भादों में भुनगे बहुत होते हैं जिनके शरीर के चमकीले भाग से लडकियॉ गहने-मालाएँ आदि बनाती हैं; तरकारी खूब उपजती है और नये बाजरे की रोटियाँ बनाते हैं। आसोज (क्वार) में फसल की आशा बँध जाती है और 'हक्काल' हाँका लगाकर चिड़िया उड़ाते हैं। कृषक रात में भी खेत में रहते हैं। कार्तिक में 'सिट्टे' खूब होते हैं – चाहे जितने खाओ। वाह रे ईश्वर तुझे धन्य है।

मिगसर में बनिया लेखा-जोखा करता है। कृषक किसी प्रकार ले-देकर हिसाब साफ़ करता है। पौष में जोर का जाड़ा पड़ता है जो चमड़ी को खा जाता है। माघ में कडाके का जाड़ा पड़ता है, पानी जम जाता है। फागुन में गोपियों के नाथ ने फाग खेला था, कृषक भी महुवे का मद पीकर मस्त रहता है।

चैत में चंपा फूलती है और मोर चंचल हो जाते हैं, इस महीने में बिना वर्षा के खेती होती है। वैसाख और जेठ में धूप भयंकर पड़ती है; कृषक या तो छाया में, या झोंपड़ी में या वृक्ष के तले पड़ा रहता है। अथवा 'खेजड़ों' पर चढ़कर फली तोड़ कर खाता है।

हे ईश्वर, तुझे धन्य है जो प्रत्येक ऋतु और मास में कृषक को नये-नये अनुभव और फल देता है।

बारहमासा (मालवी लोकगीत)

इस प्रकार के गीतों में विरहिणी स्त्री द्वारा वर्ष के प्रत्येक मास में अनुभूत कष्टों का वर्णन होता है। मालवा में खेतों को निराते समय और चक्की पीसते समय भी बारहमासा गाया जाता है। प्रायः वर्षाऋतु में इसे गाने की प्रथा अन्यत्र पाई जाती है।

---

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 91-93

गीत : सखि लागो असाड़े मास, प्रभू वन चाल्या रे।
चाल्या चाल्या रे दुबारिकानाथ हरि मन्दर सूनो रे।१।
सखि लागो सावण मास, बिजेला चमके रे।
झीणी-झीणी पड़ रही बुन्द, सालुडा भीगे रे ।२।
सखि लागो भादव मास, घटा घनघोर छाई रे।
छाई रे छाई रे दुधारी रात, हरि मन्दर सूनो रे।३।
सखि, लागो कार्तिक मास;दिवाली आई रे।
सखि, घरे घरे गोरे धन पुजाय, हरि मन्दर सुनो रे ।४।
सखि लागो अगणे मास, सियालो आयो रे।
म्हारा प्रभुजी बिना यो कुणे सोड़ पधारे रे।५।
सखि, पोसज लागो मास, अंगिया फाटी रे।
म्हारा किसनजी बिना यो कुण अंगिया सिवाड़े रे।६।
सखि, लागो म्हावज मास, वसन ऋतु आई रे।
म्हारा प्रभुजी विना यो कुण बसन रमावे रे।७।
सखि,लागो फागण मास होली आई रे।
सखि, घर घर फागे खेलाय, हरि मन्दर सूनो रे।८।
सखि लागो बैसाख मास, उणालो आयो रे।
घर घर पंखा डोलाय, प्रभू मन्दर सूनो रे।९।
सखि, लागो जेठज मास, प्रभु घर आया रे।
आगो आयो से जवानी रो, जोस कसेना टूटे रे।१०।[1]

अर्थात् - एक स्त्री अपनी सखी से कह रही है, सखि अषाढ़ महीना लग गया है और मेरे प्रभु (पति) मुझे छोड़ वन (दूर) चले गए हैं। द्वारकानाथ चले गए जिसके बिना हरि मंदिर (घर) सूना हो गया है। सखि सावन का महीना आ गया, बिजली चमकने लगी, छोटी-छोटी वर्षा की बूँदों से मेरा सालू (साड़ी) दुपट्टा भीग गया है। सखि भादो मास में आसमान में घनघोर घटाएँ छा गई। रात्री दुधारी हो चली, प्रियतम के बिना मेरा घर (मंदिर) सूना पड़ गया है। सखि, कार्तिक मास में दिवाली आ गई, घर घर में गोवर्धन पूजा होने लगी पर मेरा मंदिर मेरे प्रभु बिना सूना है। सखि, अगहन का महीना आया, जाड़े की ऋतु भी आ गई। मेरे (पति) प्रभु बिना मेरी शय्या पर कौन पधारेगा? सखि, पोस महीना लग गया, मेरे कृष्णजी (पति) बिना कौन चोली, वस्त्र सिलवा देगा? सखि लगा माह (म्हावज) महीना लग गया। वसंत ऋतु भी आई पर मेरे प्रभु प्रियतम बिना कौन वसंत में रमण कराए? सखि, फागण महीना भी आया, होली भी आ गई, घर-घर में फाग खेले जा रहे हैं और मेरे प्रभु प्रियतम के बिना घर मंदिर सूना है। साखी वैसाख महीना भी आया, गर्मी का मौसम आया, घर-घर पंखे झलने लगे, पर मेरा घर मंदिर सूना है। सखि, जेठ महीना लग गया और मेरे प्रभु घर पधारे। वापस लौटे और इससे मुझ पर जवानी का जोश छा गया, हृदय प्रसन्न हो गया।

1. हिन्दी प्रदेश के ग्राम गीत, मालवी लोकगीत

सावण (राजस्थानी) : इस राजस्थानी लोकगीत में वर्षा ऋतु में ग्राम वधू की दिनचर्या का नीचे लिखा चित्र खींचा गया है। उसे परिश्रम तिलभर भी नहीं अखरता है, अपितु उसकी आँखों में उत्साह और उल्लास ही दृष्टिगोचर होता है।

गीत : झिरमिर झिरमिर मेंहूड़ो बरसै, बादलियो घररावै ए।
जेठ जूतो मेरा बूजा काटै, परण्यो हलियो वावै ए।
देवर मेरो करे अलसोटी, जेठाणी रोटी ल्यावै।
बालकियो भतीजो मेरो रे वड़ चरावै, नणदल गायाँ घेरै ए।
ग्वालाँ नै म्हाँरे गलझट चूरमो, हाल्याँ नै ख़ीर लपसो ए।[1]

अर्थात् - नन्हीं-नन्हीं बूँदों में मेह बरस रहा है, बादल गा रहा है। जेठ खेत निरा रहा है और मेरा पति हल चला रहा है। देवर अलसौट कर रहा है और जेठानी खेत में रोटी ला रही है। मेरा बालक भतीजा भेड़ का रेवड़ चरा रहा है और ननद गौएँ ताड़ (घेर) रही है। और मैं घर में बैठी इन परिवारजनों के लिए रसोई बना रही हूँ। गोधूलि को खेत से लौटने पर ग्वालों को धृत से पूरा भरा हुआ चूरमा और हल चलाने वाले को खीर और लापसी बनाकर खिलाऊँगी।

×××××

जब वर्षा नहीं होती है, तो राजस्थान की सुंदरियाँ बहुत अनुनय विनय करती हैं। उनकी इस विनय में भी अनुठा माधुर्य भरा है-

गीत : मारु जी खेताँ जावे बादळी।
टीबाँ बरसो डैरियाँ बरसौ, हो चिरंगताल बिछावो बादळी।
जेठ उतरियो, असाढ़ उतरियो हो सावन उतरियो जाय बादळी।
म्हाँरे डैरा बरण आव बादळी।
बहिमत जावे छाकिये मत जावै तो सीधी म्हाँरे डैरा आये बादळी।
होलै मत बरसै ठएडा मत बरसै रीती मत आयै काठी भर लाये।
तो सूरमाँ के संग आयै बादळी।
मारु जी झाला दिये बादळी।
तो दूधा झड़ी ए लगाये बादळी।
मारु जी झाला दिये बादळी।[1]

अर्थात् - हे बदली! तुम प्रियतम के खेतों पर जाओ। तुम खेतों और मैदानों में बरसो, रंगीले सरोवरों को मूँह तक भर दो। जेठ आसाढ बीत गया है, और सावन बीत रहा है। तुम्हें प्रियतम हाथ के संकेत से बुला रहे हैं। बाँयी और दाहिनी न जाकर तुम सीधी हमारे खेतों पर, खाली नहीं, पानी भरकर, धीमी नहीं; वेग से दूध की झड़ी लगा कर वर्षा करना।

1-2. राजस्थानी लोकगीत, भाग 1, गंगाप्रसाद कमठान

निम्नलिखित गीत में वर्षा के देवता इंद्र को मरुधरा भेजने के लिए राजस्थान का महिला समाज मानो स्मृति पत्र दे रहा है-

गीत : इन्दरजी मोकलए म्हाँरी बिजुराणी देश में
ग्उवां करेनी पुकार।
गाय दुहाडू ओ म्हाँरा इन्दर राजा चालनी।
दूधा रंधाडूली खीर।
भैंस दुहाडू ओ इन्दर राजा बाखडी
दूधाँ दुहाडूली पाँव।
लापी रँधाडू ओ म्हॉरा इन्दर राजा साळवी।
मईने नीकडिया नारेळ।
लाडू बँधाडू ओ म्हाँरा इन्दर राजा बाजणॉ।
मईने मिसरी ओ खाँड।
इन्दर ने मोकल ए म्हॉरी बिजुराणी देश में ग्उवां करेनी पुकार।[1]

अर्थात् - हे विद्युतरानी। इंद्रराजा को अपने देश (राजस्थान में) भेज; क्योंकि गायें उनके लिए पुकार रही हैं। हे मेरे इंद्रराजा। चलो मैं तुम्हारे लिये गाय दुहाऊँगी और दूध में खीर पकाऊँगी। हे इंद्रराजा। मैं तुम्हारे लिए बाखड़ी भैंस दुहाऊँगी और तुम्हारे पाँव, आने पर; पानी की जगह धूध से धुलाऊॅगी। तुम्हारे लिए सौलहवी लापसी रँधाऊँगी जिसमें कच्चा नारियल डलवाऊॅगी। हे इंद्रड़ाजा मैं तुम्हारे लिए खूब खस्ता लड्डु बनवाऊँगी जिनमें मिश्री जैसी खाँड डलवाऊँगी।

×××××

गीत : भली रुत आई म्हाँरा देश में
ईशर बीजे बाजरो ए बदली
कानो बीजे मोठ मेवा मिसरी।
बाजण लागा बायरा ओ पियाजी
बरसण लाग्यो मेह म्हाँरा रावजी।
मोटा मोटा छाँटाउ बरसस्यो ए बदळी
हो गया ठेला ठेल मेवा मिसरी।[2]

अर्थात् - आह! मेरे देश में भलाई की यह कैसी सुंदर ऋतु आ गई है? और अगली पंक्तियों में स्वयं उत्तर भी दे देती है। बाजरे के बीज ईश्वर ने अंकुरित किये हैं, मोठ मेवा मिश्री को कान्हा ने बोया है। हे मेरे प्रियतमजी! वायु चलने लगी है, मेह बरसने लगा है। हे बदली। तुम छोटी छोटू बूँदों से नहीं, मोटी मोटी बूँदों से बरसो। मेवा मिश्री की आज बहुतायत हो गई। मेरे देश में आज भली ऋतु का आगमन हुआ है।

×××××

1-2. राजस्थानी लोकगीत, भाग 1, गंगाप्रसाद कमठान

गीतः सपना में मारुजी इन्द्र धड़ूकोय,

माणक सखर हद भर्यों जी।

सपना में ओ मारुजी मेल जो देख्यो,

मेळा रा थंभ रळावणॉजी।

सपना में ओ मारुजी बाग जो देख्यो,

चँपवा री कल्या रळावणाँजी।

सपना में ओ मारुजी चौक जो देख्यो,

हरियाळी दूब रळावणीजी।

सपना में ओ मारुजी दीपक जो देख्यो,

कुवळाँ री केळ रळावणी जी।[1]

अर्थात् - हे मारुजी (प्रियतम)! मैंने सपने में इन्द्र को गरजते देखा, सरोवर को माणिक्य के समान स्वच्छ भरा देखा। एक महल देखा, जिसके खण्भे बड़े रमणीक थे। बाग देखा, जिसमें खिली चंपा की कलियाँ बड़ी रम्य थीं। एक चौक (आंगन) देखा, जिसमें हरी-हरी दूब बड़ी सुहावनी लग रही थी। एक दीपक देखा, (जिसकी शिखा) कमल की कली के समान सुहावनी थी। हे मेरी सास के पुत्र (प्रियतम)! तुम्हें धन्य धन्य कहूँगी, यदि तुम मेरे इस सपने का अर्थ बता दोगे।

इस पर पति उत्तर देता है-

गीत : इन्द्र जो मीठा बेली बाप जो थारो,

ए माणक सरवर सासरो जी।

मेल जो, मीठा बोली, पति जो थारो,

ए मेलां रा थंभ घररी नारजी।

बाग जो मीठा बोली, भाई जो थारो,

ए चंपा री कल्याँ भावज जी।

चौक जो मीठी बोली कूँख जो थारी ,

ए हरिया दौब सुहावणी जी।

दीपक जो मीठा बोली, पूत जो थारो,

ए कवळा री कल थारी कुल वधुजी।[2]

अर्थात् - हे मधुर भाषिणी, जो यह इंद्र है, वह तुम्हारा पिता है। माणिक्य सा स्वस्छ सरोवर ससुराल है। महल तुम्हारा अपना प्रियतम है, और उसके खंभे घर की नारी (गृहिणी या कुलवधु) अर्थात् तुम स्वयं हो। बाग तुम्हारा भाई है और उसमें खिली चंपा की कलियाँ तुम्हारी भौजाईयाँ हैं। चौक तुम्हीर कुक्षी है, जो हरी दूर्वा के मैदान के समान सुहावनी है (सुरम्य है)। दीपक, हे मृदुभाषिणी! तुम्हारा पुत्र है और चंपक कली तुम्हारी कुल वधू (पुत्र वधु) है।

1-2. राजस्थानी लोकगीत, भाग 1, गंगाप्रसाद कमठान

इस पर पत्नी कहती है-

धन धन हो ननदी रा वीर, सपना रो अरथ बताय दीदोजी।

हे मरे ननद के भाई! तुम धन्य हो, जो सपने का अर्थ तुमने मुझे ठीक समझा दिया।

पति उत्तर देता है-

'धन धन हे राजा जी री जायी, थें तो म्हाँरो वंश बधायी दीदोजी।'

हे राजा जी की पुत्री (राजकुमारी) तुम भी धन्य धन्य हो! तुमने तो मेरे वंश की वृद्धि की है।

×××××

गीत : ओ तो सावण आयो ओ सोजतिया सिरदार;
ओ तो इन्द्र धडूयियो, म्हारा सिरदार।
थे तो हालीड़ो समडावो, लाल नणंद बाई रा बीर॥
मैं तो भातो लेनै आऊँ, मारगियो नहीं जाँणू।
म्हारा नणंद बाई रा बीर।
मैं तो फुलड़ा बिखेरुँ म्हारी सदा सवागण नार
सालों री बहनड़॥
फुलड़ा कुलमावे, म्हारा ताल नणंद बाई रा बीर।
म्हाँरा धवला पहिचाण आयजो म्हारे घररी नार।
म्हनै पीवर मेहलो ओ सोजतिया सिरदार।
पीवर काला पड़सों ओ म्हारी सदा सवागण नार॥
मैं तो केसर पीसूँ ओ म्हारी लाल नणद बाई रा वीर।
केसर मूँगो ओ म्हारा सदा सवागण नार॥
मैं तो मूंगो-सूंगो ही पीसूँ ओ म्हारी लाल नणद बाई रा बीर।
म्हनै म्हारे पीवर मेहलो ओ, सोजतिया सिरदार।''[1]

अर्थात् - सावण (श्रावण) मास आ गया। इन्द्रदेव ने भी गूँजना आरंभ कर दिया। स्त्री कहती है - हे पतिदेव! आप हल लेकर खेत चलिये। मैं (सुबह का भोजन) लेकर आना चाहूँगी। किंतु खेत का मार्ग नहीं जानती हूँ। इस पर पति कहता है - मार्ग में फूल बिखेर देता हूँ, इस चिन्ह से आ जाना। पत्नी कहती है - फूल तो मुरझा जाएँगे। मुझे अपने पीहर भेज दीजिए। पति कह उठता है - पीहर में तुम काली पड जाओगी। इस पर पत्नी कहती है कि मैं वहाँ पर केसर पीसूँगी।

शरद सौंदर्य (ऋतु)

राजस्थानी लोकगीतों में ऋतुवर्णन का विशेष महत्व है। नायिका कहती है-

गीत : 'रतन सियाळो राजन यूँ ही गियोजी।

---

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग 2, शिवसिंह चोयल, पृ. 53-54

उनाळा रा चार महीना।
चौमासा रा चार,
सियाळा रा लागे थोड़ा थोडा, म्हॉरी जोडी रा,
रतन सियाळो राजन यूँ ही गियोजी।[1]

अर्थ : नायिका उपालंभ देते हुए कहती है (प्रियतम से) तुम्हारी अनुपस्थिति में मेरी रत्न सी काया जैसी शरद ऋतु व्यतीत हो गई। मेरे जोड़ीदार! हे मेरे जीवन साथी! ग्रीष्म ऋतु के लम्बे पाँच महीने होते हैं, वर्षा के चार, किंतु शरद के तो केवल तीन ही महीने होते हैं। ये ऐसी द्रुतगति से बीत जाते हैं कि ज्ञात ही नहीं होता। समय थोड़ा-थोड़ा लगता है। नायिका ऋतु के पश्चात् अब ऋतु में वस्त्र धारण करने के वस्त्रों की ओर संकेत करती है -

गीत : ऊनाळा रा पोमचा, चौमासा रा लेरिया,
सियाळा रा फागण्या, छपावो म्हाँरा जोड़ी रा।
रतन सियाळो राजन यूँ ही गियोजी।[2]

अर्थ : ग्रीष्म ऋतु में पोमचा ओढ़ना अच्छा लगता है, वर्षा में लहरिये की बहार है और शरद ऋतु में फागण्या की छटा अच्छी रहती है। अतः हे मेरे जीवन साथी। ऋतु आ गई है, एक सुंदर फागण्या रँगा दो।

(3) व्रत-उपवास-त्यौहार के गीत :

भारतीय पुराणों व शास्त्रों में ऐसा विश्वास किया जाता है कि व्रत स्त्री पुरुष दोनों ही रखते हैं। एकादशी, पूनम, जन्माष्टमी, शिवरात्री आदि का व्रत पुरुष भी करते हैं। तीज गणगौर, नवरात्री, रामनवमी, गंगादशमी, सावन के सोमवार, कार्तिक मास, गणेश चतुर्दशी आदि के व्रत विशेष उल्लेखनीय हैं जिनको मुख्यतः स्त्रियाँ करती हैं। 'तुलसी महातम' का राजस्थानी लोकगीतों में विशेष उल्लेख है-

तुलसी गीत : निम्न गीत में तुलसी की शालिग्राम के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की गई है।

गीत : चाँद तो बाबुल घट बढ़ ऊगै तौ,
सूरजजी रै किरणां घणैरी हो राम।
ईसर तौ सोला दिन आवै तौ,
सिवजी के जटा ए घणोरी हो राम।
विरमा बाबाजी वेद पढ़ावै तौ,
विनायक कै सूँड बडैरी हो राम।
किसन बाबाजी गायाॅ चरावै तौ,
ए बर म्हांने ना भावै हो राम।
म्हानै म्हारौ सालगराम वर हैरौ तौ,
बै म्हारी ओड़ निभावै हो राम।[3]

1-2. राजस्थानी लोकगीत, भाग 1, गंगाप्रसाद कमठान, पृ. 58-59
3. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 167-168

अर्थ : हे बाबुल! चाँद तो घटता-बढता हुआ ऊगता है, सूरजजी की किरणें बहुत हैं। ईसरजी तो सोलह दिन आते हैं व शिवजी के जटाएँ बहुत हैं। हे राम! ब्रह्मा बाबाजी तो वेद पढ़ाते रहते हैं व गणेश जी के सूंड बहुत बड़ी है, हे राम! कृष्ण बाबाजी तो गाएँ चराते हैं, ये सब वर मुझे अच्छे नहीं लगते हैं। हे राम! मुझे तो मेरा शालिग्राम वर ढूँढो। वही, मेरी आन निभा सकते हैं।

×××××

तुलसी और पीपल के पेड़ को स्त्रियाँ बहुत भक्ति से पूजती हैं। बालिकाएँ शाम को तुलसी के दिया जलाती व मनचाहे वर की कामना करती हैं। वे तुलसी से पूछती है कि तुम्हे इतने सुंदर कान्ह कुंवर किस भाँति प्राप्त हुए तब तुलसी उनसे कहती है-

गीत : चेतां में ए भैणां गोरल पूजी तौ
निरणी ऊठ संवारी हो राम।
बैसाखाँ ए भैणां बड पीपल सींच्या तौ-
स्यौ पर लोटो डाल्यौ हो राम!
जेठां में ए भैणां जेठुडा घाल्या तौ-
बिन मांग्यौ पाणी पायो हो राम।
पगल्यां सूँ ए भैणां पग न धोयौ तो-
दिवलै सू दिवलौ न जोयो हो राम।
बैठी गउ न सताई हो राम।
भूखा विपर न उठाया, ए भैणां तो-
कंवरी कन्या न मारी हो राम।
अतणां तो हे भैणां जप तप कीन्या तो-
जद ए किसन वर पायो हो राम।[1]

अर्थ : चैत में हे बहिन, गोरल पूजी, बिना भोजन उठकर उसको सँवारा, ओ राम! वैशाख में हे बहिन बड़, पीपल सींचे, शमी पर पानी का लोटा डाला, ओ राम! जेठ में हे बहिन जेठुड़ा डाले, बिन मांगे पानी पिलाया ओ राम! हे बहिन पैर से पैर न धोये तो दिये से दिये को न जलाया, ओ राम। हे बहिन, कभी गीला पीपल न काटा, और बैठी हुई गाय को कभी न सताया, ओ राम! हे बहिन, ब्राह्मण को कभी भूखे वापिस न भेजा, तो कुँवारी कन्या को कभी न मारा, ओ राम! हे बहिन इतने जप-तप किए तो जाकर किसनजी वर मिले ओ राम!

×××××

कार्तिक मास में ब्रह्ममुहूर्त में स्नान का बड़ा महत्व है। स्त्रियाँ सुबह चार बजे स्नान कर गीत गाती हैं।

गीत : सात सयाँई झूमखै राधा न्हावण चाली ओ राम।
आड़ा किसनजी फिर गिया, थां ने जाण न देस्या ओ राम।
थारां जी वरज्या ना रेवा, म्हारी सास सिनाया ओ राम।

---

1. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (राजस्थानी लोकगीत अध्याय) : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 167-168

सौल्याजी स्यालू, स्यावटा, राधा जल में पधारी ओ राम।
लीन्या किसनजी कापडा जाय कदम चढ बैठ्या ओ राम।
देद्यौ किसनजी कापड़ा, लज्जा राखो म्हारी ओ राम।
थांरा जी कपड़ा जद देवां, जल सै हो ज्याओ न्यारा ओ राम।
जल सै न्यारा ना होवां, थे पुरुष म्हें नारी ओ राम।[1]

अर्थ : सात सखियों के साथ में राधा नहाने को चली ओ राम। उनके सामने कृष्णजी फिर गए और कहने लगे तुम्हें जाने न दूँगा, ओ राम। तुम्हारे रोकने से न रहेंगी, मेरी सास ने भेजा है, ओ राम। स्यालू व स्यावटा खोलकर राधा जल में उतरी, ओ राम। किसनजी ने कपडे लिए व कदंब की डाल पर जा कर बैठ गए, ओ राम। किसनजी कपडे दे दो मेरी लाज रक्खो ओ राम। तुम्हारे कपडे तब दूँगा जब तुम जल से अलग हो जाओगी। ओ राम! जल से अळग हम न होंगी क्योंकि तुम पुरुष हो और मैं नारी हूँ, ओ राम!

×××××

तुलसी पूजा :

गीत - हाथ जोड़ तुलछी करूँ बिनती।
होजी बीरे लुल लुल लागूँ पाँव ।।
होजी वीरा दूध पखालूँ पाँय।
ओजी बीरे ओढ़ण दिखणी रो चीर ।।[2]

अर्थ : गीत में राजस्थानी बिटिया सुंदर वर प्राप्ति हेतु तुलसी मैया से अनुनय करती है – हम हाथ जोड़ कर तुलसी की विनती करती हैं और हम नम कर उनके पैरों पड़ती हैं। हे देवी! तुम्हारे चरणों को दूध से प्रक्षालन करुँगी एवं दक्षिणी चीर ओढ़ने को आढ़नी रूप में मॅगाऊँगी। क्योंकि देवी। उसे मन चाहा वर मिले जो वीर पुरुष हो, राष्ट्रप्रेमी हो और अन्य गुणों का अक्षय भंडार हो।

×××××

गीत : चाँद चढ़्यो गिगनार सूरज किरत्याँ ढल रहियाँ।
महलाँ बैठी मोती पोती रात जगी री।
उठे परभात तड़कै पूजा को ज्यासी।
तुलसी के केसरिया किसन सालिग्राम री।[3]

अर्थ : चंद्रमा आकाश में चढ आया है और सूर्य की कृत्तिकाएँ ढलनी प्रारंभ हो गई हैं। रात्रि जागरण कर महलों में बैठी मोती पिरोती रहती हूँ। कार्तिक पूर्णिमा का चॉद ऊगा है, ढलके तारों भरी रात में मैं जागी; पर सखि! प्रभात में उठ तड़के ही पूजा के हेतु चल पड़ी, तुलसी के पति शालिग्राम की।

×××××

---

1. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (राजस्थानी लोकगीत अध्याय) : डॉ पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ 167-168
2-3. राजस्थानी लोकगीत, भाग-1, गंगाप्रसाद कमठान, पृ. 70-71

गीत : तुलछी जी पीवरिये रे माँय थरयूँ देवळो।
आवती जावती ने हूँ थॉने छोकस्यूँ।।[3]

अर्थ : मैं पीहर में तुलसी का मंदिर स्थापित करुँगी और आते-जाते आपकी वंदना करुँगी।

तीज के लोकगीत :-

गीत : तीज सुण्याँ घर आव।
मंझल आपरी नोकरी म्हारा राज,
तीज सुण्याँ घर आव।
कूण दिसा आपरी नौकरी जी म्हारा राज।
कूण दिसा नालू पाट, तीज सुण्याँ..
ओणी दिसा आपरी नौकरी जी म्हारा राज,
आथूणी दिसा नालू वाट, तीज सुण्याँ...
पाँच रुपियारी आपरी नौकरी जी म्हारा राज,
लाख मोहर री तीज, तीज सुण्याँ.... [2]

अथ४ : प्रियतमा अपने प्रियतमं को संबोधित करते हुए कहती है - तीज सुनकर घर आइए। मेरे राजा। दूर की नौकरी को रहने दीजिए और तीज सुनकर घर आइए। किस दिशा की आपकी नौकरी है? मेरे राजा मैं किस दिशा में आपकी राह देखती रहूँ? पूर्व में आपकी नौकरी है मेरे राजा और मैं प्श्चिम में आपकी राह देख रही हूँ। पाँच रूपयों की आपकी नौकरी है मेरे राजा, लाख मोहर की यह तीज है, इसलिए तीज सुनकर घर आईए।

××××

ज्यों-ज्यों तीज समीप आती है, विवाहित लड़कियाँ पीहर जाने को आकुल होती हैं। कौए उड़ाती हुई अपने भाई की प्रतीक्षा करती तथा कहती हैं-

गीत : लाग्यो लाग्यो मां, सावण रो मास,
तीज तिवाराँ मां, बाबडी जे।
और सहेली मां पीवरिये ने जाय,
हूं तो तरसूं मां सासरे जे
उड़ जा उड़ जा म्हारी नींबड़ली रा काग;
वीरो आवे मेरो पावणो जे
बोलूं बोलूं मां बालाजी रा रोट
चढ़ चढ़ देखूँ मां डागले जे।
आई आई मां पीवरिये री ए कूंज,

---

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग-1, गंगाप्रसाद कमठान, पृ. 72
2. राजस्थानी लोकगीत अध्याय, डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 174

आय र बैठी मां नीमड़ी जे।
कूंजा राणी थारे गले में कंठली ए बांध,
पगल्या बांध्यां थारे घूघरा जे,
कहज्यो कहज्यो म्हारी माऊ जी ने ए जाय,
वीरो भेजे ज्यूं लेण ने जे।[1]

अर्थ : माँ। सवण का महीना लग गया है और तीज का त्यौहार भी आ गया है। सहेलियॉ अपने पीहर जा रही हैं और माँ मैं ससुराल में ही तरस रही हूँ। मेरी नीमडी पर बैठे कौए उड़ जा, मेरा भाई मेहमान बनकर आ जाए। मैं हनुमानजी को रोट (बड़ी रोटी) भेंट करने की मनौती करती हूँ औड़ माँ, छत पर बार-बार जाकर भाई की राह देखती हूँ। माँ, पीहर की कूंज (कोयल) आई और नीम पर बैठ गई। कूंजा रानी गले में कंठला बाँध और पैरों में घूघरे। माँ को जाकर कहना कि भाई को लेने जल्दी भेजो।

×××××

गीत : सावण तो लहर्‌यो भादवो रे,
बरसै च्यारूँ कूँट,
म्हारा मोरला। सावण लहर्‌यो रे ॥१॥
सावण बाई गवरां सास रे,
कन्हैयो वीरो लेणिहार।
म्हारा मोरला, सावण लहर्‌यो रे ॥२॥
सावणियो सुरंगलो रे लाल;
आसी वीरो कन्हैया लाल पावणो;
लासी बाई गवरां ने बैलगाड़ी जुपाय।
म्हार मोरला, सावण लहर्‌यो रे ॥[2]

अर्थ : इस गीत में कोई बहन अपने भाई के आगमन की प्रतीक्षा करती हुई कहती है कि सावन-भादों लहरा रहा है, चारों ओर वर्षा हो रही है। हे मेरे मोर सावन लहरा रहा है। मेरा भाई कन्हैया पाहुना बनकर लेने आएगा। सावन सुरंगा है। मेरा भाई कन्हैया मेहमान बनकर आएगा और गौरीबाई को बैलगाड़ी में बिठाकर मायके ले जाएगा। हे मेरे मोर, सावन लहरा रहा है।

×××××

झूला झूलना :

गीतः ए मां, चंपा बाग में हींडो घला दे,
तीज नुहेली आई।
ए माँ, और सहेल्यां रे घर रो हीडो,

---

1. राजस्थानी साहित्य का इतिहास, डॉ पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ 176
2. हिन्दी प्रदेश के लोक (ग्राम) गीत : राजस्थानी लोकगीत

म्हारे हीड़ो नाँही।
ए मा, हीड़े हींडण गयी आज मैं
कोई न हीड़ै हिड़ाई।
सारी सहेल्यां मैं सूँ मुख ज मोड़्यो,
बिना ही्या ही आई।
ए मा, चम्पा बाग में हीडो घला दे।
तीज नुहेली आई।[1]

अर्थ : बेटी अपनी माँ से कहती है ए माँ! चंपा के बाग में झूला डलवा दो। तीज आ गई है। बड़ी प्रतीक्षा के बाद आई है। माँ मेरी और सहेलियों के घर में झूला है सिर्फ मेरे घर में ही नहीं है। फिर कहती है माँ। मैं झूला झूलने सखियों के घर गई पर किसी ने न झुलाया। सभी ने मुख मोड लिया और मैं बिना झूले ही वापस अपमानित लौट आई। (भला अपने झूले पर दूसरी स्त्री को कौन झुलाएगा?) अतः ए मॉ, चंपा के बाग में झूला डलवा दो।

×××××

विरहिणी की वेदना–

गीत : आई आई तीज नुहेली, सब सखियाँ रंग राच्यो।
औरां का पिवजी घरां ए बसंत है,
म्हारॉ बसै छै परदेस॥
औरां की तीज सुरंगी होसी,
म्हारे घर रहसी रंग काचो।
और सहेली म्हारी मेहन्दी माँडी,
नैणां सुरमा सार्यो।
औढ़ पहर कर गरब गुमानण,
पिवजी रो मन हरखायो।[2] आई... राच्यो।

अर्थ : इस गीत में विरहिणी स्त्री कह रही है कि नवेली तीज आ गई। सभी सखियॉ रंगरलियाँ करने लगीं। मेरी अन्य सखियों के पति घर पर हैं पर मेरे प्रियतम विदेश में रहते हैं। अतएव दूसरी सखियों की तीज सुरंगी होगी पर मेरे घर का रंग कच्चा ही रहेगा। और सहेलियों ने महावर लगायी है; नेत्रों में सुरमा सजाया है। वे वस्त्राभूषणों से सुसज्जित हो, गुमान में भर अपने प्रिय का मन हुलसा रही हैं। सुंदर तीजें आ गई हैं, सखियों ने रंग रचाया है।

×××××

गणगौर के लोकगीत : राजस्थान में अनेक व्रतों का विधान किया जाता है तथा अनेक त्यौहार मनाए जाते हैं। गवर या गणगौर राजस्थान का मुख्य त्यौहार है। 'गौरी' की पूजा यह व्रत उपयुक्त पति पाने के लिए किया

1-2. राजस्थानी लोकगीत – गंगाप्रसाद कमठान, पृ. 23-24

जाता है। यह गौरी पूजन होली जलाने के दूसरे दिन से आरंभ होकर चैत्र-शुक्ल चतुर्थ तक चलता है। चैत्र शुक्ल तृतीया और चतुर्थी को मेला लगता है जिसमें गणगौर की सवारी किसी जलाशय पर ले जाई जाती है-

गीत : गवर गिणगोर माता, खोल किंवाडी;
बाहर उभी थारी पूजण वाली।
पूजो ए पूजार्‍या बायाँ, आसण कासण मांगा।
जलहर जायी बाबो मांगा, राता देई माय।
कान्ह-कँवर सो वीरो माँगा; राई सी भौजाई
सांवलियो बहनोई मांगा, सोदर बहन मांगा।[1]

अर्थ : किशोरियाँ गौरी माता के मंदिर का दरवाजा खटखटाकर प्रवेश की आज्ञा मांगती हैं। हे गौरी माता! दरवाजा खोलो, तेरी पूजा करने वाली बाहर खड़ी है। और गणगौर माता प्रसन्न होकर द्वार खोलकर उनसे प्रसाद माँगने को कहती हैं। राजस्थानी कन्या धन, वैभव नहीं मांगती, उसे तो अच्छा परिवार चाहिए। वह माँगती है जलधर के समान उदारता से बरसने वाला स्नेहार्द पिता और स्नेह के रंग में रंगी माता दीजिए; कान्ह कँवर सा सर्वप्रिय, सुंदर पराक्रमी भाई और राधा जैसी मधुर भौजाई। बहनोई भी श्रीकृष्ण जैसा और बहन सुभद्रा जैसी।

×××

गणगौर संबंधी एक लोकगीत :

गीत : म्हारा राजा आज तो गुलाबी गणगौर छे,
म्हारा राजा आज तो वसन्ती गणगौर छे।
माथा ने मेमद अजब बन्यो छे
खड़ी पर मोर छे
म्हारा राजा आज तो गुलाबी गणगोर छे।
मुखड़ा ने वेसर अझब बण्यो छे,
टीलीं पर मोर छे। म्हारा राजा आज.... [2]

अर्थ : पत्नी अपने प्रियतम पति से कहती है मेरे प्यारे राजा। आज तो गुलाबी गणगोर है। मेरे राजा, आज तो वसन्ती गणगोर है। सर पर मेंमद अनोखा बना हुआ है। रखड़ी पर मोर है। मेरे राजा, आज तो गुलाबी गणगोर है। मुँह पर बेसर अनोखा बना हुआ है। बिंदी पर मोर है। मेरे राजा, आज तो गुलाबी गणगोर है।

×××××

गीत : गणगौर पूजूँ गणपति ये।
ईश्वर पूजूँ पारबती ये।
पारवती का आला गीला।

---

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग 1, गंगाप्रसाद कमठान, पृ. 3-4
2. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ 172-173

गौर का सोना का टीला।
टीला दे टपला दे रानी।
बरत करे गोरदें रानी।
करता करता आस आयो, मास आयो,
खरा खाँड लाडू लायो।
लाडूड़ो ले वीर ने दियो वीर्ती ले मने चूँदड़ दीधी।
चूँदड़ ले मैं गोर औढ़ायी।
गौर ले मने सुहाग दीयो, भाग दीयो।
सुहाग भाग सीला सात।
कचोला बाड़ी में बोजारो।
रानी पूजे राज में म्हें पूजा लोका सुहाग में।
रानी को राज तपतो जाय, म्हाँको सुहाग बधतो जाय।[1]

अर्थ : सबसे पहले गणपति जी का स्मरण करके कन्याएँ और स्त्रियाँ कहती हैं कि हम गणगौर की पूजा करती हैं। आले गीले छोटे मोटे सभी पदार्थ भगवती की कृपा से सोने के टीले बन जाते हैं। आगे वे प्रार्थना करती हुई कहती हैं - हे भगवती! सबसे पहले हमें निवास के लिए घर और जीवन-निर्वाह हेतु अन्नादि उगाने के लिए भूमि-बाड़ी दीजिए। हम गौरी का व्रत करती हैं, जब व्रत और माह समाप्त हो गया, तो हमें अपनी आशाएँ पूर्ण होने की आशा बंधी और प्रसाद रूप में लड्डुओं का खरा बुरा प्राप्त हुआ। वह प्रसाद भाई को दिया। भाई ने उपहार में सुहागिनों का चिन्ह चुँदडी दी। उसने वह चूँदड़ी गौरी पर चढ़ा दी। देवी ने प्रसन्न होकर अखंड सुहाग दिया। हमारा सुहाग वैसे ही फलने-फूलने लगा ज्यों वाटिका में बिजौरे। रानी अपने राज महलों में और हम अपने सुखभरे घरों में गणगौर की पूजा करती हैं। गौर की पूजा से रानी का राज तपता रहे, हमारा सुहाग दिन दुना रात चौगुना बढ़ता जाय।

×××××

गीत : हे गवरल, रूड़ो हे नजारो तीखे नैणां रो।
गढां हे कोटाँ सू गवरल, ऊतरी।
हो जी बीँरे हाथ कँवल केरो फूल ।। हे गवरल. ।।
सीस हे नारेळाँ गवरल, सारिखो।
हो जी बीँरी बेणी छे बासग नाग ।। हे गवरल ।।
भँवारे हाँ भँवरो गवरल, हे फिरै।
हो जी बीँ रे मिलवट आँगळ च्यार ।। हे गवरल. ।।
आखड़ियाँ रतने जडी।
हो जी बीँ री नाक सूवा केरी चूँच ।। हे गवरल. ।।

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग 1, गंगाप्रसाद कमठान, पृ. 6-7

निसरायाँ चूनी जड़ी।
हो जी बीँ रा दाँत दाडम केरा बीज ।। हे गवरल. ।।
हिवड़ो संचे ढालियो।
हो जी बीँ री छाती बजर किँवाड ।। हे गवरल. ।।
पसवाड़े बीजळ खिँवै।
हो जी बीँ रो पेट पीपळ केरो पान ।। हे गवरल. ।।
मूँघफळी सी गवरल आँगळी।
हो जी बीँरा बाँह चंपा केरी डाळ ।। हे गवरल ।।
पीँडलियाँ रुँवालियाँ।
हो जी बीँरी जाँघ देवळ केरो थाँम ।। हे गवरल. ।।
एडी चमकै गवरल आरसी।
हो जी बीँरो पंजो सठवा सूँठ ।। हे गवरल ।।
घेर घुमाळो गवरल घाघरो।
हो जी बीँ रे ओढ़ण दिखणी रो चीर ।। हे गवरल. ।।
हे पालचढंती रा बाजै गवरल घूघरा।
हो जी बीँ री ऊतरती री रिमझोळ ।। हे गवरल. ।।
ऊँचले सिंघासण, गवरल, बैसणी।
हो जी बीँ रा दूध पखाळूँ पाय ।। हे गवरल. ।।
हेमाचळजी री गवरल डीकरी।
हो जी वा तो पातळिये ईसर घर नार ।। हे गवरल. ।।
किण तनें घड़ी रे सिलावटे।
हो जी बीँ ने क्या तो लाल लुहार ।। हे गवरल. ।।
जलम दियो म्हारी मायडी।
हो जी बीँ ने रूप दियो करतार ।। हे गवरल. ।।

महाराजा हे देसी गवरल, दायजो।
हो जी बीँ रे सौय घोड़ा असवार ।। हे गवरल. ।।
हाथ जोड़ करूँ वीनती।
हो जी बीँ रे तुळ तुळ लागूँ पाँय ।। हे गवरल. ।।[1]

अर्थ : गौरी के तीखे नेत्रों का नजारा बहुत सुंदर है। ऊँचे गढ़ और कोट (हिमालय) से गौरी उतर आई है। उसका हाथ कमल के फूल जैसा, शीश नारियल सरीखा, बेणी वासुकि नाग जैसी, भौंहे भौंरे-सी और ललाट चार अंगुल चौडा है। आँखें मानो रत्नजड़ी सी, नाक तोते की चोंच की तरह, मसूड़े लाल (रत्न) से जड़े और

1. राजस्थानी लोकगीत, स्व श्री सूर्यकरण पारीक, पृ 36-38

दाँत अनार के बीज जैसे हैं। हृदयस्थल साँचे में ढला हुआ सा, वक्षस्थल वज्र किवाड़ की तरह है। उसके पार्श्व इतने चंचल हैं जैसे बिजली चमकती हो। पेट पीपल के पत्ते की तरह, ऊँगली (हाथ की) मूँगफली जैसी और बाँहें चंपा की शाखा जैसी हैं। पिंडलियाँ आभायुक्त हैं, जंघा देवालय के स्तंभ की तरह, एडी आरसी की तरह चमकीली और पैर का पंजा सठवा सौंठ की तरह है। गौरी के घेर घुमेर घाघरा पहनने को और दक्षिणी चीर ओढ़ने को हैं। सरोवर की पाल चढ़ती हुई गौरी के घूँघरु बजते है और उतरती हुई रमझोक (पैरों का गहना) बजती हैं। गौरी ऊँचे सिंहासन पर विराज़मान है, मैं दूध से उसके चरण पखारूँगी। गौरी हिमाचल की लाड़ली पुत्री है और प्रतापी ईश (महादेव) की गृहिणी।

हे गौरी, तुझे किस कुशल मूर्तिकार ने गढ़ा है? और ईश को किस लाल लुहार ने बनाया है? (गौरी की पुजारिनें स्वयं को उसकी सखी मानकर अवधूत-वेष वाले शिवजी का जरा मजाक करती हैं)। गौरी उत्तर देती है - मुझे मेरी माता ने जन्म दिया है और उन्हें रूप करतार ने दिया है। पुजारिनें फिर कहती हैं - हे गौरी हमारे देश के राजा तुझे दहेज देंगे और सौ घुड़सवार तेरे साथ रखेंगे। हम हाथ जोड़कर पार्वती को बिनती करती हैं और नँव नँव कर उसके पैरों पड़ती हैं।

×××××

तीज के गीत :

गीत : आई आई मा सावणिया री तीज।
माय सा, पहले ने सावण मत राखे धिया ने सासरे।
मेल्यो मेल्यो ए मा, बडोड़ो वीर।
बिच में बीरे रो सासरो।
रह ग्या रह ग्या ए मा, दिनड़ा दो च्यार।
जोड़े ए मा, सावण ढळ गयो।
बीजोड़ी बीजोड़ी ए मा, झूलण ने जाय।
बाई ने दीनो सासू धानड़ सोवणो।
सोयो सोयो मा, डाळ दो डाळ।
अधमण सोयो बाजरो।
बीजोड़ी बीजोडी ए मा, मगरिये जाय।
बाई नें दीनों सासू पोवणो।
पोयी पोयी ए मा, जेट दो जेट।
पछलो पोयो बालूरो बाटियो।
निमट्या निमट्या ए मा, देवर-जेठ।
निमट्या नणदाँ रा झूलरा।
परस्या परस्या ए मा, मोटोडा थाल।
परस्या नणदाँ रा बाटका।
बीजोडाँ ने परस्यो बाजर बाटियो।

बीजोड़ाँ ने ए मा धोबाँ धोबॉ खाँड ।
बाई ने दीनी सासू चिमठी लूँण री ।
बीजोड़ाँ ने ए मार, चरी चरी घीव ।
बाई ने दीनो ए सासू डोरो तेल रो ।
ओरिये-ओरिये देवर ने जेठ ।
पडवै पोढ़यो नणदाँ रो झूलरो ।
बरसै बरसै ए मा मोरी, मेह ।
भीजै भायाँ री बहनड़ एकली ।
माँज्या माँज्या ए मा, मोटोड़ा थाल ।
माँज्या नणदाँ रा बाटका ।
सोवतड़ी ए मा मोरी, बाजर बाटियो ।
आण ने मिनड़ी ले गई ।
मरज्यो मरज्यो ए मिनडी, थोराड़ा पूत ।
म्हारोड़ो बाटियो तूं ले गई ।
राताँ रही निरणी वीरॉ री बैनडी ।[1]

अर्थ : ए मा, पहले सावन (विवाह के बाद) की तीज आ गई । इस समय मुझे ससुराल में न रहने दे । माँ ने बड़े भाई को लिवा लाने को भेजा । उस की ससुराल बीच में पड़ती थी । वह वहाँ रुक गया । अब तो माँ, दो चार दिन ही रह गए । सारा सावन बीत चला ।

इधर ससुराल में यह हाल है कि बाई-बेटियाँ तो सब झूला झूलने को जाती हैं, मुझे सास धान साफ़ करने को देती है । घड़ी दो घडी साफ किया और आधा मन बाजरा साफ किया । और सब खेलने को जाती हैं मुझे सास रसोई पकाने को बिठाती है । क्या करुँ माँ, रोटियों का ढेर पकाया और अंत में बालू (रेत) पर सेंकी एक बाटी । देवर जेठ भोजन कर गए, ननदों की कतार भी खा गई । देवर-जेठों को बड़े-बड़े थालों में परसा और ननदों को परसा कटोरों में । औरों को तो गेहूँ की रोटियाँ मिलीं और मुझे बाजरे का टिक्कड । उनको मुट्ठी-मुट्ठी भर चीनी मिली, मुझे मिली चुटकी नमक की । उनको भरपूर घी परसा गया और मुझे थोडी-सी तेल की लार ।

देवर-जेठ सोते हैं ढके महलों में और ननदों की कतार सोती है 'पड़वे' में । वे सब आराम में हैं । मेह बरसता है तब माँ मेरी, भाईयों की लाडली बहन मैं भीगती हूँ ।

सब के खा चुकने पर उन बड़े थालों और कटोरों को मला । सोने के वक्त जब मेरी खाने की बारी आई, क्या देखती हूँ कि बाजरे का टिक्कड, जो अपने लिए रखा था, बिल्ली ले गई । पूत मरे तेरा, बिल्ली जो तू मेरा टिक्कड़ ले गई । मैं भाईयों की लाडली बहन रात भर भूखों मरी ।

इस गीत में करुण रस की विह्वलता फूट पडी है ।

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ 39-41

चतड़ा चौथ : ऋतु त्यौहारों में तीज के बाद चतुर्थी का विशेष महत्व है। इस दिन प्रातः से ही विद्यार्थी पाठशाला में एकत्रित हो गुरु की अध्यक्षता में श्री गणेशजी का पूजन-अर्चन करते हैं। फिर बालकों की टोली शिवजी की बारात की भाँति नाचती-कूदती प्रत्येक विद्यार्थी के द्वार पर पहुँचकर गाती है-

गीत : चतड़ा चौथ भादूड़ो,
दे दे माई लाडूडो।
लाडूड़ा में पान सुपारी।
चौथी राणी हुई विराणी।
सुण सुण ए रामां की मॉ,
थारो बेटो पढ़बा जाय।
पढ़बा की पढ़ाई दे,
गुराँ साब ने पांग बँधा।
गुराणी ने वैस दिरा,
चतड़ा ने चार लाडूड़ा दिरा।[1]

अर्थ : बच्चों की टोली गाती है माई चतड़ा चौथ आई है। एक लड्डु दे दे। जिस बालक का घर आता उसी द्वार से भेंट दक्षिणा श्रद्धानुसार प्राप्त कर शुभ आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

घुड़ले का गीतः

गीत : घुडलो घूमै छै जी घूमै छै,
घुड़ले रे बाँध्यो सूत
घुड़लो घूमै छै जी घूमै छै।
घुड़लो ऐ सुपार्‌यां छायो,
तारां छायी रात,
भवज ऐ म्हाँरी पूतां छायी,
वडोड़े वीरे घर नार॥[2]

अर्थ : मांगलिक सूत्र से बँधा हुआ घुड़ला घूम रहा है। घुडला का सुंदर रूप नन्हें-नन्हें छिद्रों से छाया हुआ, ऐसा लगता है, जैसे तारों से छायी रात अथवा पूतों से घिरी हुई बड़े भाई की सौभाग्यवती स्त्री।

×××××

दीपावली के गीत :

गीत : सोने रो म्हे दिवलो घड़ास्यां
रेसम वाट वटास्यां जी।
चार वाट रो चौमुख दीवो,

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग 1, गंगाप्रसाद कमठान, पृ. 7-8

घी सूं म्हे पुरवास्यां जी।
चांदी री थाल मेल म्हारो दिवलो,
रंग महल ले जास्यां जी,
मही मही वाट सुरंग म्हारो दिवलो,
रंग महल जगवास्यां जी।[1]

अर्थ : सोने का हम दीपक तैयार कराएँगे और रेशम की बाती बनाएँगे। चार बाती का चौमुखी दीपक हम घी से पूर्ण करेंगे और फिर चाँदी की थाल में रखकर रंग महल में ले जाएँगे। महीन बाती और सुरंग हमारा दीपक। ऐसे दीपक से रंगमहल प्रकाशित हो जाएगा।

×××××

पति परदेश में है, दशहरा आ गया लेकिन प्रियतम नहीं आया। पत्नी दरवाजे पर आँखें लगाए बैठी है कब निर्मोही प्रियतम आएगा, लेकिन न तो पत्र ही आया न वह स्वयं। तब वह स्वयं उसे दशहरे का प्रणाम भेजती है और कहती है दीपावली घर पर ही करना।

गीत : कांई दसरावा रो मुजरो, दीवाल्यां घर री करज्यो जी ढोला।
कांई कांकड़िया पधारियाजी ढोला,
कांकड़िया कलस बंधाया जी ढोला,
दीवाल्यां घर री करजो जी ढोला।
कांई बागां में पधारिया जी ढोला,
मालीड़े फूलड़ा बछाया जी ढोला,
दीवाल्यां घर री करजो जी ढोला।
कांई चौवटिये पधारिया जी ढोला,
चौरास्यां चंवर ढुलाया जी ढोला,
दीवाल्यां घर री करजो जी ढोला।
कांई दरवाजे पधारिया जी ढोला,
कांई मेलां में मंगल गाया जी।
कांई दसरावा रो मुजरो, गढपतिया राजा आवो जी मैलां।[2]

अर्थ : दशहरे का प्रणाम प्रियतम! दीपावली का त्यौहार घर पर ही मनाना। जगंल में पधारे प्रियतम! और जंगलमें कलश बंधवाए। दिवाली घर की करना प्रियतम! बागों में पधारे और माली को फूल भेंट किए। दिवाली घर की करना, प्रियतम! चौहट्टे पर पधारे प्रियतम। और चौरासिये लोगों ने चँवर ढुलाए। दिवाली घर की करना प्रियतम! दरवाजे पर पधारे प्रियतम! और दरवाजे पर हाथी को झुकाया, दिवाली घर की करना प्रियतम! महलों में पधारे प्रियतम! और महलों में मंगल गान हुआ। दशहरे का प्रणाम, गढपतिया राजा महलों में पधारना।

1-2. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ 177-178

होली गीत :

गीत : म्हारी घूमर छे नखराळी ए माँ,
घूमर रमवा म्हे जास्याँ।
म्हांने राठौड़ां री बोली प्यारी लागे ए मां,
म्हाँने राठौड़ाँ रा पेच बाला लागे ए मां,
म्हाँने राठौड़ां रे भल दीज्ये ए माँ,
घूमर रमवा म्हे जास्याँ।[1]

अर्थ : मेरी घूमर बड़ी श्रृंगार प्रिय है। माँ मुझे घूमर खेलने जाने दो। हमें राठोडों की बोली प्यारी लगती है। हमें राठोड़ों के पेच, साफा, पाग आदि अच्छे लगते हैं – राठोड़ों के यहाँ भले ही हमारा विवाह करना, मुझे घूमर खेलने जाने दो।

×××××

एक अन्य गीत में सास और सजन की मनोवृत्ति का चित्रण किया गया है तथा मिलने का आनंद अधिक देर तक प्राप्त करने के लिए सूरज से देर में उदय होने की प्रार्थना की गई है–

गीतः रसिया फागण आयो।
वार कूंट रो चोतरो हो रसिया ,
जिसपे कातूं सूत।
तो सासू मांगे कूकड़ी,
तो साजन मांगे रूप। रसिया.
दन्यू दांगा कूकड़ी हो रसिया
तो रात्यूं दांगा रूप हो। रसिया.
चरा चरी रो बेवड़ो हो रसिया
तो मधरी चालूं चाल
सासूजी नरखै बेवड़ो हो रसिया.
नै साजन नरखै चाल। हो रसिया.
सूरज थाँने पूजती
तो भरभर मोत्याँ थाल
छनेक मोड़ो ऊगज्यो हो
म्हारा भंवर चढ़े दरबार।
रसिया फागण आयो।[2]

अर्थ : रसीले! फागुन महीना आया। चार कोनों का चबूतरा है जिस पर बैठकर मैं सूत कातती हूँ। सासु सूत की कूकड़ी माँगती है और साजन माँगते हैं रूप। दिन में देंगे कूकड़ी और रात में देंगे रूप। चरू और चखी का

1. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 179-180

बेवड़ा (पानी भरने का बर्तन) है जिनको सर पर रखकर मैं धीम चाल से चलती हूँ। सासुजी मेरा बेवडा देखती है और साजन देखते हैं मेरी चाल। सूरज आपको मोतियों के थाल भर-भर कर पूजूं थोड़ी देर से निकलना, नहीं तो मेरे प्रियतम मुझे छोड़कर नौकरी पर दरबार में चले जाएँगे। रसीले! फागुन महीना आया।

×××××

फाल्गुन के दिनों में गाँव की भोली-भाली गोरियाँ सीधे-सरल शब्दों में गाती हैं-

गीत : चाँदा तो थारे चानण रसिया।
पान्यो गई जी तलाव रसिया।
फागण में तो फागणियो रंगावो रसिया।
होली खेलो रसिया, फागण आयो।[1]

अर्थ : रसीले प्रियतम! फागुन के महीने में फागणिया (वस्त्र) रंगवा दो। होली हमारे संग खेलो, फागुन आ गया।

इस पर पति उत्तर देता है-

गीत : राजी राजी बोल तनै फागण्यो रंगाद्यूं।
राखू म्हाँरी सुंदर घण ने जीव की जड़ी।
गुबाल की छड़ी, मिश्री की डली। फागण आयो।[2]

अर्थ : पति कहता है कि तुम राजी राजी बोलो, (मीठा) तुम्हें फागणियाँ रंगा दूँगा। मैं मेरी प्रिया को जीवन-जड़ी, गुलाब की छड़ी और मिश्री की डली के समान रखूँगा। फाल्गुन आ गया है।

×××××

गीत : होली आई, ए सहेल्यां,
मिल खेला लूर। होली आई ए।
कोई कोई ओढयां, झीणी झीणी चूनड़,
कोई कोई ओढयां दिखणी चीर॥ होली आई ए।
कोई कई पहर्यां रिमझिम बिछियाँ,
कोई कोई पहर्यां पायलड़ी। होली आई ए।

रिमझिम रिमझिम बिछियां बाजै,
ठणक-ठणक बाजै पायलड़ी। होली आई ए।
होली आई ए; सहेल्याँ मिल खेले लूर॥ होली आई ए।[3]

अर्थ : होली आई है। सहेलियों आओ। मिलकर होली खेलें। किसी किसी ने बारीक चूँदड़ी ओढ़ी है, किसी-किसी ने दक्षिणी चीर। साथिनों आओ। मिलजुल कर होली खेलें। किसी किसी ने रुनझुन बजने वाले नुपूर पहने हैं, किसी किसी ने झनकारने वाली पायल। नुपूर-बिछिया बड़े रुनझुन बजते हैं और पायल छमक

---

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग 1, गंगाप्रसाद कमठान, पृ 78-81

छुम छम छमाती हुई ठनकती है। होली आई है। सखियों आओ, सब मिलमिल कर होली खेलें।

×××××

गीत : कुण मारी पिंचकारी।
मोरी ए वदन में कुण मारी पिचकारी।
चढ़ता जोबन में कुण मारी पिचकारी।
माथा ने मैंमद, अधक वराजै,
तो रखड़ी री छब न्यारी जी।
बाईसा रा बीरा सासूजी रा जाया।
तो साजन मारी पिचकारी।
कुण मारी पिचकारी।
गोरी रा बदन में कुण मारी पिचकारी।[1]

अर्थ : गोरी के शरीर पर किसने रंगभरी पिचकारी मारी? मुझे बताओ। मेरे चढ़ते यौवन पर किसने पिचकारी मारी ? मस्तक पर मेंमद सुशोभित है; लो रखडी की छबि भी अनूठी है। ननँद बाई साहिब के भाई, सासजी के पुत्र (मेरे) प्रियमत ने ही यह पिचकारी मारी है।

×××××

गीत : ओ म्हाराँ चाँद सूरज नणदोई सा,
म्हें तो फाग खेलबा आईस्या।
हें तो बाईसा ने लारौ लाइस्या;
ओ म्हाराँ चाँद सूरज नणदोई सा।।
ओ म्हारा सूरज किरण नणदोई सा,
म्हाँसा माता ने मैंमद लाओ सा।
म्हाँरी रखडी रतन जडाओ सा,
म्हाराँ हिवडा ने हाँस मंगाओ सा।
ओ म्हाराँ चाँद सूरज नणदोई सा।
म्हाँरी बायाँ ने बाजू लाओसा।
म्हाँरे चुड़ले चूँप दिराओ सा,
ओ म्हाराँ चाँद सूरज नणदोई सा।।[2]

अर्थ : हे हमारे चंद्र और सूरज सादृश्य ननँदोई, हम आपसे फाग खेलने आई हैं और साथ में अपनी बाई सा (आफकी पत्नी) को भी लाई है। हमें इस खुशी में आप पुरस्कार स्वरूप मैंमद, रखड़ी, हाँस और चूँप आदि गहने रतन जड़ाकर दीजिए।

×××××

1-2. राजस्थानी लोकगीत, भाग 1, गंगाप्रसाद कमठान, पृ. 83-84

भैया दूज के गीत : भाई के प्रति बहन गीत द्वारा उसके स्वागत की तैयारी करती है–

गीत : वीरा! कर दे आज पुनीत रंक घर म्हारो रे,
शणगायों यो आछी शीत गणज्यों थाँरो रे।
वीत्या विरह महिना बार वेदना भारी रे,
थाँरो मुखड़ो सुंदर अपार भूलूँ काँई रे?[1]

अर्थ : बहन भाई से गीत में कहती है हे वीरा (भैया)! आज मेरे घर आकर मुझ गरीब का घर पावन कर दो। तुम्हारे विरह में भैया बारह महीने मुश्किल से कटे हैं, जिसकी वेदना अपार है। तुम्हारा सुंदर मुखड़ा क्या कभी मैं भूला सकती हूँ? (अर्थात् नहीं)

×××××

गीतः धन आज म्हाँरे आकाश सुख रवि ऊगे रे,
कदी कदी मिलूँ म्हाँरा भाई वाट यूँ जोती रै।
अब आई पल सुखदाई मनने म्होती रे
माँ जण्या भाई ने एक चाहूँ नहिं कश्यान रे।[2]

अर्थ : सचमुच आज उसके घर में सुख सूर्य का उदय हुआ है। उसके मन को मोहने वाला एक-एक क्षण सुखदायी हो रहा है, जिसे वह पहले भाई की स्मृति में बड़ी कठिनता से गिन-गिन कर बिता रही थी।

गीतः तव आगमन पल प्रत्येक गिन रही प्रेमसुँ रे
थाँरा अन्तर रा भाव सब म्हुँ पिछाणुं रे।
फिर लहेवा भगिनी ल्हाव आयो शाणो रे,
लींप्या आँगण थाँरे काज हूँशी हूँशी रे।[3]

अर्थ : बहन अपने भाई के विशिष्ट गुणों और भावों को भली प्रकार समझती है और उसके आगमन के प्रत्येक पल को प्रेम से गिन रही है। भाई के आगमन का ल्हाव (सुनहरा मौका) अवसर आया है इसी कारण आज आँगन को भी खुशी-खुशी लीपा (पोतना) चमकाया है।

गीतः आणि में पूर्या साथिया आज जन मन म्होवे रे,
जरा देखो थाँ आँगण द्वारा, तोरण सोहे रे।
कीदा गुल जलरा छँटकार धोबे धोबे रे,
मखमली पलँग बिछात थाँरे कीधी रे।
फल मेवा और मिष्टान ये क्यूं भूलूँरे,
म्हुं कर कतव्य रो भान हर्षित डोलूँ रे।[4]

अर्थ : भाई के स्वागत और आदरातिथ्य हेतु बहन ने आंगन में कुंकुम साथिया (स्वस्तिक) बनाए, द्वार पर तोरण सुशोभित किए जो सबके मन मोह रहे हैं। चारों ओर गुलाब जल का छिड़काव किया है। भाई के आराम

1-2-3-4. श्री मोहनलालजी व्यास शास्त्री की डायरी से (गंगाप्रसाद कमठान)

हेतु मखमली पलंग बिछाया है और भोजन हेतु फल, मेवा, मिठाई भी याद कर रखे हैं। इस प्रकार अपने कर्तव्य को पूर्ण कर बहिन हर्षित हो डोल रही है, झूम रही है।

×××××

गीत : जूना दुःखाँरो परिताप आधो कीधो रे,
पछे देखूँ थाँरो मुखछाप अमृत पीधो रे।
छेडूँ म्हाँरी बीन रा तार, थाँरे सारुँ रे।
हरखे यो सब परिवार म्हुँ घणी गाजूँरे।
म्हाँरा बालूडाँ भी पाँच दाडे उमंग में रे,
कदी मिलशी मामाजी साँच रमता ऊछल रे।
थाँरी सेवा में तो मोद धन धन मानूँ रे,
बहे उर्मियाँ झकझोर आज म्हुँ जाणूँ रे।[1]

अर्थ : भाई के आ जाने से बहन अपने वर्ष भर के सभी दुःखों को भुलाने लगती है। उसकी मुखाकृति को देखकर प्रेमामृत का पान कर प्रसन्न हो हृदय तन्त्री के तारों की झंकार अपने भाई को सुनाने लगती है। आज बहन का परिवार अत्यंत खुश है। उसेक पाँचों पुत्र प्रसन्न हो इधर-उधर उछल-कूद कर रहे हैं। कभी मामाजी संग खेलकूद रहे हैं। भाई की सेवा कर बहन धन्यता महसूस करती है और हृदय से भाई के प्रति प्रेम का स्त्रोत बहता है।

×××××

गीत : करूँ तिलक थाँके भाल कुंमकुंम लैने रे;
हर लेऊँ दुखड़ा तत्काल आशिष दैने रे।
रेवो रेवो नीरोग दुख लेश न राखूं रे,
सदी जीवो थां अशी आश दिलशुं भाखुं रे।
कई गलती हे तो माफ करज्यो वीरा रे,
राजी राखो जगरां बाप म्हारा हीरा रे।[2]

अर्थ : विविध प्रकार के व्यंजनयुक्त भोजन करवाकर बहन भाई के माथे पर कुंकुम तिलक करती है। हृदय से अपने भाई के दुःख द्वन्द्वों को दूर करने के लिए और उसके दीर्घायुष्य की कामना से आशीष देती है। फिर अपनी भूल चूकों को क्षमा कर देने के लिए भाई से याचना करती है। इसके पश्चात भाई-बहन की आशा पूर्ण कर विदा लेता है।

×××××

1-2. श्री मोहनलालजी व्यास शास्त्री की डायरी से (गंगाप्रसाद कमठान)

(4) संस्कारों के गीत :

(i) गर्भावस्था के गीत :

गीत : नारंगी :

मालीका रे खिडकी खोल भँवर ऊभा बारणो।
आओ कवरां बैठो नी पास, कांई तो कारण आया?
म्हारी धण ने पैलो जी मास नारंगी में मन गयो जी।
नारीं रा लागै छै हजार, कलियाँ रा पूरा डोड़ सेजी।
नारंगी रा दांता हजार, कलियांरा पूरा डोड से जी।
पैली खाई खाटी लागी, दूजी खट-मीठी लागी।
तीजी ने बींदड़ राजा जनम लियो।
म्हारी धण ने दूजो जी मास, नारंगी में मन गयो.
म्हारी धण ने तीजो जी मास, नारंगी में मन गयो.
म्हारी धण ने चोथोजी मास, नारंगी में मन गयो.
म्हारी धण ने पाँचवोजी मास, नारंगी में मन गयो.
म्हारी धण ने छठो जी मास, नारंगी में मन गयो.
म्हारी धण ने सातवोंजी मास, नारंगी में मन गयो.
म्हारी धण ने आठवों जी मास, नारंगी में मन गयो.
म्हारी धण ने पूरा जी मास, नारंगी में मन रह्यो।[2]

अर्थ : माली के लड़के खिड़की खोल, भंवर जी बाहर खड़े हैं। आओ कुंवरजी पास बैठो, किस कारण आना हुआ? हमारी स्त्री के पहला महीना है और उसका मन नारंगी में लगा है। नारंगी के लगते हैं हजार और कली के पूरे डेढ़ सौ जी। नारंगी के देंगे हजार और कली के पूरे डेढ़ सो जी। पहली खाई तो खट्टी लगी और दूसरी खाई तो खट-मीठी लगी। तीसरी में बींदड़ राजा ने जन्म लिया।

मेरी स्त्री को दूसरा महीना लगा है और उसका मन नारंगी में गया है। इसी प्रकार तीसरा, चौथा, पाँचवां, छठा, सातवां, आठवां और पूरे नौ महीने हो गए हैं और उसका मन नारंगी में रह गया है।

×××××

हालरे (सौहर) के गीतों में एक गीत भैरूँजी है, जिसमें एक अपुत्रवती स्त्री पुत्र के लिए भैरव की प्रार्थना करती है।

भैरूँजी (हालरो)

भैरुँजी काठे रे गँवाँ री चोढूँ लापसी, माँय तो गायाँ रो देसी घीव
कासी रा बासी एक तो अरज म्हारी हेलो साँभळो।
भैरुँजी देराण्याँ-जेठाण्याँ मनें मोसो बोलियो,

---

1. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 151-152

देराण्याँ जेठाण्याँ रे हींडै पालणो।
भैरुँजी हूँ एक पुतर बिन कुळ में बाँझड़ी।। कासी रा बासी.
भैरुँजी कदेय न भीजी म्हारी दूधाँ काँचळी;
भैरुँजी कदेय न भीज्यो म्हारो काँधो लाल सूँ।
कासी रा बासी, अेक पुतर बिन कुळ में बाँझडी।
भैरुँजी सास सपूती, बीँ रे देवरियो लाडलो।
भैरुँजी नणदल ऊँनाळे री बळती ए लाय। कासी रा बासी।
भैरुँजी कासी मैं बाजै थारे घूघरा, कोडाणो मै बाजै नगर निसाण।
तोळाणो रा भैरुँ, एक अरज तो म्हारी हेलो साँभळो।।
भैरुँजी पीवरिये रे माँय धसूँ देवळो।
आरती जाँवती ने हूँ थाँने धोकस्यूँ।
भैरुंजी एक एक तो अरज म्हारी हेलो साँभळो।[1]

अर्थ : हे भैरव, मैं काठे (मरुभूमि में पैदा हुए) गेहूँओं की लपसी चढ़ाऊँगी। उस में गाय का घी डालूँगी। हे काशी के बासी, एक अरज मेरी सुनो। देवरानी, जेठानी ने मुझे ताना मारा है। उनके तो पलने में पुत्र झूल रहे हैं; मैं अभागिनी कुल भर में एक ही बिना पुत्र की बाँझ हूँ।

हे भैरव, स्तन के दूध से मेरी काँचली (आँचल) कभी नहीं भीगी, न मेरा कंधा भीगा। प्यारे पुत्र के मुख से टपकी हुई लार से। काशी के वासी, मैं अभागिनी कुल भर में अकेली निपूत बाँझ हूँ। मेरी सास सुपुत्रवती है, उसके लाडला देवर पुत्र है और ग्रीष्म की तीव्र आग की तरह जलती भुनती मेरी ननद उसकी पुत्री है। ये दोनों मुझे व्यंग्य कसते हैं।

हे देव, काशी में आपके नाचते समय के घुँघरु बजते हैं और कोडमदेसर में आप के निसान धहराते हैं। हे तोलियासर के भैरव, मेरी विनम्र प्रार्थना सुनो।

मैं पीहर में आपका मंदिर स्थापित करुँगी और आते-जाते आपका वंदन करुँगी। केवल एक प्रार्थना मेरी सुनो।

×××××

जच्चा :

किसी नवविवाहिता वधू के प्रथम बार गर्भाधान होना अत्यंत मंगलमय माना जाता है। गर्भवती स्त्री का पति परदेश जा रहा है। पति की अनुपस्थिति में अजवाईन आदि की व्यवस्था कौन करेगा? गर्भावस्था के आठवें मास में स्त्रियाँ 'अजमी' गाती हैं-

गीत : थेइज ओ केसरिया सायब गांव सिधाया ओलगणा,
सिधाया ओ अजमौ कुण मोलावे ओ राज।
थेइज ओ मांनेतण रांणी हालरियो जिणजौ,

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 34-35

धेनड़ियो जिणजौ ओ अजमो म्हारा भावोसा मोलावो ओ राज ।[1]

अर्थ : ओ केसरिया प्रियतम! आप दूसरे गाँव जा रहे हो। ओ राज, अब अजवायन कौन खरीदेगा? ओ मानेती रानी! तुम पुत्र उत्पन्न करना, अजवायन मेरे बाबोसा खरीद देंगे।

जन्म से पूर्व प्रसव वेदना से पत्नी व्याकुल हो रही है। पति बाहर चौपड़ खेलने में मस्त है। पत्नी पति के दाई बुलाने के लिए सूचना देना चाहती है। क्या कहे? कैसे कहे?

गीत : ओ राजा सार रमता पीव ये पासा दूर धरौ वे हां।
ओ राजा सार धरौ चित्रसाल पासा रंगमेल धरौ वे हां।
ओ राजा जाजय देवौ उठाय साथीड़ा ने सीख दैवो वे हां।
ए म्हारी सदा सवागण नार थांरे कांई हुयो वे हां।
ओ राजा लाज सरम री बात पियाजी से कांई केवूं वे हां।
ए गोरी थारो म्हारो जिवडो एक दोनूं बिच कोण सुणे वे हाँ।
ओ राजा धसमस दूखे पेट कमर में चीस चाले वे हां।
ओ राजा होय घुडले असवार दाईजी ने लेण चालौ वे हां।[2]

अर्थ : ओ राजन! हे प्रियतम! आप खेलते हुए सार व पासों को दूर रख दो, ओ राजन! सार को चित्रशाला में व पासे रंगमहल में रख दो। ओ राजन, जाजम, उठवा दो व साथियों को विदा करो। ए मेरी सुहागिन प्रिया। तुम्हारे क्या हुआ? ओ राजन, लाज शरम की बात है, मैं अपने प्रियतम को क्या बताऊँ? ओ गौरी तुम्हारा और मेरा जीवन एक है। दोनों के बीच कौन सुनने वाला है? ओ राजन्। पेट कसमसाता हुआ दुखता है व कमर में चीस चलती है। ओ राजन! घोड़े पर सवार होकर दाई को लेने जाओ।

×××××

जन्मोत्सव पर प्रसूता स्त्री को पीली चुनड़ ओढ़ाते हैं इसे 'पीळो ओढ़ना' कहते हैं। राजस्थान में 'पीलौ' सौभाग्यवती एवं पुत्रवती स्त्री का मांगलिक परिधान है।

हालरा

गीत : मा, सहस-तळावां में गई जे।
रीता ए समँद-तळाव, हंसा बुगला उड रह्या जे।
मा, बाग बगीचाँ मैं गई जे।
मा, काचा ए दाड़म दाख, कोयल कागा उड गया जे।
मा, सहस बजाराँ में मैं गई जे।
मा, हाट्याँ ए सैं जड़ली हाट, बाजीगर का उठ रह्या जे।
मा, राय रसोयाँ में मैं गई जे।
मा, जीमै देवर जेठ, बाई जी रो उठ रह्या जे।

1-2. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 152

मा, रंग महलाँ में मैं गई जे।

मा, सूत्या ए बाई जी का वीर, हाथ पकड़ ओठी करी जे।

मा, आयो ए आळ-जंजाळ।

मा, ..., कूखड़ली वैरण भई जे।

मा सहस-तळावाँ मैं गई जे।

मा, भरियो हिनोला खाय, हंसा बुगला रम रह्या जे।

मा, सहस-बगीचाँ मैं गई जे।

मा, पाक्या सै दाड़म दाख, कोयल सुवटा खा रह्या जे।

मा, सहस-बजाँरा में मैं गई जे।

मा, हटवाँ सै खोली हाट, बाजीगर का रम रह्या जे।

मा, रंग महलाँ में मैं गई जे।

मा देख्यो गीगो महलाँ माँय, पालणिये में झूलतो जे ॥[1]

अर्थ : पुत्र विहीना अभागिनी सरोवर के किनारे गई। उसे देखकर हंस, बगुला आदि पक्षी उड़ गए। वह बगीचे में गई तो वृक्षों पर फलों को कच्चा पाया औ बाग के पक्षी उसके अशुभ दर्शन से उड़ गए। बाजार में गई तो दुकानदारों ने दुकानें बंद कर दीं। घर की रसोई में गई, तो देवर-जेठ उससे घृणा कर उठ खडे हुए। यही नहीं, रंग महल में पति ने भी इस निपूती अभागिन का स्वागत नहीं किया। हाय, एक पुत्र के बिना इस अभागिन के लिए सारा संसार शून्य है, अमंगलमय है-अस्पृश्य है।

परंतु ज्यों ही दैव की कृपा से इस स्त्री की कोख पुत्रवती हुई, त्यों ही सारे संसार का रंग बदल गया। सरोवर, बाग, घर, रंगमहल सब जगह इस का आदर हुआ। पलने में झूलते हुए पुत्र के मुखड़े की हास्य रेखा ने सारी दुःख कालिमा को धो कर आर्दस्थ्य के चित्रपट पर नए स्वर्गीय सुंदर चित्र अंकित कर दिए। सब कुछ कह लेने के बाद आखिर यह उस अभागिन का स्वप्न ही है जो वह अपनी माँ से कहती है।

×××××

हालरियो

गीत : सोजा सोजा रे हालरिया, बारे हाबू आयो रे,

थारे बाप गिया परदेशां, थारी माय झुरे हमेसा,

कणीने दुख आपणो केसां, जपजा जपजा मारा लाल

बारे हाबू आयो रे ॥

अब नणवीरो वीरो आशी, थारे आछा रमत्या लासी।

थने हँस कर गले लगासी, थने घणो खेलाई गोद ॥ बाद. ॥

लाला ने लेर बारण सूती, कणकी नजर लगाई कपूती।

ही कुण अशी रांड अणूती, जणी मार्यो नजर रो बाण ॥ बारे.. ॥

सात लूण कांकरियाँ लीटी, सात राती मरचां लीटी।

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 67-69

लाल पर खारी चितरां कीधी, लीदी इक्कीस बार उतार ।। बारे.. ।।
आग में लूण मरच नकवायो, तड़ी को लूण को न सुण पायो ।
मिरच धूओं नाम नी आयो, चट लाला ने आ गई नींद
सोजा सोजा रे हालरिया, बारे हाबू आयो रे ।।[1]

अर्थ : माँ अपने पुत्र पर अपनी ममता की बौछारें लुटाती हुई लोरी गाकर अपने लाडले पुत्र को सुलाने का यत्न कर रही है। बच्चा अनेकों प्रयत्न पर भी जब नहीं सोता तब हार कर हालरिये को जोरों से पलने में झुलाती हाऊँ का हव्वा दिखाती कहती है तू सोजा मेरे लाला बाहर हाऊँ आया है, तेरे पिता भी परदेस गए हैं, विदेश जाने से स्वयं दो-दो कतरे आँसू बहा रही हूँ। अतः तू सोजा लाल, मुझ पर दया कर। मैं अपने कष्ट को किसके सामने कहूँ? तू सुनता भी है? मेरे रोने को? अब मेरे लाल सोजा - हव्वा आने वाला है - मैं अपना दुःख किससे कहूँ।

और फिर तेरे सो जाने के बाद मेरी ननँद बाई के भाई (तेरे पिता) तेरे लिए खेलने के अच्छे-अच्छे खिलौने लाएँगे और तुझे हँस कर गले लगा लेंगे, अपनी गोद में खिलाएँगे - क्योंकि तू अच्छा मुन्ना है, सो जाएगा। मगर माता के लाल तो मनमानी ही कर रहे हैं। सोते नहीं - रोते हैं अतः माता को संदेह होता है कि मैं तुझ लाल को लेकर बाहर सो गई थी। किसी निपूती ने तुझ पर नजर लगा दी, वह बड़ी दुष्टा थी जिसने तेरी सुंदरता को देख द्वष्टि लगा ही दी। बड़ी बुरी नजर थी। अतः नजर उतारने के लिए सात नमक की डलियाँ और ७ लाल मिरचें लेकर मेरे लाल पर इक्कीस बार वार कर आग में डालती हूँ - देख-देख नमक के जलने की तड़क की आवाज भी नहीं आई और न मिर्च का तनिक भी धुआँ ही निकला। इसलिए अब तुझे झटपट नींद आ जाएगी। सो जा मेरे लाल (2)।

×××××

बधाई : पुत्र जन्मोत्सव पर यह गीत गाया जाता है। माता अपने नवजात शिशु पर अपना वात्सल्य लुटाती जान पड़ती है। जन्म की बधाई देती है -

गीत : थारी ने बधाई लूरे नाना खेलो म्हारा बीर
थाली लीदी लोट्या लीदो लीदी सोहन थाल
कीका थारे कारणो, म्हां पूजा खेतरपाल ।। थारी ... ।
जावा ला बाजार में, लावां लां मिठाई,
आवेला नणजी रो वीर, बांटे ला बधाई। थारी... ।[2]

अर्थ : माता अपने पुत्र से कहती है कि हे पुत्र! मैं तेरी बधाई लेती हूँ। तू यहाँ (गोद में) खेला कर। मैंने तेरे लिए बर्तन बासन, सोने के थाल आदि खरीदे हैं। और तेरे लिए मैंने (क्षेत्रपाल) भैरव की अर्चना की है। ननद के भाई (तेरे पिता) आएंगे, तब बाजार में जाकर मिठाई लाएंगे और बधाई बाँटेंगे।

'नंद घर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की' कह जन्मोत्सव की बधाईयों से पिता भी अपने हर्षातिरेक को व्यक्त करता है। आज उसके आनंद जो हुआ है।

1-2. राजस्थानी लोकगीत - भाग 4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ. 21 से 25

गीत : पीलिया –

हां ये जच्चा माथा ने मेमद लावजो ए जच्चा रखड़ी रतन जडाय,
सिरदार जच्चा ए उमराव जच्चा एथे तो महीन बंधन रो पीलो ओढ़ो।
हां ये जच्चा काना ने दडियो लावजो ए जच्चा जटना रतन जडाय।
सिरदार जच्चा उमराव जच्चा ए थे तो महीन बंधन रो पीलो ओढ़ो।
हां ए जच्चा ए हिवडे ने दार लीलावजो थारे टेवटो रतन जड़ाय।
उमराव जच्चा में सिरदार जच्चा ए तो महीन.... ओढ़ो।
हां ए जच्चा जाया ने घुडला थे लावजो ए वांरे गजरा रतन जडाय,
सिरदार जच्चा उमराव जच्चा ए थे ...... ओढ़ो।
हां ये जच्चा पगलिया ने पायल लावजो ए थारे बिछिया रतन जडायी,
सिरदार जच्चा उमराव जच्चा ..... पीलो ओढ़ो।[1]

पालना गीत :

गीगा काम करुं रे चित पालणे में।
मारो हियो रे हिलोरा खाय, रे मारो रायमल हींडे पालणे में।
गीगा दादा सा आया रे हींडो दे गया,
गीगा करगा लाड ने प्यार।
रे मारो रायमल हीण्डे पालणो।
गीगा भाई सा आया रे हीण्डो दे गया।
गीगा कर गया लाड नै प्यार... रे मारो... [2]

लोरी :

लोरी लोरी गीगा लोरी, थारै गाय वियाई गौरी,
म्हारा गीगा धाय राज लोरी।
गीगै रे दादेजी नै वेग बुलाओ, म्हारै गीगे राकोड कराओ।
म्हारा गीगा धाय राज लोरी। थांरी दूधां भरी कटोरी – म्हारा..
गीगे री दादीसा ने वेग बुलाओ, अगलिये चढ़ सोहन थाळ बजायी।[3]

जनेऊः

गले जनेऊ लाडा पाट के री डोरी, भिक्षा पुरसे बहू सूरजजी री गोरी।
गले जनेऊ लाड़ा पाट के री डोरी, भिक्षा पुरसे रामजी री गोरी।
गले जनेऊ लाड़ा पाट के री डोरी, भिक्षा पुरसे ब्रह्माजी री गोरी।

1-2. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ. 12,15,16

गले जनेऊ लाडा पाट के री डोरी, भिक्षा पुरसे बहू महादेव जी री गौरी।
गले जनेऊ बहु पाट के री डोरी, भिक्षा पुरसे बहू सुख दे गोरी।[4]

बधावा:

हरजी तो आवत म्हे सुण्या, दूधां तो बरस्यो मेह जी।
आज बधावो मेरे राम को। चनण चौकी हरनैं बैसना, दूध पखाळां हर का पांवजी।
आज बधावो मेरै राम को। चावल राधां हर नै ऊजला, हरिया मूंगां की दाळ जी।
घी बरतावां हर नै टोकसां, जाळा तो पर री खांड जी। आज बधावो मेरे.. राम को।
पूडी तो पोवां हर नै लड़झड़ी, तीवण तीस बतीस। आज... कैर करैली हर नै सेतलां,
पापड़ तळां ए पचास। जीमत निरखां हर की आंगळी, मुळकत निरखां दांत।
मूंगफळी सी आंगळी, दांत दाड़ूं का बीज। आज बधावो रे मेरे राम को।[2]

गीत :

उधयपुर से तो सायबा पीलो मंगाओ जी।
तो नानी सी बंधण बंधाओ गाढ़ा मारुजी।
पीला तो पल्ला साहेबा बंधण बंधावो जी।
तो अधबिच चांद छपावो गाढ़ा मारुजी।
पीळो तो ओढ़ म्हारी जच्चा पोढ़े जी।
बड़ी तो सराही सहर सराही गाढ़ा मारुजी।
पीळो तो ओढ़ म्हारी जच्चा महल पधारोजी।
तो कोई है सपूती निजर लगाई गाढ़ा मारुजी।[3]

अर्थ : ओ प्रियतम! उदयपुर से पीली चूनड़ मंगवाओ। ओ अच्छे मारुजी। उस चूनर के महीन 'बांधण' बंधवाओ। ओ प्रियतम! इस पीले के पल्ले बंधवाओ और अधबिच में चांद छपवाओ। ओ प्रियतम। पीलो ओढ़कर सोयेगी तो सारे शहर में उसकी सराहना होगी। ओ प्रियतम। पीला ओढ़कर मेरी जच्चा महल में गई तो किसी सपूती ने उसके नजर लगा दी।

×××××

सन्तान उत्पन्न होने के सातवें दिन 'सूर्य पूजा' होती है। इस अवसर पर जच्चा स्नान करती है, नवीन वस्त्र धारण करती है और घर से छूआछूत का सामान दूर किया जाता है या शुद्ध किया जाता है।

1-2. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ. 23, 28
3. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 153

सूरज पूजा का गीत

सूरज पूजतां कुरजा नावण थूं कठे जाय?
जणी घर सूरज पूजती सूरज पूजवाने जाय।
डूंगर चढती बेलड़ी ढोलण थूं कठे जाय?
जणी धर सूरज पूजती ढोल बनावा ने जाय।
डूंगर चढ़ती बेलडी कुमारण थूं कठे जाय?
जणी घर सूरज पूजती कलस बढ़ावा ने जाय।[1]

अर्थ : सूरज पूजा करने के लिए नाईन चलने लगी, तो कुरज बोली –नाईन, तू कहाँ जाती है? जिस घर में सूरज पूजा है, मैं वहीं सूरज पूजा के लिए जाती हूँ। पहाड़ पर चढ़ती हुई बेलड़ी बोली ढोलिन! तू कहां जाती है? जिस घर में सूरज पूजा है, मैं वहीं ढोल बजाने के लिए जाती हूँ। पहाड़ पर चढ़ती बेल बोली कुम्हारिन, तू कहाँ जाती है? जिस घर में सूरज़ पूजा है, मैं वहीं कलश बंधाने जाती हूँ।

सूरज पूजा के लिए दूसरा गीतः

सूरज पूजण बहू नीसरी, भला भला सुगण मनाय।
तू मत जाणे जच्चा मैं बडी जी ,
राणी भाग बड़ो छै थारी सांसू को, जिण जाया पूत सुलखणा।
दोय दोय लाडू सोंठ का धण उठी मचकाय,
सूरज पूजण बहू नीसरी।[2]

अर्थ : अच्छे अच्छे सुगन बनाकर बहू सूरज पूजने के लिए निकली। जच्चा तू मत समझना की 'मैं बड़ी हूँ' राणी तेरी सासू का भाग बडा है, जिसने अच्छे लक्षण वाले पुत्र को जन्म दिया है। दो दो लड्डु सोंठ के खाकर स्त्री उमंगित होती हुई सूरज पूजा के लिए निकली।

×××××

बालक जन्म के बाद 'जलवा' अर्थात् जल पूजने का संस्कार भी होता है। इस अवसर पर माँ के मस्तक पर छोटा कलश रखा जाता है और उसके साथ स्त्रियाँ गीत गाती हुई जल पूजने के लिए कुएँ या तालाब पर जाती हैं। वे मार्ग में इस प्रकार गाती हैं–

गीत :

कौण चिणायो झालरो, कौण लगाई गज नींव?
पूज सुहागण जच्चा झालरो।
सुसर चिणायो झालरो, जेठजी लगाई गज नींव। पूज.
कौण की या कुल बहू, कौण की या धीय?
सुसराजी की कुल बहू, सात पांचा की है धीय।
भाई तो बहन सहोदरा, पिया की बड़नार। पूज.

---

1 राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 154

ओढ़ पह जच्चा नीसरी, थालागाजी के बजार।
मांढ़ो तो चूंढो कूलडो, गाढ़ो भी लिया माय। पूज.
या कूलड़ो जब नीकले होकर जलवा माय,
कोथली को मूंढो सांकड़ो धुल रही रेशम डोर। पूज.
दे थारा डूम खवास ने सास ननद पहराय।
बहू ए विदाई माता थे जायो सुलक्षणो पूत
पूज सुहागण जच्चा झालरो।[1]

अर्थ : किसने कुएँ पर झालरा चुनवाया और किसने गरही नींव लगवाई? सुहागन जच्चा। झालरा पूज। सुसराजी ने झालरा चुनवाया और जेठजी ने गहरी नींव लगवाई। किसकी यह कुल बहू है और किसकी यह लड़की है? सुसराजी की यह कुल बहू है और पांच सात घरों की (प्यारी) यह बैटी है। भाई-बहनों की सहोदरा और अपने प्रियतम की मानी हुई स्त्री है। जच्चा थानागाजी के बाजार में पहिन ओढ़कर निकली। सुंदर चित्रित, कुल्लड़ के भीतर गाढ़ा सामग्री है। कूलड़ा लेकर बच्चे की माँ जलवा में निकली किंतु रूपये की थैली का मुँह सँकड़ा है और रेशम की डोरी बंध रही है। सास ननद ने घेरा अपने डूम का दिया है। माँ तुमने अच्छा लक्षण वाला पुत्र उत्पन्न किया जिससे इस बहू का विवाह हुआ। सुहागन जच्चा झालरा पूज।

×××××

राजस्थानी लोकगीतों में 'लोरी' का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है। माँ आसपास की प्रकृति, पशु-पक्षी आदि से बच्चे का परिचय कराती है-

गीत:

गीगा ने खिलायी ए चिड़कली
गीगा ने खिलायी ए।
गीगा रोवै च्याऊँ म्याऊँ
गीगो ने हंसायी ए चिडकली, गीगा ने खिलायी ऐ।
पगां अक बाँधूं घूघरणा थारै
बल मोतीड़ा रौ हार, ए चिड़कली, गीगा ने...[2]

अर्थ : ओ चिड़िया। छोटे बच्चों को खेलाओ। छोटा बच्चा च्याऊँ-म्याऊँ रोता है। ओ चिड़िया। छोटे बच्चे को हँसाना। ओ चिड़िया। तेरे पैरों में मैं घूंघरू बाँधूं और तेरे गले में मोतियों का हार पहिनाऊँ। छोटे बच्चे को खेलाना।

×××××

'गाडूलौ' नामक लोकगीत भी राजस्थान में बहुत प्रसिद्ध है। स्नेहमयी माता खाती से कह रही है कि उसके पुत्र के लिए एक सुंदर सा गाडूला घड़ ला-

---

1-2. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 154-155

गीत :

सुण सुण रे खाती रा बेटा, गाडूला घड़ ल्याव।
गाडूला घड़ ल्याव, म्हारे गीगा ने मन भाय।
आम को गाडूलौ घड़ ल्याव चांदी का पात चढ़ाय।
सोने की खाती रा बेटा, कील ठोकाय।
सुण सुण रे खाती रा बेटा, गाडूलो घड़ ल्याव।[1]

अर्थ : हे खाती के बेटे। सुन एक गाड़ी बना के ला जो कि मेरे छोटे बच्चे के मन को भा जाय। आम की लकड़ी की गाड़ी बना। उस पर चाँदी का पात चढ़ा व सोने की कीलें ठोक दे। सुन खाती के बेटे मेरे पुत्र के लिए गाड़ी घड़ ला।

×××××

यज्ञोपवित : इसे जनेऊ कहकर भी पुकारते हैं। विभिन्न जातियों में विभिन्न आयु व अवसर पर यज्ञोपवित का विधान है। यज्ञोपवित संस्कार से विद्याध्ययन आरंभ माना जाता है। इस अवसर पर गृहशांति, हवन आदि धार्मिक क्रियाओं के बाद लड़का गुरु के पास काशी जाने का रिवाज पूरा करता है। कुछ कदम भागने पर लोग उसे पकड़ लाते हैं।

गीत :

बालो चाल्यो ए बहन बनारस जी,
बांका दादासा जाबा न देय, कुंवर बाला यहीं पढ़ो जो।
थांका पढ़वा ने देस्यां मेड़ी ओवरा जी,
थांका गुरुजी ने देस्यां चतर साथ,
कंवर बाला यहीं पढ़ोजी।
थांका गुरुजी ने देस्यां दक्षणा धोवती जी,
थांका साथीड़ा ने देस्यां पचरंग पाग।
कंवर बाला यहीं पढ़ोजी।[2]

अर्थात् ओ बहन। प्यारा लड़का बनारस पढ़ने चला। उसके दादाजी जाने नहीं देते, प्यारे कुँवर यहीं पढ़ोजी। तुम्हारे पढ़ने के लिए हम 'मेड़ी और औवरे' देंगे। तुम्हारे गुरुजी को अच्छा साथ देंगे, प्यारे कुँवरजी यहीं पढ़ो। तुम्हारे गुरुजी को दक्षिणा और धोती देंगे। तुम्हारे साथियों को पचरंगी पाग देंगे। प्यारे कुँवर यहीं पढ़ोजी।

(5) विवाह के गीत : विवाह के अवसर पर कई प्रकार के लोकाचार होते हैं। सर्वप्रथम सगाई होती है जिसके अनुसार आपस में विवाह निश्चित किया जाता है। इसके पश्चात् मुहूर्त निश्चित किया जाता है, जिसमें गणेश स्थापना की जाती है। इस अवसर पर 'विनायक' गाया जाता है–

1-2. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 155-156

विनायक : गीत –

पूरब दिशा में सूर्यदेवजी समरथ जी।
हाँ जी देवा सहस किरण ले उगसी।
मालिक तुम बिन और नहीं आसी।
वेग पधारो गोरां का गणपतिजी।
पच्छिम दिशा में चांद देवा समरथ जी,
हाँ जी देवा नौ लाख तारा लासी। वेग पधारो.
कैलाशपुरी में सदा शिवजी समरथ।
हां जी देवा ढूंडियां नाड्या लारां लासी।
वेग पधारो राणी गोरां का गणपतजी।[1]

अर्थ : पूर्व दिशा में सूर्य देवता सामर्थ्यवान हैं। हाँ जी यह देवता हजार किरणों से उदय होंगे। स्वामी तुम्हारे बिना दूसरे कोई नहीं आएँगे। गोरां के गणपतिजी जल्दी पधारो। पश्चिम दिशा में चाँद देवता सामर्थ्यवान हैं। हाँ जी, देव के नौ लाख तारे के साथ लाएँगे। कैलाशपुरी में सदा शिव सामर्थ्यवान हैं, वे भूतप्रेत साथ लाएँगे। रानी गोरां के गणपतिजी। जल्दी पधारिए।

×××××

गजानन्द :

निम्न गीत विवाह के प्रारंभ में गणपति पूजन के समय गाया जाता है। कोटा में इंद्रगढ़ के गणपतिजी को इसमें संबोधित कर इसकी रचना की गई है। गणपति रिद्धि-सिद्धि के दाता हैं और वे ही संपूर्ण मंगल कार्यो के विधाता और अमंगलों के त्राता हैं। यह गीत हाड़ौती प्रदेश का है–

गीत :

चालो गजानंद जोसीड़ा रे चालां,
लागन्या बोलाई वेगा आवो
कोटा री गादी पर नोबत बाजे, इन्दरगढ़ गाजे
झरण झरण झालर बाजे
ओ कोटारी गादी पर नोबत बाजे।
चालो गजानंद कुँवारिया चालां
कलस्या मोलाई बेगा आवो गजानंद
चालो ओ गजानंद साजनिया रे चालां
लाडली मोलाई बेगा आवो गजानंद
कोटारी गादी पर नोबत बाजे।[2]

---

1. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 156
2. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ. 2-3

अर्थ : इस गीत में श्री गजानंदजी को प्रथम प्रार्थना यह की गई है कि ज्योतिषी के यहाँ स्वयं पधारकर वे ही लग्न मुहूर्त निकलवा लाएँ। इसके पश्चात् कुंभकार के यहाँ जाकर कलश लाने की अभ्यर्थना और इस प्रार्थना पर जब वे कोटे के इन्द्रगढ़ की गादी से प्रस्थान करते हैं तो झरण झरण झालर बजने लगती है और नोबत बजाई जाती है। इस प्रकार उपर्युक्त कार्यों के अंत में उनसे समधी के यहाँ जाकर कन्या के गुणों का मूल्य कर आने की प्रार्थना है।

×××××

विवाह के समय अनेक प्रकार के रीति रिवाज होते हैं। वर-वधु के तेल चढ़ाना, पीठी करना आदि। 'उबटन' को राजस्थान में 'पीठी' कहते हैं। आटे, हल्दी, तेल आदि के मिश्रण से पीठी बनाई जाती है। गीत के साथ नाई या नाईन वर-वधु को पीठी करना आरंभ करती है-

गीत : गहूँ ए चिण रो ऊबटणो, मांय चमेली रो तेल
अब लाडो बैट्यो ऊबटणै ॥१॥
आओ म्हारी दाद्यां निरख लो, आओ म्हारी मायां निरखल्यो
थां निरख्यां सुख होय, अब लाड़ो बैठ्यो ऊबटणै ॥२॥
तो कर लाड़ा ऊबटणो, थारा ऊबटणां में बास घणी
थारी दाद्यां संजौयो ऊबटणों, थारी माया संजोयो ऊबटणो ॥३॥
कोई तेल फुलेल चम्पेल घणी, चम्पा री कलियाँ सुगन्ध घणी
लाडा रा मन में खांत घणी ॥४॥[1]

अर्थ : गेहूँ और चने का उबटना है जिसमें चमेली का तेल। अब लाड़ा (प्यारा) उबटना करने बैठा। आओ मेरी दादियों। मुझे देख लो। आओ मेरी माताओं, मुझे देख लो, आपके देखने से ही सुख होगा, अब लाड़ा उबटना करने बैठा। अब लाड़ा उबटन चालू कर, तेरे उबटन में सुगंध बहुत है, तेरी दादियों ने उबटन बनाया, तेरी माताओं ने उबटन बनाया। तेल, इतर व चंपा की सुगंध बहुत है। चम्पे की कलियों की सुगंध बहुत है, लाडा के मन में प्यार बहुत है।

×××××

गीत : हरियाला बनांकर लो सोघठडो, ई में राय चमेली रो तेल
ओ हरियाला बनडा.....
थारे बाबा सा संजोयो सोघठडो थारो माता पूर्‌यो तेल।
ओ हरियाला बनडा.....
थारे काकोशा संजोयो सोघठडो, थारी काकी पूर्‌यो तेल।
ओ हरियाला बनडा.....
थारे मामासा संजोयो सोघठडो, थारी मामी सा पूर्‌यो तेल।
ओ हरियाला बनडा.....[2]

---

1. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 157
2. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ. 7-8

अर्थ : श्याम बना (दूल्हा) सोगठडे में राय चमेली का तेल मिलाया गया, तुम्हारे बाबाजी ने तैयार करवाया है और तुम्हारी माता ने इसमें तेल डाला है, तुम्हारे काका साहब ने इसे संजोया और काकी साहब ने तेल मिलाया है। तुम्हारे मामा साहबने इसे बनाया और मामी साहब ने तेल पूरा है। अतः श्याम बना तुम इसे लगा लो।

×××××

जब बारात के निकलने का समय होता है तब दिन को सुबह उखरड़ी (रोड़ी) पूजी जाती है। राजस्थान में यह कहावत प्रसिद्ध है कि 'उखरड़ी में रतन जन्मे।''

अर्थ : निम्न लिखे गीत में स्त्रियाँ बधावे को पक्षी रूप होकर और सोने की चोंच के रूप में सुसराजी के द्वार विवाह का शुभ संदेश ले आने के लिए आमंत्रित करती हैं। आटी, बेलण और दही मथने का नेतरण आदि मांगलिक वस्तुएँ थाली में डालकर गीत गाती हुई उखरड़ी के समीप जाती हैं और फिर उसे पूजती हैं-

उखरड़ी (रोड़ी) पूजने का गीत :

सैंयाँ ए उखरड़ी बधावो म्हांरे आवियो।
आयो म्हांरे सुसराजी करी पोल ए,
पंखेरु ह्वैने सोना री डाँडी।
सूवा रे दिवलो बले नै लोलाँ सिग चढे
मोतीडाँ री लागी लड़ा झूम।
सैयाँ ए उखरड़ी बधावो म्हांरे आवियो ॥[1]

बारात के चढ़ते समय का गीत:

केसरियो लूले-लूले पाछो जोवे,
जांणू म्हारा भाभोसा जान पधारे।
भाभोसा जाँनणली रा रतन करावे।
केसरियो लूले-लूले पाछो जोवे।
जांणू म्हांरा वीरोसा जाँन पधारे।
वीरोसा जाँनणली रा रूप;
केसरियो पाछो जोवे ॥
केसरियो लूले-लूले पाछो जोवे,
जांणू म्हारा काकासा जाँन पधारे।
काकासा जाँनणली रा रूप ए,
केसरियो पाछो जोवे।[2]

अर्थ : इस गीत में वींद (वर) बार-बार पीछे की ओर झुककर देखता है कि मेरे साथ कौन-कौन संबंधी चल रहे हैं। कोई पीछे तो नहीं रह गए हैं? वह अपनी बारात में अपने सगे संबंधियों और इष्ट मित्रों को ले जाने के लिए बार-बार याद करता है। गीत में मामा, बहनोई, फूफा आदि संबंधित व्यक्तियों के नाम ले-लेकर यह गीत गाया जाता है।

1-2. राजस्थानी लोकगीत, भाग-2 : शिवसिंह चोयल, पृ. 14-15

बरातियों की स्मृति का गीतः

धूप पड़ै नै धरती तपै
तपै घोड़लियाँ रा पांव,
बना थाँरी जांन में रे।
बीराजा बिना किसविध चालणो रे ॥
बीराजी जांनणली रा रूप ए,
चतुर थांरी जान में।
बीराजी केलूड़ा री कॉम ए,
रेना थाँरी जाँन में रे ॥[1]

अर्थ : बड़े कड़ाके की धूप पड़ रही है, घोड़ों के पैर भी जल रहे हैं। ऐसी अवस्था में वींद (वर) ब्याहने के लिए चल रहा है। भाई के बिना जाना उसे शोभा नहीं देता। वह केलू की लकड़ी के समान अर्थात् अति प्रिय हैं। बिना पिता के विवाह करने जाना किसी को अच्छा नहीं लगता है। बरात में पिता और भ्राता का होना अति आवश्यक है।

×××××

बना (दूल्हा) (श्रीराम)

गीत :

राजा जनक जी री पोल आया फूटरा बना
पूटरा बनाजी राजा जनकजी री पोल
आया फूटरा बना ॥
हाथियाँ असवार होत ढुलत चमर घणा
खमा खमा चोबदार नकीम बोलणा, घना ॥ राजा ... ॥
दोय गोरा दोय सांवला दोही रूप में घणा
सारा में सिरदार राघो रावजी बना ॥ राजा.... ॥
जीं री पोल आया सांवरा बना ॥[2]

अर्थ : राजा जनक के द्वार पर बड़े ही सुंदर बने (दूल्हे) आए हुए हैं, जो हाथियों पर विराजमान हैं और चँवर ढूल रहे हैं। चौबदार और नकीम खम्मा-खम्मा (क्षमा, क्षमा) उच्चारण कर रहे हैं। राजा जनक के द्वार पर आनेवाले बनों में दो गोरे और दों श्याम हैं और दोनों अत्यंत रूपवान हैं। इन चारों भाईयों में शिरोमणि रामचंद्रजी हैं।

वर के साथ स्त्रियाँ विनोद करने से भी नहीं चूकतीं। उनका मंतव्य वर के साथ हँसी करना ही होता है।

गीत : चंपले री चोसठ कलियाँ ए,
बनो पूरे बनी री रलियां ए।

---

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग-2 : शिवसिंह चोयल, पृ. 15-16
2. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4 : मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ. 20

बनड़े रे हाथ पतासा ए,
बनो करै बनी सूं तमासा ए।
बनड़े रे हाथ में डोरी ए,
बनड़े सूं बनड़ी गोरी ए।
बनड़े रे हाथ में कूंची ए,
बनड़े सूं बनड़ी ऊँची ए।[1]

अर्थ : चम्पा की चौसठ कलियाँ ए, बना बनी की इच्छाएँ पूरी करता है। बनड़े के हाथ में पतासे हैं, बना बनी से तमाशा करता है। बने के हाथ में डोरी (रस्सी) है, बनड़े से बनड़ी गोरी है। बने के हाथ कूंची (चाबी) है, बनड़े से बनड़ी ऊँची है।

×××××

विवाह से पूर्व दूल्हा-दुल्हन को संबंधित व्यक्तियों के यहाँ आमंत्रित किया जाता है। खाना खाकर लौटते समय बनौली संबंधी गीत गाया जाता है, जिसे राजस्थान में बनौला भी कहते हैं।

गीत : झिरमिर झिरमिर मेहवो बरसे मोतीड़ा रा झड लागा।
म्हे थाने पूछूं कुंवर लाडला, थारो बिनौलो कुण न्योतो?
ईसर घर बहू गोरा, म्हारो बिनौलो उण न्योत्यो।
सूरज घर बहू रोहणी, म्हारो बिनोलो उण न्योत्यो।
घर से तो लाड़ो पग पग आयो, घुड़ले चढ़ पहुँचायो।
थे चिर जीवो देवी देवता का जाया, भली ए जुगत पहुँचाया
लाम्बी सी डाँडी को झबरक दिवलो, ऊपर लाल चंदोवो।[2]

अर्थ : झिरमिर झिरमिर मेह बरसता है, मोती झड़ते हैं। मैं तुमको पूछती हूँ कि प्यारे कुँवर, तुम्हारा बिनोला किसने न्योता है? ईसरजी के घर में गोरा बहू है, मेरा बिनोला उन्होंने न्योता है। घर से प्यारा पैदल चल कर आया था, उसको घोड़े पर पहुँचाया गया है। देवी-देवता, आप सभी चिरं जीवो, आपने अच्छी तरह पहुँचाया है। लम्बी डाँडी का तेज रोशनी वाला दीपक है और ऊपर लाल चंदोवा है।

×××××

बरात चढ़ते समय दूल्हा सज-धजकर घोड़ी पर बैठता है, उस समय उसकी व घोडों की, दोनों की आरती उतारी जाती है। उस समय का गीत-

घोड़ी: घोड़ी पग मोड़े, झांझर बाजे।
घोड़ी गई ओ जोसीड़ा री हाट, वारी जाऊँ ओ नारायणगढ़ रो सेवरो।
छोड़ो छोड़ो दादाजी म्हारो सेवरो।
छोड़ो छोड़ो काकाजी म्हारो सेवरो।
घोड़ी पग मोड़े, झांझर बाजे।
म्हाने परणावा री आई हो हूंस।

---

1. राजस्थानी साहित्य का इतिहास, तृतीय अध्याय : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 158

घोडी गई बजाजीरो हाट।

वारी जाऊँ ओ नारायणगढ़ रो सेवरो।

छोडो छोडो मामासा म्हारो सेवरो।

म्हाने आई हो परणवा री हूंस।

घोड़ी पग मोड़े, झांझर बाजे।

घोडी गई नणदोईजी री हाट ,

वारी जाऊँ ओ नारायणगढ़ रो सेवरो।

छोड़ो छोड़ो मासाजी म्हारो सेवरो।

म्हाने परणवा री आई ओ हूँस।

घोड़ी पग मोड़े, झांझर बाजे , वारी जाऊँ ओ नारायणगढ़ रो सेवरो। [1]

अर्थ : घोड़ी पैर मोड़ती है तो झाँजर बजती है। घोड़ी जोसी (पंडित) की हाट में गई है। वारी जाऊँ (बलिहारी जाऊँ) ओ नारायण गढ़ का सेवरा। छोड़ो छोड़ो दादाजी मेरा सेवरा छोड़ो। मुझे विवाह करने की उमंग हुई है। घोड़ी पैर मोड़ती है तो झांझर बजती है। घोड़ी बजाज की हाट पर गई। वारी जाऊँ ओ नारायणगढ़ का सेवरा। छोड़ो छोड़ो मामाजी मेरा सेवरा। मुझे विवाह करने की उमंग हुई है। घोड़ी पैर मोड़ती हो तो झांझर बजती है। घोड़ी नणदोई की हाट पर गई। वारी जाऊँ ओ नारायणगढ़ का सेवरा। मासाजी मेरा सेवरा छोड़ो, मुझे विवाह करने की उमंग हुई है। घोड़ी पैर मोड़ती है तो झांझर बजती है। वारी जाऊँ ओ नारायणगढ़ का सेवरा।

×××××

बरात जिस समय दुल्हन के द्वार पर जाती है तो वहाँ पर दूल्हा तलवार व वृक्ष की टहनी से तारण मारता है। उस समय गीतों में स्त्रियाँ 'कांमण' द्वारा वर को वश में करती है। कांमण का अर्थ जादू-टोना या वशीकरण है। जिसके द्वारा वर को जीवन भर के लिए अपने वश में करना चाहती है। कहीं पर कपासिया आदि वस्तुएँ भी फेंकी जाती हैं। वर के मित्र ढाल द्वारा रोकने का प्रयत्न करते हैं, ताकि वर वशीकरण के अधीन न हो सके।

तोरण के समय का गीत

तोरण में आया राईवर, थर थर कांप्या राज,

बूझा सिरदार बनी ने, कांमण कूण करया छै राज।

म्हें नहीं जाणां, म्हांरा खाती कांमणगारा राज,

खाती को नेग चुकास्यां, कामण ढीलां छोड़ो राज।

छोड़्या ना छूटै, राईवर, करड़ा घुल्या छै राज।[2]

अर्थ : राईवर, तोरण मारने आए, व थर थर कांपने लगे। सरदार बनी को पूछते हैं कि हे प्रिया। कामण किसने किया? मुझे नहीं मालूम, मेरे खाती (बढ़ई) ने कांमण किया है राज। खाती का नेग (दस्तूर) चुकाएँगे, कामण को ढीला छोड़ो ए राज। छोड़ने से नहीं छूटे, राईवर यह तो ज्यादा घुल गया है।

×××××

1-2. राजस्थानी साहित्य का इतिहास, तृतीय अध्याय : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 159-160

कंवर कलेवे का गीत

बेबाइयाँ थाँरी अलियाँ-गलियाँ परी रे बोराव ए,म्हारो कंवर-कलेवे आवियो।
कंवरियो है सुसराजी रो जोध (ए) झमके नै तोरण बाँदियो,
तोरणियो है ताराँ छाई रात, झमके नै तोरण बांदियो ॥[1]

अर्थ : जानणियाँ बींद (दूल्हा) के ससुर (कन्या के पिता) से कहती हैं कि आपके मोहल्ले को साफ़ करवा दीजिए, क्योंकि हमारा प्यारा बना भोजन करने के पश्चात् तोरण बाधने के हेतु यहाँ आएगा। विवाह होने के पश्चात् बरात जब वापस रवाना होकर अपने घर वधू सहित आ जाता है तब दूसरे दिन देवी-देवताओं की जाते (मान्यता) देते हैं फिर कँकण-डोरड़ा खोलते हैं और परिवार की बढ़ी बूढ़ी स्त्रियों को वर-वधू नमस्कार करने संबंधियों के घर जाते हैं। बूढ़ी दादी या माता बींदणी को 'दूधो नहाओ और पूतो फलो' का आशीष देती हैं।

×××××

राजस्थान में सात फेरों की जगह चार फेरे भी होते हैं।

गीत : पैलो फेरो ले म्हारी लाडो बाई दादोसा ने लाडली
दूजो फेरो ले म्हारी लाडो बाई बाबोसा ने लाडली
अगलो फेरो ले म्हारी लाडो बाई वीरोसा ने लाडली
चोथो पेरो लियो म्हारी लाडो होइए पराई
हलवां-हलवां चाल म्हारी लाडो हंसेला सहेलियाँ।[2]

अर्थ : पहला फेरा ले ओ मेरी लाडो बाई तूं दादोसा की लाडली है। दूसरा फेरा ले ओ मेरी लाडी बाई तू बाबोसा की लाडली है। अगला फेरा ले ओ मेरी लाडी बाई तू वीरोसा (भाईसाहब) की लाडली है। मेरी लाडो ने चौथा फेरा लिया। अब वह पराई हो गई है। धीरे-धीरे चलो मेरी लाडो, वरना सहेलियाँ हँसेगीं।

×××××

राइवर - वर-वधुओं का प्रिय गीत है। सप्तपदी के समय फेरे फिरते, और कुल देवताओं की पूजा करने जाते समय गाया जाता है।

गीत : ऊभा तो रीज्यो राइवर चम्पला री छाया,
हेला पाडूं तो मारा काकाजी साँभले।
थरमो खेंचूं तो चमके ओ नादान बनजी,
चमके हो देशोत बनजी ॥
ऊभा तो रीज्यो राइवर चम्पला री छाया,
हेला पाडूं तो मारा बाबोजी साँभले।
थरमो खेंचू तो चमके ओ नादान बनजी,
चमके हो देशोत बनजी ॥[3]

---

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग-2 : शिवसिंह चोयल, पृ. 17
2. राजस्थानी साहित्य का इतिहास, अध्याय तृतीय : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 160
3. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ. 4-5

अर्थ : वधू का मुख घूंघट में स्वेदयुक्त मुरझा-सा गया है। इधर इसका राइवर उसे वस्त्र से खींचता हुआ आगे बढ़ रहा है। स्त्रियाँ भी १० कदम पीछे ही रह गई हैं। पीछे से वर के दुशाला को खींचकर भी लज्जा संकोच से उसे रोककर कुछ भी नहीं कह सकती, पर घूंघट के पट में मानों इस गीत के भाव को वह सुना ही दे रही हो और स्त्रियाँ दुलहिन के भाव को इस राइवर के गीत में ही गाकर सुना देती हैं और दुल्हन भी कभी चुपके से इसकी पद पंक्ति को गुनगुना देती है। पर राइवर बराबर शरमा रहे हैं और सब के सामने, साथ-साथ चलने में। इसे राइवर की शालीनता ही समझें।

×××××

सेवरा

सेवरे रंग लागो छे जी बनड़ा, झाऊ थांरा सेवरा री लड लूंबा,

झूबा बना लूंबा झूवारा, सेवरे रंग लागो जी बनड़ा ।।[1]

अर्थ : इस लोकगीत में दुल्हन की ओर से पहले प्रसंग छेड़ा जा रहा है और फिर दूल्हे की ओर से। पहले दूल्हे के सेवरे (सेहरा) की शोभा को लेकर गीत का आरंभ किया गया है। दुल्हन (बनी) कहती है बनाजी! आपके सेवरे का रंग मुझे अच्छा लग रहा है। यह लड़ लूँबो और झूँबों से सुसज्जित झगमग झगमग करता हुआ अत्यंत शोभा दे रहा है।

तब बनाजी (दूल्हे) की बात सुनिए - कितने बेचैन हैं ये -

गीत : लाड़ी जी थांरे लेने भेजूं भूर्यो हसती

मकनां हस्ती रा बैठा आवो वरा थे बनड़ी ।[2]

अर्थ : लाड़ी जी साहबा। मेरी बनड़ी जी। आपको लेने के लिए भूरे रंग का मकना हत्थी बेजता हूँ उस पर बैठ पधारिए।

गीत : आज बनाजी थांरा भूर्या हसती सूँड रूलावे।

पूंज रूलावे रा बैठसी डरूँ छूंजी बनड़ा ।।[3]

अर्थ : बनाजी! आज आपका भूरा श्रेष्ठ हाथी सूँड हिलाता है, पूंछ हिलाता है (यद्यपि प्रसन्नता प्रकट करता है) पर मुझे उस पर बैठते डर लगता है।

गीत : आज लाड़ी जी थांरे लेने भेजूं प्रेम पछेवड़ा।

प्रेम पछेवड़ा ओञया आवो वरा छेजी बनड़ी ।[4]

अर्थ : लाड़ जी। मेरी बनड़ी जी। मैं आज ही आपके लिए प्रेम पछेवड़ा - प्रेमावरण वस्त्र भेजने वाला हूँ उसे ओढ़ कर पधारें, यह तो प्रेम पछेवडा है मकना की सूंड-पूंछ से भयभीत होने की कोई बात नहीं और यदि उससे सचमुच डरती ही हों तो इस प्रेम पछेवडे को ओढ़ें, रथ में पधारिए।

गीत : आज बनी जी थांरे लेने भेजूं सायण बायण रा

सायण बायण रा बेठा आवो वरा छे जी बनड़ी। [5]

1-5. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ. 8-13

अर्थ : बनी जी। आज ही आपको आना पड़ेगा - यदि मकना से डरती हो तो मैं सायण बायण (रथ या सेजगाड़ी) भेज देता हूँ। प्रेम पछेवड़े को ओढ़ कर सेज गाड़ी में ही सेज करती हुई सहज ही पधारें। मगर बनी जी को सेज गाड़ी से भी संतोष नहीं हुआ। और सहज ही कह दिया-

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
M. S. University of Baroda

गीत : आज बनाजी थांरा सायण बायण ढुलकत वाले बना
रुलकत चाले रा, बैठती डरुँ छुं जी बनड़ा ।।[1]

अर्थ : बना जी। बनड़ा जी। आज आपके सायण-बायण इधर-उधर झुकते लुढ़कते चलते हैं और मुझे आज डर लग रहा है।

काव्य द्रष्टि से यह सेहरा लोकगीतों का सेहरा ही है।

×××××

बनी

गीत : गेणला लायो है बनी मुख सुं बोली तो सही
कूँकर बोलूँ ओ बना मुख में पानरी बीड़ी-
हाथ में फूलरी छड़ी।
हुस्यार रेणाओ बनी, समन्दां पार चालांला।
समन्दां पार चालांला, तम्बु वांही ताणाला ।।
तम्बु वांही ताणाला, जाजम वांही रालाला।
जाजम वांही रालाला, चौपड़ वांही खेलाला।
चौपड़ वांही खेलाला, के बाजी वांही जीताला।
चुड़ला लायो ऐ बनी, मुखसुं बोलो तो सही।[2]

अर्थ : हे बनी, मैं तेरे लिए गहने लाया हूँ, जरा मुख से तो बोलो। क्या अब भी नहीं बोलोगी? हे बना मैं कैसे बोल सकती हूँ? मेरे मुख में पान बीड़ी है, हाथ में फूल की छड़ी का छोगा है। बनी सचेत रहना। हम समुद्र पार (परदेस) चलेंगे। अवश्य चलेंगे, वहीं तम्बू तानेंगे, रहेंगे। तने हुए तम्बू में जाजम बिछाएंगे और बिछी हुई जाजम पर चोपड़ का खेल वहीं खेलेंगे। इस चौपड़ के खेल में किसी एक की विजय अवश्य होती है। बनी तेरे लिए सौभाग्य का चूड़ा लाया हूँ। अब मुख से एक बार बोलो तो सही।

× × × × ×

बधावे के गीत (रळी-वधामणा)

यह गीत विवाह के मांगलिक बधावों में गाया जाता है। इसमें गृहस्थ के आदर्श सुख, समृद्धि और कल्याण की कल्पना की गई है। विवाह के बाद वर-वधू के घर आने पर इस गीत से उनका स्वागत किया जाता है-

गीत : म्हारे आंगण आम, पिछोकड़ मरवो।
यो घर सदा ए सुहामणो।
तूँ तो चाल लिछमी जैं घर चालाँ।

---

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ. 113-115

जैं घर रळी ए वधामणा।
जठे वडाँ ने वड़ाई देसी।
दूणो सो मान सवासण्याँ।
जठे कुळ बहुवाँ ने आदर देसी।
सासू नणद गुण मानसी।
म्हारे गाय गवाडे भैंस वाड़े।
सोवण थाम विलोवणो।
विलोवणो म्हा घ्हर धमकै
आँगण झमकै कुलबहू।
संसार को सुख आज देख्यो।
म्हारो पूत परण घर आवियो।
म्हारे पूत कारण बहू ए प्यारी।
पूत कुळ को दीवलो।
म्हारी सास सपूती से रे सरभर रहस्याँ।
जीभ के गुण आगलाँ।
म्हारी देराण्याँ जेठाण्याँ बरोबर रहस्यां।
काम के गुण आगलाँ।
म्हारे सुगणे सायब सैं म्हे मन चाया रहस्याँ।
कूख के गुण आगलाँ।
म्हारी सही ए सहेल्या बरोबरा रहस्याँ।
रूप के गुण आगलाँ।
इसडो बधावो म्हारे पीहर भेजाँ
भाभी मेडतणी रे जायो गीगलो
चितरे से आँगण म्हारी नणदल ऊभी।
द्यौ म्हारी बाई जी असीसडी।
वीरा, फूलज्यो रे फलज्यो आम की डाली ज्यूं,
वधज्यो वागाँ माँयली दूब ज्यूँ।
सात ए भाभी पूत जणज्यो।
एक जणज्यो डीकरी।
थारी धीमड़ ने परदेस दीज्यो।
ज्यूं चित आवे रुड़ी नणदली।[1]

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 52-54

अर्थः मेरे आँगन में आम और पिछवाड़े में मरवे के वृक्ष खड़े हैं, अतएव मेरा घर सुहावना (सुख-संपत्ति युक्त) लगता है।

हे लक्ष्मी, (नववधू को लक्ष्य करके) चल, उस घर को चल जिस घर में वैवाहिक बधाइयाँ और मंगल हो रहे हैं। वहाँ बड़ों को बड़ाई देना और बहन-बेटियों का दुगुना मान बढ़ाना।

उस घरमें कुलवधू का आदर होता है और वह सास ननद का गुण गाती है-सम्मान करती है। सास कहती है - मेरे घर में गाय और भैंसो से बाड़ा भरा है और सोने के खंभे से मथानी बँधी है।

मेरी मथानी गंभीर ध्वनि से धमकती है और मेरी बहू आँगन में काम करती हुई झमकती है। आज मैंने संसार का पूर्ण सुख देखा है कि मेरा पुत्र ब्याह कर घर आया है। मेरे पूत से भी मेरी पुत्रवधु अधिक प्यारी है और पुत्र तो कुल का दीपक है।

नववधू कहती है - अपनी सुपुत्रवती सास से मिलकर रहूँगी और अपने जीभ (की मिठास) के गुण से उसकी प्यारी बनी रहूँगी। कामकाज के गुणों में मैं अपनी देवरानी-जेठानी के बराबर रहूँगी। (पुत्रवती होकर) कोख के गुणों से मैं अपने सुगुणी पति के चित्त में बसूँगी और रूप सौंदर्य के गुण से मैं अपने सहेलियों के बराबर रहूँगी।

नववधु अपने पति से कहती है - स्वामी, इस बधाई को मैं व्यर्थ ही न जाने दूंगी। यह सुअवसर मुझे बहुत समय बाद मिला है। मैं इस 'बधावे' को (भावनाओं को) अपने पीहर भेजूँगी, जहाँ मेरी भावज के पुत्र जन्मा है। ननद बाई कहती है - हे भाई, आम की डाली की तरह फूलो फलो और समृद्धि पाओ जिस प्रकार दूब बाग में बढ़ती है। और हे भावज तू सात पुत्रों की माँ बने और एक पुत्री भी जने। उस पुत्री को परदेश में ब्याहना ताकि परदेस-बासिन उस प्रिय पुत्री के मिस से मैं, तेरी ननद, तुझे याद आती रहूँ।

बधावे का गीत :

पोलीड़ा पोल उघाड़जी।
म्हां ने घर भीतर जाँण द्यो जी।
जठे सुसराजी रो राज जी।
म्हारे सुगणे सायब री सायबी।
हसतीड़ा घूमै छै बार जी।
म्हाँरे बँध्या बैल्या जो चरै।
बामण को करै ए रसोईजी।
म्हारे दूध कढ़ै घी आवटै।
अन धन भरया ए वखारजी।
म्हारे चौरस लिछ्मी ओघणी।
सोनो घड़ै ए सोनारजी।
म्हारे गहणाँ रा डब्बा भरया।
मनां ए बधावो म्हांरे चित्ताँण बधावोजी।[1]

उठके जाणाँगा म्हे पूतजी।
म्हे कराँगा साजनिया सैं गोठडी।
मलके चढेगी बरात जी।
म्हारे पगाँ ए पड़ंती आवै कुलबहू।
इबके जणाँगा म्हे धीय जी।
म्हे तो कराँगा साजनिया सैं वीनती।
मुळकत आवेगी बरात जी।
म्हारे बरसत आवै रुड़ा भात जी।
सरब सुख भयो ए अनंत जी।
म्हाँरी धीय जँवाई ले गया जी।
मनाँ ए बधावो म्हां रे चितां ए बधावो जी।

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 58-60

अर्थ : नववधू की कल्पना है। वह ससुराल आकर कहती है- ए दरबान, फाटक खोल, मुझे घर में जाने दे, जहाँ मेरे ससुरजी का राज है और मेरे गुणवान स्वामी का स्वामीत्व है।

हाथी दरवाजे पर घूम रहे हैं, रथ के बैल बँधे हुए जौचर रहै हैं। ब्राह्मण रसोई बना रहा है। दूध निकल रहा है, घी औट रहा है। अन्न-धन से भंडार भरे हैं। सब प्रकार से लक्ष्मी की कृपा है। सोनार सोना गढ़ रहा है, गहनों से मेरे संदूक भरे हैं। मेरे मन में उल्लास, चित्त में उमंग है। मेरे पुत्र होगा। मैं स्वामी से परामर्श करके उसकी सगाई करुँगी। उमंग के साथ बरात चढ़ेगी और मेरे पैरों पड़ती हुई कुलवधू घर में आएगी।

अथवा मेरे पुत्री होगी। मैं स्वामी से परामर्श करुँगी। सजधज के साथ बरात मेरे घर आएगी और भात भरने के लिए मेरा भाई बरसते हुए मेघ की उदारता के साथ आएगा। मेरा जँवाई पुत्री को ले जाएगा। मेरे मन में उल्लास और चित्त में उमंग है। मुझे अनंत सुख है।

×××××

माहेरा (भात)

विवाह के अवसर पर माहेरा भरने की प्रथा होती है। पुत्र या पुत्री के विवाह के अवसर पर बहिन अपने भाई के पास पीहर जाती है व उससे याचना करती है कि अमुक-अमुक व्यक्तियों को उनकी मनपसंद वस्तुएँ देना। भाई निश्चित समय पर अपने पूरे परिवार के साथ 'माहेरा' लेकर अपनी बहन की ससुराल जाता है। भाई के पहुँचने से पूर्व बहन को उसकी सास, ननद, देवरानी सभी ताना मारती हैं। भाई के पहुँचने पर उसके आँसू रोके नहीं रुकते। वह भाई पर गर्व करती हुई कहती है-

गीत : वीरा रे म्हारे चोवटे ने पेरायो, चोरासी सरायो
मायरो पेराओ पहली म्हारे सेरिया में,
पाड़ोसी सरायो मायरो।
वीरा ओ पहलां म्हारे सासूजी ने पेराओ,
सुसराजो सरायो मायरो।
वीरा ओ पहली म्हारा जेठाणी ने पेराओ,
जेठसा सरायो मायरो।
वीरा ओ पहली म्हारी दौराणी ने पहराओ,
देवरसा सरायो मायरो।
वीरा ओ पहली म्हारी नणदल ने पहराओ,
नणदोई सा सरायो मायरो।
वीरा ओ पहली म्हारी बहिनां ने पेराओ,
बेनोईसा सरायो मायरो।
बाई मल म्हारी बेन बांयड़ली पसार।
बाई गरबी, गरबी, के थारे पूतड़ला रो राज?
के थारे धन को गरबो? वीरा ओ पुत्र परमेश्वर को साल,
धन को कई गरबो?

बाई ए मल म्हारी बांयड़ली पसार,

जामण रो जायो अबे मिलियो।[1]

अर्थ : वीरा ओ। मायरो पहले चौहट्टे के लोगों को पहनाओ। सारी चौरासी के लोगों ने इसकी सराहना की है। वीरा ओ। मायरा पहले मेरे पड़ोसी को पहनाओ। पड़ोसी ने मायरे की सराहना की है। वीरा ओ। पहले मेरी सास को पहनाओ। सुसराजी ने मायरे की सराहना की है। वीरा ओ। मेरी जेठाणी जी को पहनाओ। जेठजी ने मायरे की सराहना की है। पहले मेरी देवराणी को पहनाओ। देवरजी ने मायरे की सराहना की है। पहले मेरी ननद को पहनाओ। ननदोई जी ने मायरे की सराहना की है। वीरा ओ। अब अपनी बहन को पहनाओ। बहनोई जी ने मायरे की सराहना की है। बाई तुम बाँह फैला कर मिलो। बाई तुमको गर्व कितना है? क्या तेरे पुत्रों का राज है? अथवा तुझे धन का घमंड है? भाई ओ। पुत्र तो परमेश्वर का धन है और धन का तो क्या गर्व किया जाए? बाँहे पसार कर मिलो। माँ जाया भाई अब मिला है।

×××××

ओळ्यूँ (ओलू)

कन्या को जब विदा किया जाता है तब ओलू के गीत गाए जाते हैं। इन गीतों के भाव इतने करुण होते हैं कि सुनने वाले की भी आँखें छलछला आती हैं।

गीत : म्हे थाँने पूछां म्हारी धीवड़ी।

म्हे थाँने पूछां म्हारी बालकी।

इतरो बावैजी रो लाड छोड़ र बाई सिध चाल्या?

म्हे रमती बाबोसा री पोल

आयो सगेजी रौ सूवटौ गायडमल ले चाल्यौ

म्हे थांने पूछाँ म्हारी धीवड़ी।

इतरौ माऊजी रौ लाड़ छोड़ र बाई सिध चाल्या?[2]

अर्थ : मैं पूछती हूँ मेरी लड़की। मैं तुझे पूछती हूँ मेरी बालिका। इतना बाबाजी का लाड़ प्यार छोड़कर कहाँ चली? मैं बाबोसा की पोल में खेल रही थी। इतने में सगोजी (रिश्तेदार) का सुआ आया और मुझे गायड़मल ले चला। मैं तुझे पूछती हूँ मेरी बेटी। इतना माउजी का लाड़ छोड़ कर कहाँ चली?

×××××

लाड़ प्यार से पाली हुई कन्या के घर छोड़ कर जाने से घर सूना हो जाता है। उसकी सहेलियाँ उदास हो जाती हैं। कहीं पर गीतों में कन्या की उपमा कोयल से दी जाती है जो उपवन छोड़कर जा रही है-

गीतः वनखंड री ए कोयल, वनखंड छोड़ कठै चाली?

थारी आले-दिवाले गुड़ियाँ धरी?

वनखंड री ए कोयल, वनखंड छोड़ कठै चाली?

थारी साथ सहेल्याँ उगमणी

वनखंड.... चाली?

---

1. राजस्थानी साहित्य का इतिहास, अध्याय तृतीय : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 160-162

थारी माऊजी थारे बिन उगमणा
थारी छोटी बैनड रोवे अकेलड़ी
वनखंड..... चाली?
थारौ वीरो सा फिरे छै उदास
विलखत थारी भावजणी
वनखंड री ए..... चाली?[1]

अर्थ : उपवन की ए कोयल, उपवन छोड़कर कहाँ चली? आलों में तेरी गुड़िया पड़ी है। उपवन की ए कोयल.... चली? तेरी साथ की सहेलियाँ उदास हैं। उपवन की.... चली? तेरे माऊजी तेरे बिना उदास है, तेरी छोटी बहन अकेली रो रही है। उपवन की .... चली? तेरे भाई उदास घूम रहे हैं। तेरी भौजाई बिलख-बिलख कर रो रही है। उपवन की कोयल, उपवन छोड़कर कहाँ चली ?

×××××

माहेरा रो गीत

गीत : चढ़ देखूँ चाँदनी पेजाय बीरोजी दीखे आवता।
छापर झलकियां छे सेल, घाटी में नगारो गूंजियो।
वीराजी घोड़ी रे गले घूघर माल, पगांरा नेवल पाजणा।
निरखे सात सहलियाँ रो साथ, वीरोजी दीखे आवता।
कंचण कलस वंदाय वीराजी री करां ला आरती।
आया मारा जामण जाया वीर, चूंदड़ लाया रेसमी।
मापुँ तो हाथ पचास, तोलुं तो तोला तासरी।
मेलुं तो छाब भराय, ओडुं तो हीरा जड़ पडे॥
ओडूंमारा लाला रे विहाव, पल्ला मेलुं रलकता।
देखे मारा देवर जेठ जीणो काढूं घूंघटो ॥[2]

अर्थः इस गीत में बहन कहती है कि मैं चाँदनी पर चढ़ कर देख लूँ कि मेरे भाई आते हुए दिखते हैं या नहीं। चढ़ कर देखते ही उसने खुले जंगल के मार्ग में दमकते हुए भाले को देखा और घाटियों में नगारे की ध्वनि प्रतिध्वनित होने लगी। भाई की घोड़ी के गले में घूघरे और पैरों में नेवरिये बज रही हैं। वह बहन अपनी सात सहेलियों के समूह में भाई को आते हुए देखकर उनसे कहने लगी कि मेरे भाई की सुवर्ण कलश से वंदना करुँगी-कलश बँधाऊँगी। यह मेरी माता से जन्म लेने वाला सहोदर है। मेरे ओढ़ने के लिए रेशम की साड़ी लेकर आया है जिसको नापूं तो पचास हाथ और तोलूँ तो तीस तोले भर की होती है, यदि इसे रख देतू हूँ तो टोकरी भर जाती है और यदि ओढ़ती हूँ तो इसमें हीरे लगे हुए हैं, जो गिर पड़ते हैं, किंतु इसको तो मैं अपने पुत्र के विवाह में अवश्य ओढूँगी और पल्ले को खुले रखकर घसीटते हुए रखूँगी। जिस समय मेरे देवर-जेठ देखेंगे तो मैं उनका झीना झीना घूँघट निकालूँगी।

×××××

1. राजस्थानी साहित्य का इतिहास, अध्याय तृतीय : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 162
2. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ. 14-15

ओळयूँ (प्रिय की याद) – स्त्रियाँ लड़की की विदाई के वक्त गाती हैं।

गीत : हरिये वन री कोयली।

थारे बाबोसा बाग लगायो ए बनड़ी, थारे बिन कुण सींचेगो।

म्हारे हरिये वन री कोयली ॥[1]

थारे बागाँ में फुलड़ा फूल्या ए बनड़ी, थारे बिन कुण तोड़ेगो।

म्हारे हरिये वन री कोयली ॥

थारे बागाँ में हींडो घाल्यो ए बनडी, थारे बिन कुण हींडेगो।

म्हारे हरिये वन री कोयली।

आंगणिये माँय थारो रोवत भतीजो, थारे बिन कुण खेलावेगो।

म्हारे हरिये वन री कोयली।

सँग री सहेल्याँ थारी घर नहिं झाँके, बै देख दूरां सैं ही जावे ए।

म्हारे हरिये वन री कोयली।

कोई य न अब म्हारे आँगण खेलै, यो तो सूनो दरसावे ए।

थारी माता को हिवड़ो ऊझळै, बा तो नैंणा नीर बहावै ए।

अर्थ : तेरे पिता ने सुंदर बागा लगाया है, पर अब उसे तेरे बिना कौन सींचेगा? ए मेरे हरे वन की कोयल। तेरे बाग में फूल खिले हैं, उन्हें तेरे बिना कौन तोड़ेगा? बाग में झूला पड़ा है, उस पर अब कौन झूलेगा? घर के आंगन में तेरा भतीजा रोता है, उसको अब कौन खिलावेगा? तेरी सहेलियाँ अब इस घर में झाँकती तक नहीं, दूर से ही देख कर चली जाती हैं। माता कहती है – बेटी मेरे आँगन में अब कोई नहीं खेलता, यह सूना पड़ा है और तेरी माता का हृदय – वह तो उससे भी अधिक सूना पड़ा है। और वह रात दिन आँखों से आँसू बहाती है। ए मेरे हरे उपवन की कोयलिया।

×××××

जँवाई का गीत

गीत : ओ जमाई माने प्यारा लागोरा

अमां मारी दशरथ राजकुमार

जमाई माने प्यारा लागोरा।

जमाई ने पागा सोवेरा

अमां मारी पेचांरा निरखणार

जमाई माने प्यारा लागोरा।

ओ जमाई थांने गोपां सोवेरा

अमां मारी डोरारा निरखणहार।

जमाई माने प्यारा लागोरा।[2]

---

1. राजस्थानी लोकगीत, स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 71-72
2. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ. 18-19

ओ जमाइ थांने बनड़ी सोवेरा

अमां मारी लेझांरा निरखणहार

जमाई माने प्यारा लागोरा।

अर्थ : सास को अपना जमाई दशरथ राजकुमार राम के समान ही गुणवान, सुंदर और प्यारा लग रहा है। इससे बढ़कर और क्या प्यार की पराकाष्ठा हो सकती है। उसकी प्रत्येक वेश भूषा, अलंकार और आभूषण उसकी द्रष्टि में शोभा दे रहे हैं और सास का प्यार उमड़ पड़ रहा है। इन सब को यथावत देख भाल कर पहनने वाले जमाई के चातुर्य पर वह रीझी जा रही है और अंत में उसकी अपनी प्राणों की प्यारी दुलारी बनड़ी जमाई को ही शोभा देती है, गाकर अनुराग का झरझर करता हुआ नद प्रवाहित कर देती है। फिर अपनी सास के प्रति अनंत श्रद्धा और सद्भावना क्यों न उमड़ पड़े ?

×××××

जँवाई की प्रतिक्षा का गीत

ससुराल वाले अपने जँवाई को कहलवाते हैं कि आपकी हमें ओलू (याद) आती है, अतएव शीघ्रातिशीघ्र पधारें। हम आपका आतिथ्य-सत्कार करने के लिए बड़े उत्सुक हैं। आप ससुराजी के आँगन में सुनार को बसा दीजिए, गहने बनवाने के बहाने आप यहाँ पधारें। अब गीत प्रस्तुत है-

गीत : झिर मिर झिरमिर मेह सड़लो (जी) बरसे,

मैड़ियाँ में चँवण लागो ॥

मैड़ियाँ तो जँवाइयाँ परी रे फेरावो।

जिण ऊपर टीप दीराओ ॥

मैडियाँ में जँवाइयों मूँग रलाऊँ,

जिण ऊपर हिंगलू ढोलियो ढलाऊँ।

मैड़ियाँ में जँवाइयाँ दिवलो (जी) उजावो,

चारों ने दिसां में ह्वेला चांनणो।

ढोलिया ऊपर पोढण थे आवो ओ म्हाँरी,

बाई सा रा सायबा।

ओलूड़ी आवै नै बाई नै धान(जी) नहीं भावै,

फिरताँ गिरताँ नै काँई चिन्ता लागी।

सुसराजी रे आँगणिये जँवाईयाँ सोनीडो दो,

गहरण रे मिस आवो।[1]

अर्थः आखातीज (अक्षय तृतीया) पर पुत्री का 'मुकलावा' (गौना) कराया गया है। जेठ (ज्येष्ठ) आषाढ़ का मास आ गया परंतु उसको वापस अपने पीहर नहीं भेजी। माता-पिता और भाई-भौजाइयों से मिले अधिक समय हो जाने से उसे अपने कुटुंबियों की याद आती है। वह अपने पति सोढ़ाजी राणा से पीहर भेजने के सानुरोध सादर प्रार्थना करतीं है -

---

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग-2 : शिवसिंह चोयल, पृ. 22-23

मुकलावा (गौना)

गीतः सोढ़ाजी राणा। आयो आयो जेठ (ए) आषाढ़,
लगतो आयो ओ सावण-भादवो।
सोढ़ाजी राणा, म्हनै म्हारै पीवर मेहलो,
ओलड़ी आवे ओ म्हारा बाप री ॥
सुंदर गौरी ऐ, औलू थारी मादलिये मतराव,
सालों री बहनड़।
ओलू थारी मादलिये मडाव,
बापरा भौला सुसराणी भौगसी ॥
सुसरोजी म्हारे धरमिया रा बाप,
उठै नै प्रभातै बहु-कह बतलावै।
राजिन्दा ढोला, म्हनै म्हारै पीवर मेहलो
ओलड़ी आवे ओ म्हारा बापरी ॥[1]

अर्थ : पति से पत्नी ने पीहर भेजने के लिए कहा। पति ने कहा बाप की जगह ससुरजी (श्वसुर) को समझ लेना। इस पर पत्नी ने कहा कि ससुरजी तो केवल धर्म के पिता हैं। वे मुझे सुबह हमेशा पुत्रवधू (बेटे की बहू) के नाम से संबोधित करेंगे। (पुत्री तो मेरा पिता ही कहेगा)। अतएव आप मुझे मेरे पीहर भेज कर कृतार्थ कीजिएगा।

×××××

जला

गीत : जल्ला रे म्हुँ तो राज रा डेरा निरखण आई रे
प्राण प्यारी रा जल्ला, मीठा बोली रा जल्ला
मृगानेणी रा जल्ला, म्हुँ तो राजरा डेरा निरखण आई रे जल्ला,
जल्ला देखी रे थारे डेरा री चतुराई रे जल्ला
जल्ला रे आवलियाँ पाकी ने वा रितु आई रे जल्ला.. मीठा.. डेरा
जल्ला बावडी कूडली रो खारो पांणी रे जल्ला
मृगानेणी रा..... जल्ला.
जल्ला खारो पाणी सोकड रे पोचाउं रे
मीठा बोली रा जल्ला, मृगा नेणी रा जल्ला
मीठो पाणी म्हारे पीहरिये पोचाऊँ रे जल्ला
हंसा हाली रा जल्ला म्हुँ तो राजरा डेरा निरखण आई रे।[2]

अर्थ : इस जले के गीत में नायिका अपने नायक को संबोधित करती हुई अन्य स्त्रियों के द्वारा गायन में कहलाती है कि जलाल। मधुरभाषिणी प्राणप्यारी के जलाल। मृगनयनी के जलाल। मैं तो तेरे शामियाने को

1-2. राजस्थानी लोकगीत, भाग-2 : शिवसिंह चोयल, पृ. 52-53

निरखने के लिये ही आई हूँ, मैंने तेरे शामियाने की चतुराई देख ली है। हे जलाल। मैं बावडी और कुआँ खुदवाती हूँ। यदि पानी खारा निकल आया, तो वह पानी मैं अपनी सौतों के लिए भेजूँगी और मीठा पानी आया तो मैं अपने पीहर भेजूँगी।

×××××

सूवा का गीत

गीत : सुण रे सूवा लाखीणा,
थू म्हारे पीवर जाय रे ॥
जाय नै म्हारा भाभोसा नै इयूँ कहिजै।
थाँरी जायी बसे प्रदेश, रे नीबूड़ा।
झुरनी है तो झुर लीजे
थाँरी जायी बसे प्रदेस रे नीबूड़ा ॥[1]

अर्थः एक बालिका सूआ (तोते) से कह रही है कि हे सूवा। तू मेरे पीहर जाकर मेरे पिताजी से कहना कि तुम्हारी पुत्री प्रदेश (ससुराल) में दुःखी है। जितनी चिन्ता कर सको, उतनी थोड़ी है। वेदना के भावावेश में सूए को पीहर जाने का आदेश उसके दुःख की चरम सीमा को प्रकट करता है।

×××××

सूवटो

सूवा, नरवर जायगो तूं ही ओ
सासू सुसरैजी न कहियै पगां रै लागना।
नणदल नै याद कहीओ
सूवा, नरवल जायगो तूं ही ओ।
परण्ये ने कहिजै, सूवा, सात रे सलामी
देवर ने प्यार सही ओ
सूवा, नरवल जायगो तू ही ओ
घर गुजरी कै सूवा वासो रे लीजै
चालैगी दूध दही ओ
सूवा नरवल जायगो तूं ही ओ।[2]

अर्थः अपने पिता के यहाँ से नायिका तोते के साथ ससुराल संदेश भेजती हुई कहती है हे तोता। तू नरवल जाना मेरी सास-ससुर को चरण वंदन कहना। मेरी ननद को मेरी मधुर स्मृति। मेरे प्रियतम को मेरी सात सलाम कहना और उनके छोटे भाई को प्यार। गुजरी के घर जाकर वास करना वहाँ वह तुम्हें दूध-दही खिलाएगी।

×××××

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग-2 : शिवसिंह चोयल, पृ. 62-63
2. राजस्थानी लोकगीत, भाग-3 (विरह, प्रकृति और भक्ति) : हनुमंतसिंह देवड़ा

पति–पत्नी के गीत (संयोग में)

प्रेम के प्रतीक वृक्षों के गीत यथा आँबो, बड़लो

गीत : आदर्श–गृहस्थ (आम्बो) : प्रायः ऐसे गीतों में स्त्री हृदय के भाव ही रहते हैं। एक सद्गृहस्थ स्त्री अपने परिवारजनों को किस द्रष्टि से देखती है–

मधुबन रो ए आम्बो मोरियो।
ओ तो पसरयो है सारी मारवाड़।
सहेल्याँ ए आम्बो मोरियो।
बहु रिमझिम महलाँ सूँ उतरी।
आतो कर सोळा सिणगार। सहेल्याँ ।।
सासू जी पूछ्यो ए बहू।
थारो गहणो म्हाँने पहर दिखाव ।। सहेल्याँ ।।
सासू गहणे नें काँई पूछो।
गहणो ओ म्हारो सो परिवार ।। सहेल्याँ ।।
म्हारा सुसरा जी गढाँ रा राजवी।
सासूजी म्हारा रतन भंडार ।। सहेल्याँ ।।
म्हारा जेठजी बाजूबंद बाँकड़ा।
जेठाणी म्हारी बाजूबंद री लूंब ।। सहेल्याँ ।।
म्हारो देवर चुड़लो दाँत रो।
देराणी म्हारे चुड़ले री मजीठ ।। सहेल्याँ...
म्हारो कँवरजी घर रो चाँदणो।
कुलबहू ए दिवले संजोता।। सहेल्याँ....
म्हारी धीय ज हाथ री मूँदड़ी।
जँवाई ए म्हारो चँपले रो फूल ।। सहेल्याँ....
म्हारी नणद कसूमल काँचळी।
नणदोई म्हारे गजमोत्याँ रो हार ।। सहेल्याँ....
म्हारो सायब सिंर रो सेवरो।
सायबाणी एम्हे तो सेजाँ रा सिणगार।। सहेल्यां
म्हे तो वार्‌या ए बहू जी थारा बोला ने।
लड़ायो म्हारो सो परिवार ।। सहेल्यां...
म्हे तो वार्‌या ओ सासूजी थाँरी कोख ने।
थे तो जाया अरजण–भींव। सहेल्याँ ।।[1]

अर्थ : परिवार–रूपी मधुवन के आम में बौर आया है। यह आम फैल कर सारे मारवाड़ में छा गया है। सखियों, आम में बौर आया है। इस प्रकार कहती हुई सोलह श्रृंगार सजकर बहू रुनझुन करती महलों से उतरी। सास ने कहा, बहू बलि जाऊँ तेरे सौंदर्य पर, मुझे अपना गहना दिखा तो सही। कुलीन बहू उत्तर देती है – सासूजी, मेरे गहने क्या देखोगी? मेरा सारा परिवार ही मेरा गहना है। मेरे ससुरजी गढ़पति हैं, सास जी रत्नों की भंडार है। जेठजी मेरे बाँके बाजूबंद हैं और जेठाणी बाजूबंद के मुँदेन। देवर मेरे हाथ का हाँथीदाँत का चूड़ा हैं और देवरानी उस चुड़ले पर चित्रित चित्रावली। मेरे कुँवर घर का उजियाला दीपक है और कुँवरानी उस दीपक की ज्योति। मेरी प्यारी पुत्री मेरी अंगुठी हैऔर जँवाई चंपक का फूल। ननद मेरी कसुंबी काँचली है और ननदोई गजमुक्ता का हार। मेरा स्वामी मेरे सिर का सेहरा है और मैं उनकी धर्म पत्नी हूँ, उनके दांपत्य–सुख का श्रृंगार। इस शील वचन पर सास मुग्ध हो कर कहती है – धन्य बहू तुम्हारे वचन धन्य हैं। तूने मेरे सारे परिवार को गौरवान्वित किया। बदले में विनयपूर्वक बहू कहती है – सासजी, धन्य हैं आप की कोख, जिसने अर्जुन, भीम जैसी सुयोग्य संतान पैदा की।

×××××

---

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 50-52

बड़ले का गीत

गीत : बड़ला कुणै ने लायो थारो बीज रे,
कुणै नैं सपूती बडलो छोबियो।
बड़ला बलराजा लायो थारो बीज
माता नै कुंता ओ बडलो छोबियो।
बड़ला छोबियो-छोबियो वार ए सुवार
चानणी चवदस ने बड़लो छोबियो।
बडला बाजिया-बाजिया सोवन थाल,
ए सोना री सुरियाँ सूँ नाला मोड़िया।
बड़ला बारह नै कोसों मे थारो गोड़।
चौबीस कोसों में डाला पानड़ा।
बडला जड़ थारी गई रे पियाल,
चोटी तो गढ़ रे कांगराँ।।
बड़ला काय सूँ बँधाऊँ थारी पाल,
काय सूँ सिंचाऊँ थारो गोड़।
बडला माखणिये बँधाऊँ थारी पाल,
दही नै दूधाऊँ बड़लो खींचियो।।
बड़ला आयो आयो राखड़ियो (रो) तहेवार,
कुण ने बाँधे ओ थारी राखड़ी।
बरला म्हाँरे है राठौड़ों री रीत,
जोसी बाँधे ओ म्हारे राखड़ी।
बाई ए थारे घर धीवड़ लियो रो बियाव
कुणै नै ओढ़ावै वाला चून्दडो।
वीरा ओ करुँला धरमिया रो बीर,
वोही नै ओढ़ावै वाला चून्दड़ी।।
वोहीनै परहावे हस्ती चूड़लो।
माजी जाया जाया पाँचो ही पूत,
एक ही नहीं जायी घर में धीव।।
माजी परणिया-परणिया पाँचो ही पूत,
कंवारो रेहगो ओ घर रो आँगणो।
जप्या करो (नी) धरमिया री बहन,
वोही नै परणावो घर रे आँगणे।।[1]

---

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग-2 : शिवसिंह चोयल, पृ. 54-57

अर्थ: श्रावण मास में रक्षाबंधन अथवा राखड़ी का पवित्र त्यौहार आता है। बहन अपने भाई के राखी बाँधती है। उपर्युक्त गीत में बड़ला वृक्ष के संबोधन कर कुंती और पांडव भीम का संवाद है। बड़ले से पूछा गया है कि तेरा बीज कौन लाया और किस सपूती ने तुझे बोया है? प्रत्युत्तर मिलता है बलि राजा तो बीज लाया और कुंती माता ने चानणी चवदस और सोमवार के दिन लगाया। बड़ले का आकार बारह कोसों में बतलाया। दूध-दही से सिंचाया। मकराने के संगमरमर पत्थर से पाल बंधवाई।

रक्षाबंधन के दिन बडले के नीचे बैठी हुई अबला कुम्हारी द्वारा भीम से पूछा गया है कि तेरे राखी कौन बाँधेगा? इस पर भीम कहता है - ब्राह्मण। अंत में भी अपनी माता कुंती से कहता है कि तूने पाँच पुत्रों को ही जन्म दिया है और उनके विवाह किए हैं। किंतु घर का आँगन कँवारा ही है। इस पर माता कुंती ने कहा कि पुत्र। धर्म की बहन बनाकर उसे अपने आँगन में ब्याहाओ (परणावो)।

×××××

मिरगानैणी

गीत : सूरज जिसो ए उजास मिरगानैणी राजा।
चाँदे जिसी ए वा धण निरमली जी म्हाँरा राज।
दूधाँ जिसो ए उफाण, घणी ए प्यारी जी राज।
दही ए सरीसी वा घण कठकठी म्हाँरा राज।
मिसरी जिसो ए मिठास मिरगानैणी जी राज।
लूँब सरीसी प्यारी चरचरी जी म्हाँरा राज।
सीस वण्यो ए नारेल मिरगानैणी जी राज।
चोटी सो कहिए वासगनाग की सी म्हाँरा राज।
नैण नींबू की जी फाड़, मिरगानैणी जी राज।
भँवारे भँवरो भँवे जी म्हाँरा राज।
नाक सूवा केरी चूँच मिरगानैणी जी राज।
अधराँ तो लाली अेछा रही जी म्हाँरा राज।
दाँत दाड़म का जी बीज मिरगानैणी जी राज।
जीभडल्याँ तो इमरत वसै जी म्हाँरा राज।
वेलण वेली जी बाँह मिरगानैणी जी राज।
मूँगफली सी घण री आँगळी जी म्हाँरा राज।
मगर वण्या मसतूल रिमगानैणी जी राज।
पसवाड़ा तो पासे ढालियार जी म्हाँरा राज।
पेट गवाँ की जी लोथ मिरगानैणी जी राज।
सूँडी तो कहिये रतन कचोलियाँ जी म्हाँरा राज।
जाँग केळै को जी थाँम मिरगानैणी जी राज।
पींडी तो कहिये रतनाळियाँ जी म्हाँरा राज।

पाँव पीपळ को जी पात मिरगानैणी जी राज।

अेडी तो कहिये सुरंग सुपारियां जी म्हाँरा राज।[1]

अर्थः मृगनयनी के शरीर की आभा सूर्य के प्रकाश जैसी है और चाँद की चाँदनी की तरह उसका निखरा हुआ शीतल उजास है। दूध के उफान की तरह उसके यौवन का उफान है और जमे हुए दही की तरह उसका शरीर मांसल और गठित है। (यह गठन और मांसलता, लावण और स्वास्थ्य के द्योतक हैं।) मृगनयनी की मधुरिमा मिश्री की मिठास जैसी है और लवंग के समान वह चरपरी है। मस्तक की बनावट नारीयल की सी है और वेणी वासुकिनाग जैसी है। सुंदरी के नेत्र नींबू की फाँक के सदृश हैं और भौंहें भँवरे जैसी। नाक सुग्गे की चोंच के समान है और ओठों पर लाली छाई हुई है। जीभ में अमृत बसता है और दाँत अनार के बीज जैसे हैं। उसकी भुजाएँ इतनी सुढार हैं मानो बेलन से बेली जा कर बनाई गई है, और ऊँगलियाँ मूँगफली जैसी हैं। मृगनयनी की पीठ मखतूल के समान कोमल है और पार्श्व मानो साँचे में ढाले हुए हैं। उदर की बनावट और कोमलता ऐसी है मानो गेहूँ के गुँधे हुए आटे का लौंदा हो। नाभि रत्नों की प्याली है। जंघा कदलीखंभ सी और पिंडलियाँ आभायुक्त हैं। पाँव ऐसे सुकुमार चंचल और चमकीले हैं जैसे पीपल के पात, और एडी सुपारी की तरह सुरंगी है।

लहरियो (लेरियो)

गीत : मारा चितड़ारा चोर मारा मनड़ा रा मोर

माने जैपुरीया रो लेरीयो ओढा दो ओ रसिया।

हिल मिल रंग माणो॥

अर्थः पत्नी पति देव से कहती है कि मेरे चित्त को चुराने वाले, मेरे मन के मयुर। सिरमोर। मुझे आप जयपुरिया लहरिया ओढ़ा दें और हिलमिल कर आनंद प्राप्त करें।

गीत : चन्दा वदनी नार आई बागां की बहार

थांने जैपुरिया रो लेरिया ओढ़ा दियां ए सजनी। हिल....

अर्थः पति उत्तर देता है कि हे चन्द्रवदनी सजनी। अब उपवनों में भी हार गई है। तुम्हें अवश्य जयपुरिया लहरिया ओढ़ा दूँगा। और फिर परिचय की शैली और बढ़ती माँगें...

गीतः थांको कांई छे जी नाम, थांको कांई छे जी गाँव।

माने हाथां री बंगड़ी गडादो ओ रसिया। हिल मिल रंग....

अर्थः श्रीमतीजी रसिक बिहारी जी से पूछती हैं कि हे रसियाजी आपका नाम क्या है? और निवास स्थान कहाँ है? मुझे हाथों में पहनने की बंगड़ी तो बनवा दो।

गीतः म्हां को सुघड़ जँवाई नाम थाँको रास ए मकान।

थांने हाथां री बंगड़ी गडादियां ए सजनी। हिलमिल।[2]

अर्थः रसियाजी उत्तर देते हैं कि हे सजनी। मेरा नाम जमाई है और मेरा निवास तेरे ससुराल में है। हे सजनी मैं तेरे लिए पहनने की बंगड़ी भी घड़ा दूँगा।

---

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 66-67
2. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ. 26-27

दांपत्य जीवन के गीत (वियोग श्रृंगार)

वियोग श्रृंगार में जो मार्मिकता होती है वह संयोग श्रृंगार में नहीं। साहित्य में इसी कारण वियोग श्रृंगार के चित्र अधिक मिलते हैं। यहाँ जो गीत प्रस्तुत है उसमें विरह वर्णन है। पति विदेश में है। उसके बिना सारा संसार शून्य, निष्प्रभ है। विरहणी रोकर गाती है-

गीत: तूं क्यों ए मेड़ी वैरण डगमगी, थारी लगी ए धरम की नींव।
अेक दिन साजन आप चिणावता।।
रावटी पुराणी भँवरजी हो गई जी।
हो जी कोई टपकण लाग्या जूण ।।
इब घर आवो, गोरी का सायबा जे।
पिलँग पुराणा भंवड़ जी हो गया जे ।।
हाँ जी कोई तड़कण लाग्या साल।
इब घर आवो सुंदर रा सायबा जे ।।
हिंगळू में जालो भँवरजी पड़ गया सैवळ।
इब घर आवो अंधियारे घर रा पावणा जे ।।
सावण आवण भँवर जी कह गया जे।
हाँ जी कोई बीत्या बारा मास ।।
इब घर आवो अंधेरे घर रा चानणा जे ।।
पींपल सुरै भँवर जी फूल ने जे ।।
हाँ जी कोई फल ने झुरै ए फरांस ।।
गोरी तो सुरै अपने स्यांम ने जे ।।
झुर झुर मारु जी मैं पिंजर हो गई जै।
हॉ जी कोई बिदरँग हो गयो वेस।
इब घर आव्या अँधेरे घर रा चानणा जे।[1]

अर्थ: एकांत में खड़ी मेरी ऊँची मेड़ी (महल) तू क्यों डगमगाई? तेरी तो शुभ मुहूर्त में नींव लगी है और स्वयं स्वामी ने खड़े रहकर तुझे चुनवाया है। (प्रेमी के स्नेह और ममता के ईंट गारे से इस विरहणी का पवित्र प्रेम भवन बना है। वह इसका हृदय मंदिर है जो विरहाग्नि में झुलस कर डगमगा रहा है) प्रिय, यह कोठरी पुरानी हो गई है और उसके छिद्रों से जल टपकने लगा है। अब तो आजा मेरे प्रिय। पलंग भी पुराना हो गया और उसका चौखट अब चटखने लगा है। सुंदर स्वामी, अब तो घर आ जा। मेरी सौभाग्य बिंदुली के 'हिंगलू' में जाला लग गया है और आँजने के काजल में सिवार जम गई है। मेरे अंधेरे घर के पाहुने, अब तो घर आ जा।

हे रसिक, सावन में लौटने का वचन दे गए थे, पर बारह मास बीत गए। मेरे अंधेरे घर के उजियारे, अब तो आ जा।

पीपल फूलों के लिए आजीवन रोता है और फरांस का पेड़ फलों के लिए। क्या मैं भी इन्हीं की तरह

---

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 61-62

निराश होकर रोती रहूँ। मेरे रस लोभी भौंरे। तेरे विरह में बिसूर-बिसूर कर मेरा पंजर जर्जर हो गया है। मेरा वेश विरंगा हो गया है। अब तो घर आ जा, मेरे अंधेरे घर के उजियारे।

×××××

लालर : एक प्रकार की राजस्थानी साड़ी जो लाल रंग की होती है, जिनमें सफेद-सफेद टिपकियाँ होती हैं और चमकीले गोल सितारे होते हैं जो राजस्थानी रमणी को प्रिय होती है।

गीतः लालर ले दो ओ नोखीला मारो जीव तरछे, (ओ लालर ले दो)
रखड़ी बाँधू तो मारे काळो डोरो आठी को,
ए जी बिंदली बिना मारो जीव तरछे (लालर ले दो)
साड़ी ओढ़ूं तो मारे मन नी भावे,
पीलिया बिना मारो मन तरछे (लालर ले दो)
नथड़ी पेरुं तो मारे दाय नहीं आवे,
अजी बेसर बिना मारो जीव तरछे। (लालर ले दो)
हँसली पेरुं ते मारे मन नी भावे।
एजी तमण्या बना मारो जीव तरछे। (लालर ले दो)[1]

अर्थः हे नखरीले पति। मुझे लालर ले दीजिए। उसके बिना मेरा जीव तरसता ही रहता है। यदि मैं मस्तक पर रखड़ी बाँधती हूँ तो मेरी आठी के काले धागे और लाल बिंदी के बिना भी जी तरसता है। यह साड़ी और ललाट के भूषण सौभाग्यवती स्त्रियों के लिए आवश्यक हैं। हे पति। मैं यदि साड़ी ओढ़ती हूँ तो मेरे मन भाती ही नहीं और पीलिये के बिना जी तरसता ही रहता है। यदि मैं नाक में नथ पहनूं तो वह मुझे पसंद नहीं आती। हे पति। यदि मैं गले में हाँस पहनूं तो वह भु मुझे अच्छा नहीं लगता और तमण्ये के बिना मेरा मन तरसता है। मुझे लालर (लाल साड़ी) मँगवा दीजिए।

×××××

पणिहारी का गीत

काळी ए कळायण ऊमटी, पणिहारी ए लो।	।	म्हारोड़ा बसै परदेस, वाला ओ।
मोटोड़ी छांट्या रो बरसै मेहवाला जो।	।	घड़ो तो पटक दे नी ताळ में ए पणिहारी ए लो।
भर नाडा भर नाडिया ए बणिहारी ए लो।	।	चालैनी ओठीड़े री लार, वाला जो।
भरियो भरियो समँद तलाव वा'ला जो।	।	वाळूँतोजाळूँथारीजीभलड़ी, क्लंजा ओठीड़ा ए लो।
किण जी खुणाया नाड़ा-नाड़िया पणिहारी ए लो	।	डसे तनें कालो नाग, वाला जो।
पिव जी खुणाया तळाव वाला जो।	।	घड़ो तो भर नैं पाछी वळी ए पणिहारी ए लो।
सात सहेल्याँ रे झूलरे ए पणिहारी ए लो।	।	आई आई फलसै री बार, वाला जो।
पाणीड़े नें चाली तलाव वाला ओ।	।	घड़ो तो पटक दूँ अभी चौक में म्हारा सासू जी।
घड़ो य न डूबै ताल में ए पणिहारी ए लो।	।	वेगेरो घड़ियो उतराव, वाला जो।
इंढोणी तिर तिर जाय, वाला जो।	।	किण थाँने सोंसो मारियो, ए म्हारा बहू जी ए लो

1. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ 116-118

सातूँ ए सहेल्याँ भर नीसरी ए पणिहारी ए लो। |
पणिहारी रही रे तळाव, वाला जो। |
बैंवते ओढ़ीड़े ने हेलो मारियो फलंजा |
घड़ियो उखणावतो जाय, वाला जो। |
ओराँ रे काजळ टीकियाँ ए पणिहारी ए लो। |
थारोड़ा दीजे है फीका नैण, वाला जो। |
ओराँ रे ओढण चूनड़ी ए पणिहारी ए लो। |
थारोड़ा मैलो सो बेस, वाला ओ। |
ओराँ रा पिवजी घर बसे रे लंजा ओठीडा ए लो। |
किण थाने दीवी है गाळ, वाला जो।
अेकओठीमनेइसोमिल्योएम्हारासासूजीएलो
पूछी म्हारे मनड़े री बात, वाला जो।
देवरजीसरीसोडीघोपातळोएम्हारासासूजीएलो।
नणदल बाई सा'रे उणिहार वाला जो।
थे तो बहूजी भोळा घणा ए म्हारा बहूजी ए लो
ओ तो थारोड़ो ही भरतार, वाला जो।[1]

अर्थ : पावस की काली घटा उमड़ आई है, और मोटी-मोटी बूँदों वाला मेह बरसने लगा है। ताल तलैयां भर गए हैं और समुद्र की तरह विशाल सरोवर भी भर गया है। ए पनिहारी, ये ताल तलैयां किसने खुदवाए हैं ? और किसने खुदवाया है यह विशाल तालाब? सात सहेलियों का झूलरा बनाकर पनिहारी तालाब से पानी भरने चली। तालाब लबालब भरा है, घड़ा डुबोया नहीं जाता और इँढोणी पानी भर तर तर जा रही है। इसलिए कि परदेसी प्रियतम की याद में पनिहारी अपना आपा भूल चुकी है। रास्ते में एक ऊँट के सवार (ओठी) को आवाज दी और घड़ा उठाने को कहा। किसे पता था कि यही ओठी परदेस से लौटता हुआ पनिहारिन का पति निकलेगा। ओठी ने भेदभरी बातें पूछीं - 'ए पनिहारी, औरों ने काजल बिंदी लगा रखी हैं, तेरे नेत्र फीके से क्यों हैं? औरों ने चूनड़ियाँ ओढ़ी हैं और तेरे मैले से वस्त्र?''

''औरों के स्वामी घर पर हैं। चतुर ओठी, मेरा पति विदेश गया है।'' इस पर ओठी ने ठीक ही तो कहा, परंतु पनिहारी इस व्यंग्यपूर्ण परिस्थिति का रहस्य कैसे समझती? ओठी ने कहा - 'घड़े को ताल में पटक दे और मेरे पीछे हो जा।'

'जला दूँ तेरी जीभ को ओठी, तुझे काला सर्प डसे, जो तू मेरे पतिव्रत पर कुद्रष्टि रखता है।''

पनिहारी वापस घर आई। सात्विक क्रोध से उसका मिजाज गर्म हो गया था। सास से जल्दी घड़ा उतारने को कहा। सास ने कुछ अनर्थ संभावना समझ बहू से पूछा - बहूरानी, किसने तुझा ताना दिया है - किसने गाली दी है? बहू ने कहा - 'मुझे आज तालाब पर एक ओठी मिला जिसने मेरे मन की बात पूछी। वह ओठी शकल से देवर और ननद बाई से मिलता था।'' सास ताड़ गई - 'भोली बहू, वह तो तेरा ही भरतार है।''

×××××

विविध पक्षियों (कुरजा, पपीहा, सूवटिया, कागलिया आदि) के नाम से गाये जाने वाले गीतों में विरह-विह्वल प्रेमिका की तड़प और संदेश-प्रेषण की अभिव्यक्ति हुई है। सुरंगे सांवण में लगने वाली वर्षा की झड़ी और पपीहे की पिव पिव शब्द को अबला विरहिणी कैसे सहन कर सकती है? वह पपीहे से अनुनय विनय करती है कि तू वहीं जाकर बोल जहाँ प्रिय रहते हैं। हो सकता है कि तेरी उद्दीपन वाणी को सुन उन्हें प्रिया की याद हो आए-

---

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 75-77

पपैया : गीत

पपईया तूं बोलरे जित म्हारै आलीजै भंवर रौ मुकांम।
सांवण आयौ सायबा वन में झिंगोरत मोर
कालिंगड़ो कू कू करै म्हारै करत कोयलड़ी सोर
पपईया तूं बोलरे जित म्हारै आलीजै भंवर रौ मुकांम।
सांवण आयौ सायबा बेलां झुर रही बाड़
चातक झुर रह्यौ मेघ ने पिव नै झुर रही नार।
पपईया तूं बोलरे जित म्हारै आलीजै भंवर रौ मुकांम।[1]

अर्थः विरहिणी पपैया से अनुरोध कर रही है कि तू वहीं जाकर बोल जहाँ मेरे प्रियतम का वास है / रहते हैं। उनसे कहना सावन का महीना आ गया, वन में मयूर बोलने लगे हैं। कालिंगड़ा भी कू कू करता है। उस पर कोयल भी शोर मचा रही है। पपैया तू वहीं जाकर बोल जहाँ मेरे प्रियतम रहते हैं। सावन महीने में मैं तुम्हारे बिना झुर रही हूँ जैसे चातक पक्षी वर्षा की राह आतुरता से देखता है वैसे ही प्रियतम के बिना प्रियतमा झुर रही है। पपैया तू वहीं जा बोल जहाँ मेरे प्रियतम रहते हैं।

×××××

राजस्थान में कार्य से संबंधित गीत भी मिलते हैं। इन लोकगीतों में ही लोक की वास्तविक स्थिति प्रकट हो पायी है। 'घरटी फेरते' समय गाए जाने वाले एक गीत में ऐसी स्थिति का चित्रण हुआ है जिसमें गीत की नायिका तो नींद लेना चाहती है पर सास के भय से उसे सवेरे जल्दी उठकर चक्की चलाना पड़ रही है -

चक्की पीसने का गीत

रामजी सणण सणण बोलै रात
घरटी री वेळा होयेगी जी राम
रामजी पीसूं पीसूं लीलोड़ी जंवार
पाड़ोसण पीसै बाजरौ जी राम
रामजी ऊनाळै री ठाडी ठाडी लौर
घरटी पै आवै नींदड़ी जी राम
रामजी सासूजी बालण जोग सभाव
मण भरियौ सूंपै पीसणौ जी राम॥[2]

अर्थः नायिका प्रातःकाल चक्की पीसते हुए गा रही है हे रामजी रात्रि सन सन होती हुई व्यतीत होती जा रही है और घरटी फेरने (चक्की पीसने) का समय हो गया है। हे राम जी मैं तो हरी-हरी ज्वार पीस रही हूँ और मेरी पड़ोसन बाजरा पीस रही है। हे रामजी गर्मियों (ऊनालो) की सुबह शीतल ठंडी हवा की लहर चल रही है और मुझे चक्की चलाते हुए मीठी नींद आ रही है पर सासूजी के स्वभाव से डरकर मैं मनभर सूंप पर पिसाई कर रही हूँ।

---

1 राजस्थानी लोकसाहित्य का सैद्धांतिक विवेचन : डॉ. सोहनदान चारण, पृ. 112,83

चरखा गीत

गीतः चाल रे चरखला, हाल रे चरखला
लाकू तेरो सोवणो, लाल गुलाबी माल
चरकू मरकूं फिरै घेरणी मधरो मधरो चाल ।।
चाल रे चरखला।
गुड्डी तेरी रॉंग रंगीली, तकली चक्करदार
चोखो वण्यो दमकड़ो तेरो, कूकड़िये री लार ।।
चाल रे चरखला।
कातणवाली छैल-छबीली, बैठी पीढ़ो ढाळ
महीं-महीं वा पूणीं कातै, लंबो काढे तार ।।
चाल रे चरखला।[1]

अर्थः ताकू (तकुवा), माल (मालाकार डोर), घेरणी (हत्था), गुड्डी, तकली, दमकड़ो, कूकड़ी ,पूणी, तार आदि विशेष शब्द हैं जो चरखे के यंत्र से संबंध रखते हैं। पर आज जमाने में यह शब्द को भी भूल रहे हैं। छैल छबीली कतिन की भावना इस विवरण में जान डाल देती है।

बालिकाओं के गीत

बालिकाएँ अपना मनोरंजन करने के लिए ऐसे अनेक गीत गाया करती हैं जिसका कोई अर्थ नहीं होता। केवल तुक मिलाने के लिए शब्दों का प्रयोग होता है। जैसे छोटी थाली में खाजा है। मेरा बाप दिल्ली का राजा है। (यहाँ राजा और खाजा केवल तुक मिलाने के लिए प्रयुक्त किया गया है।) जैसे-

गीतः थाल किये में खाजा।
म्हारो बाप दिली रो राजा।
राय राती झंबो।
पटियार राती झंबो।
मटकी में ठंडो पाणी।
म्हारी मा दिली री राणी।
म्हारे आंगण पड़ी पराई।
म्हारी मा करी पराई।[2]

बालक बालिकाओं के बचपन के खिलवाड़ निष्पाप होते हैं। बालक का बचपन ईश्वरीय अनमोल देन है। छोटी बहन घर पर है और बड़ी ससुराल में। उसे याद कर छोटी भोली बालिका मोर से कहती है-

गीत : मोरिया, तने किसड़े गढ़ रो मारग वालो लागे रे। धन मोरिया ।।
मने जोधाणे रो मारग वालो लागे रे, धन मोरिया ।।

1-2. राजस्थानी लोकगीत

मोरिया, तूँ तो बाई सा' रे बागाँ गहरो बोली रे। धन मोरिया ॥
बाई सा' तने ठंडो पाणी पासी रे। धन मोरिया।
मोरिया, तूँ बाई सा' री मेड्याँ मधरो बोली रे। धन मोरिया ॥
बाई सा' तने चूरमियो जीमासी रे। धन मोरिया।[1]

अर्थ: मोर, तुझे कौन से देश का मार्ग अच्छा लगता है?
बहन, मुझे जोधपुर का मार्ग भला लगता है।
प्यारे मोर, वहाँ तू मेरी बहन के बाग में जाकर गंभीर स्वर में बोलना, बहन तुझे शीतल जल पीलाएगी।
मोर, तू बहन के महल के पास जाकर मधुर स्वर में बोलना। बहन तुझे मीठा मीठा चूरमा खिलाएगी।
धन्य प्यारे मोर।

× × × × ×

बडी बहन ससुराल से घर आई। उसकी छोटी बहन उससे अनेक प्रकार के प्रश्न पूछती है। इस भोली छोटी चिड़िया को क्या पता ससुराल क्या होती है। बहन का प्रश्नोत्तर गीत-

गीतः काळी ए कोयलड़ी, तू वन में कींकर रहती ए।
काचा पाका आँबा खाती मेवासियाँ रस पीती ए।
थे ओ सोदरा बाई सा' सासरिये क्यूँ रहता ओ।
सास ननद रे सारे बारे झीणें, घूँघट रहता ओ।
थे ओ गवराँ बाई सा, सासरिये क्यूँ रहता ओ।
महलाँ बैठा मोती पोता वीरो सा'री बाटाँ जोता ओ।[2]

अर्थ: प्रश्न : ए काली कोयल, तू वन में किस प्रकार रहती थी?
उत्तरः कच्चे पक्के आम खाती और झरनों का शीतल जल पीती।
प्रश्नः बहन सुभद्रा, तू ससुराल में किस तरह रही?
उत्तरः सास ननद के अधीन लंबा घूँघट निकालकर।
प्रश्नः बहन गौरी, तू ससुराल में किस तरह रही?
उत्तरः महलों में बैठी मोती पिरोती और भाई की बाट जोहती, कि अब वह आवे और पीहर ले जाए।
सचमुच, पीहर लड़की के लिए सुखों का भंडार है।

× × × × ×

गीत : चाँद चढयो गिरनार, किरत्याँ ढळ रहियाँजी ढळ रहियाँ।
अब बाई घरे पधार, माऊजी मारेला जी मारेला।
बाबोसा देला गाल, बडोड़ा वीरा बरजेलाजी बरजेला।

1-2. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 42-43

मत दो म्हाँरी बाई ने गाळ, म्हाँरी बाई परदेसण जी परदेसण
आ आज उडे परभात, तडकै उड जासी जी उड जासी।
सावरिये रा दिनड़ा चार, जँवाईड़ो ले ज्यासी ले ज्यासी।[1]

अर्थ : भाई अपनी बहन से कहता है - चाँद आसमान में चढ़ आया है और कृतिकाएँ ढल रही हैं। रात बहुत हो गई। बहन, अब घर में चल, नहीं तो माताजी मारेंगी और पिताजी कड़े शब्द कहेंगे। नहीं, परंतु बड़ा भाई उनको रोकेगा और कहेगा - मेरी बाई को कड़े शब्द न कहो, यह परदेसिन है, आज अथवा कल तक चली जाएगी। सावन के चार दिन हैं - अर्थात् पीहर का निवास थोड़े ही दिन का है। आखिर जँवाई आएगा और वह इसे ले जाएगा।

× × × × ×

लड़की पिता से वर माँगती है-

गीतः बाई रा दादोजी चाल्या रथ जोड़, बाई नै रथ थाम लियो।
बाई ए मांगण होय सो मांग, ओ रथ म्हारो हांकण द्यो।
दादाजी, वर मांगूँ भगवान, देवर छोटो लिछमण जी।
दादाजी, सासू कोसल्या माय, सुसरो तो राजा दशरथ जी।[2]

अर्थः लड़की ब्याहने योग्य उमर की हो गई। उसके दादाजी उसके योग्य वर ढूँढने के लिए निकले। रथ तैयार खड़ा है। इतने में लड़की ने आकर रथ को रोक लिया। दादाजी ने कारण पूछा। बेटी, जो माँगना हो सो माँग कर ले ले, रथ को हाँकने दे। इस पर लाज छोड़ कर लड़की कहती है - आप वर ढूँढने जा रहे हैं, पर यह ध्यान रहे कि मेरा वर भगवान रामचंद्र जैसे गुण शील वाला हो। देवर लक्ष्मण जैसा हो, सास कौशल्या माता सी हो और ससुर राजा दशरथ सा।

× × × × ×

गणगौर के समय का गीत है। कुमारिकाएँ माता गौरी से वीर-वर याचती हैं-

गीत : मेड़ी बैठो मद पीवै ए, लीली केरो असवार।
खाँधी बाँधे पाघड़ी, मधरी चाले चाल।
कड़ मोड़े घोड़े चढ़ै, चाल निरखतो जाय।
ओ वर देई माता गवरल ए, म्हे थाँ ने पूजण आय।
चूलै केरो चाँदणो ए, हाँडी केरो हमीर।
नौ थाळाँ पीवै राबड़ो ए, सोला रोटी खाय।
बो वर टाळी माता गोरल ए, म्हे थाँ ने पूजण आय।[3]

कहीं कहीं इस गीत में ये पंक्तियाँ भी जुड़ी मिलती हैं-

लीली घोड़ी हाँसली, अलबेलो असवार।

1-2-3. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 43-45-46

कड्याँ कटारी बाँकड़ी, सोरठडी तरवार।

अर्थः कुमारिका माता गौरी से याचना करते हुए कहती है मेरा वर वीर-पुरुष हो। जो महलों में बैठ कर मद (प्रेम मद) पीवे और बाहर नीली गोडी पर सवार हो नीकले। उसकी पगड़ी टेढ़ी बँधी हो और वह (मस्तानी) धीमी चाल से चले। घोड़े पर चढ़ कर वह अकड़ कर शान से जाय। हे माता गौरी, मैं तुझे पूजने आई हूँ, तु मुझे ऐसा वर दे।

साथ ही प्रार्थना करती है कि इस प्रकार का वर न मिले - जो चूल्हे का चाँद हो और हाँडी का अमीर हो, नौ थालियाँ भर कर राबड़ी खा जाय, तो भी जिसका पेट न भरे, सोलह रोटियाँ खाने पर भी जो न अधाय - ऐसे वर से बचाना।

बालिकाएँ होली के वक्त गाती हैं-

गीतः होली आई ए फूलाँ की झोली भर लाई।
खेलण दे केसरिया बाग में।
अे ईसरजी लाला खेले केसरिया बाग में, झिरमटियो क ले।
उनका हाथ में सोना का चिटिया, झिरमटियो क ले।
बां की जेब में अन्तर की सिसी, झिरमटियो क ले।
म्हार म्हारा म्हारा ईसरजी, झिरमटियो क ले।[1]

गीतः होली आई, ए सहेल्यां, मिल खेलां लूर, होली आयी ए।
कोई कोई ओढ़या झीणी झीणी चूनड़,
कोई कोई ओढया दिखड़ी रो चीर, होली आई ।
कोई कोई पहेरयां, पायलड़ी होली आई ए।
रिमझिम रिमझिम बिछिया बाजै,
ठनक ठनक बाजै पायलड़ी, होली आई ए।
होली....... लूर.... ए।[2]

अर्थात् : बालिका सखी से कहती है सखी! होली का त्यौहार आ गया है, आओ सहेलियों, संग मिलकर होली खेलें। किसी सखी ने झीनी चूनरिया ओढ़ रखी है तो किसी ने दक्षिणी चीर (वस्त्र) ओढ़ रखा है। होली आई है सखियों, संग मिल होली खेलें। किसी ने रुनझुन बिछिया पहन रखी है तो किसी ने पायल। बिछिया रुनझुन बजने लगी है और पायल ठनकने लगी हैं। आओ सखियों, संग मिलकर होली खेलें और आनंद मनाएँ।

× × × ×

1-2. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल

झूले का गीतः

झूलन चली राधे झुक आये बदरा, झुक आये बदरा, उमड़ आये बदरा।
काहे की डोर काहे की है पटली, काहे की डाली पर डाला हे झूलनवा।
रेशम की डोर चंदन की पटली है, आम्बे की डाली पर डाला है झूलनवा।
कौन सखि तेरे झूलन आई, कौन सखि तुझे दे रही झोटा।
ललिता सखि मेरे झूलन आई, विशाखा सभी मुझे दे रही झोटा।[1]

अर्थः सखि राधा झूला झूलने चली है और बादल झुक आए हैं, उमड़ पड़े हैं। सखियाँ पूछती हैं झूले की डोर किससे बनी है और पटली (बैठने वाला भाग) किसकी बनी है? और किसकी डाल पर झूला डाला गया है? तभी वह उत्तर देती है कि झूले की रेशम की डोर है, चंदन की पटली है और आम की डाली पर झूला डाला गया है। आगे सखियाँ पूछती हैं तेरे संग कौन सखियाँ झूलने आईं? और किसने तुझे झूला झुलाया? उत्तर में कहती है, ललिता मेरे साथ झूलने आई और विशाखा आदि सखियों ने मुझे झूला झुलाया।

×××××

चरखा गीत

चरखो हिरदै को चाव घण्यो। टेक.
काहे को तेरो बण्यो चरखलो, काहे को रे जडाव जडियो।
अगर चनण को मेरो बण्यो चरखलो, सोने को रे जडाव जडियो।
कै मासां को तेर बण्यो चरखलो, कै मासां को जडाव जडियो।
दस मासां को मेरो बण्यो चरखलो, नौ मासां को जडाव जडियो।
कुण सै सहर तेरो बण्ये चरखलो, कुण सै सहर जडाव जडियो।
दिली ए सहर मेरो बण्यो चरखलो, जैपुरिये में जडाव जडियो।[2]

अर्थः चरखे से हृदय को बहुत प्रेम है। सखियाँ पूछती हैं - तेरा चरखा किसका बना है? उसे किसने जड़ाया है? अगर चंदन के काष्ट से मेरा चरखा बना है और उसे सोने से जड़वाया है। कितने महीने में तेरा चरखा बना? और कितने महीने जड़ने में लगे? दस महीने में मेरा चरखा बना और नौ महीने जड़ने (सजाने) में लगे। कौन से शहर में चरखा बना? और कहाँ से जड़वाया? दिल्ली शहरमें मेरा चरखा बना और जयपुर से जड़वाया है।

× × × × ×

शिकार सम्बन्धी लोकगीत

शिकार संबंधी कुछ लोकगीत राजस्थान में बहुत प्रचलित हैं। उनमें से सुअर के संबंध में एक गीत इस प्रकार है-

गीतः सूअरिया ए चढ़ ऊँची जोवजै कांई करे ओ बेटा राव रा?
भूंडणडी ए अठे चढ़िया बेटा रावजी रा।
सुअरिया ए ऊँचो चढ़ जोवजै कांई... राव रा?..

1-2. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल

भूंडणी ए भाला रा झलका एडे चढ़िया,
भूंडणी तरवाराँ चमक्यां सेलड़ा,
ए जाय न छपाड़े थारा छेबरिया।
सुअरिया रे कठे तो छपाडूं म्हारा छेबरिया
भूंडणी ये खींचीया रे जाइजै, बढीने छपाडे थारा छेबरिया
सुअरिया रे खींचियां रा रे बेटा अनीता पटक पछाड़े मारा बाबरिया
सुअरिया ए ऊँचो चढ़ने नाल जै काँई करे ओ बेटा राव रा?
भूंडणी ए भाला झलकाता आया एड़ा चढ़िया बेटा राव रा।
ए जायन छपाड़े थारा छेबरिया
भूंडणडी ए राठोडाँ रै आवजे वठे छपाड़े थारा छेबरिया
सूअरिया रे राठोडाँ रा बेटा घणा रे अनीता,
पटक पछाड़े म्हारा छेबरिया।
सूअरिया रे ऊँचो..... रावरा?
भूंडणडी ए चढे चढ़िया बेटा राव़जी रा, पटक पछाड़े थारा छेबरिया।
सूअरिया रे कठै तो छपाडूँ म्हारा छेबरिया?
भूंडणडी ए भाटियाँ रे आवजे
भाटियाँ रे जायजे छपाडा थारा छेबरिया
भाटियाँ रा बेटा घणाँ रे सन्तोखी
ऊंडा ने ओवरा में राखै म्हारा छेबरिया।[1]

अर्थः सुअरिया। ऊँचा चडकर देखना। राव के बेटे क्या करते हैं? भूंडण ए। राव के बेटे चढ़ आये हैं। सूअरिया रे ऊँचा चढ़कर देखना, राव के बेटे क्या करते हैं? भूंडन ए, भालों की नौकें चमकती हैं, ऐसे चढ़े हैं। भूंडन ए तलवार और रौले चमकती हैं। तू जाकर अपने बच्चों को छिपा ले। सूअरिया रे, अपने बच्चों को कहाँ छिपाऊँ? भूंडन ए, खीचियों के जाना, उधर अपने बच्चों को छिपा देना। सूअरिया, खीचियों के बेटे अनीते हैं, मेरे बच्चों को पटक पछाड़ेंगे। सूअरिया रे, ऊँचा चढ़ कर देख, राव के बेटे क्या कर रहे हैं? भूंडन, भाले चमकाते आते हैं, राव के बेटे। तू जाकर अपने बच्चों को छिपा ले। भूंडन ए राठौडों के जाना, वहाँ अपने बच्चों को छिपाना। सूअरिया, राठौड़ों के बेटे बहुत अनीते हैं। मेरे बच्चों को पटक पछाड़ेंगे। सूअरिया रे, ऊँचा चडकर देख, राव के बेटे क्या करते हैं? भूंडन ए, रावजी के बेटे ऐसे चढ़े हैं कि तुम्हारे बच्चों को पटक पछाड़ेंगे। सूअरिया रे, अपने बच्चों को कहाँ छिपाऊँ? भूंडन ए, भाटियों के जाना। वहाँ बच्चे छिपाना। भाटियों के बेटे बहुत संतोष देने वाले हैं। भीतर के कमरे में मेरे बच्चों को रखेंगे।

× × × × ×

---

1. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 181-182

वनराज को संबोधित करते हुए कहा गया है कि या तो पहाड़ छोड़ दे, अन्यथा मारा जाएगा।

गीतः मगरो छोड दे रे वन रा राजा, मारियो जासी रे।
जंगल छोड़ दे रे वन रा राजा मारियो जासी रे।
शिकारी आसी रे मगरो छोड़ दे रे।
पातलिया प्रतापसी नितरी खबरां आवे रे
म्हारा राजा रे पधारो, मगरो छोड़ दे,
बन रा राजा मगरो छोड़ दे रे मारियो जासी रे।[1]

अर्थात्: वन के राजा पहाड़ छोड़ दे, नहीं तो मारा जाएगा। जंगल छोड़ दे वन के राजा। नहीं तो मारा जाएगा। शिकारी आएँगे, पहाड़ छोड़ दे। प्रतापसिंह के पास तेरे नित्य समाचार आते हैं – हमारे राजा जल्दी शिकार करने पधारें। वन के राजा पहाड़ छोड़ दे, नहीं तो मारा जाएगा।

× × × × ×

प्रभाती गीत

हरजस – ध्रुजी

अर ध्रुजी ध्यान धरो हिरदा में।
बाळपना भाई हरि हर बाळपना भाई।
सब देवन का देव कहीजै बैकुण्ठा भाई।
हरि ने सिमरो रे भाई राम ने सिमरे रे भाई।
श्री कृष्णजी ने सामां मिल गया कंस राज सांई।
अर एडी पकड़ और चोटी पकड़ी ठोड़ी ठरकाई।
राम ने सिमरो रे भाई हरि ने सिमरो रे भाई। सब......... भाई।
लख चौरासी भटकत भटकत मनखा देह पाई।
शिशुपाला जान चढ़ावे वरजे भोजाई।
रुकमण ने सांवरिया ले गया रथ में बैठाई। राम ने सिमरो.....
गंगा न्हाई गोमती न्हाया, और पुष्कर न्हाया।
वैतरणी नदी में पूंछु पकड़ तिरग्या। राम ने...
अरे मीरा बाई तो व्याकुळ होग्या सैण भगत का सांसा मेट्या,
आप बण ग्या भाई। राम ने...
तुलसीदास आस रघुवर की हरी चरणन में चित लगाई।
हाथ जोड़ मैं करुं बीनती हरि चरणन में शीश नवाई।
ग्यारस अमावस और अदितवार ध्रुजी गावै,
ज्यां का बैकुण्ठा में बास ज्यां का बेड़ा पार। राम ने सिमरो रे भाई...[2]

× × × × ×

1. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ. 181-182
2. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल

रंगीलो (राधाकृष्ण संबंधी)

आजा आजा ए अलबेली राधा भर ले जमना नीर।
थां सै प्रीत कौन करे जी थे चोटूना बाज।
जरा सी बुरकी डालता, जरा सी बंसी बजावता, मोह लिया संसार।
आजा........ नीर।
पैली तो गोप्यां ठगी थे, पाछै कुबजा नार।
अर मीरा ने सामण करी जी। अब थांका कुण करे इतबार।
लोग थांनै यों कहवै जी, ब्रज का माखण चोर।
पर नारयां संग ताकता अर आप चरावै ढोर।
सौगन खाओ तीर पर जी, बचन देओ भरपूर। आजा आजा.
जद मैं पल्लो छोड़ सूं नित उठ करुं कलेस।
गोप्यां संग रास रचाबो छोड़ दीज्यो।
चन्द्रसखी भज बालकृष्णजी, ले गयो कृष्ण मुरार।[1]

(अजमेर की एक महिला से प्राप्त)

× × × × ×

प्रभाती

कार्तिक का हरजस (शेखावटी बोली में)

ऊठो राणी रुकमण करो ए रेसोई।
म्हें क्यूं करा ए रसोई म्हारो अंग पसीजै।
थारो अंग पसीजै असनान करीज्यो।
सनान करां तो म्हांनै कानूड़ो सो दीखै।
कानूड़ो सो दीखै आड़ा पड़दा लगाद्यां।
झट से उठी राणी रुकमण करी ए रसोई।
हर का चौका दीन्या, भारी दीनी, कुंभ कळस भर लाई।[2]

अर्थ: प्रभात में गाया जानेवाला गीत है। जिसमें कहा गया है राणी रुकमणी प्रातः उठकर रसोई (भोजन) तैयार करो। तभी वह कहती है मैं रसोई क्यों तैयार करूँ? उससे मेरा शरीर पसीने से भीग जाता है। यदि तेरा अंग पीसने से भीगता है तो स्नान कर लेना। वह बोली स्नान करती हूँ तो कन्हैया देखता है। यदि कान्हा देखता है तो आड़ा परदा कर लो। इस पर राणी रुकमणी झट से उठी और रसोई बनाई। इसके आगे हर को निमंत्रण देकर जीमण बिठाया और पानी पीने के लिए कलश भर लाई।

× × × × ×

1. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल (इन्हें साहित्य संस्थान, उदयपुर से प्राप्त हुए।)

श्रीकृष्ण बाल लीला संबंधी गीत (नाग लीला)

सोवन चेटियो गेंद भरियो, किसन खेलण नीसरा।
जाय जमना में धूम मचाई, कूद पड़ी जी जमना मांय नै।
सूतो जी नाग जागै जी नागन, नागन ढालै वायरो।
कांई तू तो रे मारग भूलियो, कांई बैरी बिलमा लियो।
किसड़ी दिसां सों आयो रे लाला, किड़ी दिसां सों जाय।
कौनी के तो पुतर कहीजे, कांई तुम्हारो नाम ए।
अगुनी दिसा सों आयो ए नागन, पाताळों में आइयो।
राजा नन्दजी को पुतर कहीजे ए श्री केसन म्हारो नाम है।
थारा ए नाग से खेलूँ झरपटिया, जदी हमारो नाम है।
मात जसोदा दइडौ बिलौवे, ने तो करुं थारे नाग को।
विन्दारावान में डालो हिंडोलो, डोरी करूं थारे नाग की।[1]

× × × × ×

गीत – बाल गोपाल

गोपाल पालणै ढूले। टेक
काहे को तेरो बण्यो पालणो, काहे की लड़ लूमै।
अगर चनण को मेरो बण्यो पालणो, रेशम की लड़ लूमै।
कुण से सहर तेरो बण्यो पालणो, कुण से सहर में झूलै।
मथराजी में मेरो बण्यो पालणो, गढ़ गोकुल में झूलै।
के मासां को तेरो बण्यो पालणो, के मासां की लड़ लूमै।
नौ मासां को मेरो बण्यो पालणो, दस मासां की लड़ लूमै।[2]

× × × × ×

भजन (नरसिंह मेहता)

म्हारी हुंडी स्वीकारो महाराज रे, सांवलिया गिरधारी।
परभु एक तुम्हारो आधार रे, सांवलिया गिरधारी।
म्हारै दौलत जाज परवान रे, सांवलिया गिरधारी।
म्हारी हुंडी स्वीकारो महाराज रे, सांवलिया गिरधारी।
राणाजी से हठ करी बाई मीरा के सारे काज रे।
जेहर रा प्याला मोकला रे वालो जेट न जावन हार रे।
सांवलिया गिरधारी।[3]

× × × × ×

1-2-3. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ. 99,110,65

सतगुरु

इण तो संसार सागै नाग खड़्यो है।
पाहती जासो तो डस जावै म्हारा ग्यानी गुरुजी,
ओवासर जी ऊबा रीज्यो।
थांका चरण पकड़ती जाऊँ, थांका चोळो पकड़ती जाऊँजी।
इण तो संसार सागै ऊँडी कूई,
नीची झुकूँ तो गिर जाऊँ, ओ म्हारा सदा सहाई गुरुजी।[1]

(अजमेर की एक महिला से प्राप्त)

× × × × ×

मन राम भजन बिन मैलो। टेक.
एक डाळ दोय पंछी बैठ्या, कुण गुरु कुण चेलो।
गुरु की करणी गुरु भी जायगा, चेले की करणी चेलो।
एक डाळ से पान ज टूट्यो, लागै ना फेर दुहैलो।
ना जाण कित जाय पडैगो, लाग पून को रेलो।
यो संसार माया की नगरी, दो दिन को सो खेलो।
सोच समझ कर हर का गुण गालै, उत गुरु दे रह्यो हेलो।[2]

(शांति आश्रम, बिकानेर से प्राप्त)

× × × × ×

पौराणिक–कथा संबंधी

रामायण संबंधी गीत

स्वयंवर

छोटे छोटे चरण चरण विच कंवल,
आओ रामजी, स्वयंबर रचाओ, धनुष उठाओ,
सांवली सूरत म्हारे मन में बसी।
तोड़ जी धनुष करयो दोय टुकड़ा, आओ रामजी धनुष उठाओ।
ले वरमाला जानकी आई माला पहरावत रामजी हंस्या।
जे नर नारी जानकी ने संवरे, हा रामजी सदा ही सुहाग वे भोगे।
तुलसीदास आस रघुवर की, हरि के चरणों मे ध्यान लगावा।
सांवली सूरत म्हारे मन में बसै।
मोहनीसूरत म्हारे मन में बसै।[3]

(अजमेर की एक महिला से प्राप्त)

× × × × ×

1-2-3. राजस्थानी लोकगीत : डॉ स्वर्णलता अग्रवाल, पृ. 102,103,65

गीत – भरत मिलाप

उठ मिल ले भरत भैया हर आए, उठ मिल ले। टेक
भूरा भूरा हस्ती जरद अम्बारी, ऊपर चंवर ढुरत आए।
भुजा पसार मिल्या च्यारुं भाई, नैणां नीर ढुळक आए।
कहो जी भाई, थे बनखण्ड की बातां, कैसी कैसी विपत भुगत आए।
पान बिछाया भैया, बनफल खाया, ऐसी ऐसी विपत भुगत आए।
रावण मार अहिरावण मारयो, बांह पकड़ सीता लाए।
मात कोसल्या हर को करत आरती, तुलसीदास जस कथ गाए।[1]

× × × × ×

दशहरे का गीत

रावण मार राम घर आये, घर घर बटत बधाई जी।
पंडित पतड़ो बांच सुणा रे, म्हारो राम लिछमण कद आवे रे।
राम बिना म्हारी सूनी अयोध्या, लिछमण बिन ठुकराई।
सीता बिना म्हारी सूनी रसोई, कौन करे चतुराई जी।
पंडित पतड़ो बाँच सूणा रे, म्हारो राम लिछमण कद आवे रे।
माता कोसल्या करत आरती, जग मग ज्योति सवाई जी।[2]

× × × × ×

गीता (भावगत) संबंधी

छोटो सो अर्जन बीनवै सुनो बैकुंठा का नाथ।
मथरा में प्रभु जनमिया जी गोकुल चराई गाय।
चोर चोर माखन खायो जी जगत में बाजो शोर।
गीता धरम का उपकार गीता काया का कल्याण।
हाथ गीता कान कुण्डल गल तुल्छ्यां की माला।
छापा तिलक लगावतां म्हारा भगत का श्रृंगार।
अर्जुन समझो गीता सार पंडित पढ़ोजी गीता सार।
काळी दै मैं कूदिया, प्रभु नाथ्यो काळो नाग।
फण फण निरत करावतां नागण ने अमर सुहाग।
ब्रज में इन्दर कोपियो बरस्यो मूसळधार।
नख पे गिरवर धारियो जी सारी ब्रज ने लियो उबार।
एक समय बन में गया प्रभु बन में पाया भोग।
भाव देखा भीलनी का खाया झूठा बोर।
भगत थांकै कारणो अवतार धारया चौबीस।

1-2. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ. 65-66

आकार नै साकार नै म्हारा भगत का आधीन।
जे कोई गीता गावसी होसी सदा बैकुण्ठा का वास।
कन्या गावै घर वर पावै, परणी गावै पुत्र खिलावै।
बूढ़ी गावै गंगा न्हावै, सुण्या सदा सुख पावै।[1]

× × × × ×

प्रहलाद

प्रहलाद भज्यो राम भज्यो गोविन्दा।
हिरणाकुस खाई मार राधे गोविन्दा।
नहिं भजो तो खासो मार राधे गोविन्दा।
भजो दो भवसागर तर जाई, वीर विभीषण भजियो राम,
रावण के लाग्या बाण। राधे..
वै भजन बड़ा बलवान, वे भवसागर तिर जाय। राधे.
करमा बाई भज्यो राम, दावडिया को परदो तान। राधे.
मीराबाई भज्यो राम, राणोजी खाई मार। रादे.
वै भजन बड़ो उपकार, अरुंधती भज्यो राम। राधे.
सेवा में चीर बढ़ाय। राधे.
भीलणी भज्यो राम, वै जूंठ्या बोर खाय। राधे.
लिछमण कै लाग्यो बाण, हनुमत भज्यो राम। राधे.
लंका में जीत कराय। राधे गोविन्दा।[2]

× × × × ×

गीत – नरसी का माहेरा

भरदे माहेरो सांवरिया नानी बाई को। टेक.
और सगां ने म्हेल मालिया, नरसी भगत ने है टूटेड़ी टपरी।
और सगां ने हीगलू ढोलिया, नरसी भगत ने टूटेड़ी मचली।
और सगां ने साल दुसाला, नरसी भगत ने है फाटेड़ी गुदड़ी।
और सगां ने दूध पतासा, नरसी भगत ने है सूकेड़ी टुकड़ी।[3]

× × × × ×

गीत – भरथरी

करे लीला को दिया किसने दिया जोग।
जोगी मत हाओ बाली बस में।
सुन चम्पा बेना रस्ता बता दे अमर कोट का।
राजा भरथरी तेरा मामा अमर हो गया नामूं।[4]

1-2-3-4. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ. 100, 102, 113, 114

सिद्ध पुरुषों के गीत

गूगोजी (गोगाजी)

गोगो सूत्यो बड़ तळै, सूत्यो रे सुख भर नींद,
वारी म्हारा गोगा भल रहिवो।
माय जगावै गोगोजी की उठ उठ ओ म्हारा गोगा लाल।
मोदा पड्या बिलोबण रीती रे थारी जाय छछियार।
सूत्यो गोगो ओदक्यो टूट्या रे चारुं साल। वारी म्हारा...
ल्याओ ल्याओ पांचू कापडो, ल्याओ ल्याओ रे म्हारा पांच हत्यार।
हरजन मारयो वड़ तलै, सरजन रे सरवरिया री पाळ।
मारया रे मासी रा लाल।[1]

(बीकानेर की मूलीबाई से प्राप्त)

× × × × ×

रामदेवजी

कोठे तो बाजा ओ अजमलजी रा धावा बाजिया,
बारी जाऊँ कोठे तो धुरा छै निसाण।
आज अजमलजी रो छावो कलन धो कस्या ए,
रुणीचे तो बाजा ओ अजमलजी रा धावा बाजिया।[2]

× × × × ×

पाबूजी

ए पाबूजी राठोड़ां ने केसर छोड़ी जी ओ,
सूंदेही तोलेगाओ,
ए सुरग पधारया जी रे बै तो ओ,
छतरपती जी ओ, कुमलागो ए।
ए खांडो तो जीत्यो रे खीचीड़ी रो ओ,
दिंदवाला तो जी ओ,
ए जुगड़ो जीत्या छै आप तो धणी तो ओ,
बे तो जी रे पाबुजी ओ। कुमलागो ए।[3]

× × × × ×

तेजाजी

गाज्यो गाज्यो जेठ अषाढ, लगतोई बूठो सावण भादलो।
धरती रो मांडण मेहो, आभै री मांडण चमकै बीजली।
छतरी रो मांडण छाजो, कूवै रो मांडण मरवो केवड़ो।

1-2-3. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ. 87, 89, 115

गौरी रो मांडण धरण्यो सायबो।
सूतो सुखबर नींद कंवर तेजाजी, थारा साथीडा बीजै कंकड़ बाजरो।
झूठी झूठ मत बोलो ए झरणी माता , म्हारा साथीड़ा हींडै रंगू रे पालणे।
कुण भातो भरै ए झिरणी माता, कुण लावै बळदां री नीरणी।
भावज भात भरै रे कंवर तेजाजी, बेनड़ लावै बळदां री नीरणी।
कठै भात उतारूं कंवर तेजाजी, कठै उतारूं बैला री नीरणी।
खेजड़ हेठे भात उतारो भोजाई म्हारी, घोरां तो उतारो बैलां री निरणी।[1]

× × × × ×

भभूतो सिध

हाथ मगेरन गेडियो, भभूता सिद्ध रेवड़ियो चरावण जाय।
रेवड़ छोडयो ताल में, भभूता सिद्ध धोरां लियो विसराम।
सूतै ने पैणो पी पायो, लागी लागी कालूडे री फेंट (काला नाग)।
उठो रे साथीड़ा कर लो चानणो, भभूते नै डसग्यो काळो नाग।
बाबोजी उडीकै कोटरयां, भभूता सिद्ध माऊजी रसोयां मांय।
सजा बाई उड़ीकै सासरे, भभूता सिद्ध गोरी धाए महलां रे मांय।
भाय सपूती बरजियो, भभूता सिद्ध वार बुधवार मत जाय।[2]

× × × × ×

दानवीर जगदेव पँवार

बारहवीं शताब्दी में सिद्धराज जयसिंह सोलंकी अनहिलवाड़ पाटण में राज्य करता था। इसके यहाँ जगदेव पँवार नाम का एक बड़ा स्वामिभक्त वीर क्षत्रिय नौकर था जिसका नाम आदर्श त्यागियों में प्रसिद्ध है। स्वयं जयसिंह सोलंकी से स्पर्धा हो जाने पर इसने अपने से अपना मस्तक काटकर चामुंडी का उपासिका - कंकाली को दे दिया था। इसी त्याग-वीरता का बखान एक गीत में किया गया है-

गीत: जगदेव भयो एक दानी।
जैसिंघ को बोल खटकियो भी कहियो फोजां को अगवानी। जगदेव भयो...
सौं राजा सोळा सै रावत, बैठया सब नामी नामी। जगदेव भयो...
भरी सभा में भाटण आई, जाचण जैसिंघ अभमानी।
भरी सभा जगदेव ज जांच्यो, और जैसिंघ अभमानी।
जैसिंघ को भाटण मान घटायो, जगजी को किवत बखाणी।
उठ जगदेव गयो महलां में, जाय बूझी पटराणी।
सिर को दान भाटणी माँगे, थे के कौ छो रांणी।
अेक सीस राजा थे देस्यो, दूजो थारी पटराणी।
सीस काट कर दियो थाळ में। जद जगजी की महाराणी।

1-2. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ 88, 90

राजी होय वा चाली भाटणी, ले कै भीख मनमांनी ।[1]

× × × × ×

जसमा ओडणी (ऐतिहासिक गीत)

आयो आयो ओडा रो ओचाळो, आयो आयो म्हाराज रे देस ।
ओड खुंणे ओड भरे, खांगी बांधी गडगलिये री पाग ।
हे जशमा दे राणी, ओडणी रे लाल ।
रावळजी बुलावै हे जसमा दे राणी, म्हार मोल निरखण ने आव । हे...
मोल थारै राणियां ने सौहे, म्हांनै म्हारे झूंपडियां रो पास । हे जशमा...
राजाजी बुलावै हे जसमा दे राणी, म्हारां घुडला निरखण आव ।
घोडलां थांरे कंवरा ने सोहे, म्हांने म्हारे गधईयां रो चाव । हे जशमा दे...
राजाजी बुलावे हे जसमा दे राणी, म्हारा मोतीड़ा निरखण आव ।
मोतीड़ां थारै राणियां ने सौहे, म्हांने म्हारै लाखोटियां रो चाव ।
रावळजी पूछावै हे जसमा दे राणी, ईयां रे ओडा में किसड़ो ए भरतार ।
लंबी चोटी लाल लंगोटी, सांवलियो म्होदी रो भरतार । हे जसमा दे..
कह रे ओड ताजी ओडणी रो मोल ।
(कह रे ताजी ओडणी रो मोल म्हारा राज) हे जसमा दे...
छाळी छींकै गढईयां भूंकै ओड उचरिया जाय म्हारा राज ।[2]

× × × × ×

(बंजारे) बिणजारों का गीत

आयी रे आयी ढोला ईये बणजारे री पोट, तम्बाकू लायो रे
गांजे सौदागिर जो बांणियो रे म्हारा राज ।
कठे रे उतारो ढोला ईये बणजारे री पोट, कठे रे उतारो मांचो ।
सोदागिर जो मांणियो रे म्हारा राज ।
बडले उतारां ढोला वणजारे री पोट, चोवटे उतारो रे मांचो
सौदागिर जो वाणियो जी म्हारा राज ।
कहे रे बणजारा थारी तम्बाकू रो मोल, रुपिये री लेस्यां रे
असल तमाकू मालवी रे म्हारा राज ।
देसां रे देसां गौरी रुपिये री अधटांक, मोहोर री देसां रे
मांजो गाढा रे मारु छक पीये रे म्हारा राज ।[3]

× × × × ×

---

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 83
2. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ. 133
3. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ 85-87

कृषकों के गीत

गाँव के स्वच्छंद जीवन में एक मस्ती होती है। अल्हड़पन होता है जो नागरिक जीवन में कम मिलता है।

गीतः बनवारी हो लाल कोन्याँ थारे सारै, गिरधारी हो लाल कोन्याँ थारे सारे। टेक.

अै महल माळिया थारै, थारी बरोबरी म्हे कराँ स, कोई टूटी टपरी म्हारे। गिरधारी हो....

अै कामधेनवाँ थारे, थारी बरोबरी म्हे कराँ स, कोई भैंस पाडड़ी म्हारे। बनवारी हो लाल...

अै हाथी घोड़ा थारे, थारी बरोबरी म्हे कराँ स, कोई ऊँट-टोटड़ा म्हारे। गिरधारी हो लाल...

अै भाला बरछी थारे, थारी बरोबरी म्हे कराँ स, कोई जेली गंडासी म्हारे। बनवारी हो लाल...

ओ रतनागर सागर थारे। थारी बरोबरी म्हे कराँ स, कोई ढाब भर्‌या है म्हारे। गिरधारी हो लाल...

अै तोकस-तकिया थारे। थारी बरोबरी म्हे कराँ स, कोई फाटी गुदड़ी म्हारे। बनवारी हो लाल...

आ राधा-राणी थारे। थारी बरोबरी म्हे कराँ स, कोई एक जाटणी म्हारे। गिरधारी हो लाल...[1]

अर्थः कैसा अल्हड़पन है, भोला गर्व है। खेत में खूब नाज हुआ है। पशु भी बहुत हैं, दूध-दही की नदियाँ बहती हैं। घर में सुख शान्ति का साम्राज्य है। बड़ी-बड़ी महत्वाकांक्षाएँ हैं ही नहीं तो सब कुछ होते हुए भी चिंता की चिता में जलावें। कृषक परम संतुष्ट और सुखी है। गर्व से छाती फुलाकर अपने जीवन की भगवान के जीवन से तुलना करता है-

हे बनवारी, हे गिरधारी, तुम चाहे कितने ही बडे हो, मैं अब तुम्हारे वश में नहीं हूँ।

तुम्हारे महल हैं, पर मेरी झोंपड़ी भी उससे कम नहीं। क्योंकि मैं संतोष से उसमें रहता हूँ।

तुम्हारे कामधेनु है तो मेरे पास भैंस-गाय आदि हैं। तुम्हारे हाथी घोडे हैं मेरे ऊँट-बैल।

तुम्हारे पास भाले-बरछे आदि शस्त्र हैं तो मैं अपनी 'जोली', गंडासे से ही प्रसन्न हूँ।

तुम रत्नाकर सागर में रहते हो, तो मेरे गाँव में पानी की भरी तलैया है।

तुम्हारे कीमती तोशक-तकिये आदि सौख्य का सामन है तो मैं अपनी फटी गुदड़ी में ही मस्त हूँ। तुम्हारे राधा-रानी और रानियाँ भी हैं, पर मैं तो एक जाटनी से ही संतुष्ट हूँ।

अब बताओ मैं त्रिलोकपति से किस बात में कम हूँ?

× × × × ×

ग्राम वधू बरसात के दिनों में अपनी ससुराल के परिवार की दिनचर्या बताती है-

गीतः झिरमिर झिरमिर मेहूड़ो बरसै, बादळियो घररावे ए।

जेठजी तो मेरा बूजा काटै, परण्यो हळियो बावै ए। झिरमिर ...

देवर मेरो करै अळसोटी, जेठाणी रोटी ल्यावै ए॥ झिरमिर ..

बाळकियो भतीजो मेरो खेड़ चरावै, नणदल गायाँ घेरै ए। झिरमिर...

ग्वाळाँ नै म्हारे गळछट चूरमो, हाळ्याँ नैं खीर लापसो ए। झिरमिर... [2]

अर्थः नन्हीं-नन्हीं बूँदों में मेह बरस रहा है, बादल गरज रहा है। मेरा जेठ खेत निरा रहा है, और मेरा पति हल चला रहा है। देवर 'अलसोटी' कर रहा है और जेठानी गाँव से खेत में रोटी ला रही है। बालक भतीजा भेड़ों का 'खेड़' चरा रहा है और ननद गायें घेर रही है। और मैं घर में बैठी इन परिवारजनों के लिए रसोई बना

1-2. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 85-87

रही हूँ। संध्या को इनके खेत से घर लौटने पर ग्वालों को घीयुक्त चूरमा और हल चलाने वालों को खीर और लापसी बनाकर खिलाऊँगी।

× × × × ×

खेती का गीत

ओ कूण थारै हालीडो जासी, ओ कुण जासी छकियार, रूत आयी बावण की।
परण्यो म्हांरे हालीडो जासी, धण जासी छकियार, रुत आयी बावण की।।[1]

× × × × ×

खेती का गीत

सायेबा रे खेतां में गादडिया रोळ मचायी जी राज।
डैरयां डैरयां तालां तालां लूंकड़ती अे, टीबां में गादड़िया राज।
के खाय बैरण लूंकडती ए के बैरी गादडिया राज।
दूमां बैरण लूंकड़ती अे लांपली गादडिया राज।
मारुजी हंकाले लूंकड़ती, वा धण बैरी गादडिया राज।
सायेबा रे खेतां में गादडिया रोळ मचायी जी राज।[2]

× × × × ×

बुआई

गीत : क्यां बावाँ ढोला केसर को।
इनले आंगण मोतीड़ां री क्यारी तो उनळे आंगण केसर को।
कूण सींचै म्हारे मोतीड़ां री क्यारी तो कुण सींचै यो केसर को।
मारुजी सींचै मोतीड़ां री क्यारी, तो धण सींचै यो केसर को।
के जल सींचै मोतीड़ां री क्यारी, तो के जल सींचै यो केसर को।
गंगा रे जळ सींचै मोतीड़ां री क्यारी, तो जमना रे जळ यो केसर को।[3]

× × × × ×

पशु चरावणे का गीत

ढोर चरावण मां मोरी मैं गयीजे, गयी गयी डैरां री सींव।
उतर दिसा सूं उठी एक बादळी जे, छायो छायो सारो आकास।
घरर घरर इंदर घरराइयो जे,
मोटी मोटी छांटा मा मोरी ओसरयो ने पडवा दे मूसलधार।
खड़ी ए भीजूं मां मोरी मैं खड़ी जे, ऐडी चोटी मोरी भीजगी जे।
कपड़ा चिप चिप जाय जे, मोजा रुपग्या मां मोरी कीच में जे।
सारे ए बदन में छूटी धूजणी जे, कडकड़ बाजै म्हारा दान्त।
पून झकोळी मां मोरा डील नै जे, ढोर चरावण मां मोरी।[4]

1-2. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ. 133-135

लीपनो (घर की लिपाई पुताई)

आयो आयो ए भवयड फागण मास, भवयड मास घर घर हो रह्यो लीपणो
उतरियो उतरियो ए भवयड खुडिया रो लेव, खुडिया रो लेव, मैडी उपड्या लेवडा ए।
लीपो लीपो ए भवयड सुसराजी री पोल, वारै सुसराजी री पोळ, मैडी लीपो ए रावळी ए।
लीपो लीपो ए भवयड चाकडली री चूल, भवयड चाकडली री चूल, चूली बैवणी ए।[1]

× × × × ×

खीचड़ो (बाजरे का खीचड़ा) – गीत

तातो तातो खीचड़ो स्वाद लागै के।
एक मिरियो घी को घाल्यो और लेसी के?
खाटी खाटी कढी रांधी साथ लेसी के?
कढी खीचड़ा खाबा खातर जीव चालै के?
घी घाल्योडो खीचड़ो सीरो सो लागै के?
कढ़ी सागै खीचड़ो पर जूत बाजै के?
खातो खातो पख्यो मेर में धाप जासी के?[1]

× × × × ×

खीचड़ो

म्हारो मीठो लागै खीचड़ो।
म्हारो चोखो लागै खीचड़ो।।
छुळक्यो-छाँट्यो बाजरो।
म्हें दळी ए मूँगाँ की दाळ।। मीठो खीचडो।
ऊखल घाल्यो बाजरो।
म्हे छाल्ले घाली दाळ। मीठो खीचड़ो।
म्हे नान्हो कूट्यो बाजरो।
म्हे मीठी छाँटी दाळ।। मीठो खीचड़ो।
खदबद सीझै बाजरो।
कोई लथपथ सीझै दाळ।। मीठो खीचडो।
दूध खीचड़ो खावा बैठ्या।
कोई तरसै म्हारी जाड़।। मीठो खीचड़ो।[3]

अर्थ: बाजरे का 'खीचड़ा' मीठा लगता है। साफ़ किया – छाँटा हुआ बाजरा और दली हुई मूँग की दाल। ऊखल में बाजरा महीन कूटा गया और 'छाज' में दाल छाँटी गई। दोनों को मिलाकर पकाते समय बाजरा 'खदबद' और दाल 'लथपथ' ध्वनि करने लगी। जब तैयार हुआ और दूध के साथ मिला कर घर के लोग खाने लगे, तो बनाने वाली के मूँह में पानी भर आया।

1-2. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ. 140, 142
3. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 89

गीत – खरबूजो

मीठो खरबूजो।
दो पाख्योडा सूबाई लागै जी मीठो खरबूजो।
पगल्यां री पागल्डी म्हांने जोधाणे घडायी जी,
जोधाणे रा घाट म्हांने बाला लागै जी, मीठो खरबूजो।
हाथां रा बाजूबन्द म्हांने बीकाणे घडायोजी
बीकाणे रा घाट म्हांनै चोखा लागैजी, मीठो खरबूजो।
मीठो खरबूजो यो मिसरी सो सुवाद लावै जी, मीठो खरबूजो।[1]

× × × × ×

गाजर–मूळी

गुड सी मीठी गाजर जी।
बो लावै म्हारा गाजर बायी, दुलावै म्हारी मूळी जी।
बीजी रो वीरो मूळी सींचै, म्हें सींचै म्हारी गाजर जी।
बाईझी रो वीरो दिन में सींचै म्हें सींचा दिन राती जी।
मारुजी री मूळी दोय पानडलां म्हारी झबरकै गाजर जी।
बाई जी रो वीरो मूळी लाया म्हें लाया म्हारी गाजर जी।
आंगण बैठ रे खायबा लाग्या, मारुजी मांगै गाजर जी।
म्हांरी गुड सूं मीठी गाजर जी।
टूंडी तोड सायेबा ने दीनी छै, म्हें खावां ढोलो तरसे जी।
म्हांरी गुड सूं मीठी गाजर जी।
उदयपुर सूं वीज मंगावो, वाकुडी रेत मिलावो,
गाजर मीठी सी।[2]

× × × × ×

खटमल

उतरादो की खटमल आयोजी दिखणा दे रोळ मचाई रे खटमल सोयबा दे।
राजाजी रा हाकिम सोयबा दे, राजा जी रा हाकिम सोयबा दे, बादशाही दरोगा सोयबा दे।
डरपोकूरामजी रै खटमल लडियो बांकी लूंठी के दाफड पडियो रे, खटमल...।
यो खटमलियो बड़ो मसखरो ओ सासू गिणे न सुसरो रे, खटमल...।
डरपोकूरामजी चढ गया मैडी यो खटमल तोडै पेड रे, खटमल....।
मैं करुं कढाई तेरी तूं पलक लागण दे मेरी रे, खटमल...।
मैं करुं निहोरा तेरा, तूं मत कर मारुजी दोरा रे, खटमल...।
मैं इबकै पीहर जाऊँ तने कडा गोखरू ल्याऊँ, खटमल सोयबा दे।[3]

1-2-3. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ. 144, 145

हाळी (खेतिहर)

काळी तो पीळी ए मा मोरी, बादळी, बरसण लागो मेह।
मेरे बाबाजी ने कहियो ए, हाली ने बेटी क्यूँ दई ? ।टेक।
आठ बळदाँ की ए मा मोरी, नीरणी, आठ हाळ्याँ री छाक ।।
बाबाजी ने कहियो ए. ।
दोनूँ देराणी जेठआणी मेरी लड़ मरी। कूण उठावै म्हारी छाक।
बाबाजी ने कहियो ए... ।
गज तो काढो ए लाडो बेटी घूँघटो, मचक उठावो झाझी छाक।
बाबाजी ने कहियो ए... ।
खेतॉ तो खेताँ ए मा मोरी, मैं फिरी, कठे न लाध्यो खेत ।।
बाबाजी ने कहियो ए... ।
टीबे लो ओल्हे ए लाडो बेटी, टीबड़ी, जैं तले हालीडे रो खेत।
बाबाजी ने कहियो ए... ।
देवर जेठाँ के ए मायड़ मेरी, रूसणो, कूण उतारे म्हारी छाक।
बाबाजी ने कहियो ए... ।
गज को तो काढो ए लाडो बेटी घूँघटो, मचक उतारो झाझी छाक।
बाबाजी ने कहियो ए... ।
डहराँ तो डहराँ ए मा मोरी बाजरो, टीबाँ मूळी ए जँवार।
बाबाजी ने कहियो ए हाळी ने बेटी भल दीज्यो।
मीठो तो लागै ए मा मोरी बाजरो, फीको तो लागै ए जवार।
बाबाजी ने कहियो ए... ।
खाटी तो लगै ए मा मोरी काकड़ी, मीठा तो लागे ए मतीर।
बाबाजी ने कहियो ए हाळी ने बेटी नित दीजो।[1]

अर्थ : ए मा, काली पीली घटा उमड़ी है और मेह बरसने को है। पिताजी से कहना कि खेतिहर को बेटी क्यों दी? मैं आठ-आठ बैलों को चारा डालती हूँ और आठ हलियों की 'छाक' पकाती हूँ। मेरी देवरानी जेठानी आपस में लड़ती हैं। खेत में ले जाने को मेरी 'छाक' कौन उठावे?

माता कहती है, लाड़ली बेटी, घबरा मत, शीलपूर्वक घूँघट निकालकर ससुराल में रह। खुद समझ कर 'छाक' उठा लिया कर।

ए माँ, मैं खेत-खेत में घूमी, लेकिन अपना खेत न मिला।

प्यारी बेटी, टीबे के तले छोटी टीबड़ी है। उसके तले तेरे पति का खेत है। इसी प्रकार माँ बेटी का प्रश्नोत्तर चलता है। अंत में मेह बरसा, टीबे-टीबे पर ककड़ी और मीठे मतीरे, बाजरा और मूली पैदा हुए जिन्हें रुच-रुच कर कन्या ने खाया और अपने जीवन को धन्या समझा। अब यही लड़की माता-पिता को

---

1. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 90-91

सलाह देती है कि कृषक का जीवन अच्छा जीवन है, अतएव उनकी बहनों को कृषकों को ब्याहा जाय।

×××××

लोकप्रचलित वीर रस के कुछ दोहे

पूत जणे तो दोय जण रे, के दाता के सूर,
नातर रहज्ये बांझडी, मती गमाजे नूर। १

बड़ा बड़ाई ना करे, बड़ा न बोले बोल,
हीरो मुख से कद कैवे रे, लाख हमारो मोल।२

सत मत छोड़ो सूरमा रे, सत छोडयां पत जाय,
सत की बांधी लच्छमी रे, फेर मिलेगी आय। ३

भूंडन तो भूंडा जिणै रे, हिरण जणै सुघट्ट,
पान खड़ूक्यां उठ चलै रे, थागड़ चालै भट्ट। ४

नाहर केस भुजंग फण रे, सरणाई सुह डांह।
सती पयोधर सूम धन रे, पडसी हाथ मुंवांह। ५ [1]

×××××

1. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ. 140

श्री गणेशाय नमः

गुजराती लोकगीत

प्रथम द्रष्टि से गुजराती भाषामें और उसकी विविध बोलियों में आज गाए जाने वाले लोकगीतों की प्राचीनता 250 से 300 वर्षकी सीमाओं पर आकर ठहरती प्रतीत होती है। तब भजनों में अखा, धीरा और भोजा (कवियों के नाम) से आगे चलकर दयाराम-वल्लभ को गरबीओं (लोक गीत का प्रकार) से लेकर मींराबाई और नरसिंह मेहता तक लोककंठ में रची बसी संतवाणी तकको भी शामिल कर खींचा जा सकता है।

गुजराती लोकगीतों का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। यदि हम इनकी जड़ें खोजने हेतु गहराई में उतरें तो सोलहवीं व सत्रहवीं शताब्दी के जैन कवियों के रास (प्रकार) में से आज प्रचलित अनगिनत छंद, दुहे (दोहे) और साखियाँ प्राचीन गुजराती में से मिलती (प्राप्त) होती है। जनजन के हृदय से अमृत रसधारासे और कंठोपकंठ मधुर भाववादी स्वर सींचे जाने वाले गुजराती के लोकगीत भारतीय संस्कृति की अनमोल संपत्ति है। किसी प्रकार के प्रांतीय भेद के सिवा बिना कह सकते है कि लोकगीतो का अगाधसमुद्र अंतर्यामी रसात्मा की ही रसनिष्पत्ति है।[1]

गुजराती के लोकगीत तत्कालीन जनसमाज का प्रतिबिंब है जिसने उस समय के तथाकथित जनसमाज के रोजबरोज का पहलू झेला है। पहले पुराने जमाने में जनमनोरंजन हेतु रेडियो, सिनेमा जैसे साधन अनुपलब्ध थे। प्रजा भी उतनी ही निरक्षर। ऐसे समय में लोकगीत ग्राम्य वर्ग के लोगों हेतु मनोरंजन, संगीत व साहित्य के सुसंगम समान था। लिखकर दर्ज कराने की कोई माथापच्ची नहीं होठों से जो स्फूरा, बह निकला वह लोकगीतबनगया। कर्णोपकर्ण झेलता हुआ एक होठ से दूजे होठों तक विहरता गया और ऐसे पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कार परंपरा संरक्षित होती चली गई लोगों के मन व होठ पर।[2]

गुजरात में लोकगीत का अर्थ अपनी मिट्टी की महक या अंतरमन से बहनेवाला झरना माना जाता है। गुजरात के लोकगीत प्रांतीयता की अनूठी छाप लिए हुए है। सौराष्ट्र गुजरात का एक बड़ा अंचल है जिसकी अनोखी विशिष्टता है। सौराष्ट्र का मतलब है सहु का राष्ट्र। सौराष्ट्र को काठियावाड़ भी कहा जाता है क्योंकि यहां काठी राजपूतों का शासन रहा था। खमीरवंती, जोमवंती और साहसिक इन राजपूत जातियों में मातृभूमि के लिए शीश की परवाह न की। सौराष्ट्र में जगह जगह वीरों की खांभियाँ (स्मारक) हैं जो इनकी वीरता की गाथा सुनाता है। वीरभूमि होने के कारण काठियावाड के लोकसाहित्य का मुख्यतया विषय युद्ध गाथाएँ और प्रेमगाथाएँ है। अच्छे अर्थ में लोकगीत जीवन के ऐसे ही उदात्त भावों की श्रृंखला माने जाते है। गुजरात के प्रत्येक अंचल का लोकसाहित्य संस्कृति और शौर्य के इंद्रधनुषी रंगों से रंगा हुआ है। यहाँ के लोग उत्सव, पर्व मेले समारोह और शादी ब्याह आदि अवसरों पर बिना गाए रह नहीं पाते। इनका संपूर्ण जीवन गानमय है। गुजरात के विभिन्न प्रांतो की बोलियों ने अपनी सभ्यता संस्कृति, रीति रिवाज, आचार विचार आदि को लोकगीतों के सांचे में ढालकर अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है।[3]

---

1. लोकसाहित्य : तत्त्वदर्शन और मूल्यांकन - श्री जयमल्ल परमार, पृ. 260
2. आपणां लोकगीतो - उजमशी परमार,
3. गुजराती लोकगीत - डॉ. कृष्णा गोस्वामी, पृ. 225-227

यहाँ लोकगीत के दो प्रकार है - (1) परिष्कृत (2) ग्रामीण परिष्कृत गीत भाषा की द्रष्टि से सुसंस्कृत (नगरीय) होता है। जिसमें छंद अलंकार का प्रयोग होता है। भाषा की शिष्टता का समावेश होता है। भावनाओं के उद्दाम आवेग में ग्रामीण लोकगीत में जहां हल्की फुल्की गालियों का समावेश होता है वहीं परिष्कृत में इसका अभाव होता है। गुजरात के लोकगीत अपनी उर्मिल चंचलता को समेटे जीवन के हर मोड़ पर थिरकते रहते हैं। लोकगीत सीधे हृदय को छूते हुए अंतल गहराई में उतर जाते हैं। सौराष्ट्र में कहा जाता है जहाँ कोई न पहुँचे वहाँ लोकगीत पहुँचजाता है। यहाँ भाषा की तुलनामें भावों की गहराई है, भावनाओं को प्रधानता है संवेदना की उत्कटता एवं मार्मिकता की पहचान है। नैसर्गिक वातावरण में पलनेवाले भोली भाली ग्रामीण जनता अपनी सभ्यता संस्कृति एवं आचार विचार की बातें जी खोलकर करना चाहती है। सभी को वाणी देता है - लोकगीत।[1] प्रायः देखा जाता है कि लोकगीतों में प्रातःकालीन क्रियाओं से ले रात्रि तक सभी क्रिया का विस्तृत वर्णन होता है। शादी-ब्याह के अवसर पर रीति रिवाज, विधि-विधान, मीठे उपालंभ, फटकार आदि होता है। ग्रामीण त्योहारमें महत्वपूर्ण माना जाता है मेला और मेले के रंग में रंगता है गुजरात का लोकगीत। इसमें गुजरात के सुप्रसिद्ध तरणेतर का थानगढ़ में लगनेवाला मेला लोकमेला मानाजाता है। इसी प्रकार चौठानो मेलो, शामणजी का मेला माधवपुर छेड का रुकमणी स्वयंवर के उपलक्ष्य में लगनेवाला मेला, सापुतारा डांग (जिले) के आदिवासियों के मेले अपने अपने में एक सामाजिक समारोह हैं जहाँ अलग अलग संस्कृति व सभ्यता का संगम होता है। यहाँ लोकगीतों की छटा देखते ही बनती है।

लोकगीतों की विशेषताएँ [2]

1. साहित्य का मूलधन है - लोककंठ में जीनेवाला और लोकजिह्वा पर रमने वाला यह लोकसाहित्य काल क्रमानुसार शस्त्रों, पुराणों, बृहत्कथाओं में, नाटको व उपन्यासों तक संग्रहित व स्थान प्राप्त करता रहा है। सचेतरुप से शिक्षितों का साहित्य लोकसाहित्य से प्रेरणा लेकर ही रचित हुआ है। श्री काकासाहब कहते हैः लोकगीत यह साहित्य का मूल धन कहा जाता है। लोकवार्ता (कहानी) जैसे इतिहास, पुराण और उपन्यास आदि अभिजात साहित्य का उद्‌गम है वैसे ये लोकगीत ही खंडकाव्य और महाकाव्य, वीणाकाव्य और चारणकाव्य, नाटक और चंपू प्रत्येकरसात्मक कृति का मूल है जड है।

2. हीन संपन्न फिर भी महात्म्य बीज - कहा जाता है ये संस्कृति डॉ. वेरीयर एल्वीन के शब्दों में दीन, हीन अनपढ़, निम्न व प्राचीन जातियों की परंतु जिसकी शब्द, स्वर, लय और ताल के समन्वय की साधना देख अपने आप मस्तक झुक जाए ऐसी महत्तम है। स्व. बलवंतराय क. ठाकोर ने इसी कारण वश, इसे हीन-संपन्न फिर भी महात्म्य बीज संस्कृति कहा है। जिसे सुसंस्कृत कहा जाए ऐसा कुछ भी इन्हें प्राप्य नहीं, सुतकी के शब्दों में श्रीहीन ही कहा जाएगा, शिष्टसंपन्न की द्रष्टि से तो यह हीन संपन्न ही है, परंतु इसने जो संस्कृति पाई है, साध्य की है, उपासित की है, उसमे मानव-महत्ता के शिखरों के बीज गहराई तक गड़े है। महान संस्कृति का सर्जन करने की शक्ति इसी के

---

1. गुजराती लोकगीत - डॉ. कृष्णा गोस्वामी, पृ. 225-227
2. लोकसाहित्य : तत्त्वदर्शन अने मूल्यांन - श्री जयमल्ल परमार, पृ. 222-276 में से चुनकर अनुवादित

बीज में पड़ी हुई है क्योंकि जीवन के सारभूत तत्व इसी बीज में समाहित हुए पडे हैं।

3. लोकगीत में जीवन विधायक गीत संगीत भरा पड़ा है। हृदय के सर्वोत्तम गुण दया, माया, ममता, करुणा, सहयोग संवेदनशीलता आदि लोकगीतों द्वारा ही मँजे हुए हैं।

4. लोकगीत मानवीय संबंधो को जोड़नेवाले है। लोकगीत मनुष्य में रहित रसात्मक अंश को जागृत करता है। इसी कारण समस्तसृष्टि प्रिय व आनंदमय लगती है।

5. लोकगीत भारतीय संस्कृति के प्राण है - इन लोकगीतों ने कठिन श्रमपूर्ण ऐसा सागर जीवन गोपालन और कृषि जीवन को गीतों में झुलाकर उनकी थकानदूर कर लगातार परिश्रम को भी उत्साह आनंद में पलट दिया है। शौर्य का सींचन किया है। स्वार्पण का स्वागत किया है। और मृत्यु के गहरे आघातों को मरशिया में (मृत्युगीत) गागाकर उसे झेलना सीखाया है। लोकगीतों में जीवन के सभी तत्वों को आवृत्तकर लिया है। हिंदी भाषी विद्वानों ने लोकगीतों को भारतीय संस्कृति का प्राण कहा है।

6. लोकगीत आनंद प्रेरित मानव हृदय की रसात्मक अनुभूति की रागमय अभिव्यक्ति है।

7. इसका उद्‌गम अज्ञात होता है। लोकगीत सहज स्फूरित होते है। लोकगीत की रचना एक या एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा होती है परंतु उसकी अनुभूति की व्यापकता जनसामान्य के हृदयभाव के साथ मिलते जुड़ते सार्वजनिक बन जाता है। इस तरह लोकगीतों का रचयिता अज्ञात होता है।

8. लोकगीतों में प्रकृति की महिमा है। वह प्रकृति का महागान है।

9. इसमें मानवहृदय की उर्मियाँ अनुभूतियाँ निहित है।

10. इनमें व्यस्तित्व का सर्वथा अभाव होता है।

11. लोकगीतों में शब्द स्वर और गति-तान का समन्वय होता है।

12. लोकगीत कंठोपकंठ बहते आए हैं और आएँगे।

लोकगीतों के विषय में स्व श्री रणजीतराम वावाभाई के शब्दों में देखे : उनके विचार-

लोकगीतो का उषाकाल वह साहित्य का उषाकाल है। वस्तुतः साहित्य का उद्‌भव लोकगीत में से ही हुआ है। प्रत्येक प्रजा का साहित्य प्रथम गाथा अथवा भजनो के रुप में अवतरित, उदित हुआ है। कवित्व और संगीत के अंश मानव आत्मा में रचे बचे हुए है। मानव हृदय की वांच्छनाएँ और आत्मा की अभिलाषाएँ इन दोनो के आधार पर व्यक्त होती है। जिस प्रकार वातावरण में से रहनेवाली काव्य अपनी त्वचा को शिशिरमसूण करती है उसी प्रकार, ये दोनों (कविता व संगीत) हमारे जीवन को करते हैं।

लोकजीवन को संस्कृति की द्रष्टि से मूल्यांकन करें तो भी गुजरात के लोकजीवन को तापी, नर्मदा और मही के रसाल प्रदेश ने लालिव्य और नाजुकता अर्पित की है। कच्छ सौराष्ट्र की पर्वतमाला और उसकी खाइयों में से कलकल धारा से बहनेवाली नदियों ने प्रेम शौर्य को पोषित किया है और ये सभी रामसीता और कृष्णराधा की उपासना की नाजुक डोर से बंधे हुए मर्यादाशील है। गुजरात के लोकसमाज के उद्योग धंधे भी इसी कारण संगीतालय बन गए। जीवन की जटिलता को हल्का फुल्का बनाने हेतु अनुभूतियों के आवेगो में से निर्झरित संघोर्मियां ही गुजरात के लोकगीत।

श्री गणेशाय नमः

गुजराती लोकगीत

(१) देवी देवताओं के गीत

श्री गणेशजी का गीत

सुखड बाजोठी घडावो रे, मारा गणेश दूंदाळा
गणेश दूंदालाने मोटी फांदाला,
परथम गणेश बेसाडो रे, मारा गणेश दूंदाळा
कृष्णनी जाने रुडां हाथीडां शणगारो,
हाथीडे लाल अंबाडी रे, मारा गणेश दूंदाळा
कृष्णनी जाने रुडां जानैया शणगारो,
जानैया लाल गलाल रे, मारा गणेश दूंदाळा
देशो ते देशना देवता तेडाव्या,
गणेश मेल्या विसारी रे, मारा गणेश दूंदाळा
पेट छे मोटुं ने सूंढ छे लांबी,
गणेश आवे सौ लाजे रे, मारा गणेश दूंदाळा
छेटे सीमाडे जानुं ज्यां पहोंचियुं,
ईश्वरनो रथ भांग्यो रे, मारा गणेश दूंदाळा
भांगी पींजणियुं ने भांग्या तळावा,
घोरीडे तूटी बेवड राशुं रे, मारा गणेश दूंदाळा।
अघोड वांसे ने अणवार्णे पगे,
गणेश मनावा जाय रे, मारा गणेश दूंदाळा।
तमे गणेश ने तमे परमेश्वर,
तम आव्ये रथचाले रे,मारा गणेश दूंदाळा।
अमे दूंदाळा ने मोटी फांदाळा,
अम आव्ये तम लाजो रे, मारा गणेश दूंदाळा।
अमारे जोशे मणना रे लाडुं,
मणना जोशे तो सवाना देशुं रे, मारा गणेश दूंदाळा।
जान जनोई ने लगन अघरणी,
परथम गणेश बेसारो रे, मारा गणेश दूंदाळा।[1]

कंठस्थः शाबाबहन परमार (भावनगर)

अर्थातः गुजरात में विवाह के सुअवसर पर प्रथम गणेशजी का स्थापन कर यह उपरोक्त गीत गाया जाता है। गीतानुसार गाया जा रहा है कि चंदन का बाजठ (पाट, बैठने का लकडी का आसन) बनवाओं, मेरे बडी तोंदवाले गणेश जी के लिए।

1. गुजरातनां लोकगीतो : खोडीदास भा. परमार, पृ. 1-2

गणेशजी बड़ी, मोटी तोंदवाले देव है, प्रथम उन्हीं को आसन पर बैठाया जाय।

श्रीकृष्ण रुपी दूल्हे की बारात को सुंदर हाथियों से सजाया जाए और उन हाथियों पर लाल रंग की अंबाडी सुशोभित हो।

कृष्ण रुपी दूल्हे की बारात में बारातियों के खूब सजाओ। सभी बाराती मारेखुशी के लाल गुलाल से चमक रहे हैं, मेरे गणेशजी बडी मोटी तोंदवाले है।

सभी देशों से अनेक देवताओं को निमंत्रित किया और गणेशजी को आमंत्रित करना भूल गए, मेरे गणेशजी....।

गणेशजी का उदर बहुत बडा है व सूँड़ लंबी है उनके आने से सभी लज्ज़ित होते है। मेरे गणेशजी बड़ी तोंदवाले है।

जैसे ही बारात सीमा प्रदेश तक पहुँची कि दूल्हे का रथ टूट गया।

रथ के पहिए, जोड़ने वाली कमान, लकडी सभी टूट गया। बैल व उन्हें लगाम दने वाली रस्सी सभी टूट गया मेरे गणेश...।

फिर क्या था बिना कुछ श्रृंगार के कपडे फेंक, नंगे पांव गणेशजी को मनाने दौड़ पड़े।

हे गणेशजी आप ही श्रीगणेशजी हमारे परमेश्वर हो आप पधारों तभी रथ चलेगा मेरे गणेशजी बड़ी तोंदवाले है।

हे प्रभु हम ही बड़ी मोटी तोंदवाले है, उल्टा हमारे आने से आप लज्ज़ित होंगे हमें माफ करें।

यदि आपको मन (तोल माप) भर लड्डु चाहिए होंगे तो हम आपको सवामन के लड्डु का भोग लगाएंगे।

रांदलमाता (पुत्र दायिनी) के स्थापन के समय,जनेउ के समय, शादी ब्याह या गोने (संगृहिंणी) के समय घर में सबसे प्रथम हम आपका स्थापन करेंगे मेरे गणेशजी बड़ी तोंदवाले है।

गणेशजी की आरती

जयदेव जयदेव जय गणपति देवा प्रभु जय गणपति देवा
गणनायक गिरिजासुत रिद्धि सिद्धि देवा   जय देव..........।
लंबोदर जग जयकर उंदर अस्वारा, प्रभु उदर अस्वारा
पीतांबर धर कटि पर त्रिभुवन जग प्यारा।   जय देव ....।
हेरम हस्तक मोदक मनगमता प्रभु मोदक मनगमता
पुष्कळ दूध साकर सूंढ वडे जमता।   जय देव..........।
मालंग आकृति देव विश्व तणा भर्ता, प्रभु विश्व तणा भर्ता
गजवदनायक दंता विघ्नसकल्ल हर्ता   जय देव..........।
त्रेत्रीस कोटी अमरो तेरो यश गावे, प्रभु तेरो यश गावें,
भवप्रभा रुद्रादिक नित दर्शन पावें।   जय देव..........।

कंठस्थ : एक भक्तगण (बड़ौदा)

गणेश स्तुति

श्री गणाधीपत्य तुझ ने नमुं शुभ कारज आपे जे समुं
वरदायक लायक गुंणनीध्य सदा सरवदा आपें सीध्य 1
शंकर सूत पारवती पुत्र शोभा चींतामणी घरसुत्र
लख-लाभ तन, सुध-बुध सुभनार रीध्य-वीध्य ते आपें परीवार 2
स्वामि कारतक जोयण जात्र खेम-कल्यांण जेह ना जामात्र
उज्वल मुखें अेक ज दंत नीरमल-गुण जे अधीक अनंत[1]

गणेश स्तुति (गणपति नुं आवणुं)

समर्यां रे लक्ष लाभ दे, विद्या तणो उपदेश
अवसर पेलो समरीअें, श्री गौरीपुत्र गणेशजी।
लांबी ते सूंढे आवे मलपतो, देव दुंदाळो,
लक्ष लाभनो दातार, देव मारां विघन हरो।
मस्तक मुगट सोहामणो, समी सूंढाळो,
अेने कसबी दुपट्टो केड, देव मारां विघन हरो।
जरकसी जामा पहेरणा, देव दुंदाळो,
अेने घुघरीनो धमकार, देव मारां विघन हरो।
माता तो जेनी पारवती पिता तो शंकर देव,
तमने मोदिकनो आहार, देव मारां विघन हरो।
रामैयो सामैयो तमने विनवे समी सूंढाळो,
तमने लळी लळी लागे पाय,देव मारां विघन हरो।[2]

(श्री सुधाबहन र. देसाई)(भवाई में से)

अर्थः उपर्युक्त श्रीगणेशजी की स्तुतिमें कहा गया है कि इनका स्मरण करते ही लाखों लाभ प्रदान करते है, जो विद्या का उपदेश देते है और किसी भी सुंदर अवसर पर हम सर्वप्रथम श्री गौरीपुत्र (पार्वतीजी) गणेशजी का ही स्मरण करते है। गणेशजी लंबी सूँढ और मदमाती चाल से चलने वाले,तोंदवाले देव है, लाखो लाभों के दाता है गणेशजी। देव मेरे विघ्नों को दूर करें। इनके माथे पर सुंदर मुकुट सुशोभित है , सामने लंबी सूंढ, कमर पर कढाई किया हुआ दुपट्टा बंधा है। इन्होंने सुनहरे चमकीलो उपवस्त्र पहन रखे हैं और पैरों को घुंघरु को झंकार है। ऐसे देव मेरे विघ्नों का हरण करें। माता जिसकी पार्वतीजी और शंकरजिनके पिता है, आपको मोदक का भोग लगाया जाता है। रामैयो और सामैयो भवाई खेलने वाले भक्तगण के नाम आपको झुक झुक चरण स्पर्श कर प्रार्थना करते है कि हे विघ्नहर्ता मेरे कष्टों को दूर करें।

1. वार्ता 18वीं : वहाँणनी वारता (ईदुमती पुतली)
2. गुजरातनां लोकगीत (भवाईनां गीतो) : खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 240

गणेश भजन (दूंदाळो दुःखभंजणो)

दूंदाळो दुःखभंजाणो, सदाय बाळे वेश
परथम पहेला समरीये, गवरीनंद गणेशजी....
समर्यो लख लाभ दिये, विद्या तणो उपदेश,
पंच देव रक्षा करे ब्रह्मा, विष्णु, महेश जी....
गौरी तारा पुत्र ने, समरे मधुर मोर,
दिवसना समरे वाणिया, रातना समरे चोर...जी
सदा भवानी सहाय रेजो, सनमुख रहेजो गणेश,
पंच देव........... महेश
पहेली नमण नमुं गुरुदेव ने, दूजी नमण नमुं गणेश,
त्रीजी नमण नमुं त्रिगुण, ब्रह्मा, विष्णुने महेशजी....[1]

संग्राहक : जयमल्ल परमार (आपणी लोक संस्कृति में से)

अर्थ : उपर्युक्त गणेशजी के भजन में कहा गया है कि श्री गणेशजी बडी तोंदवाले और दुःखो का नाश करने वाले है जो सदा बालस्वरुप में ही रहते है ऐसे गवरीनंद अर्थात् पार्वती पुत्र का हम सर्वप्रथम स्मरण करते है। स्मरण करने से लाखों लाभ प्रदान कर विद्या का उपदेश देते है पांचो देव सदैव रक्षा करते है जैसे ब्रह्मा, विष्णु और महेश । पार्वतीजी तेरे पुत्र का सभी सर्वप्रथम स्मरण करते है जैसे बनिया प्रातःकाल अपनी दुकान खोलने वक्त श्रीगणेशजी का स्मरण करता है और रात्रि को चोर चोरी के लिए निकलने समय गणेशियो (घर तोडने का मुख्य साधन) उसे सबसे पहले याद कर साथ लेता है। हे भवानी हमारी सदैव सहायता करना, गणेशजी सदैव सम्मुख रहना, पांचो देव रक्षा करें। पहला वंदन गुरुदेव को, दूसरा वंदन श्री गणेशजी को और तीसरा वंदन त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और शंकर जी को करता हूँ।

गणेश वंदना

विघ्नेश्वराय वरदायसुर प्रियाय
लंबोदराय सकलाय जग ध्वितायः।
नागाननाय श्रुति यज्ञविभूषिताय
गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।।

कंठस्थ-भक्तगण

गणेश स्तुति–

पहेला समरुं गणपति देवा
विघन देजो कापी रामा....पहेला
बीजे समरुं शारदामाता
वाणी निर्मळ आपी रामा....पहेला

---

1 गुजरातनां लोकगीत (भवाईनां गीतो) : खोडीदास भा. परमार, पृ. 194

त्रीजे समरुं मातापिताने

सद्‌बुद्धि बहु आपी रामा....पहेला

चोथे समरुं गुरु चरणने

पावन कीधा पापी रामा....पहेला

पुनिता पंचम परमेश्वरने

मानव पदवी आपी रामा....पहेला

कंठस्थ- एक बहन (बड़ौदा)

गणेश स्तुति

श्री शीव-सरीखो तात, मात उमया छे जेहनी

लख्य-लाभ शुभ पुत्र, रीध्य-वृद्ध तनया जेहनी

खेम-कुशल जामात्र, पात्र अष्ट सीध्य दल दासी,

त्रीदश आद्य देव, सेव नव नीध्य घरवासी

पीता पंचानन प्रभु, खडानन खांधें धणुं,

गजानन गुण-आगलो, प्रथम ध्यान धरुं तेह तणुं[1]

शिव स्तुति

शंभु शरणे पडी, मांगु घडीअे घड़ी कष्ट कापो

दया करी दर्शन शिव आपो....

तमे भक्तो ना दुःख हरनरा, शंभु सौनुं सदा करनारा

हुं तो मंदमति, तारी अकळ गति कष्ट कापो...दया करी..1

अंगे भस्म स्मशाननी चोळी, संगे राखो सदा भूत होळी

भाले तिलक कर्युं, कंठे विष धर्युं, अमृत आपो...दया करी..2

नेति नेति ज्यां वेद कहे छे, मारुं चितडुं त्यां जावा चाहे छे

सारा जग मां छे तूं, वसुं तारामां हुं, शक्ति आपो...दया करी..3

हुं तो अेकलपंथी प्रवासी छतां आतम केम उदासी,

थाक्यो मथीरे मथी, कारण जडतुं नथी, समजण आपो...दया करी..4

आपो द्रष्टिमां तेज अनोखुं, सारी सृष्टि मां शिवरुप देखुं

मारा मनमां वसो, हैये आवी हसो, शांति स्थापो...दया करी..5

भोळा शंकर भव दुःख कापो, नित्य सेवानुं शुभ फळ आपो

1. कवि शामळ भट्ट कृत 'सिंहासन बत्रीसी' की 22वीं कथा (सुभगा पुतली), पृ. 231

टाळो मान मदा, गाळो गर्व सदा, भक्ति आपो...दया करी..6
शंभु शरणे पडी मांगु, घडीअे घडी कष्ट कापो
दया करी दर्शन शिव आपो

कंठस्थ : सविताबेन जे. भट्ट (लींबडी)

शिव स्तुति

धन्य धन्य शिव महाराज, लाज राखोजी माहरी,
आपो सुखविलास, आश करे जे ताहरी।
वृषभवाहन रुढ़, प्रौढ़ वरदान ज आपे,
जेह जपे तुज जाप, आप शरणागत थापे।
चोखा चढ़ावे चार, पार भवजलना पामे,
जेह वगाडे गाल, झाल ते जन्मनी वागे।
पुष्प चढ़ावे जेह, देह निरोगी थाय,
पौत्र पौत्री परिवार, सार मुख से गुण गाये।
अष्ट महा सिद्धि नव-निज रहे नित वासे,
जीवित पामे भक्ति, मुक्तिपद गत कैलासे।
महारुद्र ईश समान, नही कोई दाता देवता।
सामल कहे चितमां जरो, मृत्यक ने करो जीवता।[1]

शंभुना गुण शुं गाईये रे (शिव संबंधी)

शंभुना गुण शुं गाईए रे लीला छे अपरंपार मारा वहाला...शंभुना
देवाधिदेव कहेवाय छे रे कैलासमां वसनारा मारा वहाला..शंभुना
जेने जे जोइतुं ते आपता रे भक्तोना तारणहार मारा वहाला..शंभुना
श्रीकृष्ण जेने सेवता रे देवोने पण देनार मारा वहाला..शंभुना
प्रभुअे पूजा आदरी रे लइने कमळ हजार मारा वहाला ॥
प्रसन्न थई वरदानमां रे वळतो वाळ्यो उपकार मारा वहाला...
सुदर्शन चक्र आप्युं रे शोभाव्या सर्जनहार मारा वहाला..शंभुना

कंठस्थ : एक भक्त बड़ौदा

अर्थः हे शंभु (शंकरजी) हम आपके गुणों का क्या गान करें आपकी लीला तो अपरंपार है, मेरे प्यारे प्रभु। आप तो देवों के देव कहलाता हो, कैलाश में निवास करते हो। जिसे जो भी चाहिए वह आप प्रदान करते हो,

1. कवि शामळ भट्ट कृत 'सिंहासन बत्रीसी' की 6ठ्ठी कथा ('अबोला राणीनी कथा' में से), पृ. 94

भक्तों का उद्धार करने वाले हो, श्रीकृष्ण भी जिसे पूजते हैं, देवों को भी देनेवाले मेरे प्यारे प्रभु, मैं आपके गुण क्या गाउं? प्रभुने हजार कमल पुष्प ले पूजन प्रारंभ किया आपने प्रसन्न हो वरदान देकर उपकार का बदला चुकाया मेरे प्रभु। सुदर्शन चक्र श्रीकृष्ण को दे सर्जनहार की शोभा को बढ़ाया प्रभु शंभु में आपके गुणों का क्या बयान करुँ?

मन तुं शंकर भजी ले (मन रे शंकर को भज ले)

मन तुं शंकर भजी ले मन तुं शंकर भजी ले
छोड दे कपट भोळानाथ ने भजी ले
कोई चडावें गंगा जमना कोई चडावे दूध
कोई चडावे बीलीपत्र कोई चडावे भभूत...मन तुं
राजा चडावे गंगाजमना रैयत चडावे दूध
ब्राह्मण चडावे बीलीपत्र योगी चडावे भभूत...मन तुं
कोई मांगे अन्नदान कोई मांगे पुत्र
गरीब मांगे अन्नदान वांझिया मांगे पुत्र
राजा मांगे कंचनकाया बाळा मांगे रुप...मन तुं
आकडो धतूरो शिवजी भांगना छो भोगी
पारवतीना पति तमे जंगलना छो जोगी
पीरसे माता पारवती ने जमे भोळानाथ...मन तुं

कंठस्थ : सविताबेन जे. भट्ट (लींबडी)

अर्थ : उपर्युक्त शिव भजन में कहा गया है कि, हे मन, तू शंकर को भज ले और सारे छलकपट का त्याग कर भोलेनाथ को भज लें। कोई गंगा या यमुना जल अथवा दूध चढ़ाते है कोई बिल्वपत्र से पूजते है तो कोई भस्म से पूजन करते है। राजा तो गंगा, यमुना जल चढ़ाते है और प्रजा दूध से प्रभु को स्नान करवाती है। ब्राह्मण बिल्वपत्र चढ़ाते है और साधु भभूत चढ़ा पूजते है। कोई अन्नदान माँगते है तो कोई शिव से पुत्र की कामना करता है। गरीब अन्न का दान याचते है तो बांझ पुत्र की झंखना करती है। राजा शिवजी से सुवर्ण सी काया मांगते है तो नवयुवती सुंदर रुप माँगती है। परंतु शिवजी स्वयं आक और धतूरे तथा भांग के भोगी है। पार्वती के पति आप तो जंगल के जोगी हो। माता पार्वती आपको भोजन परोसती है और भोलेनाथ उसे ग्रहण कर जीमते हैं।

शिव संबंधी

जल्दी जगाडो दीनानाथ, शंकरजीने जल्दी जगाडो
चोटले बालूडे नाग, शंकर जी ने जल्दी जगाडो,
पित्तळ लोटा जल भर्या, न दातण डोळशे कुण
दातण दातण शुं करो रे, 1

अे तो दातण पारवतीना हाथ, शंकरजी ने जल्दी जगाडो...जल्दी जगाडो

तांबा ते कूंडीओ जळ भरी, न नावण करशे कुण

नावण नावण शुं करो रे, 2

अे तो नावण पारवतीना हाथ, शंकरजी ने जल्दी जगाडो...जल्दी जगाडो

रोंधी रसोयो थाक भरी, न भोजन जमशे कुण

भोजन भोजन शुं करो रे, 3

अे तो भोजन पारवतीना हाथ, शंकरजी ने जल्दी जगाडो...जल्दी जगाडो

लविंग सोपारी न अेलची, न मुखवास करशे कुण

मुखवास मुखवास शुं करो रे, 4

अे तो मुखवास पारवती ना हाथ, शंकरजीने जल्दी जगाडो [1]

अर्थः शिवजी संबंधी उपर्युक्त गीत में कहा है कि जो दोनों के नाथ गरीबों के ऐसे शिवजी को जल्दी जगाओ। जिसकी चोटी पर बाल नाग लटक रहा है ऐसे शिव को जल्दी जगाओ। उनके दातून (प्रातः मुखस्वच्छ) हेतु पीतल की लुटिया भर कर रखी गई है। अरे दातून दातून क्या करते हो वह सब तो पार्वतीजी के हाथों में है। इसी तरह शिवजी के नहाने के लिए तांबे के बडे घड़े भर रखे गए है उन्हें जल्दी जगाओ सभी कुछ पार्वतीजी के आधीन है। उनके भोजनार्थ थाली भर कर रसोई बनाई गई है जिसे शिवजी ग्रहण करेंगे। भोजन के पश्चात् उन्हें मुखवास के तौर पर लौंग, सुपारी व इलायची रखी गई है। परंतु यह सब माता पार्वती जी के अधीन उनके हाथों में हे अतएव उन्हें (शंकरजी) को जल्दी जगाइए।

श्री शिवजीकी स्तुति (भुजंगी छंद)

उमा ईश हुं आपने पाय लागुं,
करी भक्ति तारी सदा मुक्ति मांगुं,
नहीं अन्य कोई मने वस्तु प्यारी,
दीओ भक्ति शंभु सदाये तमारी। 1
सहु देवनो देव तुं देव मोटो,
करे भक्ति तारी न रहे कोई तोटो,
भजे भाव थी आपने सृष्टि सारी,
दीओ भक्ति शंभु सदाये तमारी। 2
पूरा प्रेम भी जे करे शिव सेवा,
मळे तेमने तो सदा मिष्ट मेवा,
वळी पापना पुंज नाखो निवारी दीओ....। 3

---

1. महेंदी लाल गुलाल - अमृत पटेल, पृ. 36

दया लावी ने दास ना दुःख कापो,
मने शरणे जागी सदा सुख आपो,
छबी आपनी छे मने पूर्ण प्यारी,
दीओ भक्ति शंभु सदाये तमारी ।4

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

कंठस्थ : एक बहन बड़ौदा

अर्थ : पार्वतीजी के पति शिवजी मैं आपके चरण स्पर्श करती हूँ। आपकी भक्ति कर सदैव मुक्ति की कामना करती हूँ। अन्य कोई चीज मुझे प्यारी नहीं है सिर्फ शंभु आप मुझे अपनी भक्ति सदैव प्रदान कीजिए। सभी देवों के आप देव बड़े है। जो आपकी और समग्र सृष्टि भावपूर्वक आपकी भक्ति करती है। हे शंभु आप अपनी भक्ति दीजिए। जो हंमेशा प्रेमपूर्ण भाव से शिवजी की सेवा करता है उस मिठाई मेवा सद्दश फल प्राप्त होता है। पाप का नाश होता है। दया कर प्रभो दुःख दूर कर मुझे अपनी शरण में जान सदा सुख दीजे। आपकी छवि मुझे अत्यंत प्रिय है और मुझे सदैव अपनी भक्ति दे।

राम संबंधी

झरमर मोतीओवाळो, सीतानो वर छोगाळो रे,
त्यांथी सीतानो वर सेमाडे आया,
सेमाडीअे वखोंळ्यो, सीतानो वर छोगाळो रे।
झरमर.....
मोंथे मुगट छेल, छत रे भराश्यों,
झरमर.....रे।
त्यांथी सीता न वर गोंदरे आया
गोवाळीओ वखोंळ्यो, सीतानो वर छोगाळो रे...
झरमर....
मोंथे मुगट छेल, छत रे भराश्यो,
झरमर.....रे।
त्यांथी सीतानो वर, सरोवर आया,
पोनीआरीअे वखोंळ्यो, सीतानो वर...रे।[1]

अर्थ : उपर्युक्त राम संबंधी गीत में कहा गया है कि झरमर मोतीओ व आभूषणों से सुसज्जित सीताजी के वर श्रीरामजी सुशोभित है। वह विवाह हेतु राह में चले आ रहे है। चलते चलते वह राज्य की सीमाओं पर आ पहुँच है जहाँ सभी ने श्रीरामजी के खूब बखान किए। उनके माथे पर मणियों से जड़ित मुकुट सुशोभित है चलते चलते वहां से सीताजी के वर गॉव की सीमाओं में पहुँचे जहाँ ग्वालों ने उनका बखान किया कि सीता का वर तो छेल छबीला न्यारा है। माथे मुकुट धारण कर सीताजीके वर सरोवर किनारे पहुँचे जहाँ पनिहारीयों ने उनके खूब बखान किए।

---

1. महेंदी लाल गुलाल – अमृत पटेल, पृ. 33

श्रीरामजी की आरती

कौशल्या ना कुंवर तमारी, आरती रोज उतारुं रे,
नित्य सवारे वहेलां उठी, प्रेमथी पाय पखाळुं रे,
सरयू जळमां स्नान करावुं, ने नयने काजळ काळुं रे
केड कटारी, धनुष बाणथी, राघवने शमगारुं रे,
काग मुनि ना रुप धरीने, राधव तमने रमाडुं रे
शबरी बाईनां रुप धरीने, मीठां बोर जमाडुं रे
अहल्या थईने पडुं चरणमां, तन मन धन ओवारुं रे
प्रेम थकी श्री रामचंद्र ने, रणछोड भक्त संभारे रे
अंतरथी आशिष तमारा, भक्तो काजे मांगे रे
कौशल्या ना कुंवर तमारी, आरती रोज उतारुं रे... ।[1]

अर्थ : उपर्युक्त श्रीरामजी आरती में कहा गया है कि है कौशल्या नंदन मैं तो रोज तुम्हारी आरती उतारुँगी। नित्य प्रातःकाल जल्दी उठ आपके चरण धोउँगी (पखालूँगी) । सरयू नदी के जल से स्नान करवाउँगी, आपके नयनों में काला काजल लगाउँगी। कमर में आपके कटार व धनुष बाण से आपको सजाउँगी। काग मुनि का रुप धरकर हे राधव मैं तुम्हे खेल खिलाउँगी। शबरी का रुप धर मैं आपको मीठे बेर चखाउँगी। अहल्या बन आपके चरणों में पड़कर अपना तन मन सबकुछ अर्पण करुंगी। ये आपका भक्त आपका प्रेम से आपका स्मरण करता है और अन्य भक्तगणों हेतु आपके अंतःकरण से आशिष मांगता है। है कौशल्या नंदन, कुमार मैं नित तुम्हारी आरती उतारुँगी।

राम महिमा

कहा जाने मूरख, तुंदशरथ के नंदनकुं,
सनकादि जोगी जेसें, पीर ध्यान धरत है
पतित को पावन अे, खावन हे खलक को
भक्तन को बच्छल, काम करुना करत है
शशि शेष शारद जु, नारद बसिष्ठ बर,
भूपर जीवा जो न वांकु, भरतपुर भरत है
शामळ ज्युके स्वामी की, प्रतित तुं पर्ख देख,
गिरिवर गंभीर धीर, नीर पर तरत है।

(अंगदविष्टि में से शामळकृत)

1. प्रभु प्रार्थना (धार्मिक पुस्तक से एकत्रित)

राम स्तुति

महाबलियो कहूँ कुंभकरण, रोलो रण पमाड्यो मरण
इंद्रजित लखमणे हणो, संदेह भाग्यो श्रीराम ज तणो।
अठयासी दाढा युद्ध थयुं, मंदोदरीअे रावण ने कहूँ
अे महाराज छे असरण शरण, सीता आपी लागो चरण ।
जगतपावन अेह्नुं नाम, राजीवलोचन रुडो राम
दशरथनंदन, कौशल्या तन, महामनोहर मूरतमन।
सीतापति, जनक ज मात्र, पूजवा जोग पवित्रज पात्र
नरक निवारण, भरतभ्रात, दीलीप कुल, दीपक अंश अद्वैत।
रविकुलमणि, सुखनिधान, भक्तवत्सल, गुणीजल जसगीत,
सुनिधान अे मोक्षनं मूल, अरिजगण शत्रुनुं शूल।
सतनो सत, अे ब्रह्मनो ब्रह्म, श्रेष्ठ बीजामांनो अे मरम
कोड कथन कैं नारी कहां लंकापत लेखे नव लहां।[1]

श्रीकृष्ण स्तुति

श्रीकृष्ण करुणानिधि, करुणासिंधु कृपाळ
विश्वपति/विश्वपति विश्वेश्वरो, दीनबंधु दयाळ।
गोविंद चारी गावडी, मावडी बांध्या हाथ,
पितांबर प्हेरी पावडी, चौद लोकनो नाथ।
तोळ्यो पर्वत त्रिविक्रमे, घोळ्यो इंद्र अहंकार,
रोळ्यां राक्षसकुल लक्षधा, भूनो हर्यो भार।
काळ आएयो शिशुपाळनो, पांडवनी प्रतिपाळ
कुब्जाने कंदर्पवत करी, होडे शुद्ध हवाल।
नीर राख्युं नारी तणुं, धारण दीधी धीर,
वीर पांचे वधारिया, चतुर्भुज पूर्यां चीर।
नंदनंदन वंदन जगत, आनंद कंद उद्योत,
चंदन शीतळ सुखकरण, बंधन टाळण ज्योत।[2]

---

1. शामळ भट्ट कृत 'सिंहासन बत्रीसी' में से नौका की कथा नं. 14 में से, पृ. 95
2. श्री शिव-पुराण (अध्याय 17वाँ), शामळ भट्ट, पृ. 93-94

श्रीकृष्ण स्तवन (स्तुति)

ओम जय काना काळा, नटवर नंदलाला, प्रभु नटवर नंदलाला
मीठी मोरलीवाला, प्रभु मीठी मोरलीवाला, गोपीना प्यारा...ओम
कामणगारा कान, कामण कंई कीधां, प्रभु कामण कंई कीधां,
माखण चोरी मोहन, प्रभु माखण चोरी मोहन, चित्त चोरी लीधां।
नंद यशोदा घेर, वैकुंठ उतारी, प्रभु वैकुंठ उतारी
कालीय मर्दन कीधो, प्रभु कालीय मर्दन कीधो, गायोने चारी। ओम
गुण तणो तुम पार, केमे नही आवे, प्रभु केमे नही आवे
नेति वेद पुकारे, प्रभु नेति वेद पुकारे, पुनीत शुं गावे...ओम [1]

अर्थ : हे काले कन्हैया, नंद के प्यारेलाल नटवर आपकी जय हो। आप मीठी मुरली बजानेवाले व गोपियों के प्यारे हो। आप तो कामण (जादूटोना) सभी पर अपना जादू चढ़ाने वाले हो, माखन की चोरी करने वाले हो जिसे चुराकर आपने हमारे चित्त ही चुरा लिया। नंद यशोदा के घर जन्मले पूरा वैंकुठ उतार दिया, काली नाग का मर्दनकिया, व गायों को चराया। तेरे गुणों का तो कोई पार ही नहीं है प्रभु, वेद तुम्हें नेति नेति कह कर पुकारते है तो अधम जीव आपके गुणों का क्या गान करेंगे।

कृष्ण संबंधी भजन

हो हो रे कान लागे रुपाळो
लागे रुपाळो अे तो मोरलीवाळो हो.........
गोरा गोरा मुखडा ने जादूभरी आँखड़ी
माथे शोभे छे अेने लाल पीळी पाघडी,
नंदजीनो लालो अे तो लाल लटकाळो, हो...........रुपाळो।
पीळा पीतांबर जरकशी जामा,
गळे शोभे छे अेने वैजंतीमाला,
तेडी छे बंसी ने तेड्यो छे पाओ हो...........रुपाळो।
काळो ते कान अे तो कामणगारो,
भक्तोनो श्याम करे नवो नवो चाळो,
माखणनो चोर अे तो माखण खानारो,
हो हो रे कान लागे रुपाळो।[2]

1-2. 'प्रभु-स्मरण' नामक पुस्तिका से

अर्थ : हाँ भई कन्हैया तो बड़ा सुंदर लग रहा है। वह तो मुरली धारण करने वाला है। उसका गोरा मुखडा है और आँखे जादू से भरी है (चित्ताकर्षक), माथे पर उसके लाल पीली पगड़ी सुशोभित है। नंदजी का लाल बडा नखरेवाला है। पीला पीतांबर व जरी कसक से भरे हुए उपवस्त्र पहने है और गले मैं वैजंतीमाला सुशोभित है। उसने बंसी को होठों से लगाया है। काला है कन्हैया पर जादूकरने वाला है। भक्तों का श्याम नित नए नए नखरे करता है माखन को चुराकर खानेवाला है, परंतु कन्हैया बहुत सुंदर, प्यारा लगता है।

कृष्ण संबंधी लोकगीत
नंदकुंवर नाना रे

नंदकुंवर नानो रे, कांनो रमे छे मारी केडमां,
फूलकुंवर, नंदकुवर, नटवर नानो रे,
गेडीदडो कानाना हाथमां।
कहो तो गोरी ! घोघाना घोडूला मंगावी दऊं
घोडलानो होरनार रे कानो रमे छे मारी केडमां ।
नंदकुंवर नानो रे।
कहो तो गोरी ! हालारी हाथीडा मंगावी दऊं
हाथीडानो होरनार रे कानो रमे छे मारी केडमां ।
नंदकुंवर....
कहो तो गोरी ! मारवाडनी मोजडी मंगवी दऊं
मोजडीनो होरनार रे कानो रमे छे मारी केडमां
नंदकुंवर नानो रे, कानो रमे छे मारी केडमां
फूलकुंवर, नंदकुंवर, नटवर नानो रे,
कांनो रमे छे मारी केडमां।[1]

अर्थ : नंदजी का कुमार (श्रीकृष्ण) बहुत छोटे है, कान्हा मेरी कमर मैं बैठ खेल रहा है फूलसा सुकुमार, नटवर कान्हा छोटा है उसके हाथों में गेंद व लकड़ी (गेंडी) है। कोई गोपी जो अविवाहित है उसे छेडकर कह रहा है है गोरी अगर तू कहे तो घोड़े मंगवा दूँ तब गोपी कहती है कि घोडे का तो मेरी कमर में खेल रहा है। नंदकुंवर बहुत छोटा है। तू कहे तो गोरी हालार (जगह का नाम) के प्रसिद्ध हाथी मँगवा दूँ। तब गोपी कहती है कि हाथियों का कान्हा तो मेरी कमर बैठा खेल रहा है।

तू कहे वो गोरी तुझे मारवाड को मोजडी मँगवा दूँ, गोपी प्रत्युत्तर देती है मोजड़ी का कान्हा तो मेरी कमर में खेल रहा।

---

1. सौरभ रास – लोकगीत संग्रह – सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 1

देवी स्तुति

सरस्वती

श्री शारदा सुख-दायिनी	मति-देयण तुं मात
वीणा-पुस्तक-धारणी	वांणी वेद-विख्यात
हीतकारी हंस-वाहिनी	भ्रम पुत्री भ्रमरुप
डंड-कमंडल-धारणी	अरणव अकल अनूप
जेहने त्रुठा सरस्वती	तेहने शांनी खोट?
कवि केहवाय क्रीपा थकी	महेर तणी अे मोट। [1]

अर्थ: गुजराती कवि शामळ भट्ट कृत सिंहासन बत्तीसी में वह माँ सरस्वती की स्तुति कुछ इस प्रकार से करते हैं- हे शारदा माता तू सुखों को प्रदान करने वाली है, बुद्धि व ज्ञान देने वाली हो, हाथों में वीणा व पुस्तक के धारण करने वाली है, वाणी व वेद जग प्रसिद्ध है। सभी का कल्याण करने वाले हंस को वाहन स्वरुप ग्रहण करने वाली ब्रह्म की पुत्री हो ब्रह्मरुप हो। दंड, कमंडल धारण करने वाली हो, अवर्णनीय, अकल व अनूप हो। जिसपर माँ सरस्वती की कृपा हो उसे किसी चीज की कोई कमी नहीं। कवि भी उसी की कृपा से कवि कहलाता है, उसकी म्हेर कृपाद्रष्टि प्राप्त करने वाले धनभाग्य होते है। वह सभी पर बड़ी कृपा करने वाली है।

सरस्वती स्तुति

श्री विद्या सेवुं सरस्वती, मया करो मुज पर महामती
कमळ भूतनया कमळवत् नेण, वेद चार वाणी शुभ वेण।
हंसवाहनी जाए सुजाण, वीणा पुस्तक परठयां पाण
दंड कमंडळ नी धारणी, कल्याण कोटिधा क्रमकारणी।
अज्ञानी जन शुं लहे भेद, नेति नेति नित्य कहे वेद
जाए पूरा पंडित पार, विश्वंभरी तुं विश्वाधार।
अन्नपूर्णा अमृत भरे, दीन जनने देवांशी करे
शामळ कविने करुणा करो, बाळक जाणी बांहे धरो[2]

(कुछ महत्वपूर्ण अंश ही प्रस्तुत किए है)

माता अंबा की स्तुति (गीत)

मा ! चौद लोकमां तारो महिमा, समर्या पहेली वारे घा,
मा ! समर्या पहेली संकट भांगे, पूरे मन नी आशा रे !
मा ! अमे तारां सौ तने संभारीअे माता बळवंत जाणी रे !

1. कवि शामळ भट्ट कृत 'सिंहासन बत्रीसी' (कथा 1ली वेताल पच्चीसी)
2. कवि शामळ भट्ट कृत 'सिंहासन बत्रीसी' (रूपावती की कथा से), पृ. 40

मा ! धनधाननी तुं धाणियाणी, नगरकोटनी राणी रे !
मा ! देश देशना संघ ज आवे अंबा ! तारा शरणे रे !
मा ! कर जोडी ने करीअे विनती, सेवक राखो शरणे रे ![1]

अर्थ: हे अंबा माँ चौदह लोक में तेरी महिमा गाई जाती है, हे तेरा स्मरण करने से पूर्व ही संकट दूर हो जाते है, मन की आशाएँ पूर्ण हो जाती है। माँ हम तेरे तुझे शक्तिमान समझ तेरा स्मरण करते है। हे माँ तू धन धान्य की स्वामिनी हो, संपूर्ण नगर की महारानी हो । सभी देशों से भक्तजन तेरी शरण में आते है। हम अपने हाथ जोड़ आपसे विनती करते है कि सेवक को अपनी शरण में ले लीजिए।

अंबा स्तुति

आवे माता ऊजण थके, झांझर नो झमकाय
अमो भवाई खेलिये, रख्या करो अंबामाय।
मारी रे अंबे मात्, दर्शन करिये रे
जे जे मोरी मात, दर्शन करिये रे,
मुने आशिष देने मात, दर्शन करिये रे,
मारी जे जे अंबे मात, दर्शन करिये रे,[2]

श्री सुधाबहन र. देसाई (भवाई में से)

अर्थ : हे माता आप उज्ञैन नगरी से झांझर झनकाते हुए पधारिए। हम भवाई (नाट्यरुप) खेलेंगे आप अंबे माता हमारी रक्षा करें। अंबे माता मेरी है जिसके दर्शन हम नित करते हैं उसकी सदैव जय हो। आप अपना आशीर्वाद मुझे दीजिए। मेरी अंबे माता की जय हो।

चामुंडा माता

चोटीवाळा चंडी चामुंडा बोलावे तमने बाळ
चामुंड मूको अबोलडां
बालुडां आपने पाये पडीने विनवे वारंवार
चामुंड मूको अबोलडां
अवगुण सामुं जोशो ना मावडी
माता कुमाता थाशो ना मावडी,
छोरुं कछोरुं कहेवाय, चामुंड मूको अबोलडां
देवो ऊगार्या मा दानव संहार्या,
भक्तोने तार्या असुरोने मार्या,

1. भवाई वेशोनी वारताओ - भरतराम भा. महेता, पृ. 1
2. गुजरातनां लोकगीतो (भवाईनां गीतो) - खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 240

ऋषिमुनि जय गाय, चामुंड मूको अबोलडां
धीरज खूटी ने मारुं मनडुं मुंझाय छे
मधदरिये मारी नावडी अथडाय छे
दोडी आव्यो तारे द्वार, चामुंड मूको अबोलडां[1]

अर्थ : सौराष्ट्र में राजकोट शहर के पास चोटीला नामक एक छोटा गांव है जहां पहाड़ पर माँ चामुंडा बिराजती है। जिसकी बड़ी महिमा है। भक्तगण गाते है - हे चोटीला पर्वत पर बिराजने वाली चंडी चामुंडा माँ तेरे बालक (भक्त) तुझे बुला रहे हैं आप मौनव्रत तोडिए। मेरा मन अंदर ही अंदर घबरा रहा है मेरी धीरज जवाब दे रही है, बीच समुद्र में मेरी नैया डूब रही है अतः में दौडकर तेरे द्वारे आया हूँ चामुंडा मां अब तो (अबोला) मौनव्रत तोडिए।

खोडियार माता

जागती छे जोगमाया मा खोडियार
जागती छे जोगमाया
अमी नजर नी छाया मा खोडियार
जागती छे जोगमाया
तारा खोळे मारे सुखडानी सेज छे
भक्ति भरी मारी काया मा खोडियार । जागती.....
तारी दयाथी दुनियामां महालतां
जागती........ ।
पागल बनी जाय डाह्या मा खोडियार
जागती..... ।
जागती छे जोगमाया मा खोडियार..... ।

अर्थ : कहा गया हैकि खोडियार मां साक्षात् जीती जागती योग माया है जिसकी नजरे अमृत से भरी है। हे खोडियार मां आपकी गोद मेरे लिए सुखो की सेज है। मेरी काया पूर्णरुपेण आपकी भक्ति से भरी हुई है। तेरी कृपा से ही हम संसार में सुखों की प्राप्ति कर सकते है। पगले जो अपना मानसिक संतुलन खो बैठे है वह भी आपके पास आकर अच्छे, ठीक हो जाते है। ऐसे खोडियार मां जीती जागती साक्षात् योगमाया है।

कालिका माता :

मा तुं पावानी पटराणी के काळी काळका रे लोल,
मा तारा डुंगरडे चडवुं ते अति घणुं दोह्यलुं रे लोल।
मा तारी प्रदक्षिणा करवी के, वर्णन शुं करुं रे लोल,
विश्वासे तप करवा बेठां के, केवळ मुनि थया रे लोल।

---

1. खोडीयारमाँ, चामुंडामाँ, रांदलमाँनी गरबावली - सं. श्री हरीशभाई वरन, पृ. 48-49

आवुं रुडु चौटुं चांपानेर के, चौटा चौद मळ्या रे लोल,
त्यां कांई गाता ते गरबा के, माजी आपिया रे लोल।
माग्या माग्या कुटुंब कुशळक्षेम के, जंजाळ अति घणी रे लोल,
मागुं मागु अेटलुं वरदान के, मारे महेले पधारीअे रे लोल।
फट फट पावाना राजन के, अे शुं माणियुं रे लोल,
आधा छट्ठ ने छ मासे के, मूळ तारुं जशे रे लोल।
अेम कहो माता थया अलोप के, पावो हाथ धसी रह्यो रे लोल,
मुगले चढावी छे फोज के, पावागढ घेरियो रे लोल।
दरवाजे ऊभा दरवान के, पावा हाथ धसे रे लोल,
राजाअे खोदाव्युं तळाव के, पाणी नव नीसर्युं रे लोल।
मुगले खोदाव्युं तळाव के, जळ दूधे भर्युं रे लोल,
माजीनो आवो छे महिमाय, कवि नव कही शके रे लोल।[1]

अर्थ : (गुजरात में पावागढ़ नामक स्थान के पर्वत पर माँ का वास है)

भक्तगण कालिका माता के लिए गाते हैं-

है काली माता तू पावागढ़ की पटरानी है । काली माता तेरे पर्वत पर चढ़ाना अत्यंत कठिन है।

माँ तेरी प्रदक्षिणा करें, या करें आपकी महिमा का क्या वर्णन करुँ विश्वास से जो तप करने बैठे वह केवल महान मुनि ही कर सके। इतना सुंदर चांपानेर (जगह) है जहाँ चौदह चौराहे मिले हैं वहाँ सभी मिल केसे गरबे गाते है कि माता स्वयं पधारती है। सभी अपने कुटुंब का कुशलक्षेम मांगते है, संसार की जंजाल बहुत है। पावागढ़ के राजा ने गुजरात जैसी राजगद्दी मांगी वह भी आपने दिया। जिसने जो खंड के राज मांगे वह दिए, चाँद सूर्य भी आपकी कृपा से तपते है। मैं इतना ही वरदान माँगू कि हे काली माता आप मेरे महल में अवश्य पधारे।

माँ काली राजन पर क्रोधित हो बोली, हे राजन तुझपर धिक्कार है जो तूने ये क्या मांगा? आज से छठवें मास व छठ्ठी तिथि को तेरे महल का नाश होगा। इतना कह माता अद्रश्य (अंतर्धान) हो गए। मुगल बादशाह ने फौज ले पावागढ़ को घेर लिया।

दरवाजों पर दरबान हाथ पर बिगुल पावा (बजाने का यंत्र) घिसते खडे है। राजाने तालाब पूरा खुदवाया पर पानी न निकला।

मुगल बादशाह ने तालाब खुदवाया वह जल व दूध से भर गया। ऐसी काली मां की महिमा है जिसका बयान कवि भी नहीं कर सकते है।

1. नवदुर्गा गरबावली - संकलन : श्रीमति वर्षा शाह, पृ. 12-13

रांदल माता

जय रे जय मारी रांदल भवानी मा, दुःखिया आवे मानी पास रे, भवानी मा
दुःखियानां दुःख तमे टाळो रे भवानी मा
वाँझिया आवे मानी पास रे भवानी मा, वांझियाने पुत्र देता जावरे भवानी मा।
निरधनिया आवे मानी पास रे भवानी मा, निरधनिया ने धन देता जाव रे भवानी मा।
कोढ़िया आवे मानी पास रे भवानी मां, कोढ़िया ने काया देता जाव रे भवानी मा।
पांगळा आवे मानी पास रे भवानी मां, पांगळा ने पग देता जाव रे भवानी मा।[1]

अर्थ : गुजरात में लोगों की आस्था रांदल मां में भी है जो पुत्रदायिनी माता मानी जाती है। भक्तगण गाते हैं- मेरी रांदल भवानी मां तेरी जय हो। दुःखीयारे तेरे पास आते है आप उनके दुःखो को दूर करें। पुत्रहीना बांझ भवानी मां तेरे पास शरण में आते हैं उन्हें पुत्र देते जाइए मां। निर्धन गरीब भी आपके आप आते है उन्हें धन देते जाइए भवानी मां। कोढ़ी जब तेरे द्वारा आते है उन्हें कंचनकाया प्रदान कर दुःख दूर कर। लँगड़े भी तेरे द्वार आते है उन्हें पाँव देकर उनके दुःख को भी रांदल मां दूर करो।

राणी रांदलमां हो रांदलमां

रांदलमा हो रांदलमा, दळवानी दातार मावडी
सूर्यदेव घरनी तुं नारी, ऊतरी वडला देठ ओ माडी
गरबा मां घूमे घूमे घूमे, ढोली ना ढोल झूमे झूमे झूमे
भाले टीलडी चमके, हाथे कंकण खनके
गोरुं मुख मलके, रांदल मां हो रांदल मा
आरासुर नी राणी मावडी, भक्तो नी तुं प्यारी मावडी
सोळ सजी शणगार ओ माडी, रांदलमा हो रांदलमा
सहियर संग डोले डोले, डोले आ हा....
ताळी पडे तळ तळ तळ, आ हा....
डोके हार शोभे, नाके नथणी चमके
झांझर पाये वागे (2) दुःखिया नी दातार
भवनी तारणहार मावडी, करजे रखवाळां हो मावडी,
रांदल मा हो रांदलमा, दळवानी दातार मावडी।[2]

अर्थ : हे रांदल माता तू तो उदार हृदयी, दातार माता हो देनेवाली हो। आप सूर्यदेव के घर की नारी (पत्नी) हो। वटवृक्ष के नीचे उतर मकाम किया है। गरबे में माता ढोली के ढोल के सहारे गरबा करती घूमती है। मां के ललाट पर बिंदिया चमक रही है, हाथों में कंगन खनकते है, गोरा मुख मां का मुस्करा रहा है। हे रांदल मां

---

1. सौरभ लग्नगीत संचय - सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 126
2. खोडीयारमाँ, चामुंडामाँ, रांदलमाँनी गरबावली - सं. श्री हरीशभाई वरन, पृ. 69

आप तो आरासुर (जगह) की रानी व भक्तों की प्यारी माता हो। सोलह सिंगार सजकर रांदल मां सखियों संग डोल रही है। तालियों की तडतड़ आवाज हो रही है। कंठ में हार, नाक में नथनी सुशोभित है। पग में घुँघरु बज रहे है। दुःखियो को देने वाली (दातार), भव सागर से पार उतारने वाली तारणहार माता हमारी रक्षा करना रांदल माँ।

राणी रांदल गोरी – गीत

अेक छंदे, बीजे छंदे, त्रीजे छंदे दोरी,
चोथे छंदे, रमे राणी रांदल गोरी गोरी
रांदल मावडी के छे, मारे बाजोठना कोड,
जाव रे जगाडो ओला सुतारी नो बेटो, सुतारीनो बेटो आइने दश दिशे ध्रूजे
ऊडलो चूडलो रणजण भमरी मंडपनो छाया,
आईने ऊजळी रे नगरी नगरीमां रमे रांदल गोरी अेक छंदे..... ।
रांदल मावडी के छे, मारे चूंडीना कोड,
जाव रे जगाडो ओला कापडियानो बेटो,
कापडियानो बेटो आईने दश दिशे ध्रूजे
ऊडलो चूडलो, अेक छंदे......... ।
रांदल मावडी के छे मारे श्रीफळ ना कोड,
जाव ने जगाडो ओला गांजीडानो बेटो,
गांजीडानो बेटो आईने दसमस ध्रूजे
ऊडलो चूडलो, अेक छंद.......... ।[1]

(२) ऋतुसंबंधी गीत

वर्षाऋतु से संबंधित गीत

गीत – आव्यो मेहुलो रे

ओतर गाज्या ने दख्खण वरसिया रे,
मेहुले मांड्या मंडाण।
आव्यो धरती नो धणी मेहुलो रे।
नदी सरोवर छली वण्यां रे
माछली करे हिलोळ। आव्यो...।
खाड़ा खाबोचियां छली वळ्यां रे,
डेडकडी दिये आशिष । आव्यो ।

1. खोडीयारमाँ, चामुंडामॉ, रांदलमाँनी गरबावली – सं. श्री हरीशभाई वरन, पृ. 72

धोरीअे लीधां धुरी-धोसरां रे,
केडुअे लीधी बेपड राश । आव्यो ।
गाये लीधां गानां वाछरुं रे,
असतरीअे लीधां नानां बाळ ।
आव्यो धरतीनो धणी मेहुलो रे ।[1]

अर्थ : अलबेली सुहानी वर्षाऋतु आई रे। उत्तर में बादल गरजे और दक्षिण में बरसे है और ऐसे वर्षाने शुरुआत की। धरती का स्वामी मेहुला (वर्षा) बारीश का आगमन हुआ और नदी, सरोवर, तालाब सभी छलक गए। जिसमें मछलियाँ आनंद मना रही है। छोटे छोटे खड्डे भी पानी से भर छलके और (मादा) मेंढ़की आशीर्वाद दे रही है, खुश है। किसानों नें हल बैल तैयार कर रस्सियां बांध ली, बैलों को भी तैयार किया खेत जोतने के लिए। वर्षा के जोरदार आगमन के परिणामस्वरुप गायो ने बछड़ो को अपने पास खींच कर लिया और स्त्रियों ने अपने नन्हे बच्चे भींच लिए। हृदय से लगा लिए। आया धरती का स्वामी (मेहुला) अर्थात् बारीश का आगमन हुआ।

मेहुला गीत (मेवास का लोकगीत)

मोकलो काबेरनां कच्चां बच्चां,
के मेवला ने खोळी लावे रे लोल।
मेवलो छे मोटोनो कुंवरो,
के मेवलो नुं रे जड्यो रे लोल।
मेवलो छे डुंगरोना पडमां,
के मेवलोनुं रे जडये रे लोल।
मोकलो काबेरनां कच्चां बच्चां,
के वीजळीने खोळी लावे रे लोल।
वीजळी छे मोटोनी कुंवरी,
के वीजळी ने खोळी लावेरे लोल।
बार बार वरसोनो मेघ के वाय,
के मेवलो नहीं वरसे रे लोल।
मेवला ने ठोकी घाल्यो हरणी ना शींगमां,
के मेवला ने शोधी लावो रे लोल।
मेवला ने झटके चढी रीस,
के झट पाछो वळ्यो रे लोल।
बार बार वरसोनो मेघ के वाय,
के मेवलो नासी गयो रे लोल।

---

1. लोकसाहित्यमाळा में से

मेवलाना ऊमट्या सात भाई
के मेवलाने शोधी लाव्या रे लोल।
आवी ने वरस्यो सीतानी वाडीमां
के फळ घणां जड्यां रे लोल।[1]
(संग्राहक - रेवाबहन तडवी एवं शंकरभाई तडवी)

अर्थ: कहा गया है कि मैना (पक्षी) के कच्चे बच्चे को भेजो वो जाकर (बारीश) मेहुले को खोज लाए। यह मेहुलो बहुत बडा राजकुमार है जो खोजने पर भी नहीं मिला। मेहुला तो पर्वतों के तले छिपा जो खोजने पर न मिला, काबेर के बच्चे को भेजो जो बिजली को ढूँढ लाए, यह बिजली बडी राजकुमारी है जो खोजने पर न मिली। बारह-बारह वर्षो का मेघ कहलाए कि मेहुला तो न बरसेगा। मेहुले को तो हिरनी के सींगो ने तंत्रमंत्र पर बाँध दिया गया है। लगता है मेहुले (वर्षा) कह गया है और दूर कहीं भाग गया है। मेहुला (वर्षा) के सात भाई अर्थात् सतरंगी इंद्रधनुष आकाश में छा गये है जो मेहुले (वर्षा) को ढूँढ लाए है तभी जाकर वह सीताजी की वाडी (खेत, आँगन) में जा बरसा कि अनेक फल उग आए।

अषाड़ी रेलो आवे – (गुजरात के सोनगढ़ की स्त्रियां) (गीत)

मेघ कये के जीरमीर जीरमीर वरसुं
अषाडी रेलो आवे रे,
मेघ मारो आवे रे, मन भावे।
तमने के थोडलीआ मोकलावुं
थोडलीअे बेसीने आवे रे.....
मेघ मारो आवे रे, मन भावे।
तमने के ऊंटडीया मोकलावुं
ऊंटडीये बेसीने आवे रे,
मेघ मारो आवे रे, मन भावे।[2]

अर्थ : मेघ (बादल) कहता है कि झिरमिर झिरमिर मैं बरसता हूँ अषाडी (अषाढ़ मास) महीने में वर्षा की रेली आन पडी है। मेघ आता है और मन को प्रसन्न कर जाता है। मेघ के लिए मैं थोडलिया भिजवाता हूँ कि उस पर सवार हो वर्षा राणी मेरे बादल आकर बरसे और मन को प्रसन्न करें। मेघ कहो तो आपके लिए मैं ऊँटों को भिजवाऊँ जिसपर बैठ सवार हो आओ। मेरे मेघ आओ और मन को खुश करजाओ।

मेघ आव्यो पण मानुनी नथी (वरस्यो चारे खंडेर वीजळी) (गीत)

दरियामां गाज्यो, गामडे वरस्यो
वरस्यो जाय रे मेघजी।
नागली रे वावी, कोदरा रे वाव्या

1. गुजरातनां लोकगीतो : खोडीदास भा. परमार, पृ. 131
2. लोकसाहित्य : तत्त्वदर्शन अने मूल्यांकन - श्री जयमल्ल परमार, सं. बळवंत जानी, पृ. 389

सीमे पाक्युं भात रे मेघजी।
सात पनियारी पाणीडां भरे
गोरी होय तो पाणीडां जाय रे मेघजी।
सात सहेरी, शेरी बुआरी
गोरी होय तो झांपो ऊघाड रे मेघजी।[1]

अर्थ : कहा गया है कि मेघ (बादल) समुद्र में गरजे लेकिन गाँव में जाकर बरस पड़े और बरसते ही जा रहे हैं। खेत में कोदरी (चावल) जैसे धान बोए गए है और फिर खेत में फसल पक उठी है मेघ के बरसने से। सात पनिहारीने पानी भर रही है। यदि गोरी होगी तो पानी भरने अवश्य जाएगी। सातों सहेलियों मे मिल गली साफ कर दी है। यदि गोरी होगी तो अपने प्रियतम हेतु द्वार खोलेगी।

गीत कहे तो मेघ, झरमर झरमर वरसे,
कहे तो मेघ, घोडलिया मोकलावुं,
तमे घोडलिये बेसी आवो रे मेघ,
तमे मेहुलिया थई आवो।
कहे तो मेघ, हाथीडा मोकलावुं,
तमे हाथीडे बेसी आवो रे मेघ,
तमे मेहुलिया थई आवो।
कहे तो मेघ, माफलिया मोकलावुं,
तमे माफलियानी होंशे आवो मेघ,
तमे मेहुलियां थई आवो।[2]

नै जावा दऊं चाकरी रे... वर्षा संबंधी गीत

आभमां झीणी झबूके वीजळी रे
के झीणा झरमर वरसे मेघ
गुलाबी ! केम करी जाशो चाकरी रे।
भींजाय हाथी ने भींजाय घोडलां रे,
के भींजाय हाथीनो घोडलां रे,
गुलाबी ! केम........ चाकरी रे। आभमां ।
भींजाय मेडी ने भींजाय माळिया रे
के भींजाय मेडीने बेसतल राणी
गुलाबी ! केम........ चाकरी रे। आभमां ।

1. लोकसाहित्य : तत्त्वदर्शन अने मूल्यांकन – श्री जयमल्ल परमार, सं. बळवंत जानी, पृ. 392
2. सूरत जिल्लानां लोकगीतो – सं श्री चूनीलाल भट्ट, पृ. 252

भींजाय लीली घोड़ी ने पीलो चाबको रे
भींजाय पातळियो असवार
गुलाबी ! केम........ चाकरी रे। आभमां ।
तमने वाली दरबारी चाकरी रे,
के अमने वालो तमारो जीव
गुलाबी ! केम........ चाकरी रे। आभमां ।[1]

अर्थ : कहा गया है कि आकाश में हल्की-हल्की बिजुरिया चमक रही है और झरमर यानि रिमझिम बादल भी बरस रहे हैं। है प्रियतम आप किस तरह नौकरी (चाकरी) पर जाएँगे?

हाथी, घोड़े सभी भीग रहे है, यहां तक कि हाथी को संभालने वाले भी भीग रहे है तो आप.....जाएँगे?

घर के ऊपर का हिस्सा (मेडी) और अंदरुनी हिस्सा भीग रहा है और ऊपर से आपकी प्रियतमा रानी भी भीग रही है तो आप?

हरी वाली घोड़ी पीला चाबुक दोनो भीग रहे है ऊपर से सुकुमार सवार भी भीग रहा है तो आप कैसे चाकरी जाएँगे?

आपको तो बस राजदरबार की नौकरी की ही पड़ी है पर मुझे तो प्राणों की परवाह है, प्राण प्यारे है अतएव ! स्वामी मैं आपको ऐसी बारीश में नौकरी करने न जाने दूँगी।

गीत तुं तो चारेय खंडनो रे मेवलियो,
तारी धरती धणियाणी जुओ वाट,
ओ दलीना मेवलिया।
तारा नाथेला धोरी जुओ वाट, ओ दली ना मेवलिया।
तारा हरखेला हारी जुओ वाट, ओ दली ना मेवलिया।
तारी पोषेली परजा जुओ वाट, ओ दली ना मेवलिया।
तमे वरसो रे दुनियाना मेघ, ओ दली ना मेवलिया।
तमे वरसो कालूडा मेघ, ओ दली ना मेवलिया।
तारे वरसेले होय लीलालेर, ओ दली ना मेवलिया।
तमे वरसीने भरो रे तलाव, ओ दली ना मेवलिया।[2]

अर्थः चारों खंडो में व्याप्त वर्षा की सर्वत्र राह देखी जा रही है। आठ आठ महीने को वियोगिनी धरती अपने स्वामी के आगमन की प्रतीक्षा कर रही है, किसान वर्ग सुंदर वस्त्र व हल बैल तैयार कर खेत जोतने की तैयारी कर रहे है। पक्षी मारे असह्य गर्मी के शोर कर रहे है। हे मेघ अब आप बरसिए तो चारों तरह आनंद छा जाए। आप बरसते नहीं हो इस कारण नाथु (नाम) ने अपनी पत्नी काशी को पिहर भेज दिया। देखो, सर पर टोकरी

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. श्री झवेरचंद मेघाणी, पृ. 237
2. गुजरातनां लोकगीतो - मधुभाई पटेल, पृ. 192-193

व कमर में बच्चा ले बाजार बीच से जा रही है। वह कहता है मेघ बरसेगा तभी पत्नी को वापस बुलाउंगा, तब तक भले ही पिहर में पड़ी रहे। ऐसे पत्नी सुख के त्याग के बदले अब तो मेघराजा बरसोगे ने?

गीतः मेघनी माडीओ एन करी पूईछा

केथो मारा मेघनो भाळ रे, वीजळी।

उत्तर गाईजो दख्खण वरईयो,

वरईसो चारे खंड रे, वीजळी।

दरियामां गाईजो गामडे वरईसो,

वरईसो चारे खंड रे, वीजळी।

नागली रे कोदरा झीणो दाणो

वाडीये पाईका भीत रे, वीजळी।[1]

अर्थः बादल की वृद्धा माता हाथों में लकडी ले आकाश रुपी प्रदेश में यहाँ वहाँ घूमते हुए अपने खोए हुए पुत्र को आसमान के कोने कोने में तलाश रही है। मार्ग में उसे बिजली मिलती है, उससे वह पूछती है कहीं मेरे बादल को देखा? बिजली उत्तर देती है उसके बोल तो जब उत्तर में सुनाई पड़ते हैं तब वह दक्षिण दिशा में नजर आता है, समुद्र में गरजता है और गाँव में जा बरसता है। ऐसा आपका दौड़ने घूमने वाला बेटा विचित्र इतनी आसानी से मिलने वाला नहीं है।

गीत मेवलिया रे तुं धीमो वरस, धीमो वरस,

भींजे गोराणी नी चूंदडी ।

मेवलिया रे तुं झीणो वरस, झीणो वरस,

जाय गोरांदे पाणीलां।

वीजलडी रे तुं थोडी रे झबूक, थोड़ी रे झबूक,

सोडमां बीओ नानां बालुडां।

वीजलडी रे तुं झीणी रे झबूक, झीणी रे झबूक,

वनमां नीचे मीठा मोरला।

सासरीओ रे नतनवां भात, नतनवां भात,

बीबां पडे रे सवा लाखनां।[2]

अर्थ : वर्षा तेरी प्रत्येक बूंद की कीमत सवा सवा लाख है अतः तू धीरे बरस। पानी भरने वाली पनिहारिन गोरी को ओढ़नी भीग रही है। तूझे बरसता देख बिजली चमकारे की क्या बात है वह भी जोरदार कड़क रही है उससे कहो कि वह हल्की चमके। उसके कड़कने से माँ की गोद में सोए नन्हे शिशु डरकर जाग जाते है। वन में भी मोर वृक्ष तले खड़े है। ससुराल में नित नए पकवान, धान्य बन रहे है तेरी एक एक बूंद वर्षा अनमोल है अतः धीमे बरसो।

1-2. गुजरातनां लोकगीतो - मधुभाई पटेल, पृ. 193, 195

गीत – आज आनंद

ओतर-दखण थी चडी वादळी रे लोल!
झीणी झीणी झबूके छे बीज जो
आज आनंद मारे आंगणे रे लोल!
खेडुना माथे लीलां मोळिया रे लोल।
घोरीडानी कोटे घूघरमाळ जो आज!
वीरना वावणिये हीरला जड्या रे लोल!
मोतीडांनी सेरुं टंकावु जो आज
घोरीनी डोके बांधी राखडी रे लोल!
वीर ने ललाट कुंकुम नो चांदलो जो, आज!
वावी जारुं ने वाव्या बाजरा रे लोल!
धरती ओढ्यां लीलां चीर नो, आज!
सरिता ने सेरुं चाले जोरमां रे लोल!
गवरी तो चरे लीला घास जो
आज आनंद मारे आंगणे रे लोल![1]

अर्थ: गाँव की स्त्री कहती है उत्तर और दक्षिण दिशाओं से बदली उमट पडी है और हल्की बिजली भी चमकने लगी है आज मेरे आंगन में आनंद ही आनंद है। किसानों ने सर पर हरे साफे पगडी बांध रखे है और बैलों के गले में घुंघरु की माला। भाई के आगमन पर हीरे से जडे मोतियों की मालाएँ सजाई। बैलों के गले में बांधी राखी व भाई के ललाट पर तिलक लगाया। आज खेत में ज्वार व बाजरा उगाया धरती ने हरे चीर धारण किए है। नदियां पूरे जोश के साथ बह रही है। गौरी गाय हरा घास चर रही है आज मेरे आँगन में आनंद ही आनंद है।

गीत–गर्मी की ऋतु संबंधी

उनाळानी ऋतु तपे पंखो प्यारे
हो रंग रसिया ! गरमई पडे पंखो प्यारो।
पंखो ते लईने हुं तो सुथार घेर गईती,
पंखा ऊपर दोडी चढाव, पंखो प्यारो। ....उनाळानी
पंखो ते लईने हुं तो दरजी घेर गईती,
पंखा ऊपर झुलण चढाव, पंखो प्यारो । ....उनाळानी
पंखो ते लईने हुं तो रंगारी घेर गई ती,
पंखा ऊपर रंग चढाव, पंखो प्यारो । ....उनाळानी [2]

---

1. गुजराती पाठ्य-पुस्तक, कक्षा 7वीं, पृ. 26-27
2. महेंदी लाल-गुलाल -अमृत पटेल, पृ. 86

अर्थः कहते है कि गर्मी की ऋतु में असह्य गर्मी से सभी त्रस्त हो जाते है ऐसे में सभी को शीतल हवा पसंद आती है अतः एक गोरी कहती है कि गर्मी के मौसम में पंखा बड़ा प्यारा लगता है। ऐ रसियाजी ! गर्मी पडे तब पंखा प्यारा लगे। पंखा लेकर में बढ़ई के घर गई थी उससे कहा पंखे को दंडी चढ़ा दे। ठीक कर दे।

पंखे को ले मैं (गोरी) दरजी के घर गई थी उससे कहा पंखे पर रेशमी वस्त्र झूलदार चढ़ा दे। गर्मी में पंखा प्यारा लगे।

पंखा ले मैं तो रंगरेज के घर गई व उससे पंखे को रंगने के लिए कहा क्योंकि गर्मी में पंखा बड़ा प्यारा लगता है।

बारहमासा गीत

विनती कारतके कृष्ण सिधाव्या वन
के व्रज करे विनति रे लोल
मागशरे मेली गया महाराज
के नेणे नीर झरे रे लोल।
पोषे प्रभुजी गया परदेश
नारीने मेल्यां अेकलां रे लोल।
माहे मंदिर खावा धाय
के सेज शा कामनी रे लोल।
फागणे फूलडां केरो हार
गूंथीने लावे गोपियुं रे लोल।
चैतरे सूरज तपे आकाश
के तेथी मारां अंतर तपे रे लोल।
वैशाखे वनमां गोपियुं जाय
के वालाजीने गोतवा रे लोल।
जेठे जुगजीवन घेरे आव्या
संदेशो मारो शुं रे लाव्या रे लोल।
अषाढ़े झीणी झबूके वीज
मधुरा बोले मोरला रे लोल।
श्रावणे सोळ सज्या शणगार
के आंखडी न आंजिये रे लोल।
भादरवो भर जोबनमां जाय
दिवस जवा दोयला रे लोल।
आसो मासे दिवाळीनी सेवुं
बालाजी विना कोण जमे रे लोल।[1]

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - श्री झवेरचंद मेघाणी, पृ. 234

अर्थः प्रस्तुत लोक गीत बारमासे का है। कहा गया है कि कार्तिक मास में श्रीकृष्ण वनप्रस्थान कर गए कि संपूर्ण ब्रज विनती कर रहा है। मार्गशीर्ष में छोड गए कि जयनो से नीर बह रहे हैं। पौष में प्रभु परदेस चले गए नारी (गोपियों) को अकेला छोड़ गए। माघ में मंदिर काटने को दौड़ता है। कि प्रभु बिना सेजशय्या किस काम की ? फागुन में फूलों का घर गोपियां गूँथ कर लगती है। चैत्र में सूरज आकाश में तपता है जिस कारण मेरा हृदय भी जलता है। बैसाख में गोपियाँ वन में जा प्रभुजी को खोजती है। ज्येष्ठ में जग के जीवनाधार घर पधारे। आषाढ़ में हल्की बिजली चमकने लगी है तो मेरे लिए क्या संदेश लाए और वन में मधुर बोल मोर बोलने लगे। सावन सोलह श्रृंगार करे हैं, आँखे प्रियतम की प्रतीक्षा में लगी है। भाद्रपद महीने में भरा यौवन जा रहा है, दिन बिताने कठिन है। अश्विन महीने में दिपावली मीठी सेवइयाँ प्रियतम बिना कौन खाए?

गीत – महिना (बारह मास)

कारतक केम जशे वाला रे?
महीनो दाणी कोण थाशे रे? जमना जवा दो पाणी रे?
मागशर मकरनी रातुं रे?
वाला मारे मेला मधुवाटे रे? जमना जवा दो पाणी रे?
पोसे सोस पडा अमने रे?
प्रभुजी शुं कहीये तमने रे ? जमना जवा दो पाणी रे?
माहे मन मारु मोह्युं रे?
शामळीये सन्मुख जोयुं रे? जमना जवा दो पाणी रे?
फागण फेरफेर होळी रे?
चूंदडी मारी केसुडे रोळी रे? जमना ....रे?
चैत्रे चीत करी चाळा रे?
घेर आवो मीठी मोरलीवाला रे? जमना ....रे?
वैशाक वावलीया वाया रे?
गोरी तारे नवहलीयो नावो रे? जमना ....रे?
जेठे जुगजीवन नाव्या रे?
संदेशो कोई न लाव्या रे ?जमना ....रे?
असाडी मोरलीया बोले रे?
प्रभुजी तेना बेतम तोले रे? जमना ....रे?
श्रावण सखडीये वरसे रे
वालो मारो मथुरा जई वसे रे ? जमना ....रे?[1]

1. रासडानो रंग – खोडीदास भा. परमार, पृ. 134

तुलसी की बारमासी

गीत अषाढे तुलसी रोप रोपावे, श्रीकृष्ण पोढ्या छे तुलसी ने क्यारे रे शामळो गुणवंता ।।
श्रावणे तुलसी दो दो रे पान, हरख्या नारायण तुलसीने नामे - शामळो....
भादरवे तुलसी भेर रे आव्यां, जादवराये कंठे सोहराव्यां - शामळो....
आसोअे तुलसी आशावळुं ध्यां, देव दामोदरे खोळामां लीधां - शामळो....
कार्तके तुलसी बालकुंवारी, लगन निर्धारीने परण्या मोरारि - शामळो....
मागशरे मावठडे रे जइए, शीयाळे तुलसीनां जतन ज करीये - शामळो....
पोस मासे पड्या रे पुकार, तुलसी विना सूनो संसार -शामळो....
माह महिने सुधबुध बोळे, तुलसी विना त्रिभुवन डोले - शामळो....
फागणे होळी खेले गोवाळा, आकाशे खीले लीलावती चंदा -शामळो....
चैत्र मासे बंधाव्या हिंडोळा, हिंडोळे हींचे श्री रामजी भोळा - शामळो....
वैशाखे वावलिया वाया, अे रते रमे माडीजाया - शामळो....
जेठ मासे तुलसी करमायां, सोळसे गोपीओ पाणीडां चाल्यां - शामळो....
धनधन मालण बेटडो जायो, तुलसीने माटे क्यारो खोदाव्यो - शामळो....[1]

अर्थः कहा गया है आषाढ़ में तुलसी को पौधा लगाया गया, श्रीकृष्ण तुलसी की क्यारी के पास लेटे है। श्रीकृष्ण गुणों की खान है। सावन में तुलसी खिलने लगी पत्ते आने लगे जिसे देख नारायण प्रसन्न हुए। आसो महीने में आशनुकूल तुलसी बढ़ने लगी; दामोदर ने उन्हेंगोद में लिया। कार्तिक में तुलसी बालिका कुंवारी है। विवाह निर्धारित कर मुरारी ने उनसे ब्याह किया। मार्गशीर्ष में ठंड से तुलसी का रक्षण, जतन करना चाहिए। पौष मास में चारों और पुकार हुई कि तुलसी बिना संसार सूना है। माघ महीने में त्रिभुवन तुलसी के बिना सुधबुध खो डोलने लगे। फाल्गुन में ग्वाल होली खेलने आकाशमें सुंदर चंद्रमा निकला। चैत्र मासमें हिंडोळे (झूले) लगे जिसपर भोले श्रीराम जी झूल रहे है। बैसाख में गर्म वायु बहने लगी माँ के बच्चे आपस में खेल रहे हैं। ज्येष्ठ महीने में तुलसी मुरझा गई। सोलह हजार गोवियाँ पानी भरने चलीं। धन्य है मालिन का पुत्र जिसने तुलसी के लिए क्यारा खुदवाया। श्याम श्रीकृष्ण गुणों के भंडार है।

तिथिगीत

राधा हरि रमे

अम्मासे हरि ओपी गोपी शामळियो सरदार,
अरजण गोपी हो ने राधा हरि रे।
पडवे पीतांबर, ओढण अंबर, चमर ढळंता चाले,
चडी चाखडिये हो ने राधा हरि रमे।
बीज बोळी, केसर धोळी, अंगे चरणां चोळी,
राज बिराजे हो ने राधा हरि रमे।

---

1. लोकसाहित्यमाळा, मणको 5 (कृष्ण चरित्रनां लोकगीतो - संग्राहिका : कु. श्रद्धादेवी मजुमदार, पृ. 54-55)

त्रीजे ताल पखाज धडूके, कने कने कडताळ,
घूघरा घमके हो ने राधा हरि रमे।
चोथे चकमक धाण मोरली शी शी ने शरणायुं,
झांझर झमके हो ने राधा हरि रमे।
पांचमे मोती हैडे जोती सांची ने सांचवती,
हाथ पगे हीरा हो ने राधा हरि रमे।
छठे शेर सिंदूरनो सेंथी, रजे सजे थी भरियो,
हाथ अरीसों हो ने राधा हरि रमे।
सातमें सायर ऊमट्या ने मछे धर्यो अवतार,
गोकुळ गढमां हो ने राधा हरि रमे।
आठमे कानड अवतर्या ने प्रथमीना ओधार,
कुळ अजवाळां हो ने राधा हरि रमे।
नवमे न करीश नागला एनी वाळीं वींटी त्रोडी,
हलके हींचे हो ने राधा हरि रमे।
दसमे दादामा वागिया हरि राधा वरसुं रिझयां,
ढोल धूक्या हो ने राधा हरि रमे।
एकादशी अपवासणी ने नदीये नरमळ नाती,
नीर नीतरती हो ने राधा हरि रमे।
वारशे बत्रीसां भोजन तेत्रीस वरणां शाक
जादव जमजो हो ने राधा हरि रमे।
तेरशे तेडां मोकल्यां राधाजी वेगे पधारो,
मंदिर सूनां हो ने राधा हरि रमे।
चौदश चरणां पैरियां ने सोळसें गोपी मांय,
रमवा ग्यांता हो नेराधा हरि रमे।
पंदर तिथिमां वडी पूनमडी, टीली तपे लेलाड
सोळ कळानी हो ने राधा हरि रमे।[1]

अषाढी सांजना अंबर गाजे

अषाढी सांजना अंबर गाजे, अंबर गाजे मेघाडंबर गाजे। अषाढी...
मातेला मोरलाना टौंका बोले, टौका बोले, धीरी ढेलड डोले।
गरवा गोवाळियाना पावा वागे, पावा वागे, सूती गोपी जागे। अषाढी...
वीरा नी वाडीओमां अमृत रेले, अमृत रेले, भाभी झरमर झीले। अषाढी
भाभीनी रातीचोळ चूंदडी भींजे, चूंदडी भींजे, खोळे बेटो रीझे । अषाढी[2]

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - श्री झवेरचंद मेघाणी, पृ. 235-236
2. सौरभ रास लोकगीत संग्रह - सं. हसु याज्ञिक

अर्थ : आषाढी शाम को अंबर गरजने लगा, मेघ गरजने लगा। मोर भी मधुर स्वर से लगा है और मोरनी धीरे बोलने लगी है। ग्वालो की बंसी बजने लगी है जिससे सोई गोपियां जाग गई है। भाई के खेतो में अमृत सा मेघ बरसना लगा है, जिसे भाभी झेलने लगी है। भाभी की लाल चुनरी भीग गई है गोद में बेटा प्रसन्न हो उठा है।

आषाढ गीत

गरदे मोर झिंगोरिया,
म्हेल थरक्के माढ,
वरखारी रत व्रएणवां,
आयो घघूंब अषाढ।
आषाढ घघूंबीय लूंबीय अम्बर,
बदळ बेवळ चोवळियं,
म्होलार महेलीया लाडगेहेलीय,
नील धल ने झले नलियं,
अंद्र गाज अगाज करे घर ऊपर,
अब नयां सर ऊभरियां,
अजमाल नथुं तण कुंवर आलण
सोय तणी रत संभारिया
जीय ! सोय तणी रत संभारिया, मुने सोयतणी संभरिया

अर्थः पर्वत पर मोर झिंगोरने (बोलने) लगे हैं। महेल की अटारी थड़कने लगी है। मैं वर्षा ऋतु का वर्णन कर रहा हूँ। उमड़ घुमड़ कर आषाढ़ आया। आसमान घिर गया बादलों से घटाटोप बंध गया। महल अटारी रिमझिम वर्षा के लिए पागल हो उठे। नलिये में झेल न पाए उतना पानी छलक गया। धरती पर इंद्र जोरदार गर्जना करने लगा। सरोवर में नए पानी भरने लगे। ऐसी ऋतु में मुझे (कवि को) नथुभाई का कुंवर (राजकुमार, पुत्र) का स्मरण हो आया।

श्रावण

नव खंड नीलाणीय पावन पाणीय
वाणीमें दादूर मोर वळे,
शवदास चडावण पूंजाय शंकर
श्रावण मास जळे सलळे,
प्रषनार करे नत नावणा पूजाय
शंकररां व्रत सद्धरियां,
अजमाल नथु तण कुंवर आलण
सोय तणी संभरिया।[2]

1-2. मेघाणी ग्रंथ – सं. उमाशंकर जोशी, पृ. 234, 235

अर्थः नौ खंड हरे भरे हो गए। पृथ्वी भी पानी से विशुद्ध हो गई है। मेंढक व मोर को फिर भी वाचा (वाणी) फूट पडी है। शिव भक्त शंकर की पूजा अर्चना करने लगे। सावन मास जल से भरपूर बन गया है। पुरुष वस्त्रियाँ नित्य पूजा पाठ के लिए नहाते हैं और शंकर के ब्रात होने लगे है इस ऋतु में।

भादरवो (भादौ)

रंग भाद्रव शाम घटा रंग रातोय,
　　रंग नीलम्बर श्वेत रजे
फळ फूल अत्रब्बळ कम्मळ फेलीय,
　　वेलीय नेक अनेक वजे।
परियांदन सोळ किलोळ में पोखत
　　काग रखी मुख घ्रम्म किया
अजमाल नथु ताण कुंवर आलण
　　सोय तणी रत संभरिया।[1]

अर्थः भाद्रपद महीने में काले रंग की मेघों की घटा बन पडी है। अंबर लाल, नीला और श्वेत रंग धारण करने लगा है। फल फूल असंख्य मात्रा में निकलने लगे। बेलें सुशोभित होने लगी। इस महीने के अंतिम सोलह दिन पूर्वजो को श्राद्ध डाल आनंद सहित संतुष्ट किया जाता है। काग-ऋषियाँ (कौअे) के मुख में अन्न अर्पण कर लोग धर्म निबाहते हैं इस भाद्रपद ऋतु में।

तिथिगीत – पड वे प्रीतकरुं छुं पहेली

पडवे प्रीत करुं छुं पहेली,
　　वाले मारे अघोर वनमां मेली,
　　　　दिवस बहु थयां रे लोल!
बीजे कांई न जाणुं बीजुं,
　　जोबन भमरो थईने उडे
　　　　दिवस..............!
त्रीजी तन तपे तमारा,
　　जीबन वया जशे अमारां,
　　　　दिवस...............!
चोथे चतुरा सरखी नारी,
　　मनडा राख्या अेनी वारी,
　　　　दिवस.............. लोल।
पांचमे परदेश कीधी प्रीतुं,
　　वाले मारे अे राखी छे रीतुं,
　　　　दिवस..............!

---

1. मेघाणी ग्रंथ – सं. उमाशंकर जोशी, पृ. 235

छट्ठे छठ्ठीना लख्या लेख,
विधात्री ओ अवळा लख्या लेख,
दिवस..............!
सातमे आवोने अलबेला,
मारा रंगीला ना रेली,
दिवस..............लोल ।
आठमे आनंद औछव थाय
गोपीयुं गरबे रमवा जाय,
दिवस..............!
नवमे नमीओ मारा नाथ,
हरिओ झाल्या तेमना हाथ,
दिवस..............!
दशमे दया करी दीनबेली,
वाले मारे कूवामां मेल्या ठेली,
दिवस..............!
अगीयारशे ओकादशी ना व्रत,
वाले मारे बहु कर्यां छे तप,
दिवस..............!
बारशे बत्रीश वाडीनी रसोयुं,
तेरशे तेत्रीश वाडीना शाक,
दिवस..............लोल !
चौदशे चिंता मेली नाथ,
हरिओ झाल्यो मारो हाथ,
दिवस..............लोल !
पूनमे पंदर तिथि थई पुरी,
तेमा ओक नथी अधूरी,
दिवस बहु थयां रे लोल।[1]

तिथिओ – कु. पद्मजा चंदरवाकर

अर्थः प्रतिपदा के दिन प्रथम प्रीत बांधी है और प्रियतम घनघोर बन में अकेली छोड़ चले गए। बहुत दिन बीत गए। द्वितीया को कुछ न जानती मेरा यौवन भ्रमर बन उड़ गया। तृतीया का आपका तन जलेगा मेरा यौवन बीत जाएगा। चतुर्थदशी को चतुर नार ने मन को संभाला। पंचमी को प्रियतम ने परदेश में प्रीत की अच्छी रीत निभाई। षष्ठी को विधाता ने भी उल्टे लेख लिखे। सप्तमी को मेरे रंगीले प्रियतम आओ। अष्टमी को चारो और आनंद उल्लास है गोपियाँ गरबा खेलने जाती है। नवमी के दिन जो झुकता है प्रभु समक्ष, प्रभु उसका हाथ थाम लेते है। दशमी के दिन गरीबों के सहायक दया करो प्रियतम ने कुँए में धकेल दिया।

1. गुजरातनां लोकगीतो – खोडीदास भा. परमार (अध्याय – कनेरनां लोकगीतो), पृ. 123-124

एकादशी के दिन उग्र तप व्रत किए है। द्वादशी के दिन बत्रीस प्रकार के भोज्य तैयार किए। त्रयोदशी को तैंतीस प्रकार का साग-सब्जी प्रिय बनी है। चतुर्दशी को सर्व चिंताए छोड़ दी तभी श्री प्रभु ने मेरा हाथ थाम लिया। पूर्णिमा को पंद्रह तिथियां पूर्ण हुई उसमें एक भी अधूरी नहीं है। प्रियतम को गए बहुत दिन बीत गए।

आसो

अन्न सात पकयाय, आसोय आयाय,
नीर ठेरायाय नीतरियां,
जळ ऊपर कम्मळ रुप खीले ज्यम,
पावश देह पनातरियां,
मछ छीप तणी रत जामत मोतीअे
ठीक झळुमळ नंग थिया
अजमाल नथु तण कुंवर आलए, सोय तणी रत संभरिया।[1]

अर्थ : सात तरह के अन्न उगे, पके। अश्विन महीना आया। मेघ से पानी बरसकर रुक गए है। जल पर कमल पुष्प खिलने लगे। इस ऋतु में सिपियों में मोती जमने लगे। चमकदार सुंदर मोती पकने लगे इस ऋतु में।

(३) व्रत उपवास, त्योहार एवं मेले संबंधी लोकगीत–

अेकादशी व्रत–

आजे अेकादशी आजे अेकादशी,
तनमन पावन करनारुं व्रत, आजे अेकादशी।
आजे हरिजन हैये होंश धरी,
कर भजन प्रभुनुं भाव धरी
आजे अवसर उपाधि अलग करी...। आजे
आजे हरिजनने हरिमय थावुं
आजे अन्य स्थळे नव अथडावुं
आजे नामामृत पीवुं पावुं....। आजे
उत्तम व्रत अेक ज अेकादशी
हरिजन वैष्णव ने हृदय वसी
आजे कीर्तन करवुं कमर कसी...। आजे
आजे विनय विवेक विरागे खसी,
खोटी खटपट थी दूर खसी
आजे रामरटण नी बांधो रसी। आजे

---

1. मेघाणी ग्रंथ - सं. उमाशंकर जोशी, पृ. 237

आ अेकादशी तारण तरणी छे
ते तो स्वर्गे जावीनी नीसरणी छे ।[1]

अर्थः उपरोक्त गीत में कहा गया है कि आज पवित्र एकादशी का व्रत है जो तन और मन दोनों को पावन करने वाला व्रत है। प्रभु के भक्तगणों के हृदयों में असीम उत्साह है, भगवान का भजन भावपूर्ण भजन करो सभी चिताएँ छोड़ कर त्याग कर भजन करें। आज प्रभु जन (हरि का जन) प्रभुमय ईश्वरमय बनना चाहता है, अन्य कहीं भटकना नहीं चाहता। और आज ईश्वर नाम रुपी अमृत का पान करना चाहता है। सभी व्रतों में उत्तम (श्रेष्ठ) ऐसा एकादशी का व्रत है। आज वैष्णव के अंतर मन में बस कर कमर कसकर भक्तगण कीर्तन करना चाहते है। आज विनयशीलता, रागद्वेष सभी से परे रहकर, निंदा व खटपट से दूर रह राम नाम रुपीरटण की रस्सी बाँध लो आज पवित्र एकादशी है। यह एकादशी सभी को भवसागर से तारने वाली नैया है वस्वर्ग तक पहुँचाने की सीढ़ी है। आज पवित्र एकादशी है।

गोरमानां गीतो (गौरीव्रत)

जव छे डोलरियो

मारा जवना जवेरा रे, जव छे डोलरियो।
मारा किया भाईअे वाव्या रे ? जव छे डोलरियो ।
मारी कयी वहुअे सींच्या रे ? जव छे डोलरियो ।
अेमने महियरीअे वळावो रे ? जव छे डोलरियो ।
मारी कयी बेन पूजशे रे ? जव छे डोलरियो ।
मारी दक्षाबेन पूजशे रे ? जव छे डोलरियो ।[2]

संग्राहक - जेठालाल त्रिवेदी (गोरमानां गीतो में से)

अर्थ : गुजरात में कुँवारी कन्याएँ यह व्रत उत्तम वर प्राप्ति हेतु करती है जिसमें वह नन्हीं बांस की टोकरी में विविध अन्न उगाकर उनकी पूजा सवेरे कर पांच दिन तक बिना नमक खाए रहती है इसे गोरमा का व्रत कहते है। कहा गया है गीत में कन्या कहती है मेरे ज्वार के जवेरे (हरी घास जैसे) की फसल है भाई, जवार डोलरिया है। मेरे किस भाईने ज्वार की फसल ठगाई है? और कौनसी बहूने इसे पानी देसींचा है? उसके पिहर विदाई करो रे। ज्वार की फंसल उगी है जो है। मेरी कौन सी बहन इसे पूजेगी? मेरी दक्षाबहन इसे पूजेगी भाई।

गोरमा नो वर केसरियो

गोरमानो वर केसरियो ने, नदीये नावा जाय,
साथे बांध्यु फाळियुं ने हर हर करतो जाय।
गोरमानो.....................जाय,
पगमां पैरी पावडीओ ने, टप टप करतो जाय।

---

1. श्री झवेरचंद मेघाणी
2. गुजरातनां लोकगीतो - खोडीदास भां. परमार, पृ. 60

गोरमानो......................जाय,

हाथमां लीधी लाकड़ी ने ठब ठब करतो जाय।

गोरमानो......................जाय,

पगे वळग्युं देडकुं ने, ओय वोय करतो जाय

गोरमानो......................नदीये नांवा जाय।[1]

संग्राहक - जसुमती नानालाल (गोरमानां गीतो में से)

अर्थः गोरमा (कुंवारी बालिका) का वर, दूल्हा निष्फिक्र है, लहेरी है, और नदी पर नहाने जाता है। पांव में पावडियां, चाखड़ी (चरण पादुका) पहन कर टप टप की ध्वनि करता हुआ चला जा रहा है। दूल्हे ने हाथ को लकड़ी ली है और ठप्प ठप्प की आवाज करता बाल दूल्हा चला जा रहा है। अचानक उसके पैरों पर मेंढक चढ़ जाता है जिससे वह ओहा (ओय वोय) आह। की आवाज लगा कूदता हुआ चला जा रहा है। यह एक ठिठोली करता हास्य प्रधान गीत है जो कुंवारिकाएँ गाती है।

गोर्य मा, गोर्य मा रे।

गोर्यमा, गोर्यमा रे, सासरो देजो सवादियों।

गोर्यमा, गोर्यमा रे, सासु देजो भूखावळां।

गोर्यमा, गोर्यमा रे, कंथ देजो कोडामणां।

गोर्यमा, गोर्यमा रे, देराणी जेठाणीना जोडलां।

गोर्यमा, गोर्यमा रे, पूतर देजो रंग पारणे।

गोर्यमा, गोर्यमा रे, घेडी देजो ढींगल पोतिये।[2]

संग्राहक - खोडीदास परमार (गोरमानां गीतो में से)

अर्थः गौरी मा (पार्वतीजी) से लड़कियाँ प्रार्थना करती है कि हे गोर्यमां मुझे ससुरजी अच्छे पकवान, भोजन पसंद करने वाली जीभ वाले देना, हे गौरी माता और सासुमां पेटुदेना जो खूब खाती हो। पति (कंथ) विविध लाड़कोड़ लड़ाने वाले देना। देवरानी व जेठानी की जोड़ी देना। और रंगीले पालने में झुलाने पुत्र देना। हे पार्वती माता और पुत्री, गुड़ियों से खेलने वाली देना।

काठा गोर नां गीतो

गोर्य पूजे छे गोपी रे-

गोर्य गोर्य माडी, उघाडो कमाडी,

तमारी पूजारी आवी रे।

गोर्य पूजे छे गोपी रे।

ई रे पूजारी शुं शुं रे मागे ?

दहीं मागे, दूध मांगे, पूतरने परिवार

मागे छे अखंड हेवातण रे,

1-2. गुजरातनां लोकगीतो - खोडीदास भा. परमार, पृ. 60-62

गोर्य पूजे छे गोपी रे?

वेळुडीनां ढगलां करीने,

पूजे छे प्रेम धरीने रे,

गोर्य पूजे छे, गोपी रे।

कंकु केसर ने अबीलगलाली,

घीना दीवा लैने आवी रे,

गोर्य पूजे छे गोपी रे।

अेकुं अेकुं गोपी ने अेकुं अेकुं कान,

रास रमे भगवान रे,

गोर्य पूजे छे, गोपी रे।[1]

अर्थः बालिका कहती है - हे अंबा पार्वती माता अपने द्वार खोलिए तेरी पूजा करने वाली पूजारिन द्वार के बाहर खड़ी है। अंबिका का पूजन गोपियां करती है। पूजारिन क्या-क्या मांगती है? दही, दूध पुत्र व परिवार माँगती है। पुष्पो (वेळुडी) का ढेर लगा कर प्रेम पूर्वक आपकी पूजा करती है। पूजन हेतु कुमकुम, केसर, अबील, गुलाल तथा घी की दीये लेकर आई है। एक-एक गोपियों संग एक-एक कान्हा रासलीला खेल (रचा) रहा है। है पार्वती माता ये गोपी आपका पूजन करती है।

गवरी पूजीने पाछी फरी रे

हुं तो गई ती रे, जळ जमनाने आरे,

के गवरी पूजीने पाछी फरी रे

हुं तो मांगु रे मारा बापनां राज,

के, माता सदाय सुवासणी रे।

हुं तो मांगु रे, मारा ससरा नो राज,

के, सासु सदाय अखोवंता रे।

हुं तो मांगु रे, मारा वीरनां राज,

क, भोजाई ते हालर हुलणे रे।

हुं तो मांगु रे, मारी घेडीना राज,

के ढींगले पोतीये रमता दीठडां रे।

हुं तो मागुं मारा कंथना राज,

के चांदलो, चूडलो ने टीलडी रे।[2]

कंठस्थ - शाबाबहेन परमार (भावनगर)

अर्थः कन्या कहती है - मैं तो जल से भरी यमुना किनारे गई थी और पार्वती मां की पूजा कर वापस लौटी हूँ। मैं तो यह सदैव अपने पिता राजपाट व माता सदैव सुहागिन रहे ऐसा मांगती हूँ। मैं तो अपने ससुरजी का

1-2. गुजरातनां लोकगीतो - खोडीदास भा. परमार, पृ. 70-71

राज व सासुमा सदैव पुत्रों से भरी पूरा आबाद रह (अखोवंत) । मैं तो सदैव अपने भाई (वीर) का राज मां से माँगती है और भौजाई सदा झूले पर झूलती आनंद मनाती रहे। मैं तो सदा अपनी बेटी का राज मांगती हूँ जो सदा गुडियों में खेलती देखा करुँ। मैं तो अपने पति का राजपाट मांगती हुँ व बिंदिया, व चूडा व सोने की ललाट की टीकिया सलामत रहे। ऐसा माँ से वरदान माँगती हूँ।

गौरीव्रत के गीत – (बरंड़ा प्रदेशना लोकगीतो)

गोरमा, गुणपत लागुं पाय, समरुं शारदा रे लोल।
गोरमा, बापे जोयां धन, के माये जोयां घरणां रे लोल।
गोरमा, नगर शेरनी माटली, के मारे मन काचलां रे लोल।
गोरमा, धन मां मेलुं आग के घरणां घोळयां करुं रे लोल।
गोरमा, अमने वरस थयां छे सोळ, बुढीयाने अेंसी थया रे लोल।
गोरमां, अमारे दूधीया दाँत के बुढीयाने पडी गया रे लोल।
गोरमा, अमारा काळा केश, के बुढीयाने घोळा थया रे लोल।
गोरमा, मारे चटकती चाल, के बुढीयाने लाकडी रे लोल।
गोरमा, सैयरुं मां रमवा जाऊं तो बुढीयो बळी मरे ले लोल।
गोरमा, अमने दयो आशिष जीवतर झेर थयां रे लोल।
गोरमाये दीधां छे वरदान, जोड बनी शोभती रे लोल।[1]

अर्थः बालिका गाती हुई कहती है, हे पार्वती माता ! मैं साष्टांग दंडवत् आपके चरण स्पर्श करती हूँ और मां शारदा का स्मरण करती हूँ। हे माता, मेरे पिता ने ससुराल खोजते वक्त धन भंडार देखे, मेरी माता ने गहने देखे । परंतु माता मेरे लिए तो

मैं तो ऐसे धन को आग लगा दूँ व गहनो को त्याग दूँ, क्योंकि माता मैं तो अभी सोलह वर्ष की कन्या हूँ और बुड्ढे दूल्हे को 30 वर्ष हुए है अर्थात् पिता का खोजा वर बूढ़ा है। हे गौरी माँ मेरे तो अभी दूध के दाँत भी नहीं टूटे अर्थात् नवयौवना हूँ जबकि बुड्ढे के सभी दांत गिर निकल गए हैं। गौरी मां मेरे केश काले घने है जबकि बूढ़े दूल्हे के सभी सफेद हो चुके हैं। मेरी लचकती मटकती चाल है जबकि बूढ़े को चलने के लिए लकड़ी का सहारा लेना पडता है। गौरी माता जब मैं अपनी सखियों संग खेलने जाती हूँ तब बूढ़ा दूल्हा जल-भुन जाता है। गौरी माता अब आप ही आशीर्वाद दीजिए मेरा जीवन तो जहर बन गया है अंततः माँ पार्वतीने ऐसा वरदान दिया कि दूल्हा (सुंदर नवयुवक) दुल्हन की जोड़ी सुशोभित हो उठी।

अेकादशी व्रत

आज मारे उत्तम अेकादशी साहेली रे,
आज मारे उपवास, मोहनलाल रे,
जावुं श्री जमनाजीमां झीलवा।
जळ रे जमनाजीमां झीलतां साहेली रे,

1. लोकसाहित्य माळा, मणको 5 (बरडा प्रदेशनां लोकगीतो) – सं. हरिलाल काळीदास मोठा, पृ. 173

छुटडा मेल्या केश, मोहनलाल रे, जावुं श्री..... ।
 जळमां ऊभीने मारी डुबकी साहेली रे,
 तूट्यो मारो नवसर्यो हार, मोहनलाल रे, जावुं श्री..... ।
सघळा मोती वेराई गयां साहेली रे,
हीरलो लाध्यो हाथ, मोहनलाल रे, जावुं श्री..... ।
 हाथ्ये वेणुं ने नखे साचवुं साहेली रे,
 मुखडे उत्तर दर्शन, मोहनलाल रे, जावुं श्री..... ।
गोकुळनी गलीयुं सोयामणी साहेली रे,
वैशनवनी भीडा भीड, मोहनलाल रे, जावुं श्री..... ।
 परसादी कीधी वाले मोकळी साहेली रे,
 ढोरना बांध्या ठाठ, मोहनलाल रे,
 जावुं श्री जमनाजीमां झीलवा ।[1]

अर्थ: ओ सखि, आज मेरा उत्तम एकादशी का व्रत है और उपवास है इसलिएयमुना जल में हे श्रीकृष्ण स्नान करना चाहती हूँ। यमुना में स्नान करते हुए मैंने अपने केश खोल दिए हैं। जल में खड़े खड़े मैंने डुबकी लगाई सहेली जिससे मेरा नौ लड़ि(सेर) वाला हारं टूट गया। सारे मोती बिखर गए जिसे ढूँढ़ते ढूँढ़ते मेरे हाथ हीरा लग गया। जिसे मैंने अपने हाथों में सँभाल कर रखती हूँ। कोई पूछेगा तो मुख से उत्तर दूंगी। सखि गोकुल की गलियाँ बड़ी सुहावनी है जहाँ सदा वैष्णवों की भीड़ लगी रहती है। प्रसाद के तौर पर ठोर (श्रीकृष्ण को लगाया जाने वाला मुख्य प्रसाद) मिला है हे श्रीकृष्ण । आज एकादशी के दिन यमुना में स्नान करना चाहती हूँ।

मुनिव्रत (मौन व्रत) : व्रत करनेवाली पूरा दिन मौन रहती है। रात को आकाश में तारे टिमटिमाते है उसे देख मुनिव्रत छूटता है परंतु छूटता तभी है जब कविता गाती है तब। उगते तारे जब दिखे, गाँव को मंदिरों में शंखनाद, घंटनाद हो ढोल नगाड़े बज उठे तभी कन्या गाने लगती है–

अंट लागे
घंट वागे
झालर नो झणकार वागे
आकाशे ऊग्या तारा
बोले मुनिवाळा ।[2]

अर्थ: बाला गाती है मंदिरों में शंखनाद बजने लगा, ढोल नगाड़े बज उठे, झालर बज उठी, आसमान में जब तारे निकल आए ऐसे में बाला ने मौनव्रत तोड़ा व बोली।

1. लोकसाहित्य माळा, मणको 5 (बरडा प्रदेशनां लोकगीतो) - सं. हरिलाल काळीदास मोठा, पृ. 174, 175
2. कंकावटी मंडळ बीजुं, सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 3

झालर झणकी
कांसी रणकी
ऊग्या तारा
मुनि मारा
मुनियांनां व्रत छूट्यां
बोलो मुनि राम राम।[1]

अर्थः झालर बज उठी, कांस रणकने लगे, तारे निकलने लगे, मुनि मेरे मुनियो के व्रत तूटे अब बोलिए मुनि राम राम।

गणागौर

चैत सुदी तीज के दिन कुमारिकाएँ गणागोर का व्रत करती है।
गोर्य गोर्य माडी
उघाडो कमाडी
पेलडा पोरमां गोर मा पूजाणां
पूजी ते अरजीने
पाछां ते वळी वळी आवो रे गोर्य मा।
फरी करुं शणगारजी रे।
आंजरा सोंई
मारे पांजरा सोंई
मारे वीछीडे मन मोह्यां रे, वीछीडानां अळियादळियां,
सोनानां मादळियां रे
सोनानां मादळियांने शुं करुं,
मारे नदीये नावा जावुं जी रे।[2]

अर्थः है पार्वती माता अपनी किवाडी दरवाजा खोलिए। प्रथम प्रहर में आपकी पूजा हुई। आप से यह अरज है विनती है कि आप पीछो लौटकर आइए। लाइए, फिर से आपका मैं श्रृंगार करुँ। गौरी मां कहती है कि मुझे तो पाँव की ऊंगलियों में पहनने के लिए बिछिया व सोने के गहने (मादळिया) गले में पहनने के लिए चाहिए। ऐसा श्रृंगार चाहिए।

आगरीओ घूघरीओ
गोर्य शणगारी
बापे बेटी खोळे बेसारी
कियो वर कियो वर गमशे?
ईश्वर ने घेर राणी पारवतीं रमशे।

1-2. कंकावटी मंडळ बीजुं, सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 3

चोथले छ मास मारी आँख दुःखाशे
पाटा पींडी कोण रे करशे?
अध्यारुं नां धोतियां पोतियां
छोकरा रे धोशे
गोर्य मानी छोडी पछेडी
छोकरियुं रे धोशे ।[1]

अर्थः घूँघरु सहित अन्य वस्तुओं से गौरी मां का श्रृंगार किया । पिता ने बेटी को गोद में बैठा पूछा, हे पुत्री कैसा दूल्हा पसंद आएगा? तू तो ससुराल जा रानी की तरह राज करेगी फिर यदि चार महीने बाद मेरी आंखो में दर्द होगा तो उपचार कौन करेगा? तेरे बिना यह सारे कार्य कौन करेगा पुत्री?

झाडपांद की पूजा

बोरडी रे बोरडी
मारा वीरनी गा गोरडी ।
हुं पूजुं आकडो आकडो
मारा वीरनो ढांढो वांकडो वांकडो ।
हुं पूजुं आवळ बाबळ
मारो ससरो रावळ रावळ ।
हुं पुजुं पोदळो पोदळो
मारी सासु रोदळो रोदळो ।[2]

अर्थः वृक्ष पत्तों की पूजा कन्या बेरी के वृक्ष का पूजन कर अपने भाई के घर में गौरी गाय की कामना करती है। आक के पौधे से वह भाई के लिए टेढे मेढ़े सींगोवाले हृष्टपुष्ट बैल का वरदान मांगती है। बबूल वृक्ष का पूजन कर राजघराने ससुर को वरदान मांगती है और गाय के गोबर को पूजकर गोबर जैसी ढीली ढाली, भोली व कोई भी काम न कर सकने वाली सासु मांगती है। ताकि ससुर घर की बागडोर उसी के हाथों में रहे। हुकुमत कर सके।

रियो रियो गोर्यमां आजनो दाडो
काल्यनो दाडो झांझरिया घडावुं रे ।
तमारा झांझरियाने शुं करुं
मारे नदीये नावा जावुं रे ।
नदीनां तो ओळां पाणी, डोळां पाणी,
सरवर नावा जावुं रे ।
सरवरनां तो ओळां पाणी, डोळां पाणी,
कूवे नावा जावु रे ।
डब दईने डूबकी खाधी

1-2. कंकावटी मंडळ बीजुं, सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 4,5

गोर्यमां वैला आवजो रे।
तमने चीरना चंदरवा
तमने अटलसनां ओशिका
तमने पांभरियुं ना पडदा, वैला आवजो रे।[1]

अर्थः हे गौरी मां (पार्वती) आप आज का दिन रुक जाइए। कल के दिन झांझर बनवा दूंगी। झांझर का क्या करुं मुझे तो नदी में नहाने जाना है। नदी का पानी तो मैला है, तालाब में नहाने जाना है। सरोवर का पानी भी खराब है तो कुएँ पर नहाने जाना है। धब्ब की आवाज से टोकरी में उगाए माता स्वरुप जवारे नदी में विदा कर गए कि अगले बरस जल्दी आना आपके लिए सुंदर चंदोवा,तकिए, व परदे लगाऊँगी, जल्दी आना।

आंबरडुं फोफरडुं

लड़कियां गीत गाकर सौभाग्य मांगती है-

चकलां रे तमे चणी चणी लेजो
गोविंदनां घर गणी गणी लेजो।
गोविंद रे तमे आरी देजो, झारी देजो
गोठडीअे बे बेन्युं देजो।
आर्णे परियाणे वीरोजी देजो
रांधणीअे वऊवारु देजो।
पाटले जमवा बाप देजों।
भेगो जमाडवा भत्रीजो देजो।

फिर साथिया पर फल रखकर

बेस रे रामश्री भगवान,
क्यारे लेशुं हरिनां नाम।
हर रे हैडां नी गोरी
ओसडियामां नाखो ढोलो।
वैद रे तुं कुंटियो वैद
मोंघा तुलसी मोंघा पान
वरतोला करो,
लख चोरासी फेरा टाळो
फेरा फरतां लागी वार
श्रीकृष्णे ऊघाड्यां बार
बारोबार दीवा बळे
श्रीकृष्णना विवां करे।[2]

---

1. कंकावटी मंडळ भाग 1, सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 16
2. कंकावटी मंडळ भाग 1 व 2 (व्रत), सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 8,9

गीत : फलों पर तिलक कर

टीली रे मारी टबक देराणी,
झबक जेठाणी
वरत करो बे झल देराणी।
मारी टीली आरे मास बारे मास
शिवजी पूरो सौनी आश।
सौ नायां सौ धोयां,
तेनी बांधो पाल्य
पाल्ये पांच पूतळां ने
मंई बेठा वासुदेवजी।
मरडक मारी मूठडी
ले रे राम लेतो जा
कांईक आशरवाद देतोजा,
रावी पासे थालो जा,
राणी केशे कोणी
तने चडप लेशे ताणी।
कारतक नाय कडकड खाय
अेनुं पून्य कूतराने जाय।
कागडा बोल्या
कूतरा बोल्या
ओलीपानी छोडियुंनुं खो...टुं।[1]

पोषी पूनम (व्रत)

पोष महिनानी पूनमे रे
अगासे रांध्या अन्न वाला।
जमशे मानी दीकरी रे
पीरसे बेनीनो वीर वाला।
चांदा ! तारी चानकी,
मारुं चुरमुं !
भाई जम्यो!
बेन भूखी।
चांदा तारी चानकी

1. कंकावटी मंडळ भाग 1 व 2 (व्रत), सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 9, 10

कूतरा तारी रोटली,
आज मारी पोषी पूनम
पोषी पोषी पूनमडी
        अगासे संध्या अन्न,
भाई नी बेन जमे के केम ?
पोषी पोषी पूनमडी,
सात भाईनी बेनडी,
भाई कहे तो जमे,
नीकर बेन रे भूखी ![1]

अर्थः पौष महीने को पूर्णिमां का व्रत है, पूर्णिमा है अतः छत पर अन्न पकाया गया है। माता की बेटी खाएगी और बहन का भाई परोसेगा। चंदा तेरी ही गोल आकार की रोटी (पूडी) बनी है चूरमा (लड्डु) है, भाईने भोजन किया व बहन भूखी है। छोटी सी रोटी कुत्ते का भोजन बनेगी मेरा तो पोषी पूर्णिमा का व्रत है। भाई की बहन खाए तो कैसे? सात भाइयों की इकलौती बहन है, भाई कहेगा तो व्रत तोड़ खाएगी वर्ना बहन भूखी ही रहेगी।

चांदरडानी पूजा (व्रत)

पेलुं चांदरडु में पूज्युं
पछी मारा वीरे पूज्युं
आभलुं डाभलुं
कूरडीमां साकर
भाइबाप ठाकर
दरियामां दीवो
भाई बाप जीवो।
धान खाऊँ धूड खाऊँ
मारा भाई ऊपर थी धोळी जाऊँ।[2]

अर्थः चंद्रमां की पूजा का व्रत कन्या गाती है - सर्वप्रथम उगनेवाला चंद्रमा को मैंने पूजा, फिर मेरे भैया ने। तुकबंदी वाला बालगीत है, आकाश इतना विशाल है, छोटी सी मटुकी में साकर (मिश्री) है भाई पिता दोनो ठाकर (जाति) है। समुद्र में दीया भैया पिता दोनो जीएँ धान्य खाऊंया मिट्टी फाकूँ पर मैं तो भैया पर न्यौछावर हो बलि बलि जाऊँ।

आंबरडुं–फोफरडुं (व्रत कुमारिका)

आंबरडुं फोफरडुं
कोडी ने कोठींवडुं
गाय रे गाय

1-2. कंकावटी मंडळ भाग 1 व 2 (व्रतकथाओ), सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 3-7

तु तो मोरी माय,
नत नत डुंगरे चरवा जाय,
चरी करी पाछी वळी
गंगाजळ पाणी पीवा गई,
सामो मळियो सिंह ने वाघ
वाघ के मा तने खाऊँ।
नारे भाई मने नो खवाय।
मारा छाणनो चोको थाय
मारा घी नो दीवो बळे
मारुं दूध मा देव ने चडे।[1]

अर्थ: गाय ओ गाय तू तो मेरी माता । रोज पर्वत पर चरने जाती है। गंगाजल पीने भी जाती है। सामने मिला शेर वबाघ बाघ बोला मां तुजे मैं खाऊँ। गाय बोली भाई मुझे खाया नहीं जाता, मेरे गोबर से चौका लीपा जाता है मेरे घी से दीये जलाए जाते और मेरा दूध शंकरजी को चढ़ाया जाता है।

गीतः तलक तळसी
झमरक दीवडो
हत हत करतो जाय रे जीवडो
जीव के तुं जळशियो
राणी मागे कळशियो।
राणी केशे काणी
तने चडप ले शे पाणी
तपिया रे तुं तपेशरी
मारो वीरो लखेशरी
लखेशरी ना आंणां भाणां
अमरत आणां।[2]

अर्थ: तुलसी को तिलक कर क्यारे में दीप जलाया जाता है। जीव कहता है तू पानी को रानी तो लुटिया मांगती है। रानीतो कानी कहेगी तुझे पानी ले डूबेगा। दीप तू तो तप कर तेरशी मुनिगण बना मेरा भाई लखेशरी है।

सूरज पांदडुं व्रत–

सूर्य–रन्नादे व्रत में रन्नादे को उनके पति सूर्य ने एकांत में एक रहस्य बताया । रन्नादे रह न पाए और वही बात पड़ोसन को जा बताई जिससे झगडा दो गया तत्पश्चात्–

1-2. कंकावटी मंडळ भाग 1 व 2 (व्रतकथाओ), सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 5-7

गीतः सूर्य तो ऊगीने घेर आव्याने
तमे चाडी खाधीने,
मने गाळो भंडावीने,
माटे तमने शाप दऊं छुं ने,
तमे बैरांनां पेटमां वात नहीं टकेने,
तमे भभडतां भभडतां रहेशो ने,
संतोष ने सबूरी नहीं वळे ने ।[1]

अर्थः सूर्य देव घर आकर पत्नी रन्नादे से गुस्से से कहते है तुमने चुगली कर पड़ोसन को बात बताई व मुझे गालियाँ खिलवाई अत मैं तुम्हे श्राप देता हूँ कि तुम औरतों के पेट में कोई बात न टिकेगी, तुम ज्वाला की तरह जलते रहोगे संतोष व धैर्य कभी न होगा।

तुलसी व्रत (कार्तिक अेकादशी, देव दिवाळी)

तुलसी मा, तुलसी मा, वव्र द्यो, वरतोला द्यो ।
तम थी व्रत थाय नहि ने व्रत महिमा पळाय नहि।
थाय तोय द्यो ने नो थाय तोय द्यो।
अषाढ़ मास आवे, अजवाळी अेकादशी आवे,
सात सरे साते गांठे दोरो लेवो,
नरणां भूख्यां वात कहेवी, वात न कहीयें तो उपवास पडे।
पीपळा ने पान कहेवी, कुंवारी ने कान कहेवी,
तुळसीने क्यारे कहेवी, गाने गोंदरे कहेवी,
घीने दीवे कहेवी, ब्राह्मण ने वचने कहेवी,सूरज नी साखे कहेवी।
कारतक मास आवे, अजवाळी अेकादशी आवे,
(त्यारे) व्रतनुं उजवणुं करवुं, पेले वरस लाडवो ने गाडवो,
आवे चोखो जनमारों, बीजे वरस मगनुं कुंडुं,
रे अेवातण ऊंडुं, त्रीजे वरस साळ सुपडुं,
आवे संसारनुं सुखडुं, चोथे वरस चरणां चोळी,
आवे भाई पूतर नी टोळी। पांचमे वरसे खीर खांडे भर्यां भाणां
आवे श्रीकृष्णनां आणां,
हे तुळसीमां, व्रत अमारुं ने सत तमारुं।[2]

अर्थः कार्तिकी सुद की एकादशी अर्थात् देवदीवाली के दिन भगवान विष्णु का शालीग्राम स्वरुप में, तुलसी के वृक्ष संग विवाह मनाया जाता है। इस पर से अच्छा स्वामी प्राप्त करने की कामनार्थ कुंवारी कन्याओ हेतु तुलसी व्रत का आयोजन हुआ अतः कन्याएँ गाती हैं-

---

1-2. कंकावटी मंडळ भाग 1 व 2 (व्रतकथाओ), सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 44,31-32

हे तुलसीमां हमें व्रत दीजिए । उत्तर में तुलसीमां कहती है आपसे न तो व्रत होगा और न ही व्रत महिमा का पालन होगा। कन्याएँ बोली हमसे हो तो भी दीजिए, न हो तो भी दीजिए। तुलसीमां कहने लगी आषाढ मास की उजियाली एकादशी के दिन सात तारों वाला सात गांठे बांध धागा लीजिए मान काल में उठ भूखे पेट व्रत कथा कहिए, न कहने पर उपवास टूटेगा। कथा पीपल के पत्तो से कहिए, कुंवारी कन्या के कान में कहिए, तुलसी के क्यारे के पास बैठ कहिए अथवा गायों से कहीए, घी के दीये से कहें, ब्राह्मण से कहे या सूर्य को साक्षी मान कहें। कार्तिक मास की उजियाली एकादशी जब आए तब व्रत का उद्यापन करें। इसे पहले वर्ष लड्डु बनाकर दे करे ताकि आनेवाला जन्म अच्छा मिले। दूसरे वर्ष मूँग का घड़ा दें, तीसरे वर्ष सूर्य का दान दें, जिससे सांसारिक सुख मिलेगा। चौथे वर्ष दे घाघरा चोली का दान, मिलेंगे भाई का व पुत्र सुख। पांचवे वर्ष खीर व खांड (मिश्री) चीनी संग संपूर्ण भोजन, हे तुलसी माँ, व्रत हमें दीजिए।

तुलसी विवाह

गीत – कंकुना क्यारा

कंकुना क्यारा दमदमे,
त्यां ऊग्यो तुलसीनो छोड रे,
श्री कृष्णे लक्ष्मीने मोकल्यां,
गणेश वधावा जाव गोरी रे।
गणेश वधावी पाछांरे वळियां,
कहो नगरीनी वात रे,
नगरी भली रे द्वारमती,
त्यां केळ बीजोरां नी वाडी रे।
नगरी मां कोण कोण राजिया?
कोनी वरते छो आण रे?
नगरीमां कृष्णजी राजिया,
बळभद्रनी वरते छे आण रे।
कंकुना क्यारा दमदमे,
त्यां ऊग्यो तुलसीनो छोड़ रे।[1]

संग्राहक – सौ. चंद्रिका जोधाणी
(तुलसी विवाह के गीतों में से)

अर्थः कुंकुंम के क्यारे सजे है वहीं तुलसी का पौधा उगा है। श्रीकृष्णजी ने लक्ष्मी को भेजा, गणेशजी उनके स्वागत के लिए जाएँ। गणेशजी स्वागत कर लौट आए हैं अब नगरनी बात बताइए। भली सी द्वारका नगरी है जहाँ केले व बीजोरां की खेती है। नगरी में किसका राज्य है? व किसका रौब मान है? नगरी में श्रीकृष्ण भगवान का राज है व बलभद्रजी को आन मान है। कुमकुम के क्यारे चमकते सजे है, वही तुलसी का पौधा उगा है।

---

1. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 66

गीत : **तुलसी बाळ कुंवारा**

सरखी सैयरुं मां तुलसी जळ भरवा ग्यांता,
    सैयरुं मेणलां बोली रे, तुलसी बाळकुवारां।
आटली सैयरुं मां कोण कोण कुंवारुं?
    आटली सैयरुं मां तुलसी कुवारां रे, तुलसी बाळकुंवारां।
घरे आवीने तुलसीअे ढोलियो ढाळ्यो,
    ताणी पामरियुंनी सोड्युं रे, तुलसी बाळकुंवारां।
को, को, तुलसी दीकरी, माथां शे दुख्या,
    च्यां तमने कांटडा वाग्या रे? तुलसी..........।
नथी बापा, मारा माथां रे दुख्यां,
    नथी अमने कांटा वाग्या रे, तु.........।
अेटली सैयरुं मां मेणलां बोल्यां,
आटली सैयरुं मां तुलसी कुंवारा रे, तु.........।
को तो तुलसी तमने सूरज वेरे परणावुं
चांदलियो वर परणावुं रे, तु.........।
सूरज ने तो बापा, तेज झाझेरां,
चांदलियो जळझांखो रे, तु.........।
को तो तुलसी तमने शिवजी परणावुं,
हनुमान वर वोरी लावुं रे, तु.........।
शिवजीने तो बापा जटा झाझेरी,
हनुमान भर्यो तेलसिंदूर रे, तु.........।
काशीनी वाटे करशनजी कुंवारां,
त्यां मारुं सगपण करजो रे, तुलसी बाळकुंवारां।

संग्राहक - चंद्रिका जोधाणी (तुलसी विवाह के गीतों में से)

अर्थः हम उम्र सखियों संग तुलसी (बालिका) जल भरने के लिए गई। सखियों ने ताने मारते हुए कहा तुलसी तो बाल कुंवारी है। इतनी सखियों में कौन कौन कुंवारी है? बोली इतनी सखियों में तुलसी बाल कुंवारी है। घर आकर तुलसीने चारपाई बिछाई, मुँह फूला, लंबी तानकर सो गई। माता ने पूछा बता तुलसी बेटी सिर में किस कारण दर्द है? कहाँ काँटे चुभे है? न तो मेरे सिर में दर्द है और ना ही मुझे काँटे चुभे हैं। सखियों ने मुझे ताना मारा कि मैं अभी तक बाल कुंवारी हूँ। मां बोली यदि तू कहे तुलसी तो सूर्यदेव संग तेरा ब्याह करवाऊं या चंद्रमा से विवाह करवाऊं। तुलसी बोली सूर्य देव का तेज ताप तो प्रखर है और चंद्रमा तो फीका है। मां बोली तो फिर शिवजी के संग ब्याह करवाएं या हनुमान संग। तुलसी बोली भैया शिवजी की तो घनी जटाएँ है और हनुमान तेल व सिंदूर से भरा पडा है अतः काशी के रास्ते कृष्णजी कुंवारे हैं वहीं मेरा सगाई रिश्ता करना।

1. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोडीदास भा. परमार

होली गीत (सथवारा जाति का लोकगीत)

लाल रंगना लहेरणिया, माथे लीली अंढोणी
रे हाल्यने देवरिया साथ, रंगे रमीये होळी।
रातो चूडलो, राती ओढणी, राती रे रंग होळी,
रे हाल्यने.................... होळी
राती पाघडी ने मूंछो छे वांकडी, आंखडी फेरे ऊलाळी,
रे हाल्यने.................... होळी
अंगे अंगे कोणे पूरी जोबननी रंगोळी,
रे हाल्यने.................... होळी
तान रंगनो लहेरणियो ने माथे लीली अंढोणी
रे हाल्यने.................... होळी
रे तारे मनडे मनडे में तो पीधुं केशर धोळी,
रे हाल्यने देवरिया साथ, रंगे रमीये होळी।[1]

अर्थ: भौजाई अपने छोटे देवर से कहती है - लाल रंग का लहेरिया पहना है और माथे पर हरे रंग की ईढोनी है। चल रे देवर भैया संग, मिलकर रंगों से होली खेले। लाल रंग का चूडा (चुडियां), लाल ओढ़नी और होली का रंग भी लाल है। देवर की लाल पगडी व वांकडी (टेढी मेढ़ी) मूँछे है और अंखिया उछाल मटका रहा है। तेरे अंग में किसने यौवन की रंगोली भर दी है चल मिलजुल संग होली खेलें। मैंने तो केसर घोल कर पिया है।

गीत– पर्वगीत

होळी आज ने काल,
होळी वै साइलां रे।
गामना पटल होळी वधाव,
होळी वै साइलां रे।
गामनी पटलेलां होळी वधाव,
होळी वै साइलां रे।
ऊगमणे थी आयवां रे, होळी माता परदेशी।
पापड पापडी लावयां रे, होळी माता०
आंबा-मोवडां लावयां रे, होळी माता०
के हुळीयो रंग लावी रे, होळी माता०।[2]

अर्थ: होली आज कल में आ ही गई समझो। होली चल पडी है। गाँव के मुखिया पटेल जी आप होली का स्वागत कीजिए। होली आ गई है। सूर्योदय की उगती दिशा से होली माता परदेसी का आगमन हुआ है।

---

1. लोकसाहित्य माळा, मणको 13, सथवारा लोकगीतो
2. लोकसाहित्य माळा, मणको 1, मेवासनां लोकगीतो, पृ. 173

होली अपने संग पापड पापडी, अंबियां, सभी पदार्थ ले आई है। और सबसे ऊपर होली के रंग भी साथ ले त्योहार को रंगीन बनाने आई है।

गीत–होली

शेनो ने रस लायवां होळी माता परदेशी,
सीहोळियो रस लायवां रे
होळी माता परदेशी
मोवडीयो रस लायवां रे, होळी० ।
केरीओ रस लायवां रे, होळी० ।[1]

गीत–होली

मारो रायोनो वींछी,
रायनी शेरीअे रमतो फरे
पेला ते वेवईने केडो रे,
घम्म पछाडां करे रे ।
अेमने कां केडो कां, ज्यां जुओ त्यां ।
अम्मज नहीं कहुऊं,
मारे घेर जइने कहीश
धीबो धीब, मारो रायोनो वींछी...रायनी शेरीये...
होळीने उधारे केडो,
दीवाळीने दाडे केडो ।
घीबो घीब, मारो रायोनो वींछी.... रायनी शेरीये रमतो फरे ।[2]

दिवासा गीत (पर्व)

दिवासानुं मोटुं परब,
सव लोक राजी ।
राडे तो खावा कइरुं
रटला ने भाजी ।
सव लोक चाइला उजाणी,
फुवेड चाइलां पाणी ।
में ऊजाणी माणी नथी,
हुं ऊजाणी करती नथी,
भात पईडो छे टाढो,

1. गुजराती लोकसाहित्य माळा, मणको 1, मेवासनां लोकगीतो, पृ. 274
2. गुजराती लोकसाहित्य माळा, मणको 4, मेवासनां लोकगीतो, सं. भगत कांताबहन और जयंतकुमार एन. सर्गी, पृ. 61-62

जुओ जुओ फुवेडना ढंग रे,
आ घर केम चाले?
फुवेडनुं मोटुं मोढुं,
दांत मेलवा जोईए
मोढा में तो दांत नथी,
पाशेरनी पींड मेले..जुओ।[1]

अर्थ: दिवासा का बड़ा त्योहार है। सभी जन बडे खुश हैं। पर इक मूई बहूने तो इस पर्व पर रोटियाँ व भाजी पकाई हैं। सभी लोग उत्सव माने गए जबकि फूहड़ बहू पानी भरने गई। कहती फिरती है मैं उत्सव मनाती नहीं, न करती हूँ भात ठंडा पड़ा है। देखिए ऐसी फूहड़ औरत के ढंग इसका घर कैसे चलेगा? इस फूहड का लगता है सिर्फ मुँह बड़ा है पर दॉत नहीं है जो लगाने चाहिए। सिर्फ बातें बड़ी बड़ी करती है।

राखी

आवो वीरा बांधुं, अमर राखडी,
जुग जुग जीवजो जीवनने सोहावतां,
अंतरनी आशीषने ऊजळा बोलडा
परम प्रभुजी झीली करजो म्हेर सौ।
सूका झाडेलीली कुंपळ फूटती,
थाक्या लोक सौ थाक ऊतारे छांयडे,
अंतरनी सौ भूलीये ऊंडी वेदना,
अेवी राखो वीरनी अम्मर छायंडी,
ऊगे चांदो रजनी ऊजळी ओपती,
किलकिलाटे हसती रमती तारली,
अवसर आवे हसतां रमतां आवशुं।
ऊगजो ऊगजो ऊजळां सुखनां व्हाणलां,
आथमजो सौ दुःखना दहाडा सामटा,
जगमां अेनी जोडी ऊजळी राखजो,
ऊजळी राखो बेन वीरानी बेलडी।
साचवजो सौ दुनियाना देखो भला,
भवनो मारो अलबेलो अे साथ जो
दुःखीयारीनो काचो पाको रोटलो,
दुःखीयारीनो परदुःख भंजन ओटलो।[1]

---

1. गुजराती लोकसाहित्य माळा, मणको 1, मेवासनां लोकगीतो, पृ. 174
2. (स्त्री शक्ति) ता. 1-12-46 के अंक में छपा था।

अर्थः रक्षाबंधन भाई बहन का पवित्र त्योहार है। बहन गाती है आओ भैया मैं तुम्हें अमर राखी बांध दूँ। जुग जुग जीना भैया अपने जीवन को सुशोभित करना। मेरे अंतर से मीठे बोल व आशीर्वाद देती हूँ कि प्रभुकृपा तुम पर सदैव बनी रहे। जैसे सूखे वृक्ष पर हरी कोंपले फूटती है और थके मुसाफिर अपनी थकान उसकी छाया में उतारते, अपने हृदय की वेदना भूलते सभी वैसे ही मेरे भैया को कृपा द्रष्टि रुपी छाया मुझपर बनी रहे। चंद्रमा प्रकाशित हो उठता है, तारे किलकिल करते है अवसर आने पर हँसते खेलते आएँगे। प्रभु भैया के जीवन में सुख ही सुख उदित हो और दुःख के सारे दिन एक साथ अस्त हो। जगत में भैया भाभी की जोड़ी सदैव भरीपूरी व सुखी रखना। व बहन भाई की जोड़ी सदैव बनाए रखना। हे दुनिया के भले देवगण मेरे भैया की की रक्षा करना जो मेरा व उसका जन्मो का साथ है। दुःखीयारी बहन लो कच्ची पक्की रोटी खा लेगी व दुःख भूलाने के लिए कोई तो परदुःख भंजन मिलेगा परंतु मेरे भैया की रक्षा करना।

पूनम

पूनमनी रातडी लागे मधमातडी
        रास रमवाने हुं तो घेली बनी
कृष्णनी काळाश आज उतरी छे आभमां
        आंखनो उजास एनो पथरायो चांदमां
वृक्ष वेली वांकडीया वाळशां शोभता
        रास रमवाने हुं तो घेली बनी
वहेतां झरणां जाणे गोपीनुं गान छे
वायरानी ल्हेर आज वांसळीनी तान छे
तारलिया मोहिनी गोप गावाळ छे
        रास रमवाने हुं तो घेली बनी।[1]

अर्थः गोपी कहती है कि पूर्णिमा की रात्रि बड़ी सुहावनी व मदहोश भरी मधुर लगती है और मैं श्रीकृष्णजी संग रास खेलने के लिए उत्सुक हूँ। ऐसा लगता है जैसे पूर्णिमा को रात को कृष्णजी की कालिमा सारे आकाश मैं फैल गई है साथ ही उनको खेत सुंदर आँखो की उजियाला प्रकाश चंद्रमा में फैल गया है। उनके काले घुँघराले केश वृक्षों को बेल की तरह है। बहते हुए झरने मानो गोपियों का गीत है। वायु की लहरे मानो उनकी बंसी की तान है। छोटे तारे मानो ग्वाल बाल है ऐसे में रास खेलने के लिए मैं पागल हूँ।

पूनम गीत – हे कुमकुमना पगले ऊतरी

हे कुमकुमना पगले उतरी पूनमनी रातडी
        हे म्हेंदीना रंगमां निखरी पूमिनी रातडी
हे पायल ने घूघरामां घमकी पूनमनी रातडी
हे तबलानां तालमां डोली पूनम नी रातडी
हे रासडानां बोलमां बोली पूनमनी रातडी

---

1. विठ्ठल स्मरणिका अने गिरनार वर्णन : डॉ. माँ हरेश्वरी देवी, पृ. 41-46

हे दांडीयाना जोरमां झूमी पूनमनी रातडी
हे मोहिनी मस्तीमां घूमी पूनम नी रातडी।[1]

अर्थः ऐसा लगता है मानो पूर्णिमां की रात्री कुमकुम लगे पाँवो से ऊतर आई हो तथा मेंहदी के रंग में निखर गई हो। पैरो से ठेस लगाती नृत्य करती आई पूर्णिमा की रात्री पाँवो में पायल बाँध आई पूर्णिमा। पूर्णिमा रुपी नायिका तबले की तान पर डोलती चली आई है। रासडा के बोल पर बोल उठी है। दांडिया (डंडिया रास खेलने की) के जोश पर पूर्णिमा रुपी नायिका झूम उठी है, मोहिनी मस्ती में मस्त हो घूम रही है।

नवरात्री त्योहार (गरबा)

गरबा माता सोळे सराद नवे नोरतां रे

माता सोळे सराद नवे नोरतां रे,
माता वीस वजैया दिवाळी रे,
भवानी खेले नोरतां रे।
माता चकले चकले नाखो अमी छांट रे,भवानी............... ।
माता कियो भाई तमारी सेवा करे रे,
माता कई वहु ते वागे तमारे पाय, भवानी.............. ।
माता बटुक भाई ते तमारी सेवा करे रे,
माता हीना वहु ते लागे तमारे पाय, भवानी.............. ।
माता पाय पडामण वहुने बेटडो रे,
माता अखंड अेवातण होय, भवानी.............. ।
माता अखंड अेवताण वहुनो चूडलो रे,
माता अखंड वीराजीनी मोल्य, भवानी खेले नोरतां रे।[2]

अर्थः मां भवानी नवरात्र में गरबे खेल रही है। हे माँ चौरे चौरे पर आप अपनी अमृत कृपा बरसाइए। माता कौन सा भाई आपकी सेवा करे? कौन सी बहू आपके चरण छुए? माता बटुक भाई आपकी सेवा करेगा और हीना बहू आपके चरण स्पर्श करेगी। भवानी माँ नवरात्र खेल रही है। माता आपके चरण छूने पर आप बहू को बेटे का आशीर्वाद पायलागण के रुप में दे व अखंड सौभाग्य प्रदान करें।

गरबा सात सुखडनां कोडिया कीधां रे मां,
अंबाजी गरबे घूमे छे।
में तो डुंगर कोरीने गरबो कीधो रे मां
अंबाजी.............. ।
आंधळा आवे पोकारता रे मा
आंधळा ने आंखो आपो रे मां,
अंबाजी.............. ।

1. विठ्ठल स्मरणिका अने गिरनार वर्णन : डॉ. माँ हरेश्वरी देवी, पृ. 41-46
2. रढियाळी रात, भाग 2 में से – सं. श्री झवेरचंद मेघाणी

वांझिया आवे पोकारता रे मां,
वांझियाने पुतर देजो रे मां,
अंबाजी.............. ।
निर्धनिया आवे पोकारता रे मां,
निर्धनियाने धन देजो रे मां,
अंबाजी गरबे घूमे छे ।

(कंठस्थ - दिवाळी बहन खेरडिया (वडवा तलावडी)

अर्थ: सात प्रकार के चंदन के दीप (कोडिया़) रखे गए है। अंबे माता गरबे में घूम रही है। मैंने तो पर्वत कोरकर गरबा (गोल मटकी) बनाया है। हे माता अंधे आपको पुकारते हुए दरबार में आते हैं अंधे को आँखो द्रष्टि दीजिए बांझ आपको पुकारते दरबार में आते है उन्हें पुत्र दीजिए माता। निर्धनभी आपके दरबार में पुकारते आते हैं उन्हें धन दीजिए माता और इस प्रकार सबके कष्टों को अंबे माँ दूर करें।

केशरवाडी मां खोडल ऊतर्यां

केशरवाडीमां खोडलमा ऊतर्यां जोन वाला
वखाणीने गवरावजो चोकमां जोन वाला,
रमशे राणा केरी नार जो,
केशरवाडीमां चावणमा ऊतर्यां जोन वाला।
चांदो ऊग्यो पूनमनो जोन वाला,
जोयुं चांदा तारुं तेज जो
केशरवाडी मां प्रभु ऊतर्यां जोन वाला।

अर्थ: केशर के बगीचे (वाडी) में खोडल माँ उतरी है देखो। खूब बखान कर उनकी महिमा का गान करना। गरबे गाना। खेलेंगी राणा की नार (औरत बहू) गरबे में घूमेंगी। पूर्णिमां का चंद्रमा पूर्ण रुपेण खिला है जो अपना तेज बिखेर रहा है। केसरवाडी में प्रभु पधारे हैं।

मारो गरबो रे रमे राजने दरबार

मारो गरबो रे रमे राजने दरबार
रमतो भमतो रे ग्यो तो कुंभारीने बार
अली कुंभारीनी नार, तुं तो सूती होय तो जाग !
मारे गरबे रे रुंडां कोडियां मेलाव।
मारो.............................. दरबार।
रमतो भमतो रे ग्यो तो सोनीडाने बार,
अली सोनीडानी नार ! तुं तो सूती होय तो जाग !
मारे गरबे रे रुडां जाळिया मेलाव।

मारो.............................. दरबार।
रमतो भमतो रे ग्यो तो घांचीडाने बार,
अली घांचीडानी नार ! तु तो सूती होय तो जाग !
मारे गरबे रे रुडां दिवेल पुराव मारो० ।[1]

संपादक : झवेरचंद मेघाणी (रढियाळी रात, भाग-1 में से)

अर्थः माता का गरबा राज दरबारमें खेल रहा है। खेलते खेतले वह कुम्हार के द्वार पर जा पहुँचा है और कहता है कुम्हार की नार (पत्नी) यदि तू सो रही है तो जाग जा और मेरे गरबे (महीन छेद वाला मिट्टी का घड़ा) में सुंदर दीप सजा। फिर माँ का गरबा घूमता हुआ सुनार के द्वार पर जा पहुँचा। कहता है ओ सुनार की नार (पत्नी) यदि तू सो रही है तो जाग जा और मेरे गरबे में सुंदर जालियाँ सोने की बनवा। फिर घूमता हुआ माँ का गरबा तेलगी (घांची तेल निकालने वाला) के द्वार पहुँचा व उसकी पत्नी से कहने लगा यदि तू सो रही है तो जाग और मेरे दीपको में तेल भर कर प्रज्ञवलित कर।

रांदलमां का गरबा

रांदलमा हो रांदलमा, दळवानी दातार मावडी
सूर्यदेव घरनी तुं नारी, ऊतरी वडला हेट ओ माडी
गरबामां घूमे घूमे घूमे, ढोलीना ढोल झूमे झूमे झूमे
भाले टीलडी चमके, हाथे कंकण सनके
गोरुं मुख मलसे, रांदलमा हो रांदलमा
आरासुरनी राणी मावडी, भक्तोनी तुं प्यारी मावडी
सोळ सजी शणगार ओ माडी, रांदलमा हो रांदल मा।
भवनी तारणहार मावडी, करजे रखवाळां हो मावडी
रांदलमा हो रांदलमा, दळवानी दातार मावडी ।[2]

अर्थः पुत्र देने वाली रांदल माता तू लो गरबो को देनेवाली दाता हो। तू सूर्यदेव के घर की नारी (पत्नी) हो, बड़ के वृक्ष तले उतरी हो। माँ गरबे में ढोली के ढोल संग झूमकर घूम रही है। माँ के माथे पर बिंदिया चमक रही है, हाथो में कंगन खनक रहे है, गोरा मुखडा चमक रहा है। रांदल माँ आरासुर (जगत) की रानी है और भक्तो की प्यारी है। माता ने सोलाह सिंगार किया है। भवसागर के पार उतारने वाली तारणहार है। माँ तू सभी की रक्षा करना।

हमची गीत : हमची मोरी हलसडी

हमची मोरी हलसडीने हमसी मोरी बाई,
आ बाईने दूझे गावलडी, मारे सोनानी रवाई रे
हलसडी लेवडावो।

---

1. गुजराती लोकगीतो - खोड़ीदास भा परमार, पृ. 118
2. खोडियार, चामुंडा, रांदलमाँना गरबाओ - सं. श्री हरीशभाई वरन, पृ. 69

आ गाडा ऊपर गादलुं ने ऊपर बेठी माखी,
किया भाई ते घरघी आव्या, कई वहुने राखी रे,
हलसडी लेवडावो।
पटेल तारा वाडामां आ जई पड्यो छे गाभो,
कई बाइनो वर आव्यो, सौ के छे भाभो रे।
हलसडी लेवरावो।[1]
कंठस्थ : शाबाबहन परमार (भावनगर)

अर्थ: किसानो का जोशभरा नृत्य है हल्लीसक। किसान गा रहा है कि हल्लीसक नृत्य करें। इस स्त्रीके यहाँ दूध देनेवालो गाय है जो सोने समान कीमती है। हल्लीसक नृत्य करें। इस हल पर गद्दा है जिस पर मक्खी बैठी है। कौन से भाई पुनर्लगन कर आए और कौन सी बहू ब्याह लाएँ है। आओ हल्लीसक नृत्य करें। पटेल (जाति) तेरे खेत (वाडी) में कपडे का टुकडा (गाभो) जा गिरा है। कौन सी स्त्री का पति आ पडा है सौ उसे बावरा कहते हैं।

ढोली ढोल वगाडय

ढोली ढोल वगाडय मारे हिंच लेवी छे,
हिंच लेवी छे, हिंचलेवी छे,
ढोली.................... छे
किया भाईने टोडले मारे हिंच लेवी छे
कई वहुने घूंघटे मारे हिंच लेवी छे।
ढोली ढोल वगाडय मारे हिंच लेवी छे।[2]

अर्थ: ढोली तू ढोल बजा मुझे हींच ले नृत्य करना है। कौन से भाई के द्वार (टोडले) मुझे हींच ले नृत्य करना है कौन सी बहू के घूंघट पर मुझे हींच नृत्य करना है।

ढोलो राणो

होला राणा खांडे चोखला,
गोमती चाळे दाळ।
माने केजो कडलां मोकले,
मारां अेणलां आया आज
होलो राणो खांडे चोखला, गो...... ।
माने केजो मोढणी मोकले,
मारा अेणलां आया आन।
माने केजो कडलां मोकले
मारा............आज।

1-2. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 110-111

माने केजो हांहडी मोकले,

मारा............आज।

माने केजो टीलडी मोकले,

मारा............आज।

ढोला राणा खांडे चोखला,

गोमती चाळे दाळ।[1]

रास – राधाजीनां ऊँचा मंदिर

राधाजीनां ऊँचा मंदिर नीचा मोल,

झरुखडे दीवा बळे रे लोल

राधा गोरी ! गरबे रमवा आवो,

साहेली सहु टोळे वळे रे लोल।

त्यां छे मारा रुपसंग भाईनी गोरी,

हाथडीये हीरा जड्या रे लोल।

त्यां छे मारा मानसंग भाईनी गोरी,

पगडीये पदम जड्यां रे लोल।

त्यां छे मारा धीरसंग भाईनी गोरी,

सुखडले अमी झरे लोल।

राधाजी................मोल,

झरुखडे..........लोल।

राधा गोरी................ आवो।

साहेली सहु टोळे वळे रे लोल।[2]

अर्थ: राधा गोरी आप गरबे खेलने आओ। सभी सखियां झुंडबना आ गई है। गरबे में मेरे रुपसंडा भाई की गोरी है जिसके हार में हीरे जड़े है। गरबे में मेरे मानसंग भाईकी गोरी भी है जिसके पद्म जड़े है। वही मेरे धीरसंग भाई की गोरी गरबे खेल रही है जिसके मुख से अमृत सर रहा है। राधाजी आप गरबे खेलते जाओ।

नागरनंदजी ना लाल (रास)

नागर नंदजीना लाल(2)

रास रमतां मारी नथणी खोवाणी

काना ! जडी होय तो आल(2)

1. गुजराती लोकसाहित्यमाळा, मणको 1 – सं. पुष्कर चंदरवाकर
2. सौरभ रास लोकगीत संग्रह – सं. हसु याज्ञिक, पृ. 15-18

रास................खोवाणी।

नानी नानी नथणी ने मांही घणेरां मोती
नथणी ने कारणे हुं नित्य करुं छुं जोती, जोती जोती नागर०
नानी नानी नथणी ने मांही जडेला हीरा,
नथणी आपो ने मारी सुभद्रा ना वीरा, वीरा, वीरा - नागर०
नानेरी पहेरुं तो मारे नाके ना सोहाय,
मोटेरी पहेरुं तो मारा मुख पर झोलां खाय, खाय, खाय, नागर०
नरसैंया ना स्वामी ऊपर जाऊं बलिहार, हार, हार, नागर० ।[1]

जळझीलाणी अगियारस–

जीरे आजनी घडी ते रळियामणी रे,
मारो वालोजी आव्यानी वधामणी रे, आज०
जी रे तरियां तोरण ते बंधाविया रे,
मारा वालाजी ने मोतीडे वधाविया रे, आज०
जी रे लीला पीछा ते वांस वढावियें रे,
मारा वालाजीनो मंडप रचावियें रे । आज०
जी रे गंगा–जमुनानां नीर मंगावियें रे,
मारा वालाजी ना चरण पखळियें रे। जी आज०
जी रे तन मन धन ओवारियें रे,
मारा वालाजीनी आरती उतारीयें रे।आज०
जी रे रस वाध्यो जे अति मीठडो रे,
में तो नरसैंयानो स्वामी दीठडो रे। जी रे आज[2]

अर्थः आज की घड़ी (क्षण) बड़ा सुहानी है। मेरे बालमजी पधारे है और उनके स्वागत में तोरण बँधवाए है, मोतियों से स्वागत होगा। हरे पीले बाँस कटवा कर उनसे मंडप रचाएँगे, होगा यमुनाजी का जल मँगवा साजन के चरण धोएँगे। उन पर अपना तन मन धन न्योछावर करेंगे और उनकी आरती उतारेंगे। मेरा उनके प्रति मीठा रस अनुराग बढ़ा है (प्रेम) मैंने तो उनमें (बालम) नरसिंह मेहता के स्वामी श्रीकृष्ण जी के दर्शन किए है। आज बडी शुभ घड़ी है।

सातम आठम (त्योहार)

अमे रे मैयारा रे गोकुळ गामनां, मारे मही वेचवाने जावां
मैयारा रे गोकुळ गामनां।
मथुरानी वाट मही वेचवाने नीसरी
नटखट अे नंदकिशोर मागे छे दाणजी,

1-2. सौरभ रास लोकगीत संग्रह - सं हसु याज्ञिक, पृ. 18, 70

अे हां रे दाण लेवा ने देवा मैयारा............. ।
मावडी जशोदाजी ! कानजी ने वारो,
दुखडां दिये हजार नंदजीनो लालो,
अे मारे दुःख सहेवां ने कहेवा, मैयारा........ गामनां ।[1]

अर्थः हम तो माखन बेचेने वाले गोकुल गाँव के हैं। जाते माखन बेचने। मथुरा के रास्ते माखन बेचने चली, तभी नंदजी का नटखट कान्हा रिश्वत माँग रहा है (माखन)। माता यशोदा आप अपने नटखट कान्हा को रोकिए, समझाइए जो हमे हजार दुखडे दे रहा है गोपियाँ कहती है हमें तो दुःख सहने भी है (जो अच्छे लगते है) और आपसे फरियाद कर कहने भी हैं।

जन्माष्टमी (कृष्ण जन्म)

नंद घेर आनंद भयो
जे कनैयालाल की
हाथी घोडा पालखी नंद घेर आनंद भयो ।

अर्थः श्रीकृष्ण के जन्म पर नंदजी के घर सर्वत्र गोकुल में आनंद ही आनंद है। कान्हा की जय हो। कन्यैयालाल की जय हो हाथी व छड़ो की पालखी हो। कान्हा के जन्म से नंदजी के घर आनंद छा गया है।

पूनम (रास)

आसो मासो शरद पूनम नी रात जो,
चांदलियो ऊग्यो रे सखि मारा चोकमां।
ससरो मारो ओल्या जलम नो बाप जो,
सासु रे ओल्या जलम नी मावडी।
जेठ मारो अषाढीलो मेघ जो,
जेठाणी झबूके वादळ बीजळी।
देर मारो चांपलिया नो छोडजो,
देराणी चांपलिया केरी पांदडी।
नणंद मारी वाडी मायली वेल्य जो,
नणदोई मारो वाडी मांयलो वांदरो।
परण्यो मारी सगी नणंदनो वीरजो,
ताणीने बांधी रे नवरंग पाघडी।
गोरीनो परण्यो व्हाण कमावा जायजो,
काणे लावे रे खारेक टोपरां।[2]

1-2. सौरभ रास लोकगीत संग्रह – सं. हसु याज्ञिक, पृ. 31, 40

अर्थः अश्विन मास की शरदपूर्णिमा की रात्रि इतनी सुहावनी है कि हे सखि मेरे आँगन में चंद्रमा उगा है। ससुर मेरा पिछले जन्म का पिता है और सास माता। जेठजी मेरे आषाढ़ मास के मेघ समान है, जेठानी बादल बीच चमकने वाली बिजली है। देवर मेरा चंपा का पौधा वह देवराणी चंपा की पत्ती है। ननद मेरी बगिया की बेल व ननदोई बगिया का बंदर है। पतिदेव मेरा सगी ननद के भाई है जिन्होंने नवरंग की पगडी कसकर बांधी है। मेरा पति जहाज पर बैठ कमाने जा रहा है और जहाज से लाएगा नारियल।

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA

झालावाडी ढोल

अेक झालावाडी ढोल, झेण जांजड वागे,
के मने ढोलीडे रमवा मेल भरवाडिया रे,
　　　ओलीमोर जऊं तो ढोले रमुं।
के मने डोके थी दाणियुं टोंकु पडे,
के मने दाणियाना कोड पूरा कर भरवाडिया रे,
　　　ओली मोर............ रमुं।
अेक झालावाडी ढोल झेण जंवर वागे,
के मने ढोलीडे रमवा मेल भरवाडिया रे,
　　　ओली मोर............ रमुं।
के मने डोके थी झरमर टोकी पडे,
के मने झरमरना कोड पूरा कर, भरवाडिया रे,
　　　ओली मोर............ रमुं।[1]

अर्थः झालावाडी ढोल बड़ा जोशीला होता है वह बज रहा है और मुझे उस ताल पर नृत्य करने का मन हुआ है मुझे जाने दीजिए। उस ओर जाऊँगी तो ढोल संग खेल पाऊँगी मुझे गले की हंसडी (हार) छोटा पड़ रहा है अतः ग्वाले (भरवाड़) मुझे उस हंसडी को पहनने का शौक पूरा करो। झालावाड़ी ढोल एक जंतर की तरह बजता है, मुझे खेलना है नाचना है। गले की झरमर भी छोटी पड रही है ग्वाले मेरा वह शौक भी पूरा कर दो।

रासडा – बे बैरीना स्वामी (दो पत्नी का स्वामी)

एक हती त्यारे उतारा देती ओरडा रे लोल,
उकरडे उतारा बैरां बे मळी रे लोल।
अेवुं जाणो तो बीजी परणशो मा लोल,
अेक हती त्यारे भोजन देती लापशी रे लोल।
राबडी चटाडे बैरां बे मळी रे लोल,
अेवुं जाणो............. मा लोल।
अेक हती त्यारे मुखवास देती अेलची रे लोल
लींडियुं चवरावे बैरां बे मळी रे लोल।

---

1. रासडानो रंग – सं. खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 111

अेवुं जाणो............. मा लोल।
अेक हती त्यारे पोढण देती ढोलिया रे लोल।
साथरे सुवरावे बैरां बे मळी रे लोल,
अेवुं जाणो तो बीजी परणशो मा लोल।[1]

अर्थः एक पत्नीथी तब घर के कमरे में पडाव (सोने का स्थान) देती थी पर जब दो हुई तो कूडे के ढेर के पास स्थान मिला। ऐसे में कभी दूसरी मत ब्याहना। एक थी तब भोजन में लापसी, शीरा, हलवा देती थी लेकिन दोनो ने मिलने पर राबडी चटाई। एक थी तब मुखवास इलायची देती, दोनों मिलकर बकरी की लींडीयां खिलाती हैं। एक पत्नी सोने के लिए पलंग चारपाई देती परंतु अब दोनो मिल जमीन पर सुलाती है अतः दूसरी पत्नी कभी न ब्याहना।

मेले संबंधी लोकगीत

मेळो रे ऊसीलो, सोरी समके थी,
समके तो मते के जे रे सोरी समके थी
माय पूनम नो मेळो रे, सोरी समके थी
समके............................थी
सेला ने सांगलडे सोरी..........थी
समके............................थी
झांझर ना झमकारे सोरी समके थी
समके............................थी
जांबु ने फेर जावुं रे सोनी समके थी
समके............................थी
मेळो रे ऊसीलो................थी
समके तो मते के जे रे सोरी समके थी।[2]

अर्थः मेला तो बड़ा रंगीला व जोशीला था जिसमें गोरी (छोरी) चमक रही थी। पूर्णिमा का मेला बडा रंगीला था। गोरी भारी साड़ियां रेशमी पहन, पैरों में झांझर झमकाती सुंदर लग रही थी चमक रही थी। ऐसे मेले में बार बार फिर से जाना का मन है। मेला बड़ा ही रंगीला है।

शामळा गढ़नो मेळो

शामळा गढ़ नो मेळो ने कांई फरती गाडी आवेरे
अळती आव फरती आव, अेनी कोटी घुघरमाळो रे....शामळा.......
पगांनां कलीलां आलुं, मने गाडी जोवा देजे रे

1. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 92
2. लोक़साहित्य माळा, मणको 12, साबरकांठाना गीत

कलीलां तो ने ने लेतां, ने ने जोवां देतां रे....शामळा.......
पगांनां सांकळा आलुं मने.........................रे
सांकळा तो ने ने लेतां, ने.. .... रे....शामळा.......
डोक्यो ना टुप्या आलुं मने गाडी जोवा देजे रे
टुप्या तो ने ने लेतां, ने ने जोवां देता रे....शामळा.......
हाथीनां सुलीलां आलु, मने...............रे
सुलीला तो ने ने लेतां, ने ने जोवां देता रे... । शामळा ।[1]

अर्थः शामळा गढ़ में मेला लगा है उसपर से सुंदर घूमती हूई गाडी आ रही है। जिसे घुंघरुओं से सजाया गया है। जिसे देखने के लिए हर नारी आतुर है। अतः एक नारी कहती है कि मैं तुम्हें पाँव में पहनने के कळीले देती हूँ मुझे गाड़ी देखने दो वह कहता है कळीले तो हम नहीं लेते। पाँव की पायल दे दूँ, गाडी देखने दीजिए। इस प्रकार गले की हंसडी (हार) देने को तैयार पर गाडी के दर्शन करवा दो।

शामळाजी नो मेळो

शामळाजीनो मेळो, रणझणियुं ने पेंझणियुं वागे,
हां हां रणझणियुं ने पेंझणियुं वागे।
हाल कटोरी हाल ने मेळे, मेळे मोजुं मालशुं।
हाल कटोरी हालने मेळे, रणझणियुं ने पेंझणियुं वागे।
हां हां रणझणियुं ने पेंझणियुं वागे।
शामळाजीनो मेळो, रणझणियुं ने पेंझणियुं वागे।
डोहा दोटुं काढे, रणझणियुं ने पेंझणियुं वागे।
वाय वाय रे, डोहा दोटुं काढे,
डोसीयुं सेंकणी सोंधे,
सोकरां सीत्युं मारे।
वाय वाय रे, सोकरां सीत्यु मारे, रणझणियुं ने पेंझणियुं वागे।
हां हां रणझणियुं ने पेंझणियुं वागे
हाल कटोरी हाल ने मेळे,
रणझणियुं ने पेंझणियुं वागे।[2]

अर्थः शामळाजी का मेला लगा है जहाँ पेंझणिया पांव के घुँघरु बज रहा है चल सखि मेले में बडी मौज मनाएँगे। जहाँ मेले में पहुँचने के लिए बुड्ढे दौड़ लगा रहे है हवा भी चल रही है। बुढ़ियाँ नसवार सूँघती है। लड़के सीटियाँ बजा रहे हैं। हवा चल रही है पेंझणिया बज रहा है चल सखि मेले में बड़ी मौज करेंगे।

---

1. लोकसाहित्य माळा, मणको 12, साबरकांठाना गीत
2. रासडानो रंग - सं. खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 112

घोराडियुं धमके छे

जाऊं जाऊं मेटाळने मेळे, घोराडियुं धमके छे।
जाऊं जाऊं मा काळीने मेळे, घोराडियुं धमके छे।
मारा दहराजीये गाडलां जोड्यां, घोराडियुं धमके छे।
मारा दादुजीये मों मचकोड्यां, घोराडियुं धमके छे।
मारा जेठजी जोडां लाया, घोराडियुं धमके छे।
मारा जेठाणीये मों मचकोड्यां, घोराडियुं धमके छे।
मारो पैण्यो सूंदडी लाया, घोराडियुं धमके छे।
मारी नणदीये मों मचकोड्यां, घोराडियुं धमके छे।
मारा पैण्यै परोणला लीधां, घोराडियुं धमके छे।
मारा दियोरे डचकार्या, घोराडियुं धमके छे।
मारा पैण्ये परीनथी वगाड्यां, घोराडियुं धमके छे।
मारा जेठजीये राच्युं झाली, घोराडियुं धमके छे।
मारी जेठाणीने झाळुं लागी, घोराडियुं धमके छे।[1]

अर्थः जाना है भाई जाना है मेटाळ (जगह) के मेले में जाना है जहाँ घोराडियुं (एक प्रकार का वाद्य यंत्र) बज रहा है। जहाँ महाकाली माता का मेला लगा है वहीं जाना है। मेरे ससुरजीने मेले में जाने के लिए हल बैल तैयार कर लिए परंतु सासुजी मुँह टेढ़ा बिचका कर फुलाए बैठी है। मेरे जेठजी नए जूते लाए मेले में जाने के लिए तो जेठामी ने मुँह बिचकाया मोड़ा। मेरा पति चुनरी लाया तो ननदने मुँह मोड़ा। मेरे पतिने बलाएं ली। मेरे देवर ने बैलो को पुकारा पति ने प्रेम से वाद्य बजाए मेले जाने के लिए । देवर ने हर्ष से स्वागत कर बधावा किया। जेठजी ने बैलों की रस्सी थानी मेले जाने के लिए तो जेठानी मन ही मन जल भुन गई।

तरणेतरनो मेळो–

तरणेतरनो मेळो, मोतीडो गेंडानी ढाल।
अेकलो मेळे हाल्यो, मोतीडो गेंडानी ढाल।
बब्बे ते बायडी वाळो, मोतीडो गेंडानी ढाल।
हाथ मां ते नेतर सोटी, मोतीडो गेंडानी ढाल।
आंखमां ते ओजाग आंज्या, मोतीडो गेंडानी ढाल।
बब्बे ते छोगला मेल्या, मोतीडो गेंडानी ढाल।
केडमां छरीयुं घालीयुं, मोतीडो गेंडानी ढाल।
रुपियाना लाडवा लीधा, मोतीडो गेंडानी ढाल।
मणचीनी डार्ये बेठो, मोतीडो गेंडानी ढाल।
पाळे बेठीने टटकाव्या, मोतीडो गेंडानी ढाल।
तरणेतर नो मेळे, मोतीडो गेंडानी ढाल।[2]

1-2. रासडानो रंग – सं. खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 112-114

अर्थः गुजरात का प्रसिद्ध मेला तरणेतर का मेला है। जिसमें मोतीडा गेंडे की सी चाल से अकेला चला है। वह दो दो पत्नी वाला है मेले चला है। उसने हाथों की बाँस की लकडी, आँखों में काजल लगाया है। पगडी में ऊपर से पंख लगाए है, कमर में कट़ार रखी है, मेले में चला है। उसने वहाँ जाकर एक रुपये के लड्डु लिए और किनारे पर बैठ बड़े मजे से खाए। मोतीडा तरणेतर के मेले में गेंडे की सी चाल से चला।

जरुर जावुं मेळे (डाकोरनो मेळो)

डाकोरनो मेळो, रणछोडजीनो मेळो, जरुर जावुं मेळे।
मारी सासु केय, वऊ, नथ जावुं मेळे,
छाना मानां रेजो , भेसुं दोही खाजो जरुर जावुं मेळे।
मारो ससरो केय, वऊ नथ जावुं मेळे,
छानां मानां रेजो, भेंसु चारी खाजो, जरुर जावुं मेळे।
मारी नणंद केय, वऊ, नथजावुं मेळे,
छानां मानां रेजो, नणदोय घेर जाजो, जरुर जावुं मेळे।
मारो जेठ केय, वऊ, नथ जावुं मेळे,
छानां मानां रेजो, वासीदां वाळी खाजो, जरुर जावुं मेळे।
मारी जेठाणी केय, वऊ नथ जावुं मेळे,
छानां मानां रेजो, पाणी सेंची लावजो, जरुर जावुं मेळे।
मारो परण्यो केय, अली, नथ जावुं मेळे,
छानां मानां रेजो, रोटला टीपी खाजो, जरुर जावुं मेळे।[1]

तरणेतर के मेले में गाए जाने वाले गीत

अदल सोनारण बदल सोनारण
सोनारण फूलनो गजरो रे, मारी अदल सोनारण।
के तो सोनारण कडलां घडावी दऊं।
कांबियुं ना बानां भूल गई रे
मारी अदल सोनारण-(1)
के तो सोनारण हारलो घडावी दऊं
पारला नां बानां भूल गई रे
मारी अदल सोनारण-(2)
के तो सोनारण चूडलो घडावी दऊं
गूजरीनां बानां भूल गई रे
मारी अदल सोनारण-(3)
के तो सोनारण नथडी घडावी दऊं

1. लोकसाहित्य माळा, मणको 6 (नळकांठाना हरिजन लोकोनां लोकगीतो) - सं. श्री पुरुषोत्तम सोलंकी, पृ. 207

टीलडीनां बानां भूल गई रे

मारी अदल सोनारण-(4) [1]

रणझण करती झालर वागे

रणझण करती झालर वागे

मधुरस मोरली रे हो वागे...टेक

आव्या छो तो ऊतारा करता जाजो

ऊतारा ओरडा रे हरी तमने...रणझण...(1)

आव्या छो तो दातणियां करता जाजो

दातण दाडमी रे हरी तमने...रणझण...(2)

आव्या छो तो नावणियां करता जाजो

नावण कुंडियुं रे हरी तमने...रणझण...(3)

आव्या छो तो भोजनियां करता जाजो

भोजन लापसी रे हरी तमने...रणझण...(4)

आव्या छो तो मुखवासिंया करता जाजो

मुखवासिंया अेलची रे हरी तमने...रणझण...(5)

आव्या छो तो पोढणियां करता जाजो

पोढण ढोलिया रे हरी तमने...रणझण...(6)[2]

अर्थः रुनझुन करती मेले में झालर बज रही है। मुरलीकी मधुर तान बज रही है। हे प्रभु आए हो तो ठहरते जाना। आपके ठहरने के लिए कमरा रखा है। आए हो तो दातुन करते जाना। दातुन के लिए दाडमी रखी है। प्रभु आए हो तो नहाने स्नान विधि करते जाना। आपके स्नान हेतु गगरी में जल भर कर रखा है। प्रभुं आए हो तो भोजन करके जाना जिसमें आपके लिए हलवा बनाया है। तत्पश्चात् मुखवास के तौर पर ईलायची खाते जानां। अंत में प्रभु आपके विश्राम हेतु सुंदर शैय्या भी तैयार कर रखी है तनिक विश्राम करते जाना।

(४) संस्कार विषयक गीत

पुत्र आस / साध

पगलीनो पाडनार द्योने रन्नादे, द्यो रन्नादे

रांदलना मढे दीपमाळा दिपावुं, कुमकुम केसरियानी गार लिपावुं

पगलीनो पाडनार द्योने, रन्नादे द्यो रन्नादे

अेकलवायाना जीवन आकरा - जय जय रांदलमा।

आई तारी कृपा त्यां तो बालुडां नाचता, पुत्रने हाथे पितृ- याचतां,

---

1-2. लोकसाहित्य : तत्त्वदर्शन अने मूल्यांकन - ले. श्री जयमल्ल परमार, सं. बळवंत जानी, पृ. 290-291

मुक्तिनो मारगडो मा द्योने रन्नादे जय जय रांदलमा
आई तारा रखवाळां आठे पहोर छे, तारी कृपानुं मारे मोटे रुजोड छे,
लाखोनो लाडीलो (2) मा द्यो ने रन्नादे, जय जय रांदल मा
सर्व समृद्धि छतां पुत्र नी ताण छे, तारो प्रताप मोटो सौने ते जाण छे
पारणीये पोढनार (2) द्यो ने रन्नादे, जय जय रांदलमा ।[1]

अर्थः पुत्रदायिनी माता रन्नादे (रांदल) से स्त्रियाँ माग करती है हे माता नन्हे पांव की छाप रखने वाला पुत्र दे दो आपके मढ (मंदिर) मे दीपों की माला सजाऊँगी, कुंकुम से लीपूँगी। पुत्र बिना अकेला जीवन अत्यंत दुष्कर है। हे माता जहाँ आपकी कृपा हो वहाँ बच्चे नृत्य करते है पुत्र के हाथों पिता कुछ माँगते आशा करते हे। माता मुक्ति का मार्ग दें । हे माता आप आठों प्रहर रक्षा करती है आपकी कृपा अपरंपार है। जो लाखो का लाडला बने ऐसा, पुत्र दीजिए। मेरे पास सर्व प्रकार की संपत्ति है पर एक पुत्र की कमी है तेरी महिमा अपार है सभी जानते है, पालने में सोनेवाला पुत्र दीजिए।

बांधो अमारे घेर पारणां

बांधो अमारे घेर पारणां रे
घोडी बेसीने दडवानी दाता रे रांदल देवी
पुत्र विहोणा मागे पारणां रे
आंख्युं विहोणा करे पोकार रे रांदल देवी
लोटा छेड्या ने जाग तेडशुं रे
जमाडशुं गोरणियुं भली भात रे रांदल देवी
नमी नमी पाय लागशुं रे
घोडो खूंदी गाशुं अमे भली भात रे रांदल देवी
सेवा करीने थोडुं मांगशुं रे
केशुं अमने देजो पुत्र ने परिवार रे रांदल देवी
दुःखियानां दुःख बधां टाळतां रे
राख्या बाळ सघळां चरण पास रे रांदल देवी[2]

अर्थः हे पुत्र दायिनी रांदल माता हमारे घर पालना बंधवाओ । घोडी पर सवार होनेवाली देने वाली दानी माता जिसे पुत्र नहीं है वह पालना माँग रहे है। पुत्र के बिना नेत्रहीन आपको पुकार रहे है। आपकी पूजन हेतु कलश वह जाग (धार्मिक विधि) की मन्नत माँगी है। सभी को भोजन करवाएँगे। झुक झुक प्रणाम करते है। खडे खडे नृत्य गीत करेंगे। आपकी सेवा कर थोडा माँगते कहेंगे हमें पुत्र दीजिए परिवार दें। आप सभी दुखियों के दुःख दूर करने वाली है तथा अपने भक्त रुपी बालकों को अपने चरणों के पास शरण में रखनेवाली हो रांदलमाता।

1-2. खोडियारमाँ-चामुँडामाँ-रॉदलमाँना गरबाओ - सं. श्री हरीशभाई वरन, पृ. 73-74

दीकरानी झंखना

नीप्युं ने गूंप्यु मारुं आंगणुं,
पगलीनो पाडनार द्योने रन्नादे।
वांझिया मेनां माता दोहलां।
दळला दळीने ऊभी रही
पाळ्युंनो पाडनार द्योने रन्नादे
वांझिया............... ।
महीडा वलोवो ऊभी रही
माखणनो मांगनार द्योने रन्नादे।
वांझिया............... ।
पाणी भरीने ऊभी रही
छेडानो झालनार द्योने रन्नादे।
वांझिया............... ।
रोटला घडीने ऊभी रही
चानकीनो मागनार द्योने रन्नादे
वांझिया............... ।
धोयो धफोयो मारो झाडलो
खोळानो खूंदनार द्योने रन्नादे।
वांझिया............... ।
लीप्युं गूंप्युं छे मारुं आंगणुं
पगलानो पाडनारदीधो रन्नादे
अनिरुद्ध कुंवर मारो लाडको।[1]

(रढियाळी रात-1)

अर्थ: हे रांदल माता मैंने अपना घर आंगन लीप पोत कर रखा है पैरों के निशान बनाने वाला सुख देदो। बांझ का ताना असह्य है। आटा पीसकर जब खडी रही तब उसे गिराने वाला पुत्र दे दो। मक्खन बिलोकर जब खडी रही तब मांगकर खानेवाला दीजिए। पानी भरकर जब खडी रही तब साडीका पल्लू पकड़ने वाला दीजिए। रोटियाँ बना कर खडी रही तब छोटी सी रोटी मांगनेवाला भी दीजिए। धोयी हुई मेरी साड़ी है तब मेरी गोद में कूदकर खेलनेवाला दीजिए। मैंने अपना आंगन लीप पोत कर तैयार रखा है बस आप पैरों के निशान बनाने वाला अनिरुद्ध सा लाडला कुमार मुझे दे दीजिए।

1. मेघाणी ग्रंथ, भाग 2- सं. उमाशंकर जोशी, पृ. 213

सीमंत (गर्भधान के गीत)

आंबुडा जांबुडा हेठ रंनादेव, वस्ती पोकारे प्रभु बे जणा रे।
आघेरी जाऊं तो वस्ती रंनादेव, पाछी फरुं तो प्रभु बे जणा रे।
ससराने आंगणे ढोल धड्डक्या, बाजे वधामणी मोकली रे।
पीळडां पेरी पाटेरे बेठी, लीलडां पेरीने जळ भरयां रे।
सासु सोवासणे खोळा रे भरिया, माडी सोवासणें वीसाम्या रे।
बोचलो बांधी सुवावड सुती, अजमों ते खाद्यो तीखो तमतमतो।
सूंठ लईने सासु रे आव्यां, माडीये सुवावड केळवी रे।
सांगामाचीये बेसी पुत्र धवडाव्या, थाने ते भींजी जादर कांचळी रे।
लांबी परसाळे पारणां बांध्या, हाल करीने हिंचोलिया रे।
पाणीडां जातां छेडलां रे साह्या, वछ करीने वछोडिया रे।
निशाळे जातां राडा रे लीधा, गजुअे ते घाली सुंदर सुखडी रे।[1]

संपादक – कवि नर्मदाशंकर लालशंकर
(नागर स्त्रियों में गाए जानेवाले गीतों में से)

अर्थः हे पुत्रदायिनी मा ता रन्नादे आंबुडा जामुन के वृक्ष तले बसने वाले दो प्राणी (पति पत्नी) बस्ती, (पुत्र संतान) के लिए पुकार रह है। दूर जाती हूँ तो लोगों की भीड़ और वापस वृक्ष तले आती हूँ तो सिर्फ हम दो। ससुरजी के आँगन में ढोल बज रहे है पिता ने बधाइयाँ भेजी है। गोदभराई के वक्त पीले वस्त्र पहन पाट (लकडी का आसन) पर बैठी, हरे वस्त्र पहन जल भरा, सासु ने सुहागिनों की गोद भरी, माता ने सुहागिनों की गोद भरी । बालों का जूड़ा बांध प्रसव के लिए सोई अजवाइने खाई, सासु सुंठ ले आई और माता ने ऐसे समय में सँभाला। पुत्र जन्म बाद दूध पिलाया जिससे मेरी कंचुकी चोली भीग गई।लंबे आँगन में पालना बाँधा, गीत गाकर झूलाकर बुलाया। पानी भरने जाती तो मेरे आंचल खींचता जिसे मुश्किल से छुडवाती। पाठशाला जाते समय उधम मचाता और जेब में सुखडी छिपा लेता।

अेने शेनी अघरणी

काल सवारनी धेण्य ने,
आज शेणे अघरणी?
चांदाने तो मामा केती
अेने शेनी अघरणी?
रोटला ने तो तात्या केती,
अेने शेनी अघरणी?
पाणीने तो भू-भू केती,
अेने शेनी अघरणी?
खावाने मम मम केती
अेने शेनी अघरणी?[2] कंठस्थ – अमजीभाई परमार (भावनगर)

1-2. गुजराती लोकगीतो – सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 35-36

सीमंत (गौना) के वक्त रांदल मां को न्योता

पाने फूले भरी छाबडी रे, अगर नी डाबली रे।
में रे मांड्या छे जाग, थई छुं ऊतावळी रे।
सांकडी शेरीमां जाऊं त्यां सूरजदेव सामा मळ्या रे,
सूरज । रन्नादेने मोकलो, मारे घेर गोरणी रे।
दूधडिये धोईश आईना पग, करीश कंकु चांदलो रे,
जमाडीश खीर ने खांड, वघडीश गोरणी रे।
आपीश फोफळ पान, भारोभार अेलची रे,
बेसाडीश आई ने पाट, ओढाडीश चूंदडी रे।[1]

संग्राहक – रणछोडलाल ज्ञानी
(फार्बस गुजराती त्रैमासिक सन् 1939)

अर्थः पुत्रदायिनी रांदल माता को निमंत्रण देते हुए गाती है फूल पत्तो से भी टोकरी रखी हैं, अगर चंदन की डिबिया रखी है मैंने जाग (धार्मिक विधि) बैठाए है, भाई मैं बहुत अधीर हो उठी हूँ। संकरी गली में जाती थी तभी सामने सूरजदेव (रांदलमाँ के पति) मिले। सूरज देव रन्नादे को भेजो मेरे घर पर सुहागिन के तौर पर भोजन हेतु निमंत्रण दिया है। माता के चरण दूध से धो कर, कुंकुम की बिंदी लगाऊंगी, मिश्री वाली खीर खिलाऊँगी। बाद में पान बीडा दूँगी व ईलायची भी माता को पाट (लकड़ी के आसन) पर बैठाकर चूनरी ओढ़ाऊँगी।

कांई रे गोत्रेज मा अंगे ऊघाडां?

घरेणां जोइये तो मागीने लियो रे
आंजी पूंजीने शुं अेक मागुं?
खोरडे रमतेला बेटडा मागुं।
अेकसो ने साठ में तो देरी बंधावी,
देरी देरीये दीवडा अजवाइडा,
रजी पंजी हुं शुं अेक मागुं?
अेक अख्खेरे मारुं भालडुं मागुं,
रमवा सरसुं ढे क बालडुं मागुं।[2]

जन्म

नंद घेरे वागेर रे ढोल
व्रज नी शोभा रे अति घणी।
हीरना चंदरवाने रेशमनी दोरी,
झुलावे जशोदा गोरी रे,
चालो जोवाने जईये।

---

1. गुजराती लोकगीतो – सं. खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 38
2. गुजराती लोकगीतो – ले. मधुभाई पटेल, पृ. 29

जानकी पूछे जशोदा बेनुं रे,
        शेणे ते वध्यां गोरीना पेट? जानकी०
ओटले सूती चांदलिये झबकावी रे,
        वावलिये वइधां गोरीनां पेटू । जानकी०
आई पाडोशण बाई पाडोशण दीवडलो अजवाळो रे,
        क्यारे रे जनइमा नानां बाळ । जानकी०
आठ मास तो अजाण भवमां गया रे,
        नवमे तो जनइमा नानां बाळ । जानकी०
मारा ते देशमां मेहुलियो न वरसे रे,
        शेणे तो नवरावुं नानां बाळ । जानकी०
कोली ते गायनां दूधडियां मंगावो रे,
        तेणे तो नवरावो नानां बाळ । जानकी०
चीर फाडीने पारणे झोळी बांधु रे,
        हो पटोळुं फाडी करुं बरोतियां । जानकी०[1]

अर्थः नंद बाबा के घर श्रीकृष्ण का जन्म होते ही खुशियाँ छा गई । चारो और आनंद उत्सव मनाया जा रहा है । नंद बाबा के घर ढोल बज रहे है और व्रज की शोभा बहुत बढ़ गई है । हीरेजड़ित पालना और रेशम की डोरी है जिसे माता यशोदा झूला रही है । सभी सखियाँ आस पड़ोस की औरते कान्हा के रुप वैभव को देखने आ रही है । जानकी सखीने यशोदा से पूछा बहन कैसे गौरी का पेट बढ़ गया? यशोदा बोली अरी मालूम नहीं मुझे तो पता ही न चला । बहाना बना टाल गई सही उत्तर थोड़े ही देती? सभी पड़ोसनो ने मिल दीप जलाकर उजियाला किया । नन्हे बाल का जन्म हुआ है । आठ मीहने अनजाने में बीत गए नौंवे महीने में बाल जन्मा । मेरे देश में तो वर्षा बरसती ही नहीं बिन पानी के बच्चे को कैसे नहलाऊँ? फिर कहा गाय का दूध मँगवाकर उसीसे स्नान कराओ । लोकजीवन में पालना कैसा? कल्पना कितनी सुंदर । माता स्वयं के चीर फाड़ कर झोली बजाती है (पालना) और अपनी मँहगी साडी (पटोळुं बनारसी साड़ी) को फाड़ बच्चे को पहनाने के कपड़े बनाती है ।

जन्मोत्सव

अं अं करे न बाळो आंगळा धावे,
नगरीनां लोक सरवे जोवाने आवे ।
खमा मारा कानकुंवरने कांटको भांग्यो,
कांटो भांग्यो ने वाला ठेसडी वागी ।
अडवो केशुं ने बडवो कहीने बोलावशुं,
फैयरनां नाम वन्या वणबोल्यां रे शुं ।

1. गुजराती लोकगीतो - ले. मधुभाई पटेल, पृ. 30

अेक आवी ने धम धम घूघरा लावी।
बीजी आवी ने कडां सांकळां लावी,
त्रीजी आवीने वेढ वांकडा लावी।
चोथी आवी ने लंपाई घोडिया आगळ बेसशुं।[1]

अर्थः बाल का जन्म होते ही वह अं अं की आवाज कर अपनी अंगुली को चूसने लगता है। नगर के सभी लोक उसे देखने आते हैं। मेरे कान्हा को खम्मा कि कांटा टूटो कांटा टूट गया और पांव में ठोकर लगी। उसे अडवा कहकर पुकारेंगे या बडवा कह बुलाएँगे। बुआ आई। एक बुआ आई वह धम धम आवाज करने वाला खिलौना लाई। दूजी बुआ कड़े व झांझर लाई। तीसरी बुआ पैरों की टेढ़ी मेढ़ी बिछिया लाई। चौथी आई जो झूले के आसपास छिपकर बैठ गई।

हालरडां (पालने के गीत, झूला झुलावन)

देव ना दीधेल तमे मारा देवना दीधेल छो,
तमे मारा मागी लीधेल छो,
आव्या त्यारे अमर थईने रो।
मा देव जाऊँ ऊतावळी ने जई चडावुं फूल,
मा देवजी परसन थया त्यारे आव्या तमे अणमूल
तमे मारुं नगद नाणुं छो
तमे मारुं फूल वसाणुं छो,
आव्या त्यारे अमर थई ने रो।
मा देव जाऊँ ऊतावळी ने जई चढ़ावुं हार,
पारवती परसन थया त्यारे आव्या हैयाना हार
तमे.........नगद0
हनुमान जाऊं ऊतावळी ने जई चडावुं तेल
हडमान परसन थया त्यारे धोडिया बांध्या घेर
तमे........ नगद0
तमे मारा.................... छो
तमे मारा............. .... छो
आव्या त्यारे अमर थईने रो।[2]

अर्थः माता झुलाते हुए गाती है - हे पुत्र तुम तो मेरे देव की दी हुई संतान हो मेरी मांगी हुई संतान हो। आए हो बेटा तो अमर रहेना। शंकर के मंदिर में जल्दी से जाकर में फूल चढ़ाऊं। शंकर प्रसन्न हुए तभी तुम जैसे अनमोल का जन्म हुआ। तुम मेरी नकदी हो, तुम्ही फूल हो। महादेव के पास जल्दी से गई और हार चढ़ाया। पार्वती प्रसन्न हुए तभी मेरे गले के हार सम तुम्हारा (पुत्र) आगमन हुआ है। जल्दी से हनुमानजी

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 139
2. मेघाणी ग्रंथ भाग-2 - सं. उमाशंकर जोशी, पृ. 225

के मंदिरजा तेल चढ़ाया, हनुमान प्रसन्न हुए तभी तो घर में पालना बंधा । है पुत्र तुम ईश्वर की दी हुई संतान हो, मेरी मांगी हुई, अमर होकर रहना।

बहु वालो

पोढोने मारा हरि हालो, हालो
तुं तो रे तारा बाप ने बहुवालो - पोढोने०
तुं तो रे तारी मातानी लालो - पोढोने० - (1)
मळवाने आवशे व्रज तणा बाळा,
ते तो रे लावशे फूलडांनी माला,
तुं तो रे तारा काकाने बहु वालो - पोढोने०.- (2)
मळवा रे आवशे गोकुळनी गोपी,
ते तो रे लावशे फूलडांनी टोपी,
तुं तो तारी मातानो लालो। पोढोने० - (3)
मळवा आवशे मामो ने मामी,
ते तो रे भम्मर ताणी रेशे सामे
तुं तो रे तारा मामा ने बहु वालो पोढोने० (4)[1]
सं - झवेरचंद मेघाणी (हालरडां में से)

अर्थ: ऐ मेरे प्रभु सो जाओ। तुम अपने पिता के प्यारे हो तथा माता के भी। सो जाओ। तुम्हें देखने ब्रज के सभी बाल आएंगे फूलों की माला लाएँगे। तुम तो चाचाके बहुत प्यारे हो। तुम्हें मिलने गोकुल की गोपियां आएंगी वे फूलों की टोपी लाएँगी। तू तो अपनी माता के लाल हो। तुम्हे मिलने मामा मामी । मामा तो अपनी भोहें चढ़ाए तेरे सामने रहेगी पर तू मामा का दुलारा है। प्यारे अब सो जाओ।

बाळा पोढो ने

साव रे सोनानुं मारुं पारणियुं ने
घूघरीये घमकार, बाळा पोढो ने
चार पाये चार पूतळियुं ने
मोरवाये बे मोर, बाळा पोढो ने।
सुवडाव्या सूवे नहि रे
आ शा कळजग रुप, बाळा पोढो ने।
हमणां आवशे तारा दादाजी
ने मांडशे काई वढवेड, बाळा पोढो ने।
जेम तेम करी बाळ सुवरियां रे।
करवा घरना काम, बाळा पोढो ने।

1. गुजरातनां लोकगीतो - सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 48

कामकाज करीने ऊभां रियां रे
तोय न जाग्यां बाळ, बाळा पोढो ने।
बाई रे पाडोशण बेनडी रे
हजी नो जागे बाळ, बाळा पोढो ने।
बाई, तारुं बाळक बीनुं छे रे
लाव उतारीये लूण, बाळा पोढो ने।
सरखी साहेली भेळी थईने रे
जगाड्यां नानां बाळ, बाळा पोढो ने।[1]

अर्थः बिलकुल सोने का पालना है जहाँ झांझर छोटी छोटी लगी है जिस की मधुर ध्वनि सुन बच्चे सोजाओ। पालने के चारों पैरों थर पुतलियाँ (मूर्तियाँ) लगी है और ऊपर दो सुंदर मोर। ये कालेयुग के बाल कैसे हैं जो सुलाने पर भी नहीं सोते। अभी तेरे दादाजी आएंगे और डाँट लगाएँगे। जैसे तैसे कर बालक सुलाया और घर के सारे कार्य किए। कामकाज कर बैठी फिरभी बाल न जागा, बाल उठो। अरी पडोसिन बहन देखो तो अभी भी बाल नहीं उठा। वह बोली बहन तेरा बच्चा तो डर गया है, जल्दी से नमक लाकर उसकी नजर उतारे। सभी सखियों ते मिल बच्चेको जगाया।

घोघर आव्या

सूवो सूवो बावा रे घोघर आव्या
ढांकणीये ढंकाता आव्या, सूपडीये संताता आव्या।
वादळ जेवडो रोटलो लाव्या, पैडा जेवडो पापड लाव्या।
वांस जेवडा चोखा लाव्या, चाळणी जेवडी दाळ लाव्या।
पृथ्वीनी पत्रावळ कीधी, सागरनी तो पडियो कीधो।
घोघर सघळा जमवा आव्या, कूवाने पाणीये नहाता आव्या
सौ मळीने जमवा बेठा, जमतां जमतां वढी पड्या।[2]

हालेरुं

हालो तो घणो वालो रे भाईने
रमवाने रमकडां आलो...हा...लो !
भाई तो मारो डाह्यो रे भाई तुं
पाटले बेसी नाह्यो ! ...हा...लो !
पाटलो गयो खसी, भाई मारो
ऊठ्यो छे रे हसी ! ...हा...लो !
भाई तो मारो हीरो रे भाई तुं
लाडलडावे भाईनो वीरो ! ...हा...लो !

1-2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - स. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 129, 140

मोसाळ मां मामी धुतारी

झबलां टोपी लेशे ऊतारी ! ...हा...लो ![1]

अर्थः माता पुत्र को पालने में झुलाते हुए उपरोक्त गीत गाती है। मेरे मुन्ने को तो पालना बहुत प्यारा है उसे खेलने के लिए खिलौने दो। मेरा राजा भैया तो बहुत समझदार है जो फट्टे पर नहाने बैठा है नहाते हुए फट्टा नीचे से खिसक गया और मेरा राजा बेटा हँस पड़ा। मेरा राजा भैया हीरा है (रत्न) उसे उसका बड़ा भैया बहुत लाड़ (लड़ाता) करता है। ननिहाल (मोसाळ) में तो मामी बड़ी धूर्त है जो मेरे लाल के कपड़े, टोपी सब उतार लेगी।

बहन (पुत्री) संबंधी पालना गीत

अेक तो घडी न समे बेन मारी, पारणियामां रमे,

सूतां सुखडी न भावे बेन तने, भूखे नींदरडी न आवे !

नींदरडी तुं आडी ने छे भोळी, पहेली आवजे झोळी-

मारी बेननी सूई जा ! हा...लो

सूवे सूडा ने सूवे पंखी, अेक ना सूवे बेन राजवंशी !

हालरडुं वालु रे, बेन तारु पारणियुं घुमावुं !

पारणियुं परवाळुं, बेन तारुं धोडियुं घूघरियाळुं ![2]

अर्थः उपरोक्त पालना गीत पुत्री संबंधी है। बहन एक घड़ी भी कहीं टिकती नहीं। पालने में खेलती है। सोते हुए तुझे सुखडी (आटे गुड से बनी) नहीं भाती और भूखे पेट नींद भी न आती। निंदिया रानी तू टेढ़ी है, बहन सीधी है, तू जल्दी आना। बहना सोजा। सभी पक्षीगण सो गए पर मेरी राजकुमारी बहन नहीं सोती। तुझे (लोरी) पालना गाना बहुत पसंद है। मेरे पालना झुलाता हूँ बहन तेरा पालना झांझर सा खनकने वाला और अनमोल है। बहना सो जा।

बहन संबंधी

हालो करी गाऊं रे, बेन तने

गायनां दूधडां पाऊं ! हा.....लो

अेक तो घडी समे रे, बेन मारी,

पारणियामां रमे।

बेन मारी अरवारी बेन तारी,

माडी घडी न परवारी ! हा.....लो

झबलां नी फरते मोती, बेन तारी

माडी मुखडां जोती ! हा.....लो

काकाने काली बेन तुं,

मामा ने घणी वाली ! हा.....लो

1. गुजरातनां लोकगीतो - ले. मधुभाई पटेल, पृ. 33-35

काकाने केजे बेन तने
        चालतां कांकरियो खूंचे
मामाने केजे बेन तने,
        मोजडी नानी सिवडावे ! हा.....लो
काकाजी कस्तूरी, बेन तारा
        मामा हीरा झबेरी !
हीरा झवेरी केम जणाय ? बेन तारे
        हाथे पगे हीरला जडाय ! हा.....लो[1]

अर्थः भाई अपनी छोटी बहन को सुलाते हुए गाता है, बहन तुझे गाय का दूध पिलाऊँ। मेरी बहन एक घड़ी भर कहीं न टिकती। पालने में खेलती बहन मेरी बहुत टेढ़ी है और माता को घडी भर भी फुरसत नहीं। बहन के कपड़े में मोती जड़े है माँ उसका मुखडा देखती है। चाचा और मामा को बड़ी प्यारी है बहन। चाचा से कहना बहन कि चलते पाँव में कंकड चुभते है और मामा से कहना पैरों की मोजडी सिलवा दे छोटीसी। (काका) चाचा कस्तूरी (सुगंध व्यापारी) और मामा हीरे रत्न के व्यापारी अतः बहन तेरे हाथ पैर सभी कुछ हीरे से जड़ा होगा।

वाला मारा हाला हाला

        वाला मारा हाला हाला
        लागो छो वाला वाला
घोडीये सूरजदेवनां घोडा पारणीये परोढ
देवीओ दोरी ताणे करे प्रेम थी कालावाला। हाला...
        घूघरे छे घनश्याम खोये खोडलनो खमकार
        रमकडामां रमी रीजे लागो छो रुपाळा। हाला
नजरीये नारायण झांझर झमके जगन्नाथ
कानुडो कंदोरे मोहन मलके मोतिमाळा। हाला....
        घूघवाटे तारे दरियो गाजे आंखमां आखुं आभ
        मोहिनी मूरत माथे सोहे वांकडिया वाळ काला....हाला...... ।[2]

अर्थः मेरे प्यारे प्रभु सो जाओ। आप बडे प्यारे लगते हो। झालने के चारो और सूर्य देव के घोडे है सभी देवियाँ प्रेम से डोरी झुला रही हैं। पालने में घनश्याम सोए वह खोडलमां की कृपा भी है।

---

1. गुजरातनां लोकगीतो - ले. मधुभाई पटेल, पृ. 36
2. हालरडां - रचना : संत श्री डॉ. मॉ हरेश्वरी देवीजी, पृ. 8

जनेऊ संस्कार विषयक गीत

बडवो काने कडी

बडवो काने कडी, हाथे वींटी हीरे जडी रे।
बडवो जइ बेठो छे, दादाजीने खोळे चडी रे।
दादा जनोई देवरावो, अमने होंश घणी रे।
कुंवर खरचुं खरचुं लाख बे लाख रे।
होंश पुरावुं तम तणी रे।
बडवो बेठो छे, काकाजीने खोळे चडी रे।
काका कटंब मेळावो, अमने होंश घणी रे।
भत्रीजा खरचुं खरचुं लाख बे लाख रे।
होंश पुरावुं तम तणी रे।
बडवो जईने बेठो, मामाजी ने खोळे चडी रे।
मामा मोसाळां लई आवो, अमने होंश घणी रे।
भाणेज खरचुं खरचुं लाख बे लाख रे।
होंश पुरावुं तम तणी रे।
बडवो जई बेठो छे, वीराजीने खोळे चडी रे।
वीरा वाजींत्र वजडाव, अमने होंश घणी रे।
बंधव खरचुं खरचुं लाख बे लाख रे।
होंश पुरावुं तम तणी रे।[1]

संपादक - लाभलक्ष्मी द्वा. भट्ट
(प्रश्नोरा (जाति) गीत)

अर्थः बडवा (बटुक जिसे जनेऊ दी जा रही हो) वह बटुक के कानो में कडी (गोल बाली) व हाथों पर हीरा जटित अंगूठी है जो दादाजी की गोद में बैठा है। कहता है दादाजी मेरा जनेऊ संस्कार कीजिए मुझे बड़ा उत्साह है। हे राजकुमार तेरे लिए तो मैं लाख दो लाख खरचूँगा। तेरी महेच्छा अवश्य पूर्ण करुंगा। बडवा अपने चाचाजी की गोद में जा बैठा है। चाचाजी सारे कुटुंब को निमंत्रित कर इकट्ठा कीजिए। चाचा भी उसकी इच्छा पूर्ण करने को तैयार है। उसी तरह बटुक मामाजी की गोद में जा बैठता है वह उसी तरह मामाजी को जनेऊ पर जो किया जाता है उसकी मांग करता है। मामाजी भी भांजे की आशा पूर्ण करेंगे। उसके पश्चात् वह अपने भैया की गोद में जा बैठता है कहता है भैया बाजे गाजे बजवाओ मुझे बडा उत्साह है। भैया कहता है बटुक मैं भी लाख दो लाख खर्च कर तुम्हारी आशा अवश्य् पूर्ण करुँगा।

---

1. गुजरातनां लोकगीतो - सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 58

लीली टोपी रे ब्रह्मचारी वांके अंबोडे

जनेऊ देते वक्त का गीत

लीली टोपी रे ब्रह्मचारी वांके अंबोडे,
वांके अंबोडे ने चडो वरघोडे।
राजानी वाडीमां मस्तान बेठुं रे,
मस्ताने बेसीने वात विचारी रे,
रुठडा ब्रह्मचारी ने कोण मनावे रे।
रुठडा ब्रह्मचारीने दादाजी मनावे रे।
दादा मनावीने जनोयुं देवरावे रे,
तोय ब्रह्मचारीना मनमां न आवे रे।[1]

सं. लाभलक्ष्मी द्वा. भट्ट (प्रश्नोरा में गाए जाने वाले गीत)

अर्थः ब्रह्मचारी बटुक (जिसे जनेऊ दी जा रही है) ने अपने (बाल उत्तरे नहीं) तिरछे जूडे पर हरी टोपी पहन रखी है। ऐसे तुम घोड़े पर सवार हो जाओ। राजाजी के बागीचे में आनंदपूर्ण रुप से बैठ कर सोच विचार किया। रुठे हुए ब्रह्मचारी को कौन मनाएगा उसे तो उसके दादाजी मनाएँगे व उसका जनेऊ संस्कार करेंगे फिर भी ब्रह्मचारी बटुक का मन प्रसन्न नहीं है।

(५) विवाह संबंधी गीत

सर्वप्रथम गणेश बैठाने का गीत

गणेश पाट बेसाडीये, भलां नीपजे पकवान,
सगां ते समरथ तेडीये, जो पूज्या होय भगवान।
घूघरियाळो झांपलो सांकळियाळी छे वाडय,
वाडये वछेरां ऊछरे, जो पूज्या होय भगवान।
सोनला गोळी गोरस भरी, नेतरे वळगी नार,
नत्य नत्य गोरस घूमती, जो पूज्या होय भगवान।
सांकळियाळी जोटडी, बांधी होय घरने बार,
सांज सवारे मेलीये, जो पूज्या होय भगवान।
माताजी घी तावणे, मारी भाभी पीरसणे होय,
भेळो बेसारुं भतरीजने, जो पूज्या होय भगवान।[2]

संग्राहक : स्व. धीरजबहन
संपादकः बालाजी गो. देसाई (गीत संहिता 1-3 में से)

अर्थः विवाह जैसे शुभकार्य के प्रारंभ में गणेशजी की स्थापना सर्वप्रथम की जाती है। उन्हें आसन पर बैठाया जाता है। स्वादिष्ट पकवान बनते है। सगे संबंधियों को न्योता दिया जाता है जिन्होंने ईश्वर का पूजन

1. गुजरातनां लोकगीतो - सं. खोडीदास भा परमार, पृ. 59, 2

किया है। घर के दरवाजे का घुँघरुं बंधे है चारों ओर आंगन में बाड़ लगी है जहाँ बछडे पनप (बढ़) रहे हैं। सोने की बड़ी मटकी में छाछ भरी है जिसे डंडी ले घर की नारी बिलो रही है। घर के बाहर भैंस भी बँधी है सुबह शाम । माताजी घी परोस रही है, भाभी भोजन परोस रही है साथ में मैं अपने भतीजे को भी बैठाऊँ, यदि ईश्वर को पूजा है।

प्रभातिया

प्रभाते श्रीकृष्णजीने समरीये

प्रभाते श्रीकृष्णजीने समरीये रे
लेजो लेजो चार देवनां नाम
हर नामो नमो नारायण रे
माधवपुरमां माधवरायने समरीये रे
दुवारकामां रणछोड राय...हर०
डाकोरमां ठाकोरजीने समरीये रे
काशीमां विश्वेश्वर देव...हर०
परथम श्री रामचंद्र समरीये रे
बीजे ते लक्ष्मण वीर ..हर०
त्रीजे ते भरतने समरीये रे
चोथे ते शत्रुघन वीर...हर०
चार देवे जागीने शुं कर्युं रे
राख्यो मारा मांडवानो रंग...हर०
चार वीरे जागीने शुं कर्यु रे
राख्यो मारा मांडवडानो रंग...हर०[1]

अर्थः प्रातः काल प्रभात होते ही हम श्रीकृष्ण का स्मरण करें भजे। चारों देवताओ का नाम लें। माधवपुर में माधवराय का स्मरण करें द्वारका में रणछोडराय भजे डाकोर में ठाकोरजी के नाम से भजें और काशी में विश्वेश्वर देव से स्मरण करें। सर्वप्रथम श्रीरामजी का स्मरण कर भजें, दूजे भैया लक्ष्मणजी, तीसरे भरतजी व चौथे शत्रुघ्न भैयाका स्मरण करें। चारो देवो ने जाग कर मेरे ब्याह मंडपकी लाज रखी व चारो भाईयों ने रात भर जाग कर मेरे विवाह मंडप की लाज रखी।

श्री प्रभातने पोर देवकीजीये दातण

श्री प्रभातने पोर देवकीजीये दातण मांगियां
मांग्यां मांग्यां वार बे वार रुखमणीये शब्द न सांभळ्यो

1. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 16

हरिना हाथमां पान पचास, मेडीये थी श्रीकृष्ण ऊतर्या
मारा वडेरा बळभद्रवीर, गंगाने कांठे घर करो
त्यां कांई राखोने रुखमणी नार, माता वचन केम लोपियुं
स्वामी शो रे अमारो वांकशे रे, माटे अमने दूर करो
गोरी तमे मारा हैडानो हार, माता वचन केम लोपियुं,
स्वामी शियाळाना मास, मशरुनां गोदडां मोकलावजो
स्वामी ऊनाळाना मास, फूलना ते वीझणा मोकलावजो
स्वामी चोमासाना मास, चूनाबंध हवेली चणावजो
राखीश राखीश मास छ मास, छठ्ठ मासे ते तेडां मोकलीश।[1]

अर्थः बड़े ही उत्साही (विवाह संबंधी) आनंदी, मेहनती मेरे समधिजी आप और हमारी पुरानी पहचान है। इसी पहचान वश हम आज आपसी रिश्तेदार बने। चूडा तो सभी कोई लाते है पर जो घड़ी लाए वही समधि बड़ी बड़ी खाली बाते तो सब कोई बनाते है। गले की माला तो सभी लेकर आते है पर जो हार (सेट) लेकर आए वही तो मेरा समधि।

सूरज ऊग्या रे

सूरज ऊग्या रे केवडियानी फणसे के, व्हाणेलां भले वायां रे।
सुता जागो रे वसुदेवना नंद के, व्हाणेलां भले वायां रे।
तम जागे रे जागे सहु देव के, व्हाणेलां भले वायां रे।
लेजो लेजो रे पीतळना लोटा के, व्हाणेलां भले वायां रे।
दातण करजो रे तुळसी क्यारे के, व्हाणेलां भले वायां रे।
मुख लेजो रे पामरियुं ने छेडे के, व्हाणेलां भले वायां रे।
नाम लेजो रे श्रीरामनां नाम के, व्हाणेलां भले वायां रे।
सूरज ऊग्या रे केवडियानी फणसे के, व्हाणेलां भले वायां रे।
सुता जागो रे ना कंथ के, व्हाणेलां भले वायां रे।
तम जागे रे जागे सहु घेर के, व्हाणेलां भले वायां रे।
लेजो लेजो रे अघवाना लोटा के, व्हाणेलां भले वायां रे।
दातण करजो रे उकरडानी टोचे के, व्हाणेलां भले वायां रे।
मुख लूजो रे मसोताने छेडे के, व्हाणेलां भले वायां.रे।
नाम लेजो रे तमारा बापनु नाम के, व्हाणेलां भले वायां रे।

---

1. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ हसु याज्ञिक, पृ. 22
2. गुजरातनां लोकगीतो : सं खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 23

सगाई

आवोने वेवाई (समधी)

आवो ने वेवाई, बेसोने पटशाळ, कांई बेसोने पटशाळ,
जुओ अमारां ओरडां ओशरी रे।
जुओ अमारा कुंवरियाना रुप, कुंवरयिना रुप,
कुंवरयि घोडा खेलवे रे।
जुओ अमारा ववारुं ना रुप, ववारुं ना रुप,
ववारुं ओढ़े चूंदडी रे।
जुओ अमारा पाणियारीनां रुप, पाणियारीनां रुप,
पाणियारी पगे अंगुठिया रे।
जुओ अमारा रांधणियाना रुप, रांधणियाना ना रुप,
रांधनारी हाथे राखडीरे।
जुओ अमारा घोडानी घोडार्यु, घोडानी घोडार्यु
वछेरा ऊभा जव चरे रे।[1]

संपादक - स्व. धीरजबहन (गीत संहिता में से)

अर्थः समधि को निमंत्रण दिया जा रहा है कि समाधि जी आइए हमारे घर के मुख्य आंगन में पधारिए बैठिए। देखिए हमारे घर के कमरे व आँगन। हमारी राजकुमारी सी बिटिया का सौंदर्य देखें जो घोड़े से खेल रही है। हमारे घर की पुत्रवधुओं के सौंदर्य देखें जिन्होंने चुनकी सर पर ओढ़ रखी है। हमारी पनिहारीनो के रुप भी देखें जिन्होंने पाँवो में विछिया पहन रखी है। हमारी भोजन बनाने वाली स्त्रियाँ भी देखें जिनके हाथों पर रक्षा करने वाली राखी बँधी है। हमारे घोड़ो के घोड़ाहार देखें उनके बछडे खड़े खड़े ज्वार खा चर रहे हैं

नोतरुं (न्योता)

सोनानी सांजीने रुपाना मोर वाह्या रे, रुपाना मोर वाह्या रे,
उड रे पांखाळा भमरा नोतरे रे।
गाम न जाणुं ते नाम न जाणुं, नाम न जाणुं रे,
किया जमाई घेर नोतरे रे।
गाम छे ने नाम छे दीपशंग जमाई नाम छे...जमाई रे,
मधुबा बेनी घेर नोतरे रे।
आवशे बहेनी ने बेसशे मांडवे, बेसशे मांडवे रे,
रेखाना नाळियेरा शणगारशे रे।
आज साहेली मारी आंख फरुके, नेण फरुके रे,

1. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोडीदास भा परमार, पृ. 4

बांहोली मारी लोडण करे रे।

मांडवे साजन हसी हसी बोले, हसी हसी बोले रे,

तोरणे मोरला टहूका करे रे।

पढ़े ते पोपट न पढे ते सूडा, न पढे ते सूडा रे,

अवर जात पारेवडां रे।

नंदीअे बेसीने ईश्वर आवे, ईश्वर आवे रे,

सरसता पार्वतीजी तप करे रे।

घोडवेले बेसीने जमाई आवे, जमाई आवे रे,

सरसता रेखाबेन तप करे रे।[1]

संग्राहक – धीरजबहन (गीत संहिता में से)

अर्थः विवाह लिखे जाने के पश्चात् गीत। दूल्हा दूल्हन के घर संध्या समय गाया जाता है कि सुनहरी संध्या है व रुपहरे मोर सजाए है। ऐ पंख वाले भौंरे न्यौता देने जा। भौंरा कहता है मैं न तो गाँव का नाम जानता हूँ न ही जँवाई का किसके घर न्यौता दूँ। दीपशंग जमाई व मधु बहन के घरजा न्यौता दे बहन आएगी व मंडप में बैठेगी नारियल सजाएगी। सखी री आज मेरी आँख फड़क रही, बाँह भी फड़क कर अपशगुन कर रही है। मंडप में स्वजन हँस हँस कर गीत गा रहे है तोरण में सजे मोर मानो टहूक रहे हैं। नंदी पर बैठ ईश्वर महादेव शंकर आएँगे, इसी कारण कुँवारीका पार्वतीजी तप कर रही हैं। उसी प्रकार घोड़े बँधे हुए रथ पर सवार हो जँवाई पधारेंगे इस हेतु कुँवारी बहन रेखा तप कर रही है।

वेविशाळ (नारियल स्वीकारने का गीत)

क्यांना ने आव्या

क्यांना ने आव्या हो झीणा मारु बीडला हो राज,

जी हो, क्यांना ने आवेलां नाळियेर, वारी जाऊँ...माणाराज।

केम करी लेशो हो, झीणा मारु, बीडलां हो राज,

जी हो केम करी लेशो नाळियेर, वारी जाऊँ...माणाराज।

घोघागढ़ ना आव्या हो सुंदर बीडलां हो राज,

जी हो बादशाई आवेला नाळियेर, वारी जाऊँ...माणाराज।

हसी हसी लेशुं, सुंदर गोरी, बीडलां हो राज,

जी हो लळी लळी लेशुं नाळियेर, वारी जाऊँ...माणाराज।

शे शेने अवगुणे, हो झीणा मारुं परणशो हो राज,

जी हो कहेजो अमारोलो वांक, वारी जाऊँ...माणाराज।

तमारा ने पोंचा, हो सुंदर गोरी शामळा हो राज,

जी हो, गोराने पोंचानी छे कांतु, वारी जाऊँ...माणाराज।

---

1. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोडीदास भा परमार, पृ. 5

परणी पधार्या, हो झीणा मारु ओरडे हो राज,

जी हो करजो साहेली वखाण, वारी जाऊँ...माणाराज।

पान सरीखी गोरी पातळी हो राज,

जी हो लवींग सरीखो छे लोक, वारी जाऊँ...माणाराज।

दूध सरीखी गोरी ऊजळी हो राज,

जी हो, दाडमकळी शा दांत, वारी जाऊँ...माणाराज।[1]

संग्राहक - स्व. धीरजबहन (गीत संहिता में से)

अर्थः समधिजीसे संबोधित कर सगाई से पहले नारियल (श्रीफळ) स्वीकारते वक्त गाया गानेवाला गीत जिसमें कहा गया है कि आप कहाँ से पधारे हैं आपके लिए मैं नारियल सुपारी व पान का बीडा तैयार करते है हम तो आप पर वारी जाते हैं। आप कैसे बीडा लोगे कैसे नारियल स्वीकार करोगे। यह सुन्दर बीडा घोघागढ़ से आए है, नारियल बादशाही है हम आप पर बलिहारी जाते हैं। हम तो हँस हँस कर सुंदरगोरी, बीड़ा स्वीकार करेंगे और झुक-झुककर सम्मान सहित नारियल स्वीकार करेंगे। आपके लिए गोरी हम पांचे उंगली व हथ पर पहने वाला गहनो लाए है जिसकी आपको सर्वाधिक चाह है। दूल्हा दुल्हन ब्याह कर उठे सखियाँ उनके बखान करना। सखियाँ कहती है गोरी तो पान जैसी पतली नाजुक है और लौंग सरीखी कमर है। गोरी की कमर लचीली है। वह दूध सी उजली है दाडिम की कली सी सुंदर दंत पंक्ति है हम तो उस पर बलिहारी जाती है।

होंशीला वेवाई खंतीला वेवाई

होंशीला वेवाई मारा खंतीला वेवाई

तमारे ने अमारे वेवाई आगळनी ओळखाण

अरे ओळखाणे आपणे सगपण कीधा

चूडलो, तो वेवाई सौ कोई लावे

घडियाळ लावे तो वेवाई

वडेरी वशेकाई मारा होंशीला वेवाई। होंशीला०

माळा तो वेवाई सौ कोई लावे

सेट लावे तो वेवाई

वडेरी.................. खंतीला वेवाई ।[2]

कंकोतरी (पत्रिका – विवाह)

कंकु छांटी कंकोतरी मोकलो

कंकु छांटी कंकोतरी मोकलो

अेमां लखजो जयश्रीबेननां नाम

---

1. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 6
2. सौरभ लग्नगीत संचय - सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 26

लगन आव्या ढूकडां

बेनना दादा आव्याने माता आवशे

बेननां मोटांबानो हरख न माय. लगन०

बेनना काका आव्या ने काकी आवशे

बेननां फैबानो हरख न माय...लगन०

बेनना मामा आव्याने मामी आवशे

बेननां मासीबानो हरख न माय...लगन०

बेनना वीरा आव्या रे भाभी आवशे

बेननी बेनीनो हरख न माय...लगन०

लगन आव्या ढूकडां।[1]

अर्थः कुंकुम का छिडकाव कर निमंत्रण पत्रिका भेजो उसमे लिखिए जयश्री बहन का नाम क्योंकि ब्याह समय नजदीक आ गया है। बहन के दादाजी आए दादी आई बहन की बड़ी माँ के हर्ष का पार नहीं है। बहन के चाचा चाची आए उस पर बुआजी के हर्ष का लो पार नहीं। बहन के मामा मामी आए उस पर बहन की मौसी के हर्ष का तो पार नहीं। बहन के भैया और भाभी आए इस पर बहन के बड़ी बहन के हर्ष का तो पार नही क्योंकि विवाह समय नजदीक आ पहुँचा है।

गुलाबवाडी चौटा वच्चे रोपी रे

गुलाबवाडी चौटा वच्चे रोपी रे

गुलाबवाडी जोवा मळिया लोक रे

चारे कंकोतरी चारे देश मोकलावो रे

पहेली कंकोतरी जामनगर शहेर मोकलावो रे

आशीषकुमार जमाई तमे वेगे वहेला आवो रे

साथे अमारां अवनी बेनने लावो रे।

बीजी कंकोतरी मुंबई शहेर मकलावो रे

हिमांशुकुमार जमाई तमे वेगे वहेला आवो रे

साथे अमारां वर्षाबेनने लावो रे।

त्रीजी कंकोतरी राजकोट शहेर मोकलावो रे,

कृष्णकांत कुमार जमाई तमे वेगे वहेला आवो रे

साथे अमारा रीटाबेनने लावो रे।

चोथी कंकोतरी अमदावाद शहेर मोकलावो रे

जीग्नेशकुमार जमाई तमे वेगे वहेला आवो रे,

साथे अमारा जयश्रीबेनने लावो रे।[2]

1-2. सौरभ लग्नगीत संचय - स. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 27-28

अर्थ: गुलाबों से सजी बगिया आज शुभ अवसर पर आँगन के बीचोबीच सजाई गई है (बनाई) जिसे देखने के लिए अनेक लोग आ रहे हैं। चारों निमंत्रण पत्रिका चारों देश (चारो और) भेजों। पहली पत्रिका जामनगर शहर भेजो जँवाई आशिषकुमार आप त्वरित पधारें, दूसरी पत्रिका बंबई शहर भिजवाओ, जँवाई हिमांशुकुमार आप त्वरित हमारे यहाँ पधारें, तीसरी पत्रिका राजकोट शहर भिजवाओ कृष्णकांतकुमार जँवाई आप त्वरित पधारे साथ हमारी रीटाबहन को भी लाएँ। चौथी निमंत्रण पत्रिका अहमदाबाद शहर भिजवाओ, जीग्नेशकुमार जँवाई आप त्वरित गति से हमारे यहाँ पधारें साथ हमारी जयश्रीबहन को भी अवश्य लाएँ।

पडो (शगुन)

लगन बाजोठिया, हीरले जडिया

लगन बाजोठिया, हीरले जडिया
कुंवारी कन्याये संदेशो मोकलियो
चोराशीना रायवर, वहेलेरा आवो
हुं ते केम आवुं?
सकळ (साहुफळ) नी धेडी (दीकरी)
आडा छे दरिया ने समदर भरियो
समदर वचे दादा वहाण पुरावे
वहाणे बेसीने रायवर वहेलेरा आवो।[1]

अर्थ: विवाह के बाजठ (ब्याह के समय बैठने का लकड़ी का पाट आसन) हीरे से जडीत है। कुंवारी कन्याने अपने दूल्हे को जो चौरासी जन्मो का साथी है उसे संदेश भेजा कि जल्दी से पधारे। दूल्हा कहता है कि साहूकार की बेटी मैं किस प्रकार आऊं मार्ग में आडे बडे समुद्र है। कन्या कहती है समुद्र के बीच दादाजी नाव लगाएँगे आप उसी नाव में सवार हो दूल्हे राजा जल्दी से पधारे।

पाँच पडे रे में मोतीडे वधाव्या रे

पाँच पडे रे में मोतीडे वधाव्या रे
कंई सुंदर मोती शोभे रे आपणां राजमां
पहेले पडे रे मे जोषीडा वधाव्या रे
कंई जोषीडा वधाव्या रे
कंई लगनियां लई आवो रे आपणां राज मां।
बीजे पडे रे मणियारा वधाव्या रे कंई (2)
चूडला लई घेर आवो रे आपणा राज मां।
त्रीजे पडे रे में माळिडा वधाव्या रे कंई (2)
गजराना गोटा लई घेर आवो रे आपणां राजमां।
चोथे पडे रे में सोनीडा वधाव्या रे कंई (2)

1. सौरभ लग्नगीत संचय - सं डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 32

हारला लई घेर आवो रे आपणां राजमां।
पांचमे पडे रे में तेजसभाई वधाव्या रे कंई (2)
लाडडी लई घेर आवो रे आपणा राजमां।
कंई जीझा वहु लई आवो रे आपणां राज मां।[1]

अर्थः पडा अर्थात् गुजरात में विवाह के वक्त मिश्री आदि वस्तु को एकत्र कर पुड़िया में रखा जाता है जिसे शुभ शगुन माना जाता है। स्त्रियॉ गाती है पाँच पडो का मैंने मोतियों से स्वागत किया। अपने राज में कितने सुंदर मोती सुशोभित हो रहे है। पहले शगुन (पडा) पर मैंने जोशी (पंडित) का स्वागत किया जो विवाह लिखने मुहुर्त देखना इत्यादि के लिए आए है। दूजे शगुन पर मैंने मणियारे का स्वागत किया जो चूडा आदि ले घर पधारे है। तीसरे शगुन पर मैंने माली का नवाजा जो फूलों के सुंदर गजरे गोटे (गेंदे) ले घर पधारे। चौथे शगुन पर मैंने सुनार का स्वागत किया जो सोने के हार ले घर पधारो और पांचवे शगुन पर मैंने तेजसभाई का स्वागत किया जो दुल्हन ले घर पधारे हैं, जीम्रा बहू को ले आए हैं।

मंडप

ऊंचो मांडव मघतेलो रोपावो रे,
लीमजी नवला साजन आवशे।
मांडवलामां बाजठडा मेलावो रे - भीमजी०
बाजठडा पर सोगटडां मेलावो रे - भीमजी०
सोगटां रमशे जीवणभाई देसाई रे - भीमजी०
ऊंचो मांडव छोगटियाळो,
नवले फूलडे छायो रे।
मारे मांडवे सौ कोई आवे,
अेक नहि आवे मामा रे।
जोबन मामा लोभ न कीजे,
अवसरे आवी रहिये रे।
अवसरिया तो काल वही जाशे,
ने भवना मीणलां रेशे रे।[2]

अर्थः विवाह में कुछ ही समय शेष है अतः ऊँचे फूलों से सुगंधित मंडप लगवाओ, नए स्वजन आएँगे। मंडप में बाजठ (आजन) लगवाओ उस पर शतरंज (सोगटडां) मोहरे बिछवाओ जिसे जीवणभाई देसाई खेलेंगे। ऊंचा मंडप सुगंधित फूलों व कलगी से सुसज्जित है इस अवसर पर सभी पधारेंगे। शुभ अवसर कल तक सब भूला देंगे परंतु मंडप में यदि मामा नहीं आएँगे तो जन्मभर ताने सुनने पड़ेंगे अतः मामा आप ब्याह के अवसर पर जल्दी पधारें।

---

1. सौरभ लग्नगीत संचय - सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 32
2. गुजरातनां लोकगीतो : ले मधुभाई पटेल, पृ. 69

द्राक्षनो छायो वीरनो मांडवो

लीलवा द्राक्षनो छायो वीर नो मांडवो।
बाबुभाई दादाने पूछे
आपणे आंगणिये आनंद शानो। लीलवा०
दीकरा तुजने परणावुं, जाडी जान जोडावुं,
आपणे आंगणिये आनंद अेनो लीलवा०
लीलवा द्राक्षनो छायो वीरनो मांडवो।[1]

संपादक – श्री जोरावरसिंहजी जादव श्री सज्ञनकुमारी जादव

मांडवे मीठी नागरवेल्य

ऊंचो ऊंचो दादाजीनो मांडवो रे।
तेथी ऊंचेरा पडहर बे चार
दादाजीनो मांडवो रे।
मांडवे लीली दांडी ने राती थांभली,
मांडवे थई छे मीठी नागरवेल्य,
दादाजीनो मांडवो रे।
मांडवे बेसे राजा ने बेसे राजिया,
मांडवे बेसे जादव बे चार,
दादाजीनो मांडवो रे।
नीचो नीचो वेवायोनो मांडवो रे,
तेथी नीचेरा पडहर बे चार,
वेवायोनो मांडवो रे।
मांडवे सूकी दांडी ने थोर नी थांभली रे,
मांडवे थई छे कडवी कुकडवेल्य,
वेवायोनो मांडवो रे।
मांडवे बेसे गोला ने बेसे चामठां रे,
मांडवे बेसे बचुभाई कजात के,
वेवायोनो मांडवो रे।[2]

सपादक – श्री जोरावरसिंहजी डी. जादव श्री सज्ञनकुमारी जादव

अर्थ: विवाह मंडप में आमने सामने गाया जाने वाला ताने देता हुं आ गीत है। स्त्रियां गाती हैं हमारे दादाजी का मंडप तो कितना ऊँचा है और उससे भी ऊँचा उनका आँगन है। मंडप में हरी भरी डंडियाँ व लाल रंग केस्तंभ है जिस पर मधुर हरी भरी बेल लगी है। ऐसे मंडप में राजा, महाराजा बादशाही ठाठ से बैठे स्वजन

1-2. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 17,16

है जब कि इसके विपरित समधि का मंडप कितना नीचा है और उससे भी नीचा उनका आँगन है। उनके मंडप में सूखी डंडियाँ व कॉटे दार स्तंभ है जिस पर गंदे पानी में उगने वाली गोल मुड़े हुए पत्तो की बेल है। मंडप में उनके दास जन और कुम्हार की श्रेणी के लोग बैठे है और निम्न जाति के बचुभाई भी बैठे है। ऐसा समधि का मंडप है।

मींढळ(कलाई पर बांधने की रस्म)

वनरा वनमां मींढोळ झांझ
मींढोळ परणे ने झाडवां बाळकुंवारां
हेरे तमने पूछुं वीर रे मुकेशभाई
आवडा ते लाड तमने कोणे लडाव्यां
दादा मनुभाईने मोटाबा चंपाबेन
आवडां ते लाड अमने ऐमणे लडाव्यां
दादा नलिनभाई ने माता उर्मिलाबेन
आवडां ते लाड अमने ऐमणे लडाव्यां।[1]

में तो तारां नाळियेर शणगार्यां

में तो तारां नाळियेर शणगार्यां
में हरखे ओढी चूंदडी रे
आणीकोर जोजो पेली कोर जोजो
लळी लळी सामुं जो जो रे
लाडु देजे लाडु देजे लाडकवाया वीर ने
खाजां देजे खाजां देजे खंतीला वीर ने -आणीकोर
पापड देजे पापड देजे पातळा
रुपुं देजे रुपुं देजे रुपाळाने आणीकोर
फोफळ देजे फोफळ देजे फळवंता रे
सोनुं देजे सोनुं देजे सोनीडा रे - आणीकोर
जीरुं देजे जीरुं देजे जीणाबोला रे
मीठुं देजे मीठुं देजे मीठा बोला रे - आणीकोर
गोळ देजे गोळ देजे गुणवंता रे
नाणुं देजे नाणुं देजे नाणांवटी रे
आलीकोर जोजो पेलीकोर जोजो।[2]

1-2. सौरभ लग्नगीत संचय : सं डॉ हसु याज्ञिक, पृ. 45-46

पीठी (हल्दी)

पीठी चोळे पितराणी

पीठी चोळे पीठी चोळे पितराणी, हाथ पग चोळे छे वरनी भाभी,
मुखडां ते निहाळे रे वर नी माता, पीठी चडशे मारा जीयावरने
ऊतरती चडशे रे पेली छोडीने, पाका तेल चडशे रे मारा जीयावरने
कायां तेल चडशे रे पेली छोडीने, पडती केरी खाशे मारा जीयावर।
गोटलां तो चूसशे रे पेली छोडी रे पीठी चोळे।[1]

अर्थः हल्दी की रस्म में हल्दी लगाई जा रही है। पितवर्ण की पीली हल्दी लगाई रही है। हाथ पाँव में दूल्हे की भाभी हल्दी मल रही है। दूल्हे की माता उसका मुख निहार रही है। ये हल्दी तो दूल्हे को चढेगी। फिर उतरकर उस लडकी (दुल्हन) को चढ़ेगी । सिर पर पक्का तेल दूल्हे के चढ़ेगा कच्चा तेल उस लड़की को चढ़ेगा। आम्रपेड से गिरने वाली आम मेरा राजा दूल्हा खाएगा, गुटंली चूसेगीं वह लड़की अर्थात् दुल्हन।

घाणी पील्ये घाणी रे

घाणी पील्ये घाणी रे घोघाना घांची
        महीं पील्ये अमरो ने वळी डमरो।
ई तेल मारे बेनी बा मुख सोहीये
ढगरा ऊपर ढोलडियां वगडावो,
        बेनीबानी फईबा ने तेडावो।
जीवीफई तमे ओरेरां पधारो
        बेनी बा ने पाटेथी ऊतरावो।
पाट उतरामण रे बेनने टोटी
        तोय बेनने आशा छे कंई मोटी।
रुपाळी फईने कूमकियाळी साडी,
        तोय फईनी अरधी फांद ऊघाडी।
बेनीबनो फूवा ने तेडावो,
        मोटा फूवा ओरेरा पधारो,
बेनीबाने पाटेथी ऊतरावो, पाट ऊतरामण रे बेनना चूडी।
तोय बेनीनी आश रही अधूरी।
        फूवाने डगलो ने वळी डोटी,
तोय फूवा वाळे रे लंगोटी।[2]

कंठस्थ : दूधीबाई परमार (वाळुकड)

---

1. सौरभ लग्नगीत संचय : रा. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 48
2. गुजरातनां लोकगीतो : रा खोडीदास भा परमार, पृ. 20, 21

सुंवाळी (विवाह से पहले घर में गेहूँ की बनाई जाने वाली कडक पतली पूडी की रस्म) उस समय गाया जानेवाला गीत–

वेवाई नी लीली शी वाडी

वेवाईनी लीली शी वाडी, वाडीमां हिम पड्युं
वेवाईने शानी पडी खोट, छाना कागळ मोकले रे,
वेवाईने घऊंनी पडी खोट, छाना कागळ मोकले रे,
अेवा अमारे महेशकुमार होंशीला के घऊं नी गुण मोकले रे।[1]

अर्थः समधि की हरी भरी बगिया में हिम गिरापड़ा। पता नहीं समधि को किस चीज की कमी पड़ी कि छुपछुप पत्र भेज रहे हैं। समधि को गेहूँ की कमी पड़ी अतः छिपकर पत्र भेज रहे हैं परंतु हमारे महेशकुमार समधि कितने उत्साही है जो गेहूँ भिजवा रहे है।

गीत : काचनी रकाबी वीरा भांगी रे जवानी
काचनी रकाबी वीरा भांगी रे जवानी
पितानी माया वीरो छोडी देवानो
ससरानी माया वीरो झडपी लेवानो
मातानी माया वीरो छोडी रे देवानो
सासुनी माया वीरो झडपी लेवानो
वीरानी माया वीरो छोडी रे देवानो
साळानी माया वीरो झडपी लेवानो
बेनीनी माया वीरो छोडी रे देवानो
साळीनी माया वीरो झडपी लेवानो।[2]

अर्थः जैसे काँच की प्लेट (चाय पीने वाली) टूट जाती है वैसे ही भैया (दूल्हा) पिता की माया ममता छोड देगा विवाह के बाद। और ससुर की माया, ममता लगा लेगा। सासुजी से माया ममता लगा लेगा। अपने सगे भाई से स्नेह तोड़, अपने साले से स्नेह, माया लगा लेगा। बहन का प्यार छोड साली से माया ममता लगा बैठेगा।

वडी (बड़ियां (मूंग की दाल की) बनाने रस्म वक्त गाए जाने वाले गीत

लीली पीळी पांखनो भमरलो रे

लीली पीळी पांखनो भमरलो रे, भोमियो देश परदेश
भोमियो देश परदेश, जा जे भमरा नोतरे रे
पहेलुं ते नोतरुं अमदावाद गाम,जमाई जीग्नेशकुमार ने घेर
राते चुडे जीग्नाबेन रे, बेनी मोरी वरधे वधाव
महियर पगरण आदर्यो रे, हुं केम आवुं अेकली रे

1-2. सौरभ लग्नगीत संचयः स डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 49

ईश्वर सरखा भरथार, ईश्वर चलए घोडलां रे
बाने माफाली वेल, गाफा आवे मलपता रे
मेजा ढळकती ढेल, चंपावरणी रजे भराय रे।[1]

अर्थ: हरे पीले पंखो वाले भौंरे तू देश परदेश को जानने वाला है अतः जँवाई जीग्रेशकुमार के घर दे आ। मेरी जीग्रा बहन से लाल चुडा पहन लू जल्दी से मायके में पधारो। जीग्रा बहन कहती है मैं अकेली कैसे आऊँ। मेरे ईश्वर के समान जीवनसाथी (पति) है, ईश्वर घोड़े पर सवार रहते हैं।

गागर ऊपर बेठो लीलो हंस रे

गागर ऊपर बेठो लीलो हंस रे, आ हंस कोणे उडाडयो रे
ओ हंसराजा केम करी जाशो परदेश रे, आ केम करी लाडडी लावशो रे
पांखे ऊडी जाशुं परदेश रे चांचे दरियो डोळसुं रे
भाई केम करी जाशो परदेश रे आ केम करी लाडडी लावशोरे
रुपियानी थेलीये जाशुं परदेश रे, आ हरखे लाडडी लावशुं रे।[2]

अर्थ: पानी की गगरी पर हंस बैठा। अरे इस हंस को किसने उडाया? हंसराजा आप किस तरह परदेश जा दुल्हन लाओगे? हंस कहता है पंखो से उड़ परदेस जाएँगे चोंच से दरिया पार करेंगे। भाई आप कैसे परदेस जा दुल्हन लाओगे? कहता है रुपयों की थेली से परदेस जा हर्षित हो दुल्हन को लिवा लाएँगे।

ग्रहशांति (रस्म)

त्रांबाकूंडी ते नगर सोहामणी
त्रांबाकूडी ते नगर सोहामणी
मांहे भरियेल गवरीना घीय
साहेलीनो आंबो मोरियो।
मारे किया भाईनां वाजित्र वागियां
पेला वेवाईनां पडियां निशान। साहेली
मारे किया भाईने आंगण आंबलो
मारे किया भाईने आवे शीळी छांय। साहेली
मारे किया भाईने मेडीये दीवा बळे
पेला वेवाईने अंधारा घोर। साहेली
मोर कइ वहुने चीर ऊपर चूंदडी
कई वहुने रे मोती जड्यो मोड। साहेली
मारे कई वहुने कांबी ऊपर कडला
कई वहुने घूघरीये घमकार। साहेली[3]

1-2-3. सौरभ लग्नगीत संचय · सं डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 50,51,56

पस (रस्म) से संबंधित लोकगीत

माणेक मोतीनो पस रे भरावो

माणेक मोतीनो पस रे भरावो पस रे भरावो
    माताना मन मोह्या
माता आशाबेन आनी पेर जो
ओली पेरलेशे लळी लळी मोढा सामु जोशे
माणेक मोतीनो.. .... भरावो०
    दादाना मन मोह्या
दादा जेठालाल आनी पेर जोशे
ओली पेर जोशे लळी लळी मोढा साम जोशे भरावो।
    माणेक... .... काकाना मन मोह्या
काका कीर्तिकुमार आनी पेर जोशे
ओली पेर जोशे लळी लळी मोढा सामु जोशे
माणेक मोतीना परा रे भरावो पस रे भरावो।[1]

अर्थः विवाह के समय निभाई जाने वाली रस्म। मानिक मोतियो का पस भराओ (स्त्रियाँ दुल्हनकी बीच में बैठा उसके आजुबाजु खड़े हो अपना आँचल फैलाकर माँगती है। माता का मन प्रसन्न हो उठा है। माता आशा बहन इस तरफ उस तरफ देखेंगी झुकझुक मुख की ओर देखेंगी। मानिक मोती का पस झोली में डालो दादाजी का मन प्रसन्न है। दादा जेठालाल इस तरफ उस तरफ देखेंगे झुक झुक दुल्हन का मुखडा देखेंगे। मानिक के पस भराओ चाचा का मन प्रसन्न है। चाचा कीर्तिकुमार इस तरफ उस तरफ देखेंगे झुकझुक मुखडा देखेंगे।

खोळो पूजे रे (गोद पूजने की रस्म संबंधी गीत)

खोला पूजो खोळा पूजे खोळा रे, जेम खोळा पूजतां अमे लेशुं।
लाडु आपे लाडु आपे लाडकवाया, जेम लाडु आपता अमे लेशुं।
सोपारी आपे सोपारी आपे सुंवाळा, जेम सोपारी आपता अमे लेशुं।
पापड आपे पापड आपे पडपडिया, जेम पापड आपता अमे लेशुं।
रु आपे रु आपे रुपाळां,जेम रु आपता अमे लेशुं।
गोळ आपे गोळ आपे गळिया गोळ,जेम गोळ आपता अमे लेशुं।[2]

अर्थः गोद की पूजा करते वक्त स्त्रियॉ गाती है कि गोद पूजते हुए हम तो लेंगी। लड्डु देंगी तो लड्डु लेंगी। सुपारी, पापड़, रुई तथा मीठा गुड़ हम गोद की पूजा करते हुए लेंगी।

1-2. सौरभ लग्नगीत संचय : सं डॉ हसु याज्ञिक, पृ. 56,57

सांझी

आसोपालवनां में तो तोरण बंधाव्यां

आसोपालवना में तो तोरण बंधाव्यां
लीलुडो रंग ऊभराय रे, आज मारे अवसर
आनंदनो आंगणे वधामणां।
केसर घोळीने में तो कंकु निपजाव्यां
बेनने चांदलो कराय रे आज मारे०
शाळ खांडीने में तो चोखा निपजाव्यां
बेनने चोखला चोडाय रे आज मारे०
त्रोफा तोडीने में तो श्रीफळ निजपाव्यां
बेनने पस भराव्या रे आज मारे०
तेडां करीने में तो सैयरो तेडावी
बेननां मंगळ गवाय रे। आज०[1]

अर्थः संध्या समय दुल्हा दुल्हन के घर गाया जाने वाला गीत। स्त्रियाँ गाती है मैं ने तो अशोक वृक्ष (आसोपालव) के पत्तों से तोरण बांधे है। हरे पत्तो से चारो ओर हर संग उभर रहा है आज मेरे आँगन में आनंद का अवसर है। केसर घोल कर कुंकुम तैयार किया जिससे दुल्हन को टीका लगाया जा रहा है। शाळ को फूटकर चावल बनवाए ये चावल बहन के टीके पर लगाए जा रहे हैं। त्रोफा तोड़कर मैंने श्रीफल (नारियल) बनाए जिससे बहन के पस भरने की रस्म अदा की गई। न्यौता दे दे मैंने सखियों को बुलाया जो बटन के विवाह में मंगल गीत गा रही है।

सांझीगीत – गोखेथी बेठी राणी राजवण बोले

गोखे थी बेठी राणी राजवण बोले
मने मारगडो देखाडो राज बंधला
हुं तो मारगडा नी भूली राज बंधला
अलबेलडा रे मारे जयश्री बेनना दादा
जाणे भरी सभाना राजा राज बंधला – हुं तो०
अलबेलडा रे मारे जयश्री बेनना काका
जाणे अतलस केरा ताका राज बंधला – हुं तो०
अलबेलडा रे मारे जयश्री बेनना मामा
जाणे लीलुडा वनना आंबा राज बंधला – हुं तो०
अलबेलडा रे मारे जयश्री बेनना वीरा

1. सौरभ लग्नगीत संचय : सं डॉ हसु याज्ञिक, पृ. 62

जाणे हार केरा हीरा राज बंधला

अलबेलडा रे मारे जयश्री बेनना माडी

जाणे फलडियानी वाडी राज बंधला

अलबेलडा रे मारे जयश्री बेनना बेनी

जाणे वाडी केरी वेली राज बंधला

मारगडानी भूली राज बंधला...मने ।[1]

अर्थ: राजमहल की अटारी में बैठी रानी राजवण कहती है मुझे मार्ग दिखाओ राज मैंतो मार्ग भूल गई हूँ। अलबेले ऐसे मेने जयश्री बहन के दादाजी है जैसे भरी सभा में बैठे हुए राजा हो। मेरे जयश्री बहन के चाचा ऐसे अनोखे है जैसे आस्तर में लगने वाले थान हो। जयश्री बहन के मामा तो ऐसे अनोखे है जैसे हरेभरे वन के आम्रवृक्ष है। मैं तो मार्ग भूल गई हूँ राह दिखाओ। जयश्री बहन के वीर (भैया) तो ऐसे अलबेले है जैसे हार में जड़ने वाला हीरा हो। ऐसे ही जयश्री बहन की माता अनोखी है जैसे वाडी (बगिया) की बेल हो। मैं तो राजन मार्ग भूल गई हूँ राह दिखाओ।

चाक बधावती वखतनां गीत – (रस्म)

ओझो ने ओझी धसमसे

ओझो ने ओझी धसमसे,

ओझा अकोटा घडाव।

अकोटना बेसे दोकडा रे,

काने कोडियां जडाव,

ओझो ने ओझी धसमसे,

ओझा कांबियुं घडाव,

कांबियुनां बेसे दोकडा रे,

पगे कांठा जडाव रे

ओझो ने ओझी धसमसे,

ओझा चूडलो कराव,

चूडलानां बेसे दोकडा,

मने नथियां सराव...ओझो ।[2]

सं. – ज्योत्सना शुक्ल, कमळा भट्ट

ओझो ओझो रे–

ओझो ओझो रे ओझी तणो, ओझो । वहुनो वीरो रे,

ओझो आवे रे, घी तावणी।

1. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 63
2. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोडीदास. भा. परमार, पृ. 17-18

लापसी ते रांधशुं फरते चाट्वे,
जमशे...वहुनो वीरो रे...ओझो लावे रे, घी तावणी।
कांठा कोरु रे करडी गयो।
बेखुं मेल्युं मैयरनी वाट रे...ओझो लावे रे, घी तावणी।[1]

सं. ज्योत्सना शुकल, कमळा भट्ट (लग्नगीतो में से)

उकरडी नोतरतां ना गीत (रस्म)

शिहोर गामने गोंदरे

शिहोर गामने गोंदरे वंको डोलरियो
ऊग्या लीलुडो वांसरे वंको डोलरियो
कोण रे चडशे वांसडे? वंको डोलरियो
कोण रे वगाडे शरणाई रे? वंको डोलरियो
कोण ते थै थै नाचशे, वंको डोलरियो
कोण वगाडे ढोल, वंको डोलरियो
जमाई चडशे वांसडे, वंको डोलरियो
जमाई वगाडे शरणाई, वंको डोलरियो
जमाई थै थै नाचशे, वंको डोलरियो
जमाई वगाडशे ढोल, वंको डोलरियो
ऊतरो वेवाईना छोकरां, वंको डोलरियो
लाजे गामना लोक रे, वंको डोलरियो
लाजे राणा ने लाजे राजिया, वंको डोलरियो
लाजे भाई देशोत, वंको डोलरियो ।[2]

अर्थ: शिहोर गॉव के बाहर सीमाओ पर वंको डोलरियो वहाँ हरे बाँस उगे है, उसपर कौन चढ़ेगा? कौन शहनाई बजाएगा? कौन ता ता थैया नृत्य करेगा? कौन ढोल बजाएगा? स्त्रियाँ गाती है जँवाई बॉस पर चढ़ेंगे। शहनाई बजाएँगे? थै थै नृत्य करेंगे और ढोल बजाएँगे। अरे समधि के लडको नीचे उतरो गाँव के लोग शर्मा रहे है, राजपुरुष तथा गाँव के मुखिया भी शरमा रहे है।

साग सीसमनो ढोलियो

साग सीसमनो ढोलियो रे
अमरा डमरानां वाए। मारा वहाला०
ढोलिये बटुकभाई पोढशे रे
हीना वहु ढोळे छे वाय। मारा वहाला०

1-2. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोड़ीदास. भा. परमार, पृ 18,19

वाय ढोळंता पूछियुं रे
        स्वामी अमने चूंदडियुंना कोड। मारा वहाला०
केवा ते रंगनी रंगावशुं रे?
        केवी पडावशुं भात? मारा वहाला०
कसुंबल रंगनी रंगावशुं रे
        झीणी झीणी चोखलियाळी भात। मारा वहाला०
ओढी पहेरीने पाणी सांचर्या रे
        जोई रह्या नगरीना लोक....मारा वहाला०[2]

अर्थः साग सीसम की लकड़ी का पलंग बना है। इस पलंग पर बटुक भाई सोएँगे और हीना बहू पंखा झलेगी। पंखा झलते हुए हीना बहू ने पूछा स्वामी मुझे चुनकी की इच्छा है किस रंग की रंगवाएंगे और कैसी कारीगरी होगी? स्वामीने कहा लाल रंग की रंगवाएँगे और झीने चावलों सी महीन कारिगरी होगी जिसे ओढ़ हीना बहू पानी भरने गई और नगर के लोग देखते ही रह गए।

सोनानो स्तंभ जडा बंध मोती

सोनानो स्थंभ जडाबंध मोती
        आज मारो वीरो शेनो छे होंशी
आज मारो वीरो लग्ननो होंशी, दादा जेठाभाई लग्न जोवरावो
आज मारो वीरो कुटुंबनो होंशी, काका कीर्तिभाई कुटुंब तेडावो
आज वीरो गीतोनो होंशी, बेनी रीटाबेन गीतो गवरावो।
आज मारो वीरो वांझिंत्रोनो होंशी, तेजसभाई वाझिंत्रो वगडावो।
आज मारो वीरो फूलेकानो होंशी, फैबा रमाबेन फूलेका देवरावो।
आज मारो वीरो मामेरानो होंशी, मामा वसंतभाई मामेरा लई आवो।
आज मारो वीरो सेंटनो होंशी, भाईबंध हेमंतभाई सेंट छंटावो।[2]

अर्थः आज मेरा भैया किसे लिए इतना उत्साही है? भैया आज शादी के लिए उत्साहित है दादाजी जेठाभाई विवाह मुहुर्त निकलवाओ। भैया कुटुंब के लिए उत्साहित है अतः चाचा कीर्तिभाई सारे रिश्तेदारों को निमंत्रित कर बुलवाओ। आज भैया को गीतों की चाह है अत: रीटा बहन आप गीत गवाओ। भैया को आज बाजे गाजे की चाह है। अतः तेजसभाई बाजे गाजे बजवाओ। आज भैया घोड़े पर सवार हो सारे गाँव में घूमने की इच्छा करता है अतः बुआजी रमाबहन इसे पूर्ण करें। आज मेरा वीर माहेर की चाह रखता है अतः मामा वसंत भाई माहेरा ले आइए। आज भैया सुगंधित इत्र की कामना करता है अतः सखा हेमंतभाई इत्रका छिंडकाव करो।

1-2. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 68, 69

फूलेकु (रात को दूल्हे को घोड़े पर बैठ सारे गाँव में बाजेसंग घूमाने की रस्म के गीत)

ऊंचा ऊंचा बंगला चणावो–

ऊंचा ऊंचा बंगला चणावो अेमां कांचनी बारीओ मुकावो
के वीरो मारो झगमग झगमग थाय
बेन छे मनडाना मीठा अेमना दादाने दरबारमां, दीठा...बेनी
बेन छे मनडाना मीठा अेमना पिताने ओफिसमां दीठा...बेनी
बेन छे मनडाना मीठा अेमना वीराने स्कूटर ऊपर दीठा...बेनी
बेन छे मनडाना मीठा अेमना फैबाने फूलेका मां दीठा...बेनी
बेन छे मनडाना मीठा अेमना मामाने मामेरांमां दीठा...बेनी[1]

अर्थ: स्त्रियाँ गाती है ऊँचे बड़े बड़े महल से बंगले चुनवाओ उसमे काँच की खिड़किया बनवाओ मेरा भैया आज झगमग सुशोभित हो रहा है। बहन (दुल्हन) मन से अति मधुर स्वभाव की है उनके दादाजी को राजदरबार में देखा, पिता को ओफिस में काम करते दैखा, उनके भैया को स्कूटर पर देखा, बुआजी का फूलेका (घोड़े पर सवार दूल्हे का गांव में घुमाना) में देखा तथा दुल्हन के मामाजी को माहेरा में सबने देखा।

गीत –मदभर्यो हाथीने लाल अंबाडी

मदभर्यो हाथी ने लाल अंबाडी
चडे माडी नो जायो बारहजारी राज,
केसरना भीना वर ने पखट वाळो।
वरनी परवटडी मां पान सोपारी
चावो माडीनो जायो बारहजारी राज,
केसरना भीना वरने परवट वाळो।
वरना बापुजी हरखचंदभाई ओरेरा आवो,
ओरेरा आवी वरनां मनडां मनावो राज,
केसरना........................वाळो ।
पृथ्वी बधी रे वरना पग हेठं बिराजे,
नवखंड धरतीमा देसाई छतराया चाले राज,
केसरना भीना वरने परवट वाळो।[2]

संग्राहक - स्व. धीरजबहन, संपादक : वालजी देसाई

अर्थ: विवाह से पूर्व रात्रि को दूल्हे को सजाधजाकर घोड़े तैयार कर सारे गाँव में बाजे गाजे के संग घुमाया जाता है।तभी स्त्रियाँ गाती है कि जिस हाथी पर दूल्हेराजाःको बैठाया गया है वह मदमस्त है और उसपर लाल रंग की अंबाडी है जिस पर माँ का जाया अनमोल दूल्हा राजा विराजमान है। दूल्हा केसर आदि से

1. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 70
2. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोडीदास. भा. परमार, पृ. 18-19

द्रव्यों सुगंधित महक रहा है जिसके कमर में ठीक तरह से भेट बँधी हुई है जिसमें पान बीडा सुपारी आदि रखा है। इसी पान सुपारी के बीडे को माँ का बेटा दूल्हा राजा चबाएगा। दूल्हे के पिताजी हरखचंदभाई जरा नजदीक आओ और दूल्हे के मन को मनाओ। यह समग्र पृथ्वी दूल्हे के पाँव तले विराजमान है (अर्थात् राज्य करता) पूरे नौ खंडो की धरती पर देसाई चले जा रहे हैं।

बारात (विवाह के लिए जाते समय के गीत)

शुकन जोईने सांचरजो रे

शुकन जोईने सांचरजो रे, सामो मळियो छे मालीडो रे
गजरा आपीने पाछो वळियो रे
सामो मळियो छे दोशीडो रे चूंदडी दईने पाछो वळियो रे
सामो मळियो छे सोनीडो रे, हारला दईने पाछो वळियो रे
सामो मळियो छे मणियारो रे, चुंदडी दईने पाछो वळियो रे
सामो मळियो छे सुथारी रे, बाजोठ दईने पाछो वळिंयो रे।[1]

अर्थ: ब्याह करने के लिए निकलते समय स्त्रियाँ गाती हैं कि शुभशगुन देखकर निकलना सामने माली मिला है जो फूलों के गजरे दे वापस लौटा है आगे कपडा बनाने वाला बुनकर दोशीडा मिला है जो चुनरी दे वापस लौटा है। आगे रास्ते में सुनार मिला है जो सोने के हार दे वापस लौटा है। आगे रास्ते में मणियारा मिला है जो चूड़े को भेंट दे वापस लौटा है। आगे रास्ते में बढ़ई मिला है जो लकड़ी के बाजठ दे वापस लौटा है।

आवो आवो रे वासुदेवना नंद

आवे आवे रे वसुदेवनो नंद, पूनम केरो चंद,
दीवो केरी ज्योत, वीवा केरी वरध
के वर आव्ये अजवाळां रे । तुं मोकल वेवाई वाछरडो।
तारे तोरण आवे छो लाडकडो....आवे आवे रे
तुं मोकल वेवाई सोपारी,
तारे तोरण आवे छे वेपारी...आवे आवे रे
तुं मोकल वेवाई हाथीडा
बेसी आवे वरराजा ना साथीडा...आवे०
तुं मोकल वेवाई पालखी
बेसी आवे वरराजा नी मा लखमी...आवे०
तुं मोकल वेवाई वेलडियु
बेसी आवे वरराजानी बेनडियुं...आवे०

---

1. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 71

आवे........नंद, पूनम केरो चंद
दीवा केरी ज्योत, वीवा केरी वरध
केवर आव्ये अजवाळां रे।[1]

अर्थः बरातिने (दूल्हे) गाती है कि वसुदेव पुत्र श्रीकृष्ण सा और पूर्णिमां के चाँद सा दीये की ज्योत सा दूल्हा विवाह के लिए आ रहा है और जिसके आते ही चारों ओर उजियाला छा गया है। अरे समधि तू बछड़ा भेज तेरा लाड़ला दूल्हा । बेटी से ब्याहने आ गया है अतः समधि तू सुपारी भेज तेरे यहाँ बडा व्यापारी आ रहा है। अरे समधि तू हाथी भेज जिसपर बैठ दूल्हे के साथी आएँगे। तू पालखी भेज जिसमें बैठ दूल्हे की लक्ष्मी जैसी माता पधारेंगी। अरे समधि तू डोलियाँ भेज जामे बैठ दूल्हे की बहने आएँगी। आ रहा है भाई वसुदेव का नंद पूर्णिमां के चाँद सा, दीये की ज्योत सा दूल्हा तेरे दरवाजे विवाह करने आ रहा है।

दादा विना केम चालशे रे

दादा विना केम चालशे रे, दादा कीया देव साथ, वीरा तारी जानमां रे
कंकुडां ऊड्यां रे मोघां मुलनां, उड़े उड़े अधमण गुलाल
केसरियानी जानमां रे।
ढोलडीआ ढळावुं तारा चोकमां रे, पडे रे नगारांनो घोश, वीरा....रे
काका वि ना केम चालशे रे, काको कियो देव छे साथ,
होंशीला नी जानमां रे।
नोबत बेसारुं तारा चोकमां रे, शरणाई सखो छे साद, वीरा....रे
मामा विना केम चालशे रे, मामो कियो देव छे साथ,
डोलरियानी जानमां रे।
पुतळियुं नचावुं तारे मांडवे रे, नाचे भवाया नी जोड, भमर तारी जानमां रे
वीरा विना केम चालशे रे, वीरो कियो भाई साथ,
लेरखडानी जानमां रे।
वाजा वगडावुं तारा चोकमां रे, हाथीडा राजदुवार,
वीरा तारी जानमां रे।[2]

संपादक - लाभलक्ष्मी द्वा. भट्ट

अर्थः स्त्रियाँ बारात में गा रही है कि दादा के बिन बारात में कैसे चलेगा? देव से दादा भैया तेरी बारात में हों। दूल्हेराजा की बारात में अनमोल कुंकुम उड़ रहे हैं। आधा मन गुलाल केसरिया दूल्हे की बारात में उड़ाया जा रहा है। तेरे आँगन में पलंग बिछवाऊँ और फिर ढोल नगाड़े पर डंडि का घोष होगा वीर की बारात में। चाचा क बिना बारात में कैसे चलेगा? चाचाजी से देवता उत्साहित भाई की बारात में साथ है। नोबत तेरे आँगन में

1. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 72
2. गुजरातनां लोकगीतो : खोड़ीदास भा. परमार, पृ 25

बैठा शहनाई के सुर छेडेंगे। मामा के बिन कैसे चलेगा? मामा से देव साथ है डोलरिया की बारात में। कठपुतली का नृत्य गान करवाएँगे। भाई के बिन बारात में कैसे चलेगा? अर्थात् नहीं चलेगा सभी का साथ होना जरुरी है। भाई कहता है बाजेगाजे बजवाऊँगा राजद्वार (घर द्वार) पर हाथी बंधवाऊँगा भैया तेरी बारात में।

शुकन जोई घोडे चडो (बारात)

शुकन जोई घोडे चडो रे वरराजा
शुकन दीवो हाथ रे वरराजा
शुकने कसुंबी मळ्या रे वरराजा
चुंदडी वसावी घेर आवो रे वरराजा
चुंदडी नानी वहुने सोहे रे वरराजा
शुकन मणियारो मळ्यो रे वरराजा
चुडला वसावी घेर आवो रे वरराजा
चुडला नानी वहुने काजे रे वरराजा
शुकन सोनी मळ्यो रे वरराजा
झूंमणां नानी वहुने सोहे रे वरराजा
झूंमणां वसावी घेर आवो रे वरराजा।[1]

संग्राहक - धीरजबहन (गीत संहिता में से)

अर्थः दूल्हे से स्त्रियाँ कहती है कि शुभ शगुन देख घोड़े पर चढ़ना दूल्हेराजा शगुन का दीपक हाथों में है। शगुन से कसुंबी मिले है चुनरी तो घर आइए जो चुनरी छोटी बहू पर सोहेगी (जँचेगी) शगुन के तौर पर चुगदार मिला उससे चुड़ा (चुड़ियों का समूह सफेद व लाल रंग) ले आना जो छोटी बहू के लिए होगा। शगुन से सामने सुनार मिला उससे कानों के झुमके ले आना जो छोटी बहू को सुशोभित होंगे।

सामैयुं (रस्म बारात स्वागत गीत)

सामैया शणगारी

सामैयां शणगारी सामा मेलो रे.....भाईना दादा
जयश्रीबेनना वर ऊतर्या वाडीये
मोसाळ मोंघीनो वर ऊतर्या वाडीये
पियर पगतीनो वर ऊतर्या वाडीये
लाडकघेडीनो वर ऊतर्या वाडीये.....सामैया[2]

---

1. गुजरातनां लोकगीतो : खोडीदास. भा. परमार, पृ. 25-26
2. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 77

अर्थः गुजरात में जब दूल्हा दुल्हन के द्वार बारात ले पहुंचता है तब दुल्हन के घर वाले उसका स्वागत करते हैं जिसे सामैयुं कहते है। स्त्रियाँ गाती है सामैया सजाकर सामने आ मिलो जयश्रीबहन के दूल्हे विवाह हेतु आ उतरे है। माहेरा मँहगा-

गीत – केसरियो जान लाव्यो

केसरियो जान लाव्यो जान लाव्यो
मोटानुं दळ आव्युं, दळ आव्युं।
जानमां तो आव्या शेठिया
मांडवडामां मूक्या तकिया - केसरियो०
जानमां तो आव्या वेपारी
मांडवडामां मूकी सोपारी - केसरियो०
जानमां तो आव्या पारेख
मांडवडामां वहेची खारेक - केसरियो०[1]

अर्थः दूल्हेराजा बारात लाए हैं काफी बड़ा काफिला ले आएँ है। बारात में बड़े सेठ साहूकार आए है। मंडपमें बड़े तकिये आराम हेतु रखे है। बारात में बडे व्यापारी आए है, तो मंडप में सुपारी रखी है बारात में पारेख (जाति) आए है जिनके लिए मंडप में खारेक बाँटी गई है।

पोखणुं (बारात द्वार पर स्वागीत)

सीताने तोरण राम पधार्या,
ले रे पनोती पेलुं पोखणुं।
पोखतां रे नरनी भ्रमर फरकी,
आंखलडी रतने जडी।
रवाईअे अे वर पोंखो पनोतां
रवाईअे गोळी सोहामणां
सीताने तोरण राम पधार्या
ले रे पनोती बीजुं पोखणुं।
घोसरीअे अे वर पोंखो पनोतां
घोसरीअे धोरी सोहामणां।
सीता ने तोरण राम पधार्या,
ले जे पनोती त्रीजु पोखणुं
तराके अे वर पोंखो पनोतां,
तराके रेंटीडा सोहामणां,
सीताने तोरण राम पधार्या,

1. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 78

ले जे पनोती चोथुं पोखणुं

पींडीअे अे वर पोंखो पनौती,

पींडीअे हाथ सोहामणा।[1]

संपादक – ज्योत्सना शुकल, कमळा भट्ट (लग्नगीतों में से)

अर्थः सीताजी के द्वार परश्रीराम विवाह हेतु पधारे अरे सपूती पहला स्वागत कर शगुन ले।स्वागतकरते ही

गीत– आवी रे वेवाईनी जान

आवी रे वेवाईनी जान, वरराजा देखाया

मस्तीमां सौ छे गुलतान जानैया देखाया। आवी०

वरनी माता लागे सघर वाजा वागे ने चाले अधर

सौने आपे अे बहुमान जानैया देखाया आवी०

ढोल नगारांना त्रास वागे, संगे शरणाईना सूर वागे

भले पधार्या आज महेमान जानैया देखाया। आवी०

धूसळ मूसळ कांकरवाये सासुजीअे पोंख्या जमाई

नाक ताणी कहे राखजो मान, जानैया देखाया । आवी०[2]

अर्थः स्त्रियाँ गाती हैं अरे समधि बारात ले आ पहुँचे दूल्हेराजा दिखाई दे रहे हैं। सभी आनंद से मस्ती में मस्त बाराती दिख पड़े। दूल्हे की माता सुंदर लग रही है और आगे बाजे गाजे बढ़ चढ़ कर बज रहे हैं। सभी को बहुमान किया जा रहा है। ढोल, नगाड़े, व शहनाई बज उठी है अच्छा हुआ आज आप सारे बाराती मेहमान बन पधारें। सासुजीने जँवाई का स्वागत किया, नाक खींच कर कहा हमारी लाज रखना।

गीत – सोनानी सळीअे पोंखे रे बाई

सोनानी सळीअे पोंख्ये रे बाई।

सोना सरीखो लाडडो छे जो।

रुपानी सळीअे पोंख्ये रे बाई,

रुपा सरीखो लाडडो छे जो।

घोंसरीअे ने पोंख्ये रे बाई,

घोंसरुं तारे खेडवा थाशे...सोनानी०

रवाईअे ने पोंख्ये रे बाई

रवाया तारे घूमवा थाशे...सोनानी०

तराकडीअे ने पोंख्ये रे बाई।

तराकडी तारे कांतवा थाशे...सोनानी०

1. गुजरातनां लोकगीतो : खोडीदास. भा. परमार, पृ. 28
2. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 79

सांबेले ने पोंख्ये रे बाई।

सांबेलुं तारे खंडवा थाशे...सोनानी[1]

मायरु (माह्यरां)

गीत –पेलुं पेलुं मांगळियुं वरताय रे

पेलुं पेलुं मंगळियुं वरताय छे रे,
पेले मंगळ, शा शाना दान देवाय रे?
पेले मंगळ गवतरीना दान देवाय रे।
बीजुं बीजुं मंगळियुं वरताय रे,
बीजे मंगळ, शा शाना दान देवाय रे?
बीजे मंगळ सोनाना दान देवाय रे।
अगणुं अगणुं मंगळियुं वरताय रे,
अगणे मंगळ वस्त्रना दान देवाय रे।
चोथुं चोथुं मंगळियुं वरताय रे,
चोथे मंगळ, शा शाना दान देवाय रे?
चोथे मंगळ कन्याना दान देवाय रे।[2]

अर्थः माहेरा के वक्त स्त्रियाँ गाती हैं पहला पहला शुभ फेरा आया अतः फेरे पर पहले किसका दान दिया जाता है। पहले फेरे पर गौ का दान दिया जाता है। दूजे फेरे पर सोने का दान दिया जाता है। अग्रज फेरे (विवाह में तीन अपशकुन मानते है अतः तीसरा ऊंगली को अग्रज कहते है) पर वस्त्रो का दान दिया जाता है। और चौथे पर अंततः कन्या का दान दिया जाता है।

ओढी नवरंग चूंदडी

ओढी नवरंग चूंदडी पाये झांझरनो झमकार
मांडवामां आवे मलपती मांडवामां आवे मलपती
बेनीअे साडी पहेरी छे सवा लाखनी
अेमां जरी भरी छे मोंघा मूलनी
तोय बेनीने पानेतर नो शोख - मांडवा०
बेनीअे हार पहेर्यो छे सवा लाखनो
अेमां हीरा जड्या छे मोंघा मूलना
तोय बेनी ने वरमाळानो शोख - मांडवा०
बेनीअे चूडो पहेर्यो छे सवा लाखनो
अेमा चीप जडी छे मोंघा मूलनी
तोय बेनी ने मींढळ नो शोख - मांडवा०[3]

---

1. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 81
2. गुजरातनां लोकगीतो : खोड़ीदास. भा. परमार, पृ. 30
3. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 82

अर्थः दुल्हन के श्रृंगार का बयान करते हुए स्त्रियाँ गाती है कि नवरंगी चुनरी पहन, झांझर (पायल) झनकाती हुए मंद मुस्काती हुए मंडप में चली आ रही है। बहन (दुल्हन) ने सवालाख की साडी पहन रखी है जिसमें अनमोलजरी का काम किया है फिर भी दुल्हन को पानेतर (गु. में विशि. पोशाक सफेद व लाल रंग) का बड़ा शौक है। बहन हार सवा लाख का पहना है जिसमें कीमती हीरे जड़े है फिर भी दुल्हन को वरमाला की चाह है। दुल्हन ने चुडा (चुडियों का समूह) सवालाख का पहना है जिस चुडी के बीच अनमोल पतली पट्टी जडी है फिर भी उसे कलाई पर मींढळ बाँधने का बड़ा शौक है।

चोरी फेरा

गीत – क्यां वसे कोयलडी

क्यां वसे कोयलडी ने क्यां वसे हंस जो, क्यां वसे रे बेनी तमारा कंथ जो
आंबा डाळे कोयलडी ने सरोवर पाळे हंसजो राजकोट वसे रे बेनी तमारा कंथजो
केवावान कोयलडीने केवा वान हंस जो, केवा वाने रे बेनी तमारा कंथ जो
काळा वाने कोयलडी ने धोळा वाने हंस जो, शामळा वाने रे बेनी तमारा कंथ जो
शुं रे जमे कोयलडी शुं रे जमे हंस जो, शुं रे जमे रे बेनी तमारा कंथ जो
चारो चरे कोयलडी ने मोती चरे हंस जो, जमे रे बेनी तमारा कंथ जो।[1]

अर्थः फेरों की रस्म के समय स्त्रियाँ गाती हैं कि कोयल और हंस कहाँ बसते हैं और ए दुल्हन तेरे पति कहाँ बसते हैं? आम की डाली पर कोयल और सरोवर किनारे हंस बसते है मेरे पति तो राजकोट शहर बसते है। कोयल का रंग कैसा? हंसा कैसा? और तुम्हारे पति का रंग कैसा है? दुल्हन बोली – कोयल काले रंग की, हंस श्वेत रंग का और श्याम वर्ण के मेरे पति है। कोयल क्या खाती है, हंस क्या चुगते है व पति क्या खाएँगे? कोयल चारा, हंस मोती व मेरे पति हलुवा खाएँगे।

नाणावटी रे साजन बेठुं मांडवे

नाणावटी रे साजन बेठुं मांडवे, लाखोपति रे साजन बेठुं मांडवे
जेवा भरी सभाना राजा एवा हितेष भाईना बापा...
जेवी फूल मायली वाडी एवी हितेष भाईनी माडी....
जेवा अतलस मायला ताका एवा वरकन्याना काका
जेवा हार मांयला हीरा एवा हितेषभाईना वीरा
जेवा रेशम मांयला कीडा ए हीना वहुना वीरा।
नाणावटी रे साजन बेठुं मांडवे।[2]

अर्थः स्त्रियाँ ब्याह मंडप में बैठ गाती है कि मंडप में जो बाराती स्वजन बैठे हैं, लखपति है। लखपति स्वजन मंडप में बैठे है। जैसी भरी सभा में राजा हो वैसे ही हितेशभैया के पिता हैं। जैसे कोमल फूलों की

1-2. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 86, 88

बगिया हो वैसी ही हितेशभाई (दूल्हा) की माता है। जैसे अस्त्तर के थान होते है ठीक वैसे हितेषभाई के चाचा है, ज्यों रेशम के अंदर कीड़े होते हैं ठीक वैसे हीतेषभाई के भैया है।

कंसारा फटाणां (भोज के वक्त गाए जाने वाले लोकगीत)

गीत – तो जम जमरे जमइडा कलवो (कलेवा)

तो जम जम रे जमइडा कलवो तारी माडी पीरशे से कलवो
तारी सासुअे पीरस्यो छे कलवो, तारी सासु ते हइयानी भोळी
तने घी मां नाखशे बोळी तारी माडी ते हइयानी कपटी
तने मीठुं नहीं आपे चपटी, तारी गांठे आवडो शो मचको
तने गोळ न आपे करी घचको।[1]

अर्थः जंवाई को कलेवा खिलाते वक्त स्त्रियाँ गाती हैं, जंवाइडे खा खा, कलेवा तेरी माता परोस रही है। तेरी सासु ने परोसा है कलेवा जो हृदय से एकदम भोली है लेखिन तेरी माता तुझे घी में डुबो देगी जो हृदय से कपटी है। तुझे एक जरा सा चिपटी भर नमक भी नहीं देगी। और डाँट पर कर तुझे गुड़ भी न देगी।

लाडी लाडो जमे रे कंसार

लाडी लाडो जमे रे कंसार,
लाडा नी भाभी हळवळो रे।
अेना दियर आंगळडी चटाड,
कंसार केवो गळ्यो लागे रे?
अेनी भाभी परणी छे के नाहीं?
कंसार केम वीसरी रे?[2]

संग्राहक – स्व. धीरजबहन (गीत संहिता – 1–3 में से)

अर्थः दुल्हा दुल्हन चुरमा लापीस हलुवा खा रहे है और दूल्हे की भाभी खाने के लिए तड़प रही है। अरे उसके देवर उसे जरा ऊंगली चटा कंसार कैसा मीठा लगता है अरी दूल्हे की भाभी विवाहित हो या नहीं फिर अपने ब्याह का कंसार कैसे बिसार गई।

गोर लटपटिया – (पंडित पर लोकगीत) हास्य विनोद

गोर करे रे उकेल, गोर लटपटिया।
मारे छेटांनी छे जान, गोर लटपटिया।
मारे थाय छे, अहूर मोडुं, गोर लटपटिया।
गोर ने हांडा जेवडुं माथुं, गोर लटपटिया।

---

1. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 94
2. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 30

गोरने नळिया जेवडुं नाक, गोर लटपटिया।
गोरने कोडां जेवडी आंख्युं, गोर लटपटिया।
गोरने सूपडां जेवडां कान, गोर लटपटिया।
गोरने फळिया जेवडी फांद, गोर लटपटिया।[1]
कंठस्थ - संतोकबहन वेगड (वडवा)

बाराती भोज के वक्त – हरियाळी गीत

अेक वेंत ते जेवडी वरखडी

अेक वेंत ते जेवडी वरखडी
तेना डालां ते जेवडां फूल, माणाराज,
कुंवरी हरियाळी गुण केजो
(रेंटियो अने माळ परनो फाळको)
अेक भेंश वींयाणी पाडुं पेटमां
तेना दूध कंचोळे घोळाय, माणाराज,
खुंवरी हरियाळी गुण केजो।
(घोळी ने रस काढेली केरी के रीना गोटला मां मींज)
अेक काळो रांध्यो कागडो,
अेक लीलवो मार्यो किंशुक, माणाराज,
कुंवरी हरियाळी गुण केजो
(रींगणानुं शाक, मरचानुं अथाणुं)[2]

अर्थः एक बित्ता भर की जितना रुई का पौधा है उसपर बडे बड़े फूल लगे है कुंवरी राजकुमारी अर्थ बताओ - उत्तर चरखा ।

पांच मणीको लाडवो (हास्य गीत)

पांच मणीको लाडवो रे,
पीरस्यो वेवाईने भाणे, मणीको लाडवो रे।
जमतां ते बैयर सांभरी रे,
घाल्यो छे, ढींचण हेह्य, मणीको लाडवो रे।
चोरे जातां छूटी पड्यो रे,
छोकरांओ कर्यो फजेत मणीको लाडवो रे।[3]

अर्थः पाँच मन का लड्डु भाई समधिजी की थाली में परोसा गया। उसे खाते ही उन्हें अपनी पत्नी का स्मरण हो आया और उन्होंने लड्डु पत्नी के निर घुटनों के नीचे दबा लिया, छिपा लिया परंतु घर जाते समय चौराहे

1-2-3. गुजरातनां लोकगीतो - सं. खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 31-32

पर लड्डु चूर चूर हो बिखर गया जिससे आसपास के लडको ने बेइज्ज़त किया।

छाब – (मामेरुं – मामा की ओर से निभाई जानेवाली रस्म)

अमे सेला विना नथी आव्या वेवाण हळवुं बोलो
कापडियो मारो काको वेवाण हळवुं बोलो
अमो पोंचा बिना नथी आव्या वेवाण हळवुं बोलो
सोनीडो मारो वीरो वेवाण हळवुं बोलो।[1]

अर्थः स्त्रियाँ गाती है कि (दूल्हे पक्ष से) अरी समधन हम भारी भारी साडियो के बिना नहीं आए अर्थात् लाए है अतः आप धीरे बोलिए। कपड़े का व्यापारी मेरा चाचा है समधन धीरे बोलिए। हम हाथों के पोंचे (गहने) के बिना नहीं आए लेकर आए है क्योंकि सुनार मेरा भाई है समधिन धीरे बोलिए।

छबछबती छाब

छबछबती छाब धनरा, कोण लई आवे?
अे तो मारो माडी जायो वीर, वालेरो लागे।
घी चूंता चूरमा धनरा, कोण शीरावे?
अे तो मारो माडी जायो वीर, वालेरो लागे।
दही ने ठुमरों रे धनरा, कोण शीरावे?
अे तो मारा दादानी बेन्य, फइबा वालेरा लागे।
ठांसीने माथा धनरा, कोण ज गूंथे?
अे तो मारा, दादानी बेन्य, फइबा वालेरा लागे।[2]

संग्राहक – स्व धीरजबहन (गीत संहिता में से)

अर्थः विवाह के समय दूल्हे के घर की ओर से दुल्हन के लिए बड़ी सी थाली भर भारी कींमती साड़ियाँ लाई जाती जिसे गुजरात में छाब कहा जाता है। स्त्रियॉ गाती है पूरी थाली भरकर छाब कौन ले आता है वह तो मेरी माता का दिया बेटा मेरा भैया जो बड़ा प्यारा लगता है। घी से तरबरतर (सने हुए) चुरमा लड्डु कौन खाएगा? वह तो मेरा वीर खाएगा। दही व ठुमरा (बाजरे को सेंक, पीस दही के साथ पका प्रातः का भोजन) कौन खाएगा। वह तो मेरे दादाजी की बहन बुआजी जो बड़ी प्यारी लगती है। बाल पकड़ कसकर चोटी कौन गूँथेगा? वह तो मेरे दादाजी की बहन बुआजी जो बड़ी प्यारी लगती है।

चांदलियो ऊग्योने हरण्युं आथम्यु

जी रे, चांदलियो ऊग्योने हरण्युं आथम्युं रे,
वीरा, घडिया लगने जोई तमारी वाट रे,
मामेरा वेळा वही गई रे।

1. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 98
2. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोडीदास भा. परमार, पृ 15

बेनी, सातमने सोमवारे, ग्याता होरवा रे,
बेनी, पाटणशेरमां पडी हडताळ रे,
अमदावाद ग्याता होरवा रे।
बेनी होर्या चंपकवरणा चीर रे,
शोभंती होरी चूंदडी रे।[1]

कंठस्थ - जक्कलाबाई सोलंकी (शिहोर)

अर्थ: स्त्रियाँ गाती है कि चंद्रमा उदित हो निकला और हरिण नक्षत्र अस्त हुआ। भैया ब्याह के समय आपकी खूब राह देखी और माहेरा (भाई की और सेलेप्रथा) की बेला तो व्यतीत हो गई। भाई कहता है सातम (तिथि) के तिथि के दिन सोमवार को होरवा गए थे बहना तभी पाटण शहर में हड़ताल हो गई। फिर अहमदाबाद शहर गए थे वहीं से चंपकवर्ण के (पीले) वस्त्र खरीदे उसीसे सुंदर चुनरी शोभा दे रही है।

कन्या विदाई के गीत

गीत – समजु बाळकी जाय सासरे

समजु बाळकी जाय सासरे, वचन माडीनुं ध्यानमां धरे
श्वसुर पक्षमां लाज थी रही, कसुर काममां कीधुंओ नहीं।
वचन थी वधे वेरीओ घणा, वचनथी वधे हेत आपणां
विष रह्युं मुखे मुखमां सुधा, वचन मीठडा बोल जे सुधा।
बधा साथ तुं चाली जो मळी, गरव टाळीने जो गई गळी
सरस संप तो वाधशे वळी, दुःख रुपी नहीं देखशे कळी।
परघरे बहु बेसवुं नहीं, घर तणी कथा कहेवीना कही
कुथली पारके जो करी मुखे, दुश्मनो थशे दाजशे दुःखे।
दियर जेठ शुं थोडुं बोलवुं, अदबमां रही रोज चालवुं
वडील वृद्धनी चाकरी करी, प्रभु तणी प्रीति पामजे खरी।
हठ करी कशुं मांगवुं नहीं, रूसणुं मांडीने दुभवुं नहीं
ऊपडते ते स्वरे वाल ना वधे, रखडते मने काम ना सधे।
वखत जो मळे वांचजे कशुं नव रहीश तुं बेन आळशुं
असुर सांजना अेकलुं न जवुं, अतिश आकळा क्रोधी न थवुं।[2]

अर्थ: कन्या विदाई के वक्त लड़की को सीख देते हुए स्त्रियाँ यह गीत गाती है कि समझदार बिटिया ससुराल जाती है और माता के सीख वचन ध्यान में रखती है। ससुराल में लाज से रहना काम में कोई कसर न छोडना। कम बोलना क्योंकि कडवे वचन बोलने से वैरी बढ़ते है और मीठे वचनों से आपसी प्रेम बढ़ता है

---

1. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 14
2. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ 104

अतः विषैले वचन मुख ही में रखना और मधुर वचन दी बोलना। सबके संग हिलमिल कर जो रहेगी, गर्व का त्याग करेगी तो घर में एकजुटता बढ़ेगी व तू कभी दुख नहीं देखेगी। दूसरों के घर ज्यादा बैठना नहीं, और घर की कथा किसी से न कहना। यदि दूसरों के सम्मुख़ निंदा की से दुश्मनों की होगी। देवर जेठ संग कम बोलना अपनी मान मर्यादा में रहना। घर के बड़े बुजुर्गों की सेवा चाकरी कर ईश्वर के प्रेम का संपादन करना। किसी चीज के लिए हठ न करना, रुठ कर किसी का दिल न दुखाना। और भटके हुए मन से कोई कार्य पूर्ण न होता।समय मिलने पर अच्छावांचन करना, आलसी बन मत बैठना। संध्या रात्रि को अकेले कहीं न जाना और अत्यधिक बैचेन व क्रोधी कभी मत बनना।

मैयरने खोरडेथी सासरने ओरडे

मैयरने खोरडे थी सासरने ओरडे, ऊगतुं अे रुप मारुं जाय
कोमळ कळी मारी जो जो ना करमाय
सासर आगळ पारकुं बेली, जो जेना डगलां भींजाय
        कुमळी कळीअे सासरिये जाय।
आंसुना सारथी तारी बंगडी जो जे अेनी रुख न लालवाय...कुमळी
नथी जोया दिन अे नथी जोई रातडी, वर जतन में तो कर्या हजार
        नानी मारी छोडी सासरिये जाय
सौने बिनव्या ने जमाई राज तमने रे विनवुं,छोडी मारी दुःखीना थाय
        तेनी राखजो कायम संभाळ -मैयर।[1]

अर्थः कन्या विदाई के समय स्त्रियाँ गाती है कि मायके के आँगन से ससुर के आँगन में यह हमारी बेटी का उगता सौंदर्य जा रहा है देखना हमारी कोमल कली सी बेटी कहीं मुरझा न जाए। ससुराल में तो सभी पराए ही अपने है देखना आंसुओ से वस्त्र कहीं गीले न होए। आंसुओ के सार भी तेरी चूड़ियां है देखना उसका लाज बनाए रखना। मैंने तो अपनी पुत्री के पालन में दिन रात नहीं देखे हजारो जतन किए है। मेरी नन्हीं बेटी ससुराल जा रही है। सभी को विनती कर ली अब जँवाई राजा आपसे बिनती है कि हमारी बिटिया कभी दुःखी न हो उसका हमेशा ख्याल रखना।

परशाळे थी केसर उडे

परशाळे थी केसर उडे
        घोडवेल्युं आवे रे उतावळी।
घोडवेल्ये बेसी बेनीबा चाल्यां,
        दादा ते......भाई वळामणे
वळो वळो रे मारा समरथ दादा,
        अमने दीधां तमे वेगळां?
देश नो जोयो दादे परदेश जोयो,

1. सौरभ लग्नगीत संचय : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 105

अेक जोयो रे दखण माळवो?

सं.झ. मेघाणी (चूंदडी में से)

आ दश आदश पीपळो

आ दश आ दश पीपळो, आ दश दादानां खेतर।
दादा जेठाभाई वळामणे, बहेनी डाह्या थई रहेजो।
हैडे ते सांकळ जडी लेजो, मनडां वाळीने रेजो।
ससरानो सरडक घूमटा, सासुने पाये ते पडजो।
जेठ देखी झीणां बोलजो, जेठाणी वाद मा वदजो।
नानो देरीडो लाडकी, तेना हस्या रे खमजो।
नानी नणंद जाशे सासरे, तेना माथा रे गूंथजो।
माथां गूंथी जाशे सासरे, तेना माथां रे गूंथजो।
शेरी वळामण बानी सैयरुं, बहेनी डाह्यां थई रहेजो।
झांपा वळामणा बानी माताजी, बहेनी डाह्यां थई रेजो।[1]

संग्राहक - झवेरचंद मेघाणी (चूंदडी में से)

अर्थः विदाई के समय स्त्रियाँ गाती है। दादा जेठालाल बिटिया को बिदा कराने लगे और सीख दे कहने लगे बहन समझदार बन कर ससुराल में रहना। हृदय पट को जंजीरों से बंद कर लेना। मन लगाकर वहाँ रहना। ससुर की घूँघट निकाल लाज रखना व सासुजी के पाँव पडना। जेठ को देख धीरे से बोलना जेठानी संग विवाद तर्क न करना। छोटा देवर लाड़ला होता है उसकी हँसी मजाक सहन करना। छोटी ननद ससुराल जाएगी उसकी चोटी गूँथना व उसे सिंदूर लगा ससुराल विदा करना। सभी सखियाँ व बेटी की माताजी विदा कर रही है कहती है बिटिया समझदार बन कर ससुराल में रहना।

(६) भाई बहन परक गीत

गीत – भाई बहेन

चंचळ घोडी चालंती मथुरामां आवी जो।
जोने घोडी तारो डाबलो, डाबले मेंदी मेलावी जो।
हाटे हाटे घेडा खेलव्या, गळी पडशे फूल जो।
पाछळ सोनलबा बेनडी, वेंणी भरशे छाब जो।
छाब भरी बेनी वीर वधावे, हैये हरख ना माय जो।
वीरो आव्यो छे आंगणे, बेनी बेनी अधीर जो।
ढोलिये पांथणां पाथर्यां, वीरना उतारा मोल जो।
वीरो पोढ्या छे ढोलियें, बेनी बेठी छे पास जो।

1. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 33-34

बेन पूछे छे वीरने, वीरा आपणी माता शुं य करेजो?
बाप बचाडा रांकडा, अेमनो जीव दझाडे जो।
बेनी, माता पूछावे संदेशडा, बेनने सासरे केवुंक सुखजो?
के जो रे वीरा, आपणी माता ने, बेनीने हींडोळा खाट जो।[1]

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

अर्थः बहन भाई की प्रतीक्षा करती है तभी चंचल सी घोडी चलती हुई मथुरा में प्रवेश करती है पीछे से सोनल बहन फूलों की माला से स्वागत करती है। आज उसके हृदय में अपार हर्ष है क्योंकि उसका भैया उसके आंगन आया है बहन अधीर उठी है। बहन ने भाई के बिश्राम हेतु पलंग व बिस्तर बिछौना बिछाया। भाई आराम कर रहा है बहन वहीं पास बैठी है पूछती है भाई से अपनी माता क्या कर रही है? कुशल है? और पिता? वह कैसे है? पिता तो बेचारे सीधे सादे गरीब गाय जैसे है। भाई कहता है बहना माँ ने पूछवाया है संदेशे में कि बहन को ससुराल में कैसा सुख है तब बहन भाई से कहती है – माँ से कहना बहन के ससुराल में ठीक है, मजे हैं, वह झूले पर झूलती ससुराल में आराम से है।

आणां

सखी, साडलो फाट्यो छे मारे घुंघटे रे लोल,
जाशे मारा पैयरियां लाज रे,
वीर ने केजो के आणां मोकले।
सखी, कापडुं फाट्युं छे मारी कोणिये रे लोल,
वीरने केजो आणां मोकले।
सखी, घाघरो फाट्यो छे मारे ढींचणे रे,
जाशे मारा मैयरियांनी लाज रे,
वीरने केजो के आणां मोकले।[2]

अर्थः एक लड़की अपनी सखी से कहती है सखि मेरी साड़ी घूँघट में ऊपर से फट गई है इससे मेरे मायके वालों की इज्ञत जाएगी अतः मेरे भाई से कहना आणां (वस्त्र) भेजें। सखी मेरी (कापडुं) चोली भी कोहनी से फट गई है, घाघरा भी घुटने से फट गया है। मेरे मायकेवालों की इज्ञत जाएगी अतः भाई से कहना मेरे लिए वस्त्र भेंजे।

वीर तेडां (भाई को न्योता)

सरोवर पाळे आंबलियो,
आंबे झाझा मोर मलूगर आंबलियो।
अेक तो मोरलो ऊडी गयो,
गियो दादाने देश, मलूगर आंबलियो।

---

1. लोकसाहित्यमाळा, मणको 8 (चुंवाळ प्रदेश के लोकगीत), पृ. 141-142
2 लोकसाहित्यमाळा, मणको 7 – सं. कु जशुमती नानालाल, पृ. 169 (भाल प्रदेश के लोकगीत)

दादा, धीडी दखियां,
वीरने आणे मेल्य, मलूगर आंबलियो।
वीरो आव्यो सीमडीओ,
सीमुं लेरे जाय, मलूगर आंबलियो।
वीरो आव्यो वाडीओ,
वाडीओ टौके मोर, मलूगर आंबलियो।
वीरो आव्यो झांपलिये,
झांपे धडूसिया ढोल, मलूगर आंबलियो।
वीरो आव्यो आंगणिये,
मळी चूडाळी बेन, मलूगर आंबलियो।
नंणदी वळाव्यां सासरे, बेनी ने पूरां राज, मलूगर आंबलियो।[1]

अर्थ: पानी से भरा तालाब मानोस्त्री का मायका व पक्षी मायकवाले। कोई मानव न मिलातो छिपकर तालाब के किनारे आम्रवृक्ष जिस पर मोर उससे संदेशा भिजवाया कि दादाजी के जाओ और वहां भैया को मुझे लिवाने के लिए भेजे जैसे ही भाई आया गांव की सीमाओं लहलहाने लगी, भाई वाडी (बगीचे) तक आया तभी मोर टहूकने लगा, भाई दरवाजे घर जैसे ही आया ढोल बजने लगे। बहनोई के कान भर कर ननद को घर से निकाल ससुराल भिजवाया और भाभी को पूरे घर का राज मिला।

गीत – भाई बहन परक गीत

बार बार वरसे रे बेनी जोया तमारा देश।
वीरा धोरीने बांधीश वचले ओरडे,
नीरीश नीरीश नागरवेल, नीरीश शेरडी,
वीरा मेडीओ ढाळीश ढोलिया,
रांधीश कौमुदी ना कूर
ऊगमणा वाइरा रे बेनीओ ढोलिया,
आथमणे वारी रे बेनीओ सांगमांची,
आवो बेनी बेसो बेसणे रे,
कहो तमारा सुःखदुःख नी वातो रे।
तभी बहन अपने हृदय की बात कहती है
वीरे देश जोया रे, भाभीओ मलुक जोया रे,
कांई एक ना जोयुं रे मारुं जुगनुं रे जोडुं।
वीरे रुपिया खरइचा, भाभी ओ पइसा खरइचा,
कांई एक ना जोयुं रे मारु जुगनुं रे जोडुं।

---

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं श्री झवेरचंद मेघाणी, पृ 87-88

सुखवेलना चोखा वीरा, छाबले ओसावुं रे वीरा,
गवरीना घी अे भोजन जमतेला जाव रे वीरा
कंई अेक ना जोयुं रे मारुं जुगनुं रे जोडुं ।[1]

अर्थः भाई अपनी बहन के दरवाजे पर आ पहुँचता है तब बहन की आँखे भर आती है हर्ष से आँसू आ जाते है, बिछडी हुई बहन के गले लगते ही भाई बोल पड़ता है अरी बहना बारह-बारह साल के बाद तेरा देश (गाँव, शहर जहाँ ब्याहा है) देखा। तभी बहन बोली भैया गाय बैलों को बीच वाले कमरे में बाँधूगी उन्हें नागरवेल (पान के पत्ते) व गन्ना खाने को दूंगी और घर के ऊपरी मंजिल के कमरे में तेरे लिए भाई विश्राम हेतु बिस्तर लगवाऊँगी। खाने हेतु कौमुदी नामक एक प्रकार के अच्छे चावल पकाऊँगी। भाई का खिलापिला दोनों भाई बहन आपस में सुखदुख की बातें करने लगे। बहन कहने लगी भाई भाभी ने मेरे ब्याह हेतु मुल्कदेखा पर एक मेरा बेमेल जीवनसाथी न देखा। भाई ने रुपये खर्च किए भाभी ने पैसे, पर एक न देखा तो बस बेमेल जीवनसाथी। भैया सुखवेल (एक प्रकार के चावल) के पके चावल बनाती हूँ और गौरी गैया के घी से बने भोजन करने जाना। भैया बहन के जीवन की करुणता न देखी। एक करुण गीत है।

बहन

भरत भरेली कापडी ने महीं भरियां हीरनां चीर जो
बाप के मारुं बाळकडुं जे माता के मारु पेट जो
वीरो के मारी वीजळी, बहेनने जई झबक्या परदेश जो
भोजाई के अेने भले वळाव्यां, ठरियां मारां पेट जो
वन मा रेतां, वनफळ खातां, नारियेर पाणी पिता जो
खीजडियानां खेतर खेड्या, अमने दीधां परदेश जो
काळा वनमां कोयल बोले, अेमां केम रहेवाय जो ।[2]

अर्थः बहन की जरी कसब से भरी हुई चोली है जिसमें हीरे जड़े हुए हैं। पिता बहन को अपनी लाडली व माता प्यार से अपनी पेट (संतान) कहती है। भैया बहन कहता है अपनी बिजली जो परदेस में (ससुराल) जा चकी भौजाई कहती हैं अच्छा हुआ जो ससुराल बिदा किया। मेरी अंतरात्मा को ठंडक पहुँची। बहन कहती है वन में रहना, वनफल खाना, नारियल पानी पीना खेजडी के खेत को गोड़ना खोदना आपने तो मुझे परदेस में ब्याह दिया। ऐसे काले वन में तो कोयल बोलती है ऐसे में कहाँ से रहा जाए?

गीत – कोण हलावे लींबडी ने कोण हलावे **पीपळी**
भाईनी बेनी लाडकी ने भाइलो **झुलावे डाळखी**

---

1. गुजरातनां लोकगीतो : ले. मधुभाई पटेल, पृ. 160
2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं झवेरचंद मेघाणी, पृ. 375

संदेशा–

उडतां पंखीडा, मारो संदेशो लई जाजो रे सही
दादाने केजो रे दीकरी कूवे पडे
कूवे न पडशो, दीकरी, अफीणीया नव खाशो रे सही
अंजवाळी आठमनां आणां आवशे रे सही
उडतां..................................सही
माता ने केजो रे दीकरी कूवे पडे
कूवे............................ .... सही
अंजवाळी...........   ....सही
उडता पंखीडा........................ सही
वीरा ने केजो बेनी कूवे पडे
कूवे न पडशो, बेनी, अफीणियां नव खाशो रे सही
अंजवाळी.............................सही।
उडतां पंखीडा...................सही
भाभी ने केजो रे नणदी कूवे पडे
कूवे......................   ...सही
अंजवाळी आठमनां आणां आवशे रे सही।[1]

गीत – पारेवडां जाजे वीराना देशमां।

पारेवडां। जाजे वीराना देशमां, आटलुं कहेजे संदेश मां। पारेवडां०
वीरो सिधाव्यो मातृभूमि ने बारणे, कोई प्रेमहीणा प्रदेशमां। पारेवडां०
कहेजे के बेनडी अे लीधी छे बाधा, रहेवुं छे बळा वेशमां। पारेवडां०
भाभी तारां पुस्तको नी आरती उतारे, वेण नथी बांधती केशमां। पारेवडां०
भारतमातानुं मान वीर। ते दीपाव्युं, कहेवुं शुं झाझुं उपदेशमां? पारेवडां०[2]

अर्थः ऐसा वीर भाई जो भारतमाँ की रक्षा हेतु युद्ध भूमि में गया है। बहन पक्षियों से संदेशा कहती है कि हे पक्षी तुम उड़कर भाई जहाँ है उस देश में जाना और कहना कि तू तो मातृभूमि के दरवाजे पर जा पहुँचा प्रेमरहित प्रदेश में। परंतु यहाँ तुम्हारी बहन ने सदा बाल भेष (विवाह न करने की प्रतिज्ञा) में रहने की प्रतिज्ञा ली है और भाभी तुम्हारी पुस्तको की आरती उतारती है, केशों में फूलों का गजरा नहीं गूँथती तेरे विरह में। हे भैया तुमने तो भारतमाता की लाज रखी, गर्व से मस्तक ऊँचा किया अब और ज्यादा उपदेश में क्या कहूँ।

---

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - स. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 371
2. सौरभ रास लोकगीत संग्रह - सं हरु याज्ञिक, पृ. 74

(७) **दांपत्य परक गीत (संयोगात्मक)**

रे आज झीणा मारुजीनी झीणी पछोडी पथराय रे।
साग सीसमनो ढोलियो रे, ढोलिये सूता कोण रु भाई राजा रे?
साजन मोरी।
वावलियो ढोळे रे कोण वहु राणी रे? लळीलळी आवे निंदरडी,
वावलियो ढोले ने वात वलोवे हाथ कंकण रणझणे रे,
साजन मोरी।[1]

अर्थः सासुमाँ के घर आँगन और पति की बगिया में आ पहुँची गोरी गृहसंसार में कदम बढाएगी रास्ते में पति संग जो मीठी बातें हुई उसका मधुर स्वर गूंज रहा है। आज मधुरजनी मनाने का सुअवसर है घर के ऊपरी हिस्से के कमरे में साग-सीसम की लकड़ी का पलंग बिछाया है, महीन कपड़े का बिछौना है जिस पर प्रियतमा प्रिय संग सोऐगी। प्रियतमा पंखा झलेगी जिससे हाथ के कंगन चूडी बजेंगे, बातें, चर्चा, हास्य विनोद होगा।

गीत लीली रे लीली लीलवरणी
कांई लीली छे नागरवेल,
में तने वाळी नागरवेल,
न पहोंचती मांडव हेठ,
पहोंची नानुभाईने ओवरडे,
त्यां तो खरइचा छे लाख बे लाख
लाख बे लाखनां झूमणां वोराय,
तमे पेरोने नानी वहुवारु रे
साहेली पाइमा सासरुं,
सुख पाइमा स्वामी अेनां राज,
लीली रे लीली लीलवरणी।[२]

निमंत्रण

राधाजीनां ऊंचा मंदिर नीचा मोल,
झरुखडे दीवा वळे रे लोल।
राधागोरी। गरबे रमवा आवो,
साहेली सहु टोळे वळे रे लोल।
त्यां छे मारा रुपसंग भाईनी गोरी,
हाथडीये हीरा जड्या रे लोल।
त्यां छे मारा मानसंग भाईनी गोरी,

1-2. गुजरातनां लोकगीतो : ले मधुभाई पटेल, पृ. 106-107

पगडीअे पदम जड्या रे लोल।
त्यां छे मारा धीरसंग भाईनी गोरी,
मुखलडे अमी झरे रे लोल।
राधा................मोल
झरुखडे................लोल।
राधा गोरी......................आवो,
साहेली सहु टोळे वळे रे लोल।[1]

अर्थः गरबा गाने के स्थल का वर्णन किया गया है साथ ही गाने आने वाली नारियों के सौंदर्य का निरुपण किया गया है। एक के बाद एक सहेली के मधुर शब्दचित्र का आलेखन किया गया है। झरोखे में दीप जगमगा रहे हैं राधा गोरी गरबा खेलने आ जाओ। सभी सखियाँ सहेलियाँ इकट्ठी हो गई हैं। वहीं गरबे में रुपसंग भाई की गोरी (प्रियतम) है जिसकी हाथों के गहने में हीरे जड़े हैं। वहीं मैदान में मानसंग भाई की गोरी भी है जिसके पाँव के गहने में पद्म जड़े है। वहीं धीरसंग भाई की गोरी है जिसके मुख से अमृत टपकता है। अतः गरबे में सभी मौजूद है राधा गोरी आप भी आ जाओ।

छेलाजी रे, मारे हाटु पाटणथी

छेलाजी रे। म्हारे हाटु पाटण थी पटोळा मोंघा लावजो
अेमारुडा मोरलिया चितरावजो, पाटण..... छेलाजी रे।
रंग रंतुबल, कोक कसुंबल पावन प्राण बिचावजो रे, पाटण......लावजो
ओल्या पाटण शहेरनी रे, म्हारे थावुं पदमणी नार,
ओढी अंग पटोळुं रे, अेनी रेलावुं रंगधार,
हीरे मढेला चूडलानी जोड, मोंघी मढावजो रे,
पाटण थी पटोळा मोंघा लावजो ।
ओली रंग नीतरती रे मने पामरी गमती रे,
अेने पहेरतां पगमां रे पायल छमछमती रे,
नथणी लवंगियां ने झूमकामां मोंघा
मोती मंढावजो रे,
पाटण थी पटोळां मोंघा लावजो।[2]

अर्थः प्रियतमा अपने प्रियतम (छैलाजी) से पाटण शहर के प्रसिद्ध मँहगी साडियाँ ले आने की मांग करती है, कहती है उन साडियों में मयूर बनवाना, लाल रंग हो, जानदार हो। मुझे पाटण शहर की पद्मनी नार बनना है। मँहगा पटोळा (रेशमी) पहन उसका रंग चारों ओर फैलाऊंगी फिर वह हीराजडित चूडियों की मांग करती है। जिसे पहन वह इतराएगी। फिर घुंघरु वाली पायल की मांग करती है जिसे पहनते ही छमछम बज उठेगी। अंत में नाक की नथ व महेंगी झूमके मांगती है ले आना।

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - स. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 375
2. सौरभ रास लोकगीत संग्रह - सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 51

झांझर अलक मलक थी आव्युं रे–

झांझर अलक मलक थी आव्युं रे, मने वहालाअे पग पहेराव्युं रे,
मारुं झमके झमझम झांझरणुं।
अेने घुघरे घमके तारलिया, अेने पडखे चमके चांदलिया,
अेने मोढे ते बेठा मोरलिया, मारुं झमके झमझम झांझरणुं।
अे राजाअे माग्युं झांझरणुं, अे राणीअे माग्युं झांझरणुं,
लेय बहाले दीधुं मने झांझरणुं, मारु झमके झमझम झांझरणुं,
झांझर पहेरी पाणीडां हुं चाली, मारी हरखे ते सरखी साहेली,
अेने टमकारे लोको नी आंख झाली, मारु झमके झमझम झांझरणुं। झांझर।[1]

अर्थः प्रियतमा गाती है कि झांझर मुल्क से आया है जिसे मुझे मेरे प्रियतम ने पहनाया है जो झमझम झमकता है। उसके घुंघरुं में चांद सितारे चमकते है उसके मुख पर मोर बने है। ऐसे झांझर को राजा रानी ने मांगा पर प्रियतम ने उसे मुझे ही दिया। उस झांझर को पहन मैं पानी भरने गई मेरी सखियाँ अति प्रसन्न हुई, झांझर के ठुमके ने सभी का ध्यान आकर्षित किया मेरा झांझर झमझम बजता है।

वियोगात्मक (विरह गीत)

पियु हमारा शीद चाइला परदेश रे, वाला।
जी रे आ, कागळियां लखी मोकलजो कटका, मारा वाला।
जी रे आ, हैयामांथी नथी नीकळता चटका, मारा वाला।
जी रे आ, चार महिना चोमासुं घेरे आवो रे, मारा वाला।
जी रे आ, चोमासानी हेली तमुं ने लागशे, मारा वाला।
जी रे आ, वाडीअे जाऊं तो वाडीये लीला लेर रे, मारा वाला।
जी रे आ, घेरे आवुं तो बळी भस्म थई जाऊं, मारा वाला।
जी रे आ, चार महिना शियाळो घेरे आवो रे, मारा वाला।
जी रे आ, शियाळानी ठंडी तमुंने लागशे, मारा वाला।
जी रे आ, नीर विना तो नागरवेल सुकाय रे, मारा वाला।
जी रे आ, मूळमांथी तो नीकळे वहि जाय, मारा वाला।
जी रे आ, चार महिना उनाळो घेरे आवो रे, मारा वाला।
जी रे आ, उनाळाना तडका तमुंने लागशे, मारा वाला।
जी रे आ, धणी विना तो नवधणियां लूंटाय रे, मारा वाला।
जी रे आ, टोया विना तो पोपट पंखी खाय, मारा वाला।[2]

---

1. सौरभ रास लोकगीत संग्रह - सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 53
2. गुजरातनां लोकगीतो : सं. मधुभाई पटेल, पृ. 138

अर्थः अपने पति प्रियतम के वियोग में प्रियतमा पत्नी गाती है। राजा भर्तृहरी ने बैराग धारण कर विदेशगमन किया। पत्नी आर्द्र स्वर में उच्चार करती है हे प्रियतम तुम किस कारण परदेस चले । गए ही हो तो पत्र लिखकर भेजना। हृदय में से टीस उठती है शांति नहीं है। चार महीने वर्षा का मौसम है घर आ जाओ बरखा से पानी छींट लेंगे। हे प्रिये खेतों में जाती हूँ । अब चार महीने जाड़ेका मौसम है आपको ठंड लगेगी। पानी के बिना बेले भी सूख जाती है नीचेसे अग्नि की ज्वाला निकलती है। चार महीने गर्मी का मौसम है। इसमें आपको गर्मी धूप लगेगी अतः घर आ जाओ। हाय। बिना पति के तो मैं लुट गई। ज्वार के पौधे के रखवाले के बिना उसे तोता आदि पक्षी खा जाते है। आप बिन कही चैन नहीं अब घर आ जाओ।

वालमनो विजोग

भाई रे कूकड वीरा विनवुं रे,
घडी अेक मोडो रे बोल्य वाला।
वालमने जावुं चाकरी रे,
सवारे वार कवार वाला
वालम वळावाने हुं गई थी रे,
ऊभीती वडला हेठय वाला।
वडलो वरसे झीणा मोतीडे रे,
भींजाय दखणीना चीरवाला।
आंसुडे भींजाय जादर कांचळी रे,
तूटी छे कमखानी कस वाला।
वालम वळावीने हुं आवी रे,
ऊभी थी नेवलां हेठय वाला।
ससरो के वहुने शुं थियुं रे,
सासु के वहु नानुं बाळ वाला।
जेठं के वहुने शुं थियुं रे,
जेठाणी के वहुने वळग्युं झोडवाला।
चतुर होय ते समजी रे लेजो,
मूरख करे रे विचार वाला।[1]

अर्थः बालम का वियोग नारी मुर्गे से कहती है भाई मुर्गे तुझसे विनती है कि एक क्षण तू जरा देर से बोलना मेरे प्रियबालम को नौकरी पर जाना है। प्रातः शुभ अशुभ दिन मैं बालम को विदा करने गई थी बड के पेड तले खड़ी थी कि बड़ छोटे मोती बरसाने लगा जिससे मेरी साडी (वस्त्र) भींग गया। वियोग में आंसुओ से मोटी अतलस की चोली भी भीग गई। बालम को बिदा कर मैं नेवले के नीचे खड़ी थी जिसे देख ससुरजी ने कहा

1. रासडानो रंग – सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 98

कि बहू को क्या हुआ है? सास बोली बहू अभी नन्ही बच्ची है, जेठजी बोले बहू को क्या हुआ जेठानी बोली बहूको भूत प्रेत लग गया है। यदि चतुर हो वह तो समझलेगा बहू को क्या हुआ परंतु मुर्ख विचार ही करता रहेगा।

परदेस में.

आज मेरी चोली भींजाणी रंग रेस में,
आज मेरा पियु गया परदेस में।
कोरी ते हांडी में दहींडा जमाया,
आज मेरा जमनेवाला परदेस में।
कोरी ते मटकी में चावल पकाया,
आज मेरा खानेवाला परदेस में।
कोरे ते कूंजे में ठंडा पाणी,
आज मेरा पीनेवाला परदेस में।
कोरा ते पलंग में सेज बिछावी,
आज मारो पोढणवाळो परदेस मां।[1]

अर्थः यह गीत श्रमिक वर्ग जाति में गाया जाता है। नीचली जातियों में भी स्त्री हृदय तो स्नेह दिवाना ही होता है वियोगिन मारी को उसके घर के सारे तमाम वैभवपति बिना दुसह्य लगते है। जितना अच्छा है वह सब स्वामी का ही है यही रमणी का सूत्र है। गाती है आज मेरी रंगीन चोली भीग गई है आंसु से मेरा प्रिय परदेस गया है। कोरी हांडी में दही जमाया पर खानेवाला तो परदेस में है, मटकी में चावल पकाए, कोरी घड़े में ठंडा पानी है पर पीनेवाला प्रिय परदेस में है। मैंने पलंग में सेज बिछाई पर आज उस पर सोनेवाला मेरा प्रिय परदेस में है।

बाळावेश अबोलडां

सैयर मोरी, शेरियुं वाळी मेलो जो।
शेरियुं नो चालनार रे हमणां आवशे रे लोल।
        अे मूरखडे हाथे शेरियुं वाळी जो,
अबोलडा लीधा रे बाळावेशमां रे लोल।
        सैयर मोरी, दातण लावी मेलो जो,
दातण नो करनार रे हमणां आवशे रे लोल।
        अे मूरखडे हाथे दातण लीधां जो,
अबोलडां लीधां रे बाळावेशमां रे लोल।
        सैयर मोरी, भोजन पीरसी मेलो जो,
भोजन नो करनार रे हमणां आवशे रे लोल।

---

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 9

अे मुरखडे हाथे भोजन लीधा जो
अबोलडां लीधा रे बाळावेशमां रे लोल।
सैयर मोरी, ढोलिया ढाळी मेलो जो
पोढण नो करनार रे हमणां आवशे रे लोल।
अे मुरखडे हाथे ढोलिया ढाळ्या जो।
अबोलडा लीधा रे बाळावेशमां रे लोल।[1]

अर्थः पत्नी प्रिय पति के वियोग में गाती है अरी मोरी सखियों आज घर आंगन गली साफ करवाओ इस गली में चलनेवाला मेरा प्रिय अभी आएगा। उसने बचपने में मुझे न बोलने की प्रतिज्ञा ली है। री सखियों दातुन ला कर रख दो दातुन करनेवाला अभी आ पहुँचेगा। सखियों भोजन भी परोसकर रख दीजो भोजन करनेवाला अभी आ पहुँचेगा री मेरी सखियों प्रिय के विश्राम हेतु पलंग बिछा देना सोनेवाले मेरे प्रियतम अभी आ पहुँचेंगे।

नो दीठी

माडी । बार बार वरसे आवीयो
माडी। नो दीठी पातळी परमार्य रे जाडेजी मा।
मोलुं मां दीवो राग बळे रे।
दीकरा हेठो बेसीने हथियार छोड्य रे कलैया कुंवर
पाणी भरीने हमणां आवशे रे।
माडी। कूवा ने वाव्युं जोई वळ्यो रे,
माडी। नो दीठी पातळी परमार्य रे जाडेजी मा।
मोलुं मां दीवो शग बळे रे।
दीकरा.......................... कुंवर।
दळणां दळीने हमणां आवशे रे।
माडी। घूंटीयुं ने रथडा जोई वळ्यो रे,
माडी । नो दीठी............... मा।
मोलुमां...............रे।
दीकरा..........................कुंवर
धोण्युं धोईने हमणे आवशे रे।
माडी नदीयुं ने नेरां जोई वळ्यो रे,
माडी। नो दीठी पातळी परमार्य रे जाडेजी मा।
मोलुमां दीवो शग बळे रे।[2]

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 25-26
2. मेघाणी ग्रंथ भाग-2- सं उमाशंकर जोशी, पृ. 214

अर्थः बाहर साल के बाद राजपूत घर आता है। झरोखे में दीपक जल रहा है। परंतु सौंदर्यवान पत्नी कहाँ है? माता से पूछा तब बोली जरा शांति से हथियार एक और रखकर बैठ अभी पानी भर कर आएगी। बेटा बोला माँ कुएँ तालाब सब देखा पर पत्नी कहीं नहीं है। माँ बोली बेटा आटा पीसकर अभी आएगी, बेटा बोला माँ सारी चक्कियाँ, रथ सब देखचुका पर पत्नी न दिखी। माँ बोली बेटा अन्न कूटकर ऊभी आएगी बेटा बोला कूटने का स्थान भी देख चुक पर प्यारी पत्नी न मिली। माँ बोली कपड़े धोकर अभी आएगी, बेटा बोला नदीवाले सब जगह देख आया पर पत्नी ने दिखी। हकीकत में अंततः भेद खुला। हत्यारिन माँ ने ही बहू को मार डाला था। उसकी खून से लथपथ चुनरी सूखती दिखाई दी रोते हुए पति ने स्त्री के वस्त्रों की पोटली खोली । उसके वस्त्रालंकार देख पति करुण क्रंदन कर उठा, चित्कार कर उठा।

(८) देवर–भौजाई–ननद के गीत

भाभी नो वींझणो (पंखा)

अधामण सोनुं सवामण रुपुं
तेनो में तो वींझणो घडावियो
वींझयो मेलीने हुं तो जळ भरवा गई ती
नाने दियरिये लीधो।
नाना दियर ! तमने घोडीलो लइआलु
आलो अमारो वींझयो।
घोडीले तो भाभी ! बेसतां न आवडे।
नथी लीधो तारो वींझणो।
नाना दियर तमने हाथीडा लई आलुं,
आलो अमारो वींझयो।
हाथीडे तो भाभी। बेसतां ना आवडे,
नथी लीधो तारो वींझणो।
नाना दियर । तमने बेनी परणावुं
आलो अमारो वींझणो।
तमारी बेनीने पाटले पधरावो
पाछले पडाळ तारो वींझणो।[1]

अर्थः देवर भौजाई संबंधी गीत है। भौजाई गाती है कि आधा मनसोना और सवामन चांदी रुपा (धातु) से मैंने पंखा बनवयाा। जिसे छोड मैं जल भरने गई । तभी छोटे देवर ने उस पंखे को ले लिया। अब भाभी को लौटा नहीं रहा तभी भौजाई लाड से कहता है छोटे देवरजी तुम्हे घोडा ले दूँगी मेरा पंखादे दो दिवर ने कहा भाभी घोडे पर बैठना मुझे नहीं आता। भाभी बोली हाथीले दूंगी, देवर बोला हाथी पर भी बैठना नहीं आता।

---

1. रासडानो रंग - सं. खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 90

मेने आपका पंखा नहीं लिया। तभी भौजाई बोली तेरे संग देवरजी अपनी बहन ब्याहूँगी अब तो पंखा दे दो देवर बोला पहले बहन को विवाह के आसन पर बैठाओ। भाभी मान जाती है। तभी देवर बोला घर के पिछवाडे आपका पंखा रखा है।

भाभी तुंने तागी जी

ऊठो लखमण जति वीरा वाडीये पधारो जी रे।
वाडीनां वनफळ चाखी जोयां वनफळ लाग्यां मीठाजी रे।
वीणी चूटी छाब भरी मंदिरीये मोकलाव्यां जी रे।
खोबे भरी नणंदने आव्यां नणदीबाई रिसाणां जी रे।
चीर अेटलां चोळी नाख्या चूंदडी न ओढी जी रे।
डाबला डूबली उडाडी नाख्यां टीलडीन चोडी जी रे।
क्यो तो नणंदबाई कडलां घडावुं काबीनी बब्बे जोड्युं जी रे
क्यो तो नणंदबाई चूडला घडावुं बंगडीनी बब्बे जोड्युं जी रे।
क्यो तो नणंदबाई नथडी घडावुं टीलडी बे बेजोड्ु जी रे ।
क्यो तो नणंदबाई साडी सीवरावुं चूंदडी बे बेजोडुं जी रे।
हवे नणंदबाई रीस उतारो क्यां सुधी रीसासो जी रे।
भोळी भाभी तुं तो भोळवाई गई, में तो तुजने तागी जी।[1]

वीर अने देर '

कूवामां कारेलडीने अवेडामां वेल्य,
    काना नागरवेल्य नागरवेल्य
अेवु कारेलुं तोडय अेने झीणुं करी मोळ्य,
    काना......................य।
झीणुं करी मोळ्य, इ तो घी अेथी वघार्य,
    काना......................य।
घी अे थी वघार्य इ तो जमे मारो वीर,
    काना......................य।
कूवामां..................वेल्य
    काना......................
अेक कारेलुं तोडय अेने मोटुं करी मोळ्य,
    काना......................य।

1. रासडानो रंग – सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 137

मोटुं करी मोळ्य अने तेलेथी वघार्य,

काना......................य।

तेलेथी वघार्य इ तो जमे मारो देर,

काना......................य।

ढींचण सामो ढोलियो ने हैया सामी खाट,

काना......................य।

पोढशे मारो वीरो अने देर पाया हेठ,

काना नागरवेल्य नागरवेल्य।[1]

अर्थः गाँव की स्त्री के हृदय में देवर के प्रति स्नेह से ऐसी ही अपने भाई जैसी ठिठोली निकलती है। भौजाई गाती है कि कुएँ में करेला और कूडे करकट में बँगला पान। एक करेला तोड़ उसे बारीक काट, घी से तड़का लगा सब्जी बनेगी उसे तो मेरा भाई खाएगा । फिर गाती है एक करेला तोड़ उसे बड़ा बड़ा काट, तेल से तड़का लगा । सब्जी बनेगी उसे तो तेरा देवर खाएगा ऊंचे पलंग और ऊंची चारपाई पर तो मेरा भैया राजा सोएगा और देवर मेरा चारपाई के पैरों तले नीचे सोएगा।

कापडुं

सवामण सोनानुं कापडुं रे, अधमण रुपानां भरत भरायां कापडुं भरते

सामे ओरडीए घोळीडा रे, सारा जोई जोई लो, मारी नणदी। कापडुं भर्युं रे।

तारा धोळीडाने शुं रे करुं रे, लागी छे कापडानी रढ, मारी भाभी। कापडुं भर्युं रे।

मारा महियरनुं कापडुंरे, अे चम आल्युं जाय, मारी नणदी। कापडुं भरत भर्युं रे।

सामे ओरडीअे झोटटीओ रे, सारी जोई जोई लो मारी नणदी। कापडुं भरत भर्युं रे।

तारी झोटडीओने शुं रे करुं रे, लागी छे कापडानी रढ, मारा भाभी। कापडुं भरत भर्युं रे।

थाळी भरेला रुपैया रे, सारा जोईजोई लो, मारी नणदी। कापडुं भरत भर्युं रे।

तारा रुपैयाने शुं रे करुं रे, लागी छे कापडानी रढ, मारी भाभी । कापडुं भरत भर्युं रे।

सामी वळगणिये कापडुं रे, लईने दीसतां रहो, मारी नणदी। कापडुं भरत भर्युं रे।

सामा तो मळजो भीलडा रे, कापडुं लूटालूंट, मारी नणदी। कापडुं भरत भर्युं रे।

सामा ते मळजो नागडा रे, आगळ डसजो नाग, मारी नणदी। कापडुं भरत भर्युं रे।[2]

अर्थः ननद भौजाई का गीत है (ब्याह के बाद ननद को भाभी के वस्त्रों में से एक कींमती वस्त्र पसंद आ गया जिसे पाने की वह हठ करती है। भाभी गाती है कि सवामन सोना से जडित मेरा वस्त्र (कापड़ा ओढ़नी) है जिसपर रुपा का अमूल्य काम (कारीगरी) की गई है। (कढ़ाई) से भरा है। सामने के कमरे में घोळीडा है उसमें से अच्छे चुन चुन लो ननद बोली - का मैं क्या करुं मुझे तो कीमती ओढ़नी ही चाहिए । भौजाई बोली ये तो मेरे मायके की अमूल्य भेंट है इसे कैसे कर दे दूँ, सामने के कमरे में झावडिया है उसमें से अच्छे

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 84-86

चुनलो। ननद ने मना कर दिया। भौजाईने फिर समझाकर कहा रुपैया पैसों की थाली भरी पडी है उसमें से कुछ ले लो पर जिद्दी ननद न मानी और भौजाई ने अंततः उसे ननद को दे दिया इसे लेकर कहा मेरी नजरो से दूर हो जाओ। फिर अंतर से दुआ निकलते बोली काश भगवान करें, रास्ते में आदिवासी लुटेरे मिले जो तुझसे कपडा लूँट ले या भगवान रास्ते में नाग मिले जो तुम्हे डस ले।

गीत – भाभी ते चाली जोगी जोगटे रे लोल

नणंद ने भोजाई नी सरखे सरखी जो, सरखे सरखी जोड,
नणंद ने भोजाई पाणीडां संचर्या रे लोल, भाभी मोरी रे पाणीडां ने जाव(2)
पाळे ते ऊभो जोगी जोटडो रे लोल, नणदी मोरी चालो आपणी साथ
पाळे तो ऊभो जोगी आपणने शुं रे करे रे लोल, नणदी मोरी जुओ जोगीना रुप(2)
तमारो वीरो छे जराक शामळो रे लोल, भाभी मोरी रे जाव जोगीनी साथ(2)
शामळीयो वीरो भले मारे घेर रह्या सोल, नणदी मोरी रे आलुं हैयानो हार(2)
रखे न तो संभळावती तारा वीरने रे लोल, भाभी मोरी रे बल्यो हैयानो हार(2)
जइने संभळावुं मारा वीरने रे लोल, वीरा मोरा रे बांधो घम्मरियाळी केड(2)
थाभी तो चाली रे जोगी जोगटे रे लोल, वीर मारे बांधी घम्मरियाळी केड(2)
जईने आंबी छे भाभी वडोदरे लोल, गोरी मोरी रे चालोने आपण घेर
कोने ते रिसामणे तमे नीसर्या रे लोल, सांभळो मारी सगी नणंदना वीर,
नणदीना रिसामणे अमे नीसर्या रे लोल, गोरी मोरी रे चालोने आपण घेर
बेनी ने वळावशुं अेने सासरे रे लोल।[1]

अर्थ: ननद भौजाई की एक सरीखी जोड़ी (हम उम्र) थी। दोनों पानी भरने गई। तभी दूर से जोगी साधु को देख ननद बोली भाभी मेरी पानी भरने आगे मत जाओ किनारे पर जोगी खड़ा है। भौजाई बोली भले खड़ा हो वह हमारा क्या कर लेगा ननदीजी अरे उस जोगी का रुप तो देखो। तुम्हारे भैया तो जरा साँवले है। ननद मुँह फुला बोली तो जोगी के साथ चली जाओ। मेरे साँवले भैया भले घर पर है। भाभी बोली ननदी तुझे मैं गले का हार देती हूँ पर अपने भैया से यह बात न कहना। ननदी बोली आग लगे आपके ऐसे हार को मैं तो भैया से जा सब कहूँगी कि कमर कस तैयार हो जाओ भाभी तो जोगी संग चल पड़ी है। घर पर भाईने यह सुनते ही कमर कस ती और दौडते हुए भाभी (पत्नी) के पास बड़ौदा जा पहुँचा और बोला ओ मेरी प्यारी गोरी अपने घर चलो। किससे रुठ कर तुम ऐसे चल पडी हो। पत्नी बोली ननदी से रुठकर मैं निकली हो। भैया (पति) बोला अच्छा बहन को ससुराल विदा करेंगे गोरी अब तो घर चलो।

---

1. रासडानो रंग – सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 128

(९) पनिहारी गीत

वहुवारुनी होंश (बहू की अभिलाषा)

लीली लीली ईढोणी हीरनी रे,
मने पाणी भर्यानी घणी होंश रे,
लीली...............रे।
सांकडी शेरीमां ससरो सामा मळ्यां रे,
मने लाज काढ्यानी घणी होंश रे। लीली०
सांकडी शेरीमां जेठजी सामा मळ्या रे,
मने झीणुं बोल्यानी घणी होंश रे। लीली०
सांकडी शेरीमां जेठाणी सामा मळ्यां रे,
मने ठेकडी कर्यानी घणी होंश रे। लीली०
सांकडी शेरीमां देरजी सामा मळ्या रे,
मने हस्या बोल्यानी घणी होंश रे । लीली०
सांकडी शेरीमां वालम सामा मळ्या रे,
मने मोटुं मलकाव्यानी होंश रे। लीली०[1]

अर्थः बहू गाती है कि मेरी ईडोनी हरे रंग की है जिस पर हीरे जड़े है। और उसे ले पानी भरने की मेरी बड़ी चाह है। संकरी गली में सामने ससुरजी मिले मुझे घूँघट निकालने की बड़ी चाह । संकरी गली में जेठजी सामने मिले उन्हें देख धीरे बोलने की बहुत चाह है। संकली गली में पानी भर ओ जेठानी मिली मुझे उनसे ठिठोली करने की बड़ी चाह है। ऐसे ही सामने देवरजी मिले मुझे हँसने बोलनेकी बड़ी चाह। संकरी गली पानीभर आते सामने प्रियतम पति मिले उन्हें देख मुख से मुस्कान बिखरने की बडी चाह है।

वाणियण मोरवाडी रे

अेवी दूधे भरी तळावडी रे, वाणियण मोरवाडी रे,
अेनी मोतीडे बॉधी छे, पाल्य वाणियण मोरवाडी रे।
अेवी वाणियाण पाणीडां संचरीरे, वाणियण मोरवाडी रे,
अेवा राजा घोडा पावां जाय, वाणियण मोरवाडी रे ।
अेने राजाअे मारी कांकरी रे, वाणियण मोरवाडी रे,
अेना बेडलां नंदवाई जाय रे, वाणियण मोरवाडी रे।
वाणियाणे ज लग्यो बेटडो रे, वाणियण मोरवाडी रे,
अेने राजा रमाडवा जाय, वाणियण मोरवाडी रे।
अेना खीनखापना खोयां वेतरयां रे, वाणियण मोरवाडी रे,
अेनी हिरलानी दोरी छे, हाश्य, वाणियण मोरवाडी रे।[2]

---

1 रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 104
2. रासडानो रंग - सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 120

भारी बेडां ने हुं तो नानकडी नार

भारी बेडां ने हुं तो नानकडी नार, केम करी पाणीडां भराय रे,
भम्मरिया कूवाने कांठडे?
गोरी नीची ने ऊँचा कांठडा रे राज। चडतां कमर लचकाय रे,
भम्मरिया कूवाने कांठडे?
सरके साळुडां नीर सीचंता रे राज। कोईनी नजर लागी जाय रे,
भम्मरिया कूवाने कांठडे?
पाणी पाणी थई जती रे, अेवा पाणी भरवा काज रसीली ना जती,
स्त्रीना सुखने कारण पुरुष थाय कुरबान
तो पाणी भरवा महीं शुं झाझुं नुकशान? लोकोमां मश्करी थाय रे,
भम्मरिया कूवाने कांठडे?[1]

अर्थः गाँव की गोरी पानी भरते हुए गाती है कि पानी भरने की गागर बड़ी भारी है और तो नाजुक छोटी सी गोरी हूँ मैं किस प्रकार पानी भरुँ। मैं स्वयं ठिगने कद की नीची हूँ और कुँआ बहुत ऊँचा है चढ़कर पानी भरते हुए कमर लचक जाती है। मेरी ओढ़नी भी सरक जाती है न ज्ञाने किसी की नजर लग जाए। पानी भरते हुए स्वयं भी पानी से भीग तरबरतर हो जाती हूँ। अतः स्वामी कहते है ऐसे पानी भरने न जाया करो गोरी। स्त्री के सुख के कारण पुरुष कुरबान हो जाते है तो फिर पानी भरने में ज्यादा क्या नुकसान होगा। पति बोला लोगों को मजाक का विषय मिल जाएगा अतः ऐसे कुँए पर न जाना।

बेडुं मारुं नदवाणुं

सोनला ईढोणी रे रुपलानुं बेडलुं रे
पाणीडां गई ती तळाव। बेडुं मारुं नंदवाणुं रे।
चोरे ते बेठा रे, बेनी मारो सासरो रे,
केम करी बेडु लई जाऊँ। बेडुं मारुं नंदवाणुं रे।
डेलीअे ते बेठा रे, बेनी मारो जेठजी रे,
केम करी बेडलुं लई जाऊं। बेडुं मारुं नंदवाणुं रे।
मेडीअे ते बेठा रे, बेनी मारो परण्यो जीरे,
केम करी बेडलुं लई जाऊँ। बेडुं मारुं नंदवाणुं रे।
सरडक ताणीश रे, बेनी मारो सणगटो रे,
लांबी ताणीश लाज। बेडुं मारुं नंदवाणुं रे।
घर पछवाडे रे बेनी अेक बावळियो रे,
सोहा वादया चार। बेडुं मारुं नंदवाणुं रे।
पेलो ते सोटो रे, बेनी मने सबोडियो रे,

1. सौरभ रास लोकगीत संग्रह : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 36

सांभर्यां मा ने बाप । बेडुं मारुं नंदवाणुं रे ।
बीजो ते सोटो रे, बेनी मने सबोडियो रे,
सांभर्यां भाई भौजाई । बेडुं मारुं नंदवाणुं रे ।
त्रीजो ते सोटो रे, बेनी मने सबोडियो रे,
सांभर्या सैयरुं ना साथ । बेडुं मारुं नंदवाणुं रे ।
चोथो ते सोटो रे, बेनी मने सबोडियो रे,
जीव गियो अंकलाश । बेडुं मारुं नंदवाणुं रे ।[1]

अर्थः गाँव की गोरी गाती है सोने की ईडोनी व रुपे का मेरा घडा है जिसे ले मैं पानी भरने गई थी तभी मेरा घड़ा फूट गया । चौराहे पर बहना मेरे ससुर बैठे हैं, मैं किस तरह फूटा घडा ले कर जाऊँ । द्वारे पर जेठजी बैठे हैं, घर के ऊपरी कमरे में मेरे प्रियतम बैठे है । मैं किस तरह घड़ा लेकर जाऊँ । फिर कहती है मेरी लंबी ओढनी का बडा सा घूँघटा निकाल लाज से निकल घर जाऊँगी । तभी घर के पिछवाडे कांटेदार पेड है उसकी चार डंडिया तोड़ी गई । पहली लकड़ी सखी जब मुझे मारी गई तभी मुझे मेरे माता पिता याद आए, दीजी लकडीकी मार पर भाई भौजाई, तीसरी लकड़ी की मार पर सखियाँ याद आई और चौथी लकडी की मार पड़ते पड़ते तो सखि मैं अधमरी लाश सी हो गई । क्योंकि मेरा घड़ा फूट गया था ।

मारुं सोनानुं छे बेडुं

मारुं सोनानुं छे बेडुं रे, छेल छबीला छोगाळा ।
मारी रुपानी ईंढोणी रे, छेल छबीला छोगाळा ।
हुं तो सरोवर पाणी जईती रे, छेल छबीला छोगाळा ।
मने काळे बळदे मारी रे, छेल छबीला छोगाळा ।
मारां आछां साळु फाटयां रे, छेल छबीला छोगाळा ।
मारी सासु न जाणे सीव्यां रे, छेल छबीला छोगाळा ।
मारी नणंद न जाणे ओढ्यां रे, छेल छबीला छोगाळा ।
मारी जेठाणी न जाणे टांक्यां रे, छेल छबीला छोगाळा ।
तारी सांधवानो सवइयो रे, छेल छबीला छोगाळा ।
तारो ओटवानो रुपाइयो रे, छेल छबीला छोगाळा ।
मारुं सोना छे बेडुं रे, छेल छबीला छोगाळा ।
मारी रुपानी ईढोणी रे, छेल छबीला छोगाळा ।[2]

ईंढोणी

ईंढोणीने कारणीअे में घेली कीधी गुजरात,
के नणदलबाईना वीरा लावो मारी ईढोणी । ईंढोणी

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 101
2. सौरभ रास लोकगीत संग्रह : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 36

ईंढोणीने कारणीअे में मेली दीधा मा बाप,
सुरत शहेरना लावो मारी ईढोणी।
ईढोणीने कारणीअे में मेली दीधा काका कंटब,
के.............................ईंढोणी।
ईंढोणीने कारणीअे में मेली दीधा मामा मोसाळ,
चोखलीडा साहबा लावो मारी ईंढोणी।
ईढोणीने कारणीअे में मेली दीधा भाईभोजाई,
के.................................. ईंढोणी।
के सुरत शहेरना साहबा लावो मारी ईढोणी।[1]

अर्थः गोरी प्रियतम से कहती है ईढोनी के लिए मैंने पूरे गुजरात को पागल कर दिया। मेरे ननद के भाई मेरी ईंडोनी ले आओ इस ईडोनी के लिए मैंने माँ बाप त्याग दिए। सुरत शहर से ईडोनी लाओ। ईडोनी के लिए मैं ने अपने चाचा, रिश्तेदार, कुटुंब, मामा ननिहाल, भाई, भौजाई सभी के त्याग दिया अब सुरत शहर से मेरे मालिक प्रियतम मेरी ईडोनी ले आओ।

(१०) चक्की पीसते समय के गीत

गीत – मारी घंटी

घंटी मारी आरण कारण रे
　　घंटी मारी हैया धारण रे
ओशीके ओधवजी बेठा रे
　　पाटलीअे पर भुजी बेठा रे
गाळे गोविंदजी बेठा रे
　　हाथे हनुमानजी बेठा रे
थाळामां शिवजी बेठा रे
　　पैये परषोत्तम बेठा रे
सुपडे साळगरामनी सेवा रे
　　मीठा बाजराना मेवा रे।[2]

अर्थः स्त्री गाती है कि मेरी चक्की ही मेरा सबकुछ है। चक्की ही मेरे हृदय का आश्वासन है, सहारा है। चक्की पीसते गाती है कि मेरे तकिए पर भगवान श्रीकृष्ण (ओधवजी), आसन पर प्रभुजी, बिराजमान है। चक्की पीसने में भी गोविंद बैठे है चक्की के हाथ पर हनुमानजी बैठे है थाली में शिवजी और चक्की के पहिये में पुरुषोत्तम विराजमान है सूप से साफ करते हुए शालीग्राम की सेवा होती है ऐसे अविरत कार्य कर्म करना ईश्वर की सेवा ही तो है तभी बाजरे के मीठे मेवे सी रोटियां खाने को मिलती है।

---

1. लोकसाहित्य माळा मणको 8 (पोरबंदर पंथकना लोकगीतो) - सं. श्री पुष्कर चंदरवाकर, पृ. 34
2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 152

चोरी

काळी ते भोंना कोदर्या रे,
दळजो झीणेरो लोट।
दळतां ते वहुने झोलुं आवियुं रे,
ऊंदर खाई ग्यो छे लोट।
सासुने घेर त्राजवां रे,
नणदी जोखे छे लोट।
जोखतां ते चपटी अेक ओ छो थियो,
नणदी बोले छे बोल,
सासु मारे छे मार।
दीकरी ते छाना कागळ मोकले रे
माडी तेडवाने आव।
वीरा वेलोरे आव।
हुं केम आवुं, बेनी अेकलो रे,
आडी नदियुं बे चार।
आडा डुंगर बे चार।[1]

अर्थः चक्की पीसते पीसते थकी बहू कों नींद आ जाती है। चूहा चक्की में से आटा खा जाता है। बाद में नदद आटा तौलती है कम पडता है और बहू पर चोरी का आरोप लगाया जाता है। ननद बुरा भला कहती है और सासुमा मारती है। बहू छिप छिप मायके पत्र भेजती है माता मुझे लिवाने आओ। भैया जल्दी से आओ। भाई कहता है री बहना मैं अकेला किस प्रकार आऊँ तेरे घर तक पहुँचने के मार्ग में बाधारुप दो चार नदियाँ और बडे बडे पर्वत है।

झीणुं दळुतो उडी उडी जाय

घंम रे घंटी धमधम थाय, झीणुं दळुं तो उडी उडी जाय।
जाडुं दळुं तो कोई नव खाय। धम०
मारा ते घरमां ससरोजी अेवा,हालता जाय, चालता जाय
लापसीनो कोळियो भरता जाय। धम०
मारा ते घरमां नणंदबा अेवा, नाचतां जाय कूदता जाय,
रांधी रसोइयुं चाखतां जाय। धम०
मारा ते घरमां दियरजी अेवा, रमता जाय, कूदता जाय,
मारुं उपराणुं लेता जाय। धम०
मारा ते घरमां सासुजी अेवां, वाळतां जाय, बेसतां जाय,
ऊठतां बेसतां भांडतां जाय। धम०

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - स. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 152

मारा ते घर मां परएयाजी अेवा, हरता जाय, फरता जाय,
माथामां टपली मारता जाय। धम०
धम रे घंटी धमधम थाय, झीणुं दळुं तो उडी उडी जाय,
जाडुं दळुं तो कोई नव खाय।[1]

अर्थः गाँव की (बहू) स्त्री अनाज पीसते हुए गाती है कि मेरे चक्की (घंटी) तो धम धम की आवाज करती है यदि मैं बारीक पीसती हूँ तो उड़ जाता है ओर मोटा पीसती हूँ तो कोई नहीं खाता। बहू गाती है कि मेरे घर में ससुरजी तो ऐसे हैं तो चलते जाते, फिरते जाते (लापसी) चुरमा हलुवा का कौर खाते जाते है। मेरे घर में ननद बाई ऐसे है जो नाचते कूदते जाते हैं और पकाया हुआ भोजन चखते जाते हैं। मेरे घर में देवरजी ऐसे हैं जो खेलते कूदते जातें है और मेरी तरफदारी करते जाते है। मेरे घर में सासुजी ऐंसे जो झाड़ू लगाते, उठते, बैठते मुझे बुरा भला कहती जाते है। मेरे घर में मेरे पतिदेव ऐसे है जो घूमते मेरे सर पर थपकी मारते जाते है।

आणुं करवा आव्यो (पीसती वक्त गाने वाला गीत)

बार बार वरसे रे वीरो आणुं करवा आइवा रे,
फळिया वंचे रे लीली लींबडी,
घोडीने बांधो रे लीली लींबडी हेठे रे, लींबडीनी हेठे
घोडाने बांधो रंगत मेहल मां।
घोडीने मांडजो वीरा। सुखवेलिया चोखा रे(2)
घोडा ने मांडजो दाळ मसूरनी।
घोडीने पाजो वीरा। तेलिया तळावे रे(2)
घोडाने पाजो रे काचनी कूंडीमां।
वीराने सारु रे सेव रे वसावी रे(2)
जमता जावो रे मारा माडी जाया वीर रे।
बार बार वरसे रे...............रे,
आणुं करवा आव्यो, फळिया वचे रे लीली लींबडी।[2]

अर्थः बारह साल के बाद भाई बहन के घर आया है। आँगन के बीचोबीच हरे नीम का वृक्ष है। घोड़ी को नीम तले बाँध दो और घोडे को रंग महल में। घोड़ी के लिए अच्छे प्रकार के चावल पका खाने को देना और घोड़े को मसूर की दाल। घोडी को चिकने तालाब पर पानी पिलाना और घोड़े को काँच की गागर में। भाई तेरे लिए तो मैंने सेवैयाँ बनाई है जिसे जरुर खाते जाने। बारह साल बाद जो पधारे हो।

1. भाल प्रदेशनां लोकगीतो : सं. श्री जोरावरसिंह जादव, पृ. 14
2. लोक साहित्य माळा मणको 6 (सूरत जिल्लानां लोकगीतो) : सं. श्री चूनीलाल भट्ट, पृ. 254-255

(११) रेंटियो (चरखा गीत)

झमरख रेंटियो
वांकोचूंको बावळियो वढावुं जो
तेनो रे घडावुं रे झमरख रेंटियो
अे रेंटुडे झीणां सूतर आवे जो
तेनी रे वणावुं रे वीरने पामरी
मारो वीरो वहेती नदीये नाय जो
अंबोडो छोडे ने फूलडां खरी पडे
वांको चूको बावळियो वढावुं जो
तेनो रे घडावुं झमरख रेंटियो
अे रेंटुडे जाडां सूतर आवे जो
तेनो रे वणावुं रे बेन ने धाबळो
मारो देर तो खाडे खबुचिये नाय जो
अंबोडो छोडे ने कीडा खरी पडे।[1]

अर्थः टेढ़ेमेढे कॉटेदार पेड को कटवाकर उसका तो मैं चरखा बनावाऊँ। उसी चरखे से यदि मही सूत कँतेगा तो उससे वीर के लिए वस्त्र बनवाऊँगी। मेरा भाई बहती नदी से नहाएगा अपने बचपन के बालों का जूडा खोलेगा तो फूल बिखरेंगे। यदि उस चरखे से मोटा सूत कँतेगा तो उससे बहन के लिए कंबल बुनूँगी। मेरा देवर तो खड्डे में भरे पानी से नहाएगा और बालों का जुडा खोलते ही कीड़े गिरेंगे।

तमे कांतो रे (मुसलमानी रासडो)

तमे कांतो रे मोरी छेलण बीबियां
तमे कांतो रे मोरी छेलण बीबियां
कैसे कांतु मुआ रेंटिया बी ना मिले
    बावल कपाऊं, तेरा रेंटिया घडाउं - तमे०
    कैसे कांतुं पीटीया तराक बीना मिले
    बरछी भंगाऊं तेरी तराक घडाऊं - तमे०
कैसे कांतु मूआ फरणी बीना मिले,
    ढाल भंगाऊं तेरी फरणी घडाऊं - तमे०
कैसे कांतु पीटीया पूणी बीना मिले
    दाढी पिंजाऊं तेरी पूणीओ वणाऊं - तमे०
कैसे कांतुं मूआ ढांढा बी दुखे
    धोको बनाऊं तेरा ढांढा धोलाऊं - तमे०
कैसे कांतु मूआ लडका बी रोवे
    ढोल बनाऊं तेरा लडका रीझाऊं - तमे०[2]

1-2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. श्री झवेरचद मेघाणी, पृ. 394, 408

रेंटियाने दुखे

रेंटियाने दुःखे हुं तो मैयर मळवा गई ती रे
दादे पूछ्युं रे, दीकरी, अणोसरां केम बेठां रे
लाखना करियावर, दादा, नजर मां न आव्या रे
सासु अमारां मों मचकोडे रे
नणंद आधी पाछी जाता मेंणां बोले रे
अेक रेंटिया विना बधुं छे खोटु रे
काका पूछे रे, दीकरी, पाछांकेम वळियां रे
मासी सासुअे मने पाछी मैयर मेली रे
करियावर मां, काका, अेक रेंटियानी साधु रे
आलो लीलो बावळ काके हरखे बढाव्यो रे
नवला ते सुतारी नवे गाम थी आव्या रे
बत्रीशो रेंटियो बाने काजे घडाव्यो रे
लोहनी त्राक ने समरखा समराना रे
रुपानी माळ ने ऊनमां डामणां रे
अेवी रीते काके बाने रेंटियो घडाव्यो रे
अेक खेतर बाने होंश थी आव्युं रे
बे बळद ने अेक हळ साथी साथे आव्या रे
लइने बेनी ने विशे मूकवा गया रे
जोईने गामना माणस सजी बहु थया रे
सासु नणंद के अेमां नवाई शुं कीधी रे
हरखे खेतर बाअे कपासनां वपराव्या रे
बत्रीशे रेंटिये झीणां सूतर कांत्यां रे।[1]

अर्थः ब्याह के बाद बहू मायके वालों से मिलने जाती है तभी दादाजीने पूछा बिटिया मूँह क्यों फुलाए अकेली बैठी हो। बेटी बोली दादाजीजो लाखों का दहेज दिया वह किसी की नजरो में न आया। सासु मेरी मुँह टेढ़ा कर बिचकाती है, ननद आते जाते ताने मारती है क्योंकि एक चरखे के बिना सभी को बुरा लगा है। चाचा पूछते है बिटिया वापस क्यों आई हो। बेटी बोली दहेज में एक चरखे की कमी रह गई थी अतः जल्दी से चाचा ने हर्ष पूर्वक बाळ (कांटेदार झाड़ी) को कटवाया, बड़े गाँव से बढई बुलवाया और बिटिया के लिए चरखा बनवाया जिसमें लोह, रुपा व ऊन का प्रयोग किया गया। उसके अलावा कि खेत भी बिटिया को खुशी खुशी दिया। दो बैल व हल चलाने वाला भी साथ में दिया। यह सबकुछ ले बिटिया को छोड़ने ससुराल गए। जिसे देख गाँववाले अति प्रसन्न हुए। पर सास ननद बोली इसमें कौन सी बड़ी बात है जो ये सब दिया। फिर सास ने खुशी से रुई के बीज खेत में डलवाए तत्पश्चात् बत्तीस लक्षणों वाले चरखे पर उसी रुई से सूत काँता।

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. श्री झवेरचंद मेघाणी, पृ. 383

(१२) बालिकाओं के गीत (बाल गीत)

गीत – दादा ! वर जोजो कांई

कन्या दादाजी ने खोळे बेठां अेम भणे रे
दादा ! वर जोजो कांई देश मायलो देव रे
कन्या देरासर पूतळी रे।
कन्या काकाजी ने खोळे बेठां अेम भणे रे
काका ! वर जोजो कांई वाडी मायलो मोर रे
कन्या ढलकती देलडी रे।
कन्या मामाजीना खोळे बेठां अेम भणे रे,
मामा ! वर जोजो कांई अषाढीलो मेघ रे
कन्या झबूकण वीजळी रे।
दादा ! दरशण लाग्यो देरा मायलो देव रे,
दरशामण लागी पूतळी रे
काका खेलण लाग्यो वाडी मायलो मोर रे
खेलामण लागी ढेलडी रे।
मामा ! वरसण लाग्यो अषाढीलो मेघ रे,
झबूकण लागी वीजळी रे।[1]

(चूंदडी-1)

अर्थः प्रस्तुत गीत में कवित्वभरी वाणी में प्रश्नोरा जाति की कुँवारी कन्या ने पति गुणों का बारीकी से वर्णन किया। संसार की श्रेष्ठतम जोडियाँ गिन बतलाई। दादाजी से कहने लगी पतितो मंदिर में स्थित मूरत और स्वयं मूर्ति, पति बागीचे का मोर व स्वयं उसकी मोरनी, पति आषाढ महीने का बादल तो स्वयं बीच चमकने वाली बिजली, पति चंपा का पौधा और स्वयं चंपा के पुष्प की पंखुडी। मेरे लिए ऐसा उत्तम वर ढूँढना।

गीत – अडकं दडकं

अडकं दडकं दहीनां टाकण
दहीं दूझाणुं, ऊर मूर
धतुरानुं फूल
साकर शेरडी खजूर
सो माणस जमाड्यां
अेक बडवो भूख्यो
थाळी लइने ऊठ्यो
चकती चोखा खांडे छे

1. मेघाणी ग्रंथ भाग-2 - सं. उमाशंकर जोशी, पृ. 228

पीतांबर पगलां पाडे छे
राजियो, भोजियो, टेलियो, टूशको
मार भडाका भूसको।[1]

गीत अडकण दडकण दहींना दोणां
दहीं दडूक्यां
श्रावण महिने वेलो हाल्यो
ऊरमूर कातळियो खा खजूर।[2]

नने बच्चे (शिशु) को दुलारते वक्त

धरमपोरनी थाळी रे महीं रमे वनमाळी, फूलडुं लडवायुं।
फूलडे फूलडे छायां रे कोण लडावेलाड? फुलडुं लडवायुं।
खोळे रमाडे बाळ, अेनी माडी लडावे लाड,
फूलडुं लडवायुं।[3]

सभी बाल गोले में बैठकर निम्न खेल खेलते गाते हैं

आनपान पूतळीअे जमाडी जान,
अेक जान भूखी, थाळी लइने ऊठी,
थाळीमां तो कोपरां, बाई तमारा छोकरां,
छैया छोकरां सारां छे, पितानुं पगलुं पाडे छे,
राजा भोजा, तरिया तोजा
माणेकमोती, अरकारी परवारी,
भूम दईने भूस्को।
(फिर सभी बच्चे हाथ पीठ पीछे छिपाकर गाते)
भाई भाई तारा हाथ क्यां गया?
बधां-छाणां मां।
छाणां मांथी शुं मळ्युं?
रुपियो।
रुपियानुं शुं कीधुं?

1-2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं झवेरचंद मेघाणी, पृ. 406
3. गुजरातनां लोकगीतो : ले. मधुभाई पटेल, पृ. 38

कुंभारने आव्यो।
कुंभारे शुं आप्युं?
दोरियो।
दोरियानुं शुं कीधुं?
कूवामां नाख्यो।
कूवे शुं आव्युं।
-पाणी
पाणीनुं कीधुं?
वाडीअे छांट्युं।
वाडीअे शुं आप्युं?
फूल।
फूलनुं शुं कीधुं?
मां देवे चडाव्युं।
मा देवे शुं आव्युं?
लाडवो।
लाडवानुं शुं कीधुं
अडधो में खाधो ने अडधो
काळियो कूतरो लईने नाठो।[1]

भाभी संग गोल फिरकी लेते हुए ९फूदडी)

फू फू फूदडी, कागळिया चींदडी,
चींदडी रंगावशुं, भाभीने पेरावशुं,
चालो भाभी पाणी जइए,
वाणियानुं घर जोतां जइए।
वाणिये आपी चिठ्ठी
भाभी मारी मिठ्ठी
मीठ्ठी थरु तो थवा दे,
बेडुं पाणी भरवा दे,
बेडुं मेइलु ओटले,
वींछी चइडो चोटले
चोटलामां ठींकरी,

1. गुजरातनां लोकगीतो (बालफूदकणां) - सं. मधुभाई पटेल, पृ. 39-41

भाभीने आवी दीकरी
दीकरी दीकरी दिवाळी,
सोनानी घाघरी सिवाडी,
सोनां मेइलां टोडे,
जमाइ आइवा जोडे,
आव रे जमाइ जमता जाव
बे बिलाडी लेता जाव।
अेक बिलाडी राशी,
ते जमाइना माशी।[1]

अर्थः तुकबंदी वाला गीत - ननद भौजाई गोल फिरकी खाते हुए गाती हैं। गोल गोल फिरकी कागज की चीथडीं उस चीथडे को रंगवाएँगे भाभी को पहनाएंगे। चलो भाभी पानी भरने जाएँ, बनिए का घर देखते जाएँ, बनिए ने दी चिट्ठी, भाभी मेरी मीठी। मीठी हुई तो होने दें, घडा पानी भरने दे। घडा रखा ओटले (बरामदे पर) पर बिच्छु चढ़ा चोटी पर, चोटी में मिट्टी (पत्थर) भाभी को हुई बेटी सोने की घाघर सिलवाया, सोने के मोर लगवाए, जमाई साथ में आए। आइए जँवाइ भोजन करते जाओ दो बिल्लियाँ लेते जाओ। एक बिल्ली वह तो जँवाइ की मौसी है।

राती राती चणोठी

राती राती चणोठडी ने बीजूं रातुं बोर,
त्रीजुं रातुं चोळियुं ने दुखियुं रातुं चोळ।
काळो काळो कामळो ने बीजो काग
तेथी काळा मोवाळा ने चोथो काळो नाग।
धोळुं धोळुं पतासुं ने तेथी धोळुं रु,
तेथी धोळो रुपियो ने सौथी धोळु दूध।
पीळी पीळी हळदरडी ने बीजा पीळा पान,
तेथी पीळो केसरी ने चोथुं सोनुं जाए।[2]

संपादित - श्री गिजुभाई और ताराबहन (दुहा और सोरठा में से)

अर्थः रंग से संबंधित गीत है। एक तो लाल लाल रंग चणोठी है तो दूजा लाल बेर। तीसरा लाल रंग सर पर बाँधने काले साफ (पगडी) का है और जब दर्द होता है तब भी लाल हो जाता है। काला रंग एक तो केबल का दूजा कौए का, तीसरा काले बालों का चौथा करले नाग का। सफेद रंग एक बताशे का दूजा रुई का, उससे सफेद रुपिया (सिक्का) और सबसे सफेद दूध होता है। पीला रंग पहले हल्दी का दूजा पीले पत्तो का, उससे पीला रंग सिंह (केसरी) का और चौथा पीला रंग सोने का।

---

1 गुजरातनां लोकगीतो - स. मधुभाई पटेल, पृ. 43-44
2. गुजरातनां लोकगीतो - सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 44

(१३) पौराणिक गीत

गीत – तारामती हरिशचंद्र

बोलो बोलो ने मारा बाळ तारामती बोलावे
उठो उठो ने रोहित बाळ तारामती बोलावे
सत्य धर्मना काजे वेचाया रे, तारामती बोलावे
तमे रह्या छो माळीने घेर, तारामती बोलावे
घंटी पीसीने हाथ मारा सुजाया रे, तारामती बोलावे
दिलमां दुःख घणेरु थाय, तारामती बोलावे
काळी नागज डसीयो रे, तारामती बोलावे
मारा पूर्व जनमनो वेरी, तारामती बोलावे
मारा बाळनो केवो छे काळ, तारामती बोलावे
आखे आंसुडा नी धार वहेती रे, तारामती बोलावे
नयने निद्रा ना आवे लगार, तारामती बोलावे
सारी कुंवरी परणाववा धार्युं में, तारामती बोलावे
मारा स्वप्नो नी थई छे राख, तारामती बोलावे
तारा रुवे जाणे मेह वरसे रे, तारामती बोलावे
साथे सखी रोई रोई गाये, तारामती बोलावे।

कंठस्थ - पूनमबहन सु. पटेल (वडोदरा)

अर्थः पौराणिक कथा राजा हरिशचंद्र पत्नी तारामति व उनके पुत्र से संबंधित गीत है। माँ तारामति अपने पुत्र की मृत्यु पर शोक से विलाप करती गाती है उठो पुत्र तुम्हें तुम्हारी माता पुकार रही है। रोहित उठो। हे राजन आप सत्य के कारण बिक गए, मालीके घर जा ठहरे। चक्की पीस पीस मेरे हाथ सूज गए है, दिल में बहुत दुःख हो रहा है कि मेरे पुत्र को काली नाग ने डस लिया। जो मेरे पूर्व जन्म का बैरी था। स्वामी आज आप कहॉ हो? और मेरे पुत्र यह कैसा समय है मेरी आँखो से आँसुओं की धारा बह रही है नींद तो आँखों से कोसों दूर है, मैं अपने पुत्र को राजकुरमारी संग ब्याहना चाहती थी आज मेरे सारे सुनहरे स्वप्न जलकर राख हो गए (भस्म) तारामति पुत्र की मृत्यु शैय्या पर ऐसे अविरत रो रही है मानो बादल अविरत बरस रहे हो। साथ में उसकी सखियाँ भी रो रोकर गाती है।

कृष्ण जन्म संबंधी पालना गीत

झूलो झूलो पारणीयानी मांय जशोदाजी झूलावे
बांध्यो झूलो कदम केरी डाळ जशोदाजी झूलावे
आसोपालवना तोरण में बांध्या
कंकु केशरना साथिया में पूर्या

आजे आठमनी शुभ रात जशोदाजी झूलावे
चांदो सूरज जशोदा गान गाया केर
मीठा तारलिया पल पल स्मीत करे
प्रगट्या नंद तणा कुमार जशोदाजी झूलावे
सर्वे देवजनो आजे खुशी थया
सर्वे नगरीनो लोकनां मनडा ठर्या
जनम्या भक्तोना भगवान जशोदाजी झूलावे
कमल नयन ना स्वामी शामळिया
बाळभक्तो बांध्या प्रीत पातळीया
तमे भक्तोना तारणहार जशोदा झूलावे।

कंठस्थ - पूनमबहन सु. पटेल (वडोदरा)

अर्थः पौराणिक गीत श्रीकृष्ण के जन्म संबंधित पालने का गीत है। स्त्रियाँ गा रही है झूलो झूलो पालने में कन्हैया यशोदाजी झूला रही हैं। झूला कंदब वृक्ष डाल पर बँधा है। द्वार पर अशोक वृक्ष पत्तो से तोरण बना लगाया गया है। कुंबुंम केसर से शुभ चिन्ह स्वस्तिक बनाए गए। आज अष्टमी की शुभ रात्रि है।चंदा सूरज जशोदा संग गीत गाते हैं मीठे तारे क्षण क्षण चमक कर हँस रहे हैं ऐसे में नंद के कुमार श्रीकृष्ण प्रकट (जन्म) हुए। सभी देवगण आज प्रसन्न हुए नगरपासियों के दिलों को भी ठंडक पहुँची क्योंकि रंगत व कमल से नयनों के स्वामी है जिन्होंने बाल भक्तों से प्रीत लगा ली है आप तो भक्तों के तारणहार है। माता यशोदा झूला झुला रही है।

कृष्ण जन्मोत्सव

जुओ आज गोकुळमां आनंद वरताय छे।
जशोदा लाला नो जन्म उजवाय छे।
आसोपालवना रुडां बांध्या तोरणिया
कुमकुम साथीया ने रंगोळी पूराय छे। जुओ०
सोना केरुं पारणुं ने रेशमनी दोर छे
व्रजनारी आवीने हालरडां गाय छे। जुओ०
ऊंवा ऊंवा करी कानजी रुवे छे
मावडीना वहाल थी अे छानो रही जाय छे। जुओ०
अबील गलाल केवो उडे आभमां
चारे कोर केशरना छांटणां छंटाय छे। जुओ०
नंदजीअे दान दीधा हाथी घोडा पालखी
सखीओ मोहन ने झुलावी हरखाय छे। जुओ०

कंठस्थ - पूनमबहन सु. पटेल (वडोदरा)

अर्थः श्रीकृष्ण के जन्म पर गाँव की स्त्रियाँ गाती है देखो आज गोकुल में चारों ओर आनंद ही आनंद फैला है। यशोदा के कान्हा का जन्मदिन मनाया जा रहा है। अशोक वृक्ष (आसो पालव) के तोरण बँधे है। कुंकुम से शुभ चिन्हा व रंगोली सजाई जा रही है। श्रीकृष्ण का सोने का पालना व रेशम की डोरी है। व्रज की नारियाँ आ आकर पालना झुलावन के गीत गा रही है। ऊंवा ऊंवा कर कान्हा रो रहे है। परंतु माता के प्रेम से दुलार से वह चुप हो जाता है। श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के कारण आकाश में अबील गुलाल उड रहे है चारों ओर केसर का छिड़काव हो रहा है। नंद बाबा ने हाथी घोडो और पालखी का दान दिया। सखियाँ मुरली मोहन को झुला कर हर्षित हो रही है।

कृष्ण – वसुदेव – गोकुल

गीत – वसुदेव ने माथे सुंडलो

सुंडला मां सुदीर श्याम रे वसुदेवजी गोकुल आविया।
घनघोर अंधारी रातलडी वसुदेवजी गोकुल आविया।
थाय वीज तणा चमकारा रे वसुदेवजी गोकुल आविया।
झरमर वरसतो मेहुलो वसुदेवजी गोकुल आविया।
शेषनागे कीधी छांय रे वसुदेवजी गोकुल आविया।
वहे यमुनाजी पुरजोश मां वसुदेवजी गोकुल आविया।
प्रभु स्पर्शे दीधो मारगरे वसुदेवजी गोकुल आविया।
आठम अंधारी श्रावणी वसुदेवजी गोकुल आविया।
श्रीनंद तणा दरबार रे वसुदेवजी गोकुल आविया।
जशोदा मातानी सोडमां वसुदेवजी गोकुल आविया।
सुवाडया सुंदरी श्याम रे वसुदेवजी कन्या लई गया
जसोदा माताजी जागता
निहाळ्या श्री घनश्याम रे मनडा मही आनंदिया
नंदराये ओच्छव आदर्या
दान दीधा अपरंपार रे, वसुदेवनी मथुरा चाली गया।
कंठस्थ - पूनमबहन सु. पटेल (वडोदरा)

अर्थः टोकरी में सुंदर श्याम (श्रीकृष्ण) है जिसे तो वासुदेवजी गोकुल आए। घनघोर अंधेरी रात्रि का समय है, बिजलियाँ चमक रही है। रिमझिम बारीश बरस रही है। बालक श्रीकृष्ण टोकरी में लेटे अतः ऐसे में शेषनाग ने अपनी छत्रछाया भगवान बाल कन्हैया पर धर दी। यमुना नदी पूरे जोश के साथ बह रही थी उफान था, वसुदेवजी के सर पर पानी पहुँचा तभी टोकरी से बाल कन्हैया भगवान के पांव ने जैसे ही यमुना के पानी को छुआ तुरंत ही नदी शांत हो गई व जाने के लिए मार्ग दे दिया। सावनकी अष्मी की अंधेरी रात में नंदबाबा के दरबार (घर) वसुदेव जी आए। यशोदा माता जहाँ लेटी थी, उनकी बाजु में भगवान बाल कन्हैया को लेटा दिया और सोई हुई कन्या को ले गए। माता यशोदा ने जागते ही भगवान घनश्याम (श्रीकृष्ण)

मुख देखा और मन ही मन प्रसन्न हुई। नंदबाबा ने उत्सव मनाये, अनेको अपार दान दिए। और वसुदेवजी मथुरा चले गए, लौट गए।

शबरी

शबरी राम वियोग वन मां उभी झुरती रे
मारो क्यारे आवे राम रटती आठे पहोरे नाम
माथे गरजे वीजळी अने ऊपर पडतो मेह
काया जेनी ध्रूजती तोय ना टूटतो नेह
आतो अंधारे अजवाळे रामने गोतती रे.........शबरी०
पत्थर झाडने पानने कहेती अेक ज वात
अेक दिवस मारा आवशे अंतरनो आ राम
अे तो वन वगडा नां पंछी ने पूछती रे.........शबरी०
पळ पळ युग जेवी जाय छे नयने वरसे नीर
ने हुं अंतरना अजवाळे रामने खोळती रे
शबरी राम वियोगे वनमां झुरती रे।

कंठस्थ - पूनमबहन सु. पटेल (वडोदरा)

अर्थ: शबरी राम का प्रसंग प्रसिद्ध है। प्रस्तुत गीत में उसी का चित्रण है कि शबरी वन में भगवान राम की प्रतीक्षा करते उनके वियोग में खडे खड़े तड़पती है। पता नहीं मेरे राम कब आएँगे? आठो प्रहर रामनाम का जप करती रहती है। शबरी के माथे आकाश में बिजली गरज रही है, वर्षा भी गिर रही है, उसकी काया ठंड से काँप रही है फिर भी प्रभु राम से स्नेह का नाता अटूट है। वह अंधेरे उजाले में राम को ही ढूँढती है। पत्थर, पेड व पत्तो को सिर्फ एक ही बात कहती है एक दिन मेरे राम अवश्य आएँगे जो अंतर के राम है। वन के पंछियों से राम के बारे में पूछती है। शबरी को राम की प्रतीक्षा में एक एक पल एक एक युग जैसे बीत रहा है आँखो से अश्रुधार वहती है। मैं तो अंतर के उजाले से श्रीराम को ढूँढती हूँ। शबरी राम वियोग से वन तडप रही है।

वनरा ते वनमां

वनरा ते वनमां मढी बनावी
त्यां छे सीताजीना वास, मारा वाला।
मढी पछवाडे केवडियो महेके
मरघो चरी चरी जाय, मारा वाला।
तुंने मरघला काल मरावुं,
कांचळियुं सिवडावुं, मारा वाला।
रावणे तो आव्यो जोगीने वेरो,
लै गयो सीता नार, मारा वाला ।
को तो सीताजी चूडलो मढावुं

मेली द्यो रामनां नाम, मारा वाला।

चूडलो ते तारो पथरे पछाडुं, भवोभव राम भरथार, मारावाला।[1]

अर्थः वन में एक कुटिया बनाई वहीं सीताजी का निवासस्थान है। कुटिया के पीछे केवडा (सुगंधित वृक्ष) महक रहा है। हिरन चर चर आता है। सीता माता मन ही मन सोचती है, है हिरन तुझे कल ही मरवाती हूँ फिर तेरे चर्म से कंचुकी सिलवाऊंगी। रावण साधुवेष में आया और सीताजी का हरण कर ले गया। रावण कहता है यदि आप कहें तो सीताजी आपके लिए चुडा (चुडियाँ) बनवा दूँ। माता सीता बोले तेरा चुडा तो में पत्थर पर दे मार फोड़ दूंगी, क्योंकि राम तो मेरे जन्मों-जन्म के साथी है।

बाळुडे वेश

बाई, को ने कियो देश। वनमां चाल्यां रे सीता बाळुडे वेश।

राम लखमण वन चालिया ने साथे सीता नार

त्रणे जणां पंथे पड्यां, अेने पूछे पुरनी नार। बाई०

पूछ्या सरखी वात रे, बाई पूछुं छुं होनार

रोष न आणो, अमे गामडियां घरनार। बाई०

आवा रुपाळा बे बटावडा ने सरखा सरखी जोड।

आमां तमारो स्वामी किया, थइ अमारे होड। बाई०

ओतरा खंडमां अजोध्या ने अे अमारुं गाम,

ससरो मारे भूपत भारे दशरथ अेन नाम। बाई०

राजा पासे वचन मांग्या, माग्यां पोताने काज,

पोतानां ने राज आप्यां, अमने तो वनवास। बाई०

गोरा छे मुज देरीडा, मुज स्वामी भीने वान,

नयणां केरी सान करीने ओळखाव्या भगवान। बाई०[2]

अर्थः वन के रास्ते में गांव की स्त्रियाँ सीताजी से पूछताछ करते कहती है बहन बताओ तो तुम्हारा कौन सा देश है। इतनी नन्ही सी उम्र में बालिका सीता वन में चली। राम लक्ष्मण भी साथ है। तीनो चल पड़े। स्त्रियाँ पूछने लगी बहन बुरा मत मानना एक बात पूछो हम तो गांव की गँवार औरते है। ऐसे दो एक सरीखे स्वरुपवान राजकुमार की जोडी है इसमें तुम्हारा जीवनसाथी स्वामी कौन है? सीताजी उत्तर देती है उत्तरी खंड में अयोध्या नामक राज्य है वही मेरा गांव है। ससुरजी मेरे बडे राजा है दशरथ उनका नाम है। उन्होंने अपनों का राज दिया और हमें वनवास। जो गोरे है वर्ण से वह मेरे देवर है और जो श्याम वर्ण है वही मेरे पति है फिर नेत्रों से नयनों से इशारा करके अपने स्वामी से पहचान कराई।

देवपूजा (शबरी)

सबरी ने घेर राम पधार्या, शी शी करुं मेमानी?

चौद भुवननो नाथ पधार्या, झूंपडी मारी नानी। सबरी०

1-2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं झवेरचंद मेघाणी, पृ. 317

अेक खूणे धूळनो ढगलो, बीजे खूणे वानी,
चौद.......... .... नानी। सबरी०
नाही धोई बाजोठ बेसार्या, तीलक कीधां ताणी,
चरण धोई चरणामृत लीधां, चरणमां लपटाणी। सबरी०
जगना जीवन जमवा बेठा, मनमां हुं मुंझाणी,
त्यां तो ओल्यां बोर सांभर्या, टोपलो लीधो ताणी। सबरी०
भाव मीठा, भावतां भोजन, भावनी पानदानी,
चौद भुवननो नाथ पधार्या, झूंपडी मारी नानी,
सबरीने घेर राम पधार्या, शी शी करुं मेमानी?[1]

अर्थ : शबरी के घर वर्षों पश्चात् प्रभु श्रीराम पधारे हैं। वह सोचती है कि किस प्रकार उनका स्वागत करे। एक कोने में मिट्टी का ढेर है, गंदगी है। चौदह भुवन के नाथ मेरी झोंपड़ी में पधारे हैं। फिर उसने स्नान करवाकर प्रभु को बाजठ पर बिठाया, तिलक लगाया, उनके चरण धो अमृतपान किया। शबरी उनके चरणों में गिर पड़ती है। जगत के जीवनाधार भोजन करने बैठे तब शबरी मन ही मन उलझन में है, क्या खिलाऊँ? फिर तुरंत उसे बैर का स्मरण हो आता है। उसने भावपूर्वक प्रभु को बैर खिलाए। शबरी अति प्रसन्न है।

कमळफूल लेवा (कृष्ण बाल लीला)

सोनला गेडीने रुपला दडुलियो रे कान कुंवर गेडी दडे रमवा जाय,
डुंगरे चडीने दडुलियो दोटावियो रे पड्यो जळ जमना भरपूर। सोनला०
जमनाजी कांठे कदमनां झाडवां रे झाडवे झाडवे काळा नाग
झाडवे चडीने नाग झंझेडिया रे आ ते क्यां थी नानों बाळ? सोनला०
कां तो तारी माता अे मारियो रे कां तो तारा दादाअे दीधा गाळ,
कां तो तारा भाइबंधे तने भोळव्यो रे कां तो तारा वेरीअे बतावी वाट। सोनला०
कां तो तुं भालमांथी भूलो पड्यो रे कां ते तारो लपस्यो डाबो पग,
कां तो तारा छोरुडे छंछेडियो रे कां तो तारा घरमां नार कजात। सोनला०
नथी मारा भाईबंधे मने भोळव्यो रे नथी मारा वेरीअे बतावी वाट। सोनला०
नथी हुं तो भालमां भूलो पड्यो रे नथी मारो लपस्यो डाबो पग,
नथी मारा छोरुडे छंछेडियो रे नथी मारा घरमां नार कजात,
हुं तो तारां कमळफूल लेवा आवियो रे घेर मारी माअे तेड्या छे जाग। सोनला०
नाग विना केम रहे अेनी नागणी रे नर विन केम रहे घरनार
काळी नाग नाथीने कृष्ण पधारियारे जसोदाअे मोतीअे पूर्या थाळ।
सोनला गेडीने रुपला दडुलियो रे।[2]

1. बनासकांठाना लोकगीतो (बरडा प्रदेशना लोकगीतो) - सं. वसंत जोधाणी, पृ. 12
2. रासडानो रंग - सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 49

अर्थः बाल कृष्ण अपने ग्वाल मित्रों संग गेंद खेलने यमुना नदी के किनारे गए। सोने की लकडी व गेंद रुपा (धातु) से बनी है। पर्वत पर चढ़ उन्होंने गेंद गिराई दौडाई जो यमुना नदी में जा गिरी। यमुनाजी के किनारे कंदब के पेड और उनपर काले नाग लटक रहे हैं। झाड पर चढकर नाग कहने लगे या तो तेरी माता ने तुझे मारा है या दादा ने गाली दी है, या मित्रगण ने फुसलाया है या किसी वेरीने यहाँ का रास्ता दिखाया है। यातो रास्ता भूल गया है, या पाँव फिसल गया है, या तो यार दोस्तोंने छेड़ा है या घर में खराब नारी ने तुझे यहां भेजा है। कृष्ण बोले न तो मेरी माता ने मारा है, न दादा ने गाली दी, न मित्रों तो मित्रोने फुसलाया न वेरीने राह दिखाई, न मैं रास्ता भूला हूँ, न ही पाँव फिसला है कोई कारण नहीं है, मैं तो यहाँ मेरी माँ ने घर पर पूजा रखी है उसी के लिए कमल के फूल लेने आया हूँ। नाग बिना उसकी नागिन नहीं रह सकती जैसे घर की नारी अपने पुरुष के बिना नहीं रह पाती। फिर कृष्ण काली नाग को मारकर घर पधारे माता यशोदा ने मोती भरे थाल से उनका स्वागत किया।

राम विवाह

राम लखमण बे बंधवा रामैया राम,
बेई भाई चड्या रे शिकार रे रामैया राम।
रामने ते लागी प्यास रामैया राम,
लखमण वीर पाणीडां पाव रे रामैया राम,
झाडे चडी जळ जोई वळ्या, रामैया राम,
क्यांय जो मळे पाणीना परताप रे
राजा जनकनी बेटडी रामैया राम
इ कन्या बाळ कुंवारी रे रामैया राम
आभनो ते नाख्यो मांडवो रामैया राम,
धरतीना बांध्यां तोरण रे रामैया राम ।
परणे सीता ने श्रीरामजी रामैया राम।
वीजळीनी रोपी छे वरमाळ रे रामैया राम।
हरिअे हथेवाळो मेळव्यो रामैया राम,
जनरख दे कन्यादान रे रामैया राम,
परणे रुडां सीता ने श्रीराम रे रामैया राम।[1]

अर्थः राम लक्ष्मण दोनो भाई हैं बंधु है। दोनों शिकार पर निकले है ऐसे में राम को प्यास लगी। उन्होंने लक्ष्मण जी से पानी पिलाने को कहा। लक्ष्मण जी ने पेड पर चढ़े चारों ओर पानी ढूँढ़ा परंतु कहीं भी पानी के होने का संकेत भी न मिला। राजा जानक की बेटी थी (सीता) जो बाल कुँवारी थी उसके विवाह हेतु आकाश रुपी मंडप तैयार किया गया, धरती के तोरण बाँधे बनाई गई है। श्रीरामने सीताजी का हाथ थाम पाणिग्रहण किया। राजा जनक ने कन्यादान किया। सुंदर जोड़ा श्रीरामजी और सीता का विवाह हो रहा है।

---

1 रासडानो रग - स. खोडीदास भा. परमार, पृ. 136

राम वन गमन

राम ने लखमण बेई भाई वन सधार्या।
साथे सीताजीनो साथ रे,
श्रीरामे गादी भरतजीने सोंपी।
नगरीना लोके सहु वळावा आव्या,
नगरीना लोको तमे पाछेरां वळजो
अमारी माताने हरमत, देजो, श्रीरामे गादी भरतजीने सोंपी।
शिवने सुमंत बेऊ भाई वळावा आव्या,
अमारा बापुने हरमत देजो, श्रीरामे गादी भरतजीने सोंपी।
वनमां ते जईने राम शुं काम करशो,
वन मां ते जईने माता मढी बनावशुं,
मढीनी फरतां फेरां लेशुं, श्रीरामे गादी भरतजीने सोंपी।
मढीनी फरता सीता फूलवाडी रोपे,
चंपो चमेली सीता नतनत वावे,
वावे छे दाडमडीना छोड रे, श्रीरामे गादी भरतजीने सोंपी।
थाळी भरीने सीता वनफळ लई आव्या,
तमारा लावेल अमे माथे चडावीओ
अेकला दुःखी थइने लाव्या, श्रीरामे गादी भरतजीने सोंपी।[1]
कंठस्थ - जीवीबहन बाबुभाई चौहाण (शिहोर)

अर्थः राम लक्ष्मण और सीताजीने वनगमन किया। श्रीरामजीने राजगद्दी अपने छोटे भ्राता भरत को सौंप दी। नगर के सभी लोग इकट्ठे हो गए कहने चले प्रभु तीनो वापस लौट चलिए। राम बोले आप सब हमारी माता को सांत्वना देना। ढाढस बँधाना। शिवसुमंत दोनों भाईयों को बिदा करने आए बोले, प्रभु लौट चलो। रामजी बोले हमारे पिता को हिम्मत देना माता बोली वन मैं जा रामजी क्या करोगे? रामजी बोले वन में जा माँ कुटी बनाएँगे। उसके चारों और प्रदक्षिणा करेंगे। सीताजी वन में कुटिया के चारों और फूलों की फूलवारी उगाती है चंपा, चमेली, दाडिम आदि । सीताजी थाली भरकर वन फल ले आई। रामजी बोले आपके लाए फल हम सर आँखो पर चढाते है। श्रीरामजीने राजगद्दी भरतजी को सोंपी।

राम राज्याभिषेक

आव्या आव्या श्री लखमण
राम अयोध्या फूलरसी।
अयोध्यानी नारी आवी,
लावी कंचन थाळी,

1 गुजरातनां लोकगीतो - सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 151

मूठी भरी मोतीडां लावी,
    रामने वधावाने जाय,
        अयोध्या फूलरसी।
गौरी ते गायना गोबर मंगावो,
    घर मंदिर लीपावो,
माणेक मोतीना चोक पूरावो,
    नारी घोळमंगळ गाय,
        अयोध्या फूलरसी।
सीतापति सिंगाशण बेठां,
    लक्षमण चामर ढोळे,
माता कौशल्या आरती उतारे,
    शोभा न वर्णवी जाय, अयोध्या फूलरसी।[1]
    कंठस्थ - ताराबहन खीमजी चौहाण (गाँव - वेरावळ)

अर्थः चौदह वर्षो के वनवास के बादश्री रामजी लक्ष्मण सहित जब अयोध्या लौटे तो सारी अयोध्या फूलों से सजाई गई। अयोध्या की नारियाँ श्रीरामजी स्वागत हेतु सोने की थाली, मुट्ठी भर कर मोती ले आईं। स्त्रियाँ गाती है गौरी गाय का गोबर मँगवाओ घर मंदिर सब लीपे जाएँ। आँगन माणिक मोतियों से सजाया जाय। नारी आनंद मंगल के गीत गाती है। सीतापति श्रीरामजी सिंहासन पर बैठे लक्ष्मण जी पंखा (चामर) झल रहे हैं। माता कौशल्या उनकी आरती उतार रही है जिसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता।

(१४) ऐतिहासक लोकगीत :

राणक देवडी

वाग्या वाग्या रे जांगीना ढोल, राजा ने घेरे कुंवरी अवतरी।
तेडावो तेडावो रे जाणतल जोषी, इ रे कुंवरीना जोब जोवरावो।
पहेले पाये रे राजा उपर भार, बीजे पाये गढडो घेरशे।
त्रीजे पाये रे अेना पंड ऊपर भार, चोथे पाये शंखेगार मारशे।
मंगावो मंगावो रे चूंदडीने मोडिया, इ रे कुंवरीने भो मां भंडारो।
जासो ओझो रे धूड खोदवा जाय, धूडने खाडे थी बाळक लाधियुं।
जासी ओझी रे झांपलिया उघाडय, आपणे घेरे बाळक लांधियुं।
घेला ओझा रे घेलुं शुं बोल, माना थान विना बाळक न उझरे।
पाशुं पाशुं रे गवरी ना दूध, ऊपर पाशुं साकर शेरडी,
सऊं पाडशे रे रामनां नाम, आपणे पाडशुं राणकदेवडी।

1. गुजरातनां लोकगीतो - सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 155

राणकदेवडी रे पाणीडा नी हार, राजा राखेंगार घोडा खेलवे।
वाया वाया रेवा ने वंटोळ, दू रे वाये छेडला उडिया।
नीरखी नीरखी रे सोळ गज साडी, नीरख्यो सवा गजनो चोटलो।
घेला ओझा रे झांपलिया उघाड, तारी कुंवरीनां मागां आवियो।
अमे छीअे रे कच्छना कुंभार, तमे ईंदरगढना राजिया।
मंगावो मंगावो रे आलालीला वांस, चोरी बंधावो चांपानेरनी।
परणे परणे रे राजा राखेंगार, बाप परणे रे पंड नी बेटडी।
खरेळो खरेळो रे गरवो गिरनार, खरेळा जुनागढना कांगरो।
करळ मा, खरेळमा रे गरवा गिरनार, तारी सह्या कोण चडावशे।
राणकदेवडी अे ऊठीने मार्यो थापो, सल्यातोळाणी बवान हाथनी।[1]

हरचंद राजा

हरचंद राजाने आंगणे आंबलो रे
आंबलानी शीतळ छांय राजा हरचंदर
हरचंद राजाने वेळा बहु पडी रे।
हरचंद वेचे अेनी मेडियुं रे,
मेडियुं ना अरीसा वेचाय राजा हरचंदर
हरचंद................रे।
हरचंद वेचे अेना हाथीडा रे
हाथियुं नी अंबाडी वेचाय राजा हरचंदर
हरचंद................रे।
हरचंद वेचे अेना घोडलां रे,
घोडलांनां वछेरां वेचाय राजा हरचंदर
हरचंद................रे।
हरचंद वेचे शणगारिया रे,
कुंवरियाना शणगारिया वेचाय राजा हरचंदर
हरचंद................रे।
हरचंद वेचे अेनी राणियुं रे
राणियुं कुंवरिया वेचाय राजा हरचंदर
हरचंद................रे।
ईथी वेळा ते केवी जाणवी रे
पोते वेचाणा पापी घेर राजा हरचंदर
हरचंद राजाने वेळा बहु पडी रे।[2]

---

1. रासडानो रग - सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 65
2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं झवेरचंद मेघाणी, पृ. 260

अर्थः राजा हरिशचंद्र के आँगन में आम का पेड है जिसकी छाया अत्यंत शीतल है। सत्य वचन की खातिर राजा हरिशचंद्र अपने महलबेच रहे है। वह अपने हाथी व उसकी अंबाडी भी बेच रहे है। राजा अपने घोडे व उसके बच्चे, श्रृंगार व राजकुमार के श्रृंगार इसके उपरांत अपनी रानियाँ भी बेच रहे है, रानियाँ के बच्चे भी बिक रहे है। इससे करुण कौन सी परिस्थिति हो सकती है जब राजा हरिशचंद्र स्वयं पापी के घर बिक गए।

छप्पनियो दुकाळ (अकाल)

छप्पन, तारी सालमां रे मारी दुनिया दुखी थाय
नाणांवाळा तो पेटमां राजी पेटमां राजी
दूबळा दखी थाय। छप्पन०
घोरडी बेवड राशुं त्रुटी राशुं त्रुटी
खेडी खूट्यां हळ। छप्पन०
खाटला वेच्या, गोदडां वेच्यां
गादले नदरुं जाय। छप्पन०
घाघरा वेच्यां, साडला वेच्या
कापडे नजरुं जाय। छप्पन०[2]

अर्थः सन 1956 की साल इतिहास में अमिट है जब अकाल पडा सारी दुनिया दुःखी थी, दुर्बल दुःखी सब कुछ गया बैल सभी को रस्सियाँ दूटी (अर्थात् मारे गए) हल चलाने को कोई न रहा। चारपाई, गुदडी, गद्दे, साडी, घाघरे कपड़े सभी कुछ इस 1956 की सालमें बिक गया। सब तहस-नहस दुःखी हो गए।

मोरबीनी वाणियाण

कूवा कांठे ठीकरी, कांई घसी ऊजळीथाय,
मोरबीनी वाणियाण मछु पाणी जाय।
        आगळ रे जीवोजी ठाकोर,
        वांसे रे मोरबीनो राजा,
                घोडां पावां जाय।
कर्य रे, वाणियाणी तारा बेडलानां मूल,
जावा द्यो, जीवाजी ठाकोर,
जावा द्यो, मोरबीना राजा,
                नथी करवा मूल।
मारा बेडलामां तारा हाथीडा बे डूल। मोरबी।
कर्य रे, वाणियाणी, तारी ईढोणीनां मूल,
जावा द्यो, जीवाजी ठाकोर
जावा द्यो मोरबीना राजा

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 430

नथी करवां मूल।
मारी ईढोणी मां तारा घोडलां बे डूल। मोरबी।
कार्य रे, वाणियाणी, तारी पानियुनां मूल
जावा द्यो, जीवाजी ठाकोर,
जावा द्यो मोरबीना राजा,
नथी करवां मूल।
मारी पानियुंमां तारी राणियुं बे डूल। मोरबी
कर्य रे वाणियारी, तारा अंबोडाना मूल
जावा................ ठाकोर
जावा द्यो.............राजा
नथी........
मारा अंबोडा मां तारुं माथुं थाशे डूल। मोरबी।[1]

अर्थः मोरबी (सौराष्ट्र में) को बनिये जातिकी सौंदर्यवान स्त्री मछु नदी पर पानी भरने जाती है। उसे पाने की लालच में मुखिया जीवोजी ठाकोर आगे और मोरबीके राजा पीछे दोनो घोडो को पानी पिलाने के उद्देश्य से जाते है। वहाँ जा स्त्रीको लालच दे कहते है अरे बनियास्त्री चल तेरे घड़े का मोल लगा वह बोली जाने दो ठाकुर, राजन मेरे घड़े में आपके दो हाथी डूब जाएँगे। अर्थात् घडे का कोई मोल नहीं। फिर उसस्त्रीसे ईडोनी का मोल लगाते है वह कहती है मेरी ईडोनी में तेरे दो घोडे डूब जाएँगे अरी स्त्री चल तेरी पॉव का मोल लगा वह बोली तेरी दोनों रानियाँ मेरे पाँव की बराबर न कर सकेगी दोनो गुल हो जाएँगी। चल री तेरे जूड़े का मोल लगा स्त्री बोली मेरे जूड़े में तेरा स्वयं का मस्तक नीलाम हो कत्ल हो जाएगा। इतना सब होने के बाद लाज के मारे दोनों उस दिन से घोडो को पानी पिलाना भूल गए।

मीरा दातार

पीर ऊनामां मीरां दातार ओलिया रे
पीर आंधळा आवे रे पीरनी दरगाहे रे
पीर आंख्युं दियो घेर जाव रे। मीरां दातार
ऊनामां मीरां दातार ओलिया रे
पीर वांझियां आवे रे पीरनी दरगाहे
पीर पुतर दियो घेर जायें रे। मीरा०
ऊनामां...................रे
पीर पांगळां आवे रे पीरनी दरगाहे रे
पीर पग दियों घेर जावै रे। मीरा०
पीर कोढियां.............रे
पीर कोढियांने काया अलावो रे। मीरा०
पीर उनामां मीरां दातार ओलिया रे।[2]

1-2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) – स. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 266, 430

भरथरी

धरमी राजाने घेर कुंवर जलम्या जी रे
पाडवां कुंवरियानां नाम
तेडावो जाणतल तेडावो जोशीडाजी, पाडवा0
पेलुं पुस्तक के हरिभाई वांचियुं जी
नाब्या कुंवरियानां नाम
बीजुं पुस्तक पंडे वांचीअेजी। नाव्या
त्रीजुं पुस्तक – कुंवरिया नाम राजा भरथरीजी
छोडी द्यो बंगाळीनुं राज
बार वरसे बाळो राज करे जी
पछी जोगीनो अवतार
बाळुं रे बरामण तारां टीपणां जी
तोडुं तारी जनोयुं ना ताग
बारे वासानुं बाळक बोलियुं जी
माता मत दियो गाळ
सो नले मढावुं बामण टीपणुं जी
साधु तारा जनोइना ताग।
माता, मत दियो गाळ
भाग्यमां लखियेलो तोय
छी ना लखियेल को ही नही चूके जी
लमणे लखेलो छे भेख
बार वरस, शणी पूरा थियां जी
सपनुं आव्युं समी सांजनुं जी
बावो जोगी बमीश
घेर घेर आवीश भीख
फेरवी ढाळुं रे खावा ढोलिया जी।[1]

अर्थः धर्मनिष्ठ राजा के घर कुँवर ने जन्म लिया। उसके नामकरण हेतु पंडितजी को बुलावाया। हो तीन पुस्तक पोथी पढ़ने के बाद कुमार का नाम भरखरी रखा गया। वह बारह सालका राज करेगा तत्पश्चात् जोगी (साधु) बन जाएगा। माता गुस्से में बोली रे ब्राह्मण ला मैं तेरी पोथियां जला दूँ तेरी जनेऊ के तार तोड दूँ। तभी बारह दिन का बच्चा बोला माता उसे गाली मत दीजिए। ब्राह्मण तेरी पोथी तो सोने से सजाऊँ तेरी जनेऊ के टूटे तार सी दूँगा। माता उसे गाली मत दो। भाग्य में लिखे लेख विधाता ने छठी के लिखे लेख कदापि मिथ्या न होते। यदि मेरे माथे बैराग साधुवेष लिखा है तो वही होगा। बारह साल रानी पूर्ण हुए। सांझ को सपना आया कि जोगी बनूँगा और घर घर भिक्षा माँगता फिरुँगा । आपके विश्राम हेतु खटिया बिछाऊँ।

1-2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) – सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 434

(१५) वीरतापरक गीत

घोघो चड्डुआण

घोघा। तारो वाड्यमां वास, तलसाणे घोघा तारा बेसणां रे,
घोघो ऊभो गांधीडाने हाट, रासलबा बेनी कंकोडी वोरे रे।
घोघो पूछे वळी वळी वात, आवडी कंकोडी बेनी क्यां वरे रे
नावण करशे घोघो चुवाण, आवडी कंकोडी बेनी क्यां वरे रे
घोघो ऊभो सरोवरियानी पाळ, रासलबा बेनी पाणी भरे रे,
घोघो पूछे वळी वळी वात, आवडां पाणी रे बेनी क्यां वरे रे,
नावण करशे घोघो चुवाण, बार बार बेडे रे घोघो अंघ्नोळ करे रे।
ढाळ्या ढाळ्या रुपला बाजोठ, फरतां मेल्या रे सोना सोगठां रे,
रमे रमे घोघो चुवाण, बेळा रमे रासल बेनडी रे।
चडी चडी ऊगमणी वार, आथमणा थाय रीडिया रे,
वारे चडजे घोघा चुवाण, भेळां चडे रासल बेनडी रे।
बळो वळो, रासल बा बेन, तमारे सोंई छोरुं वाछरुं रे,
छोरुं वाछरुं सार संसार, मारे माडीनो जायो अेकलो रे।[1]

अर्थ: यह वीरता परक गीत है। जिसे घोघा चहुआण नामक वीर की गाथा वर्णित है। नवरात्रि में छोटे बच्चे नाग के फन जैसा पुतला बना उसके बीच हृदय में दीप बैठा दीपक जलाते हैं फिर उसे अपने साथ ले लड़ाई का वर्णन करते हुए घर घर घूमते हैं। घोघा कोई वीर क्षत्रिय था जोस्वयं गाँव की गायों की रखवाली करते वक्त गोदकडा जातिके काठियों से लड़ते हुए मारा गया और सर्प बना । उसका स्थानक (समाधि) तलसाणा गाँव मे तलसाणा नाग से प्रसिद्ध है। इस रासडे में जीत उसकी बहन रासलबा का चित्र उभर कर चमक उठा है जिसने गृहिणी होने के नाते पानी के घड़े भरे, भाई को नहलाया और फिर रणचंडी रुप बहन भाई के साथ युद्ध करने चली। भाई घोघा ने कहा, बहन तू स्त्री जाति, संसारी बन संतति की चाह रख सांसारिक जीवन का आनंद उठना तेरा धर्म है वापिस लौट जा। बहन रासल बोली भैया संतति तो असार है (नश्वर है) अर्थशून्य है। आज संकट की घडी में मुझे सांसारिक सुखों के भोग की कामना नहीं परंतु आज तो गाँव की रक्षार्थ तुझ अकेले की सहायता में मुझे रणसज्ञा ही शोभा देती है।

कचरो मेर

बिलेसर तारां बेसणां, कचरा, खंथाळे तारो वास,
दादले असराणे मारी रे नाख्यो, वांसे भी लूंट्यो माल
माणीगर मारवो नूतो, राजेसर राखवो हतो।
काँधो पोढाड्यो पारणे, कचरा, लूखा शरमणना लाड,
जेठी इडरणी ध्रुसके रुअे, मार्यो कोडीलो कंथ,

1-2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं झवेरचंद मेघाणी, पृ. 262

माणीगर............................... हूतो।
झांका कचराना डायरा, कचरा, झांकी कचरानी माय,
राणी बेनी बा ध्रुसके रुअे, मार्यो पसलियात वीर,
माणीगर............................... हूतो।
हाटे ने हाटे वाणिया रुअे, ने सीवतां रुअे सई,
वणतां वणतां वांझा रुअे, ने चोरे रुअे चारण भाट ।
माणीगर............................... हूतो।
पाणीशेरे पाणियारियुं रुअे, ने बेडलां लोड्युं खाय,
सारथिया, तारा सीमाडे रुअें, ने झंतरी झोका खाय,
माणीगर मारवो नूतो, राजेसर राखवो हतो।[1]

अर्थः बरड़ा प्रदेश में खांभोदर नामक गाँव है वहाँ का यह कचरा मेर (कचरा नाम, मेरजाति) गाँव की स्त्रियों संग बिलेश्वर के मेले में जा रहा था। रास्ते में लूँट क़े इरादे से आए मुसलमानो से वह अकेला ही लड़कर अपने प्राण गँवाता है। ऐसे ग्राम्य वीर के लिए पूरा लोक समुदाय शोक में निमग्न हो जाता है। पनिहारिनो के भड़े धडे डोलने लगते हैं, कुदरत प्रकृति भी आँसू बहाने लगती है उस समय ऐसी वीरपूजा प्रत्येक गाँव में सजीव थी विद्यमान थी। इनके रचयिता तूरी जाति के लोग होंगे।

(१६) कृषि संबंधी गीत

साव रे सोनानुं मारुं दातरडुं रे लोल
हीरनो बंधियो हाथ, मुंजा वालमजी लोल
हवे नै जाऊँ वीडी वाढवा रे लोल।
परण्ये वाढ्या रे पाँच पूळका लोल
मे रे वाढ्या छो दस वीस, मुंजा वालमजी लोल। हवे०
परण्यानो भारो में चडावियो रे लोल
हुं रे उभी वनवाट, मुंजा वालमजी लोल। हवे०
वाटे नीकळ्यो वाटमारगु रे लोल
भाई मुने भारडी चडाव, मुंजा वालमजी लोल। हवे०
परण्याने आवी पाली जारडी रे लोल
मारे आवेल माणुं घऊँ, मुंजा............। हवे०
परण्ये भर्यु छे अेनुं पटडुं रे लोल
में रे जमाड्यो मारो वीर, मुंजा वालमजी लोल
हवे नै जाऊं वीडी वाढवा रे लोल।[2]

---

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचद मेघाणी, पृ 263-264
2. सौरभ लोकगीत संचय - सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 49

अर्थः स्त्रियाँ खेत में कटाई करते वक्त गीत गाती है कि मेरी दतरी (फसल काटने का साधन) सोने की है। हीरे से जड़ित उसका हत्था है। मेरे बलमा। अब मैं फसल कटाई को न जाऊंगी। क्योंकि पाँच गट्टर काट है जबकि मैं दस बीस गट्टर काट चुकी हूँ। पतिदेव बालम का गट्टर तो मैंने उनके माथे पर चढवा दिया अब मेरा कौन चढवाएगा? मैं तो वन के रास्ते खड़ी रही तभी रास्ते में मुसाफिर निकला उससे मैंने कहा भाई मेरा गट्टर सर चढ़वा दो। मेरे चालाक पति के हिस्से पतली हल्की ज्वार का गट्टर आया और मेरे हिस्से भारी भरकम गेहूँ का गट्टर आया। मेरे पतिने तो स्वयं का पेट भर लिया है। परंतु मैंने तो आपने भाई को भोजन करवाया। अतः मैं कभी फसल कटाई को न जाऊंगी।

काळियां खेतर खेडियां जो

नदी रे किनारे में तो काळियां खेतर खेडियां जो,
काळियां खेतर खेडियां में तो रोकड फंड वेरियो जो।
सोनीवाडे गयेली में तो पायल घडावी जो,
चावी वियाज मां डोले रे कलंगी छेल
अेवडो रे जुलम में तो जमालपुरमां जोयो रे।[1]

अर्थः स्त्री गाती है नदी किनारे पर काली मिट्टी के जो खेत है उसे मैंने खेद, गोड कर, मेहनत की और सोने सी फसल उगाई उसे बेच मैंने रोकडा धन कमाया। उस धन को तो मैं सुनार के यहाँ जा पायल बनवाई जो नकल है और पायल की कील रुपी चाबी सूद के रुप में मिली। ऐसा जुल्म तो मैंने जमालपुरमां देखा।

वावणीनुं गीत

मेहुलिया रे जाजेडो वरछ भीने गोराडे नी कांचळी।
कांचळीअे रे नवलेरी भात, हां रेकांई नवलेरी भात,
    दीपा पडे सवा लाखना।
आगला हाळीने रे, गळियो कंसाळ, हां रे कांई गळियो कंसाळ,
    पाछला हालीने घी ने खीचडी।
तमारी माथे रे सोनाना सींग, हां रे कांई सोनाना सींग,
    हाळीना माथे मोळिया।
ओळी वावो रे तल, मग, जुवार, हां रे कांई तल मग जुवार,
    कोदळा नागली बावतो
मेहुलिया रे जाजेडो वरछ भीने गोराडेनी कांचळी।[2]

अर्थः बुआई (बीज बोने) का गीत है सुरत जिले में गाया जानेवाला लोकगीत है। गाती है – अरे ओ बदरा, बरखा जरा झूमकर ज्यादा बरसाना गोरी की कंचुकी भीग रही है। कंचुकी में नई महीन कढाई आईने जडे

---

1. गुजरातनां लोकगीतो : सं. खोड़ीदास भा. परमार, पृ. 163
2. लोकसाहित्य माळा, मणको 6 (सूरत जिल्लानां लोकगीतो) – सं. श्री चूनीलाल भट्ट, पृ. 252

जिससे चारों ओर सवा लाख का प्रकाश फैल रहा है। आगे वाले किसान के लिए मीठा कंसार (हलुआ) है जबकि दूजे के लिए घी व खिचडी है। आपके माथे पर तो सोने के सींग कलगी है जबकि किसान के माथे पर कपडे की पगडी बंधी है। चलो तिल, मूँग, ज्वार, कोदरा (चावल) नामली एक तरह का अनाज, बावटा आदि को पका लो। मेहुलिया, बदरा बरखा जरा झूम के ज्यादा बरस गोरी की चुनकी कंचुकी भीग रही है।

गामीत भाषा का लोकगीत (वावणी कापणी गीत) (बुआई–कटाई गीत)

दादरी खेते मोंठे नबा रे, फारम जुवाइ ओरुं हुं वामा जोडी।
दादरी खेते मोंठे नबा रे, पीळियो जुवाइ ओरुं हुं रामां जोडी।
खांडो ने मींडो अेलगा जुपी, जुवाइ ओरां जाहुं वामा जोडी।
बारा हाथ फाळिया, खोली करी लींडी रामां जोडा।
धनिया दादाल होंडो घरां, संगाते हाढी जाहुं वामा जोडी।
मोवली बाइअेल हेंडे करां, जोडे हादी जाहुं रामा जोडा।
अुवाई ओरी फाली फूलीने मोंठी, ओपी गुही वामां जोडी।
आमलिये ऊपे मालो करी जुवाई टोवां जाही रामां जोडा।
जुवाई पाकी फाटी लेतें, खाळामांय ढीगलो करहुं वामा जोडी।
खांडो मींडो अेलगा जूपी, पार फेरवी देजे रामां जोडा।
बेन घडा मोवें टांकी होरो करां काजे वामां जोडी।
गूंडी भरी होरो अेनो खळ पूंजी देजे रामां जोडा।
चेंगरिये कुकडिये काळन काढी खेतवाळ ल–चढावुं वामा जोडी।
धनिया दाढाल, मोवली बायेल, हीरो पियां हादु हु रामां जोडा।[1]

कापणी (फसल कटाई का गीत)

खरा मोरानुं दातेडुं ने, घास वारवा ज्यां तां
बार बीडां नो घास ज वाढीयो ने, बार बंधे बांधीयोजी रे।
ऊगळी वळीने भारो लीधो ने, नव गज धरती डोलीजी रे,
घेर आवीने भारो नाख्यो ने, नव गज धरती धमकीजी रे।
काछडो वाळीने कोठीमां ऊतरी ने, आरो चोखा काढ्या जी रे,
आरो चोखानो खीचडो रांधीयो ने, लई परसारे बेठीजी रे।
अेटलुं खरुने मेडीअे चढी, तोय भूखे भम्मरीयां आइवांजी रे,
कछडो वाळीने कोठी मां उतरीने, आरो जार काढीजी रे।
आरो रे जार नी धाणी फोडीने, लई रेंटियो कांतवा बेठीजी रे,
तरागडे तरागडे फाको माळ्यो ने, पूणीअे पाली खादीजी रे।
अेटलुं खइने मेडीअे चढी, तोय भूखे भम्मरीयां आइवाजी रे।[2]

---

1. लोकसाहित्य माळा, मणको 6 (सूरत जिल्लाना लोकगीतो) – सं. श्री चूनीलाल भट्ट, पृ. 256, 257
2 लोकसाहित्य माळा, मणको 4 (मेवास प्रदेशनां लोकगीतो) – सं. भगत कांताबेन और जयंतीभाई सरगी

अर्थः वर्षाऋतु बीत जाती है और दिवाली के उल्लासमय वातावरण में किसान बीडो (फसल का नाम) के घास की कटाई करवाते है। पिछडी जातियों के लोग हाथ में दँतरी ले घास काटने एकसाथ टोली बना खेत में जाते हैं।जहाँ गीत गाते है। स्त्रियाँ गाती है कि मेर दंतरी क़ा असली है जिसे ले हम घास काटने गए थे। बारह बीडे को घास काटी। गड्डर बाँधे। फिर नीचे झुककर जैसे ही गड्डर का भार उठाया नौ गज धरती हिल उठी। और घर आकर गड्डर को जैसे ही नीचे पटका तो नौ गज धरती काँप उठी धम्म की आवाज से ततपश्चात् मैं साडी को दो टाँगो बीच से पीछे कर पर कसकर बांधा फिर पीपे में अंदर उतरकर आठ मन जितने चावल निकाल उसकी खिचडी पकाई। उसे ले में आँगन में बैठी भरपेट खाकर मैं घर के ऊपरी कमरे में चढी तो भी भूख के मारे चक्कर आए। फिर साड़ी बाँध में पीपे में अंदर उतरी और आठ मनज्वार निकली जिसे फोड़ कर धानी निकाली। उसे ले मैं चरखा कॉतने बैठी। सूत का धागा काँतते हुए उसी खाती जाती मुँह में डालती रही। इतना खाकर कमरे में सोने गई फिर भी मारे भूख के चक्कर आए।

अनाज कूटते वक्त का गीत (खांडती)

हे.. हालो हालो ने हालो, हालो मारी बई
रातलडीनी नींदर्यु अधूरी रुई।
हे परोढियुं पांगळियुं मारी बई,
रातलडी...................... ।
है.....खांडो खांडणिये धान खम, खम, खम,
सूपडले झाटको छम छम छम।
हे.....झांझरियुं झमके, झम, झम, झम,
ओल्या थाकता जराये नई। परोढियुं।
हे......तारा डोलनमां डोलरियो डोले,
तने भाळीने मोरलियो बोले,
हे.....तारो साद शाकरियो हीरा धोळे
गीत गाजो गुलाबी थई। परोढियुं।
हे ताळीओनी रमझट बोली, धमकाळ ढोल ढोलोजी,
मीठा मीठा गामडियण बोली, है गामडानी गोरीजी,
हे गरबे घूमो घूमरडी लई। परोढियुं।[1]

अर्थः स्त्रियाँ गीत गाती हैं अरी चलो सखियों उठो उठो मेरी बहनों रातभर की निंदिया पूर्ण हुई। पौ फटने वाली है अनाज कूटे फिर उसे सूप ले झटक झटक साफ करें। कूटते हुए स्त्रियों के पैरों के झांझर झम झम की ध्वनि कर बजते हैं। स्त्रियाँ थकती नहीं है। खडे खड़े अनाज कूटते स्त्रियाँ डोलती है झूमती है संग संग पौधे मोगरे के फूल सब झूमते है उसे देख मोर बोलने लगता है। स्त्रियों की आवाज अतिमधुर है सभी

1. लोकसाहित्य माळा, मणको 6 (सूरत जिल्लानां लोकगीतो) – सं. श्री चूनीलाल भट्ट, पृ. 256

उत्साहित हो ताली बजा बजा गाती है, ढोल बजते है। गाँव की जँवारिन बोली और गांव की गोरी गरबे खेलो, गीत गाओ। पौ फटने वाली है।

(१७) बनजारों के गीत

वणजारो

माळवेथी पोठ्युं हलकी, साहेबजी
आवी छे आपणे देश रे, साहेबजी
        लोभी आव्यो वणजारो नायकजी।
काठियावाडनी कांबियुं लै आवो साहेबजी,
        कडलामां रतन जडावो, साहेबजी। लोभी०
नगरनी नथडी लै आवो, साहेबजी
        टीलडीमां रतन जडावो, साहेबजी। लोभी०
सुरतनी वेगडी लै आवो, साहेबजी,
        चूडलीमां रतन जडावो, साहेबजी। लोभी०[1]

वणजारी

हां रे में तो वाडा मां रींगणी वावी रे झूलण ले वणजारी रे।
हां रे अेना फूलडां राता ने फळ काळा रे झूलण ले वणजारी रे।
हां रे हुं तो सोनी नी शेरीअे गईती रे झूलण ले वणजारी रे।
हां रे अेना हाटडामां झूमणां जोया रे झूलण ले वणजारी रे।
हांरे मारां झूमलणे मन मोया रे झूलण ले वणजारी रे।
हां रे मन मोयां दल खोयां रे झूलण ले वणजारी रे।1
हां रे हुं तो मणियार नी शेरीअे गई ती रे झूलण ले वण़जारी रे।
हां रे अेना हाटां चूडलो दीठो रे, झूलण ले वणजारी रे।
हां रे मारां चूडले मन मोयां रे, झूलण ले वणजारी रे।
हां रे मारां मन मोयां दल खोया रे, झूलण ले वणजारी रे।[2]

मेवासी वणझारो

मारो वोंको मेवाही वनझारो
        झाझी खम्मा मेवाही वनझारो
        जीयो जीयो मेवाही वनझारो,
कलालु रे, मारा मारुडा ने फूल दारुडोपावो,
        होवे होवे, मारा मारुडा ने फूल दारुडो पावो,

1-2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ 172, 181

दारुडो दराखुं नो रे।

झाझी खम्मा मेवाही वनझारा,
जीयो जीयो मेवाही वनझारा,
मारो वोंको मेवाही वनझारा।
वनझारो रे, तारो भोवरियाळो भालो रे,
दारुडामां डूब्यो...रे।
वनझारा रे, तारी फोमताळी तरवारो रे,
दारुडामां डूबी रे।
वनझारा रे, ढळकती बलो तारी, लाखुणी पोठो,
वनझारा रे, पोड्यो ना मांदळिया।
दारुडामा डुब्यां रे।
वनझारा रे, केडुना कंदोरिया, तारा पगुना तोडा,
वनझारा रे, राठोडी मोजडियुं, तेजी पलाणी घोडो,
होवे होवे दारुडां मां डूब्या रे(2)
झाझी.........वणझारा,
जीयो..........वणझारा,
मारा वोंको मेवासी वनझारो।[1]

(१८) पशु पक्षी संबंधी गीत

सांढणी

सांढणी होकारे रे सायका,
सांढणीना सो सो रुपैया
सांढणीना पादर पथारा,
सांढणीना गढमां ऊतारा,
सांढणी किंया भाइनी साळी,
सांढणी किया वहुनी बेनी।[2]

अर्थः ऊँटनी हो हो ऊँटनी के सौ रुपये है। इसके व्यापार हेतु गाँव के बाहर सीमाओं पर हाट बिछाए बैठे है। ऊँटनी का महल में ठहराव होगा। ऊॅटनी कौन से भाईकी साली है, वह किस बहू की बहन है।

गाय

लोडण आवे लोडती, तेने कोण दोवा जाय जो
नवसे नोंझण वाळियां, श्रीकृष्ण दोवा जाय जो।

1-2. रासडानो रंग - सं. खोड़ीदास भा परमार, पृ. 94, 108

धमके शेड्युं फूटियुं, अेनां दूध दोणे नो माय जो,
पेलुं मंगळ गाइश, मारो दादो देशे दान जो,
दादे दीधां गाम, दादा! अटलां घणां होय जो।[1]

अर्थः गाय प्यार से चली आ रही है उसे दुहने कौन जाएगा। उसे श्रीकृष्ण जी दुहने जाएँगे। दुहते ही उसकी छाछ बनेगी, उसको मक्खन का तो पार नहीं। पहले फेर पर गीत गाते ही मेरे दादा दान देंगे। दादाजी ने गाँव दान में दिए।

बिच्छू

वींछी चडयो कमाड, वींछी वांभनो रे
वींछी चडयो कमाड, हेठे ऊतर्यो रे
वींछी चडयो वहुने चोटले रे
भोळा भाई ते खोळा पाथरे रे
भाळो भ्रामणो वींछीडो उतारजो रे
कोईने माणुं आपुं घऊं, मौरी रोती राखो वहु। वींछी वांभनो रे।
कोईने माणुं आपुं जार
मारी रोती राखो नार। वींछी०[2]

अर्थः बिच्छू विषयक गीत है। जैसे बिच्छू दरवाजे पर चढ़ा, बिच्छू तो वांभनो। बिच्छू तो दरवाजे पर चढ़ कर नीचे उतरा उतरकर वह बहू की चोटी पर चढ़ा। भाईतो अपनी पत्नी की खातिर झोली फैला बोला अरे पंडित जी बिच्छू उतारो। यदि चाहिए तो गेहूँ दूँ पर मेरी बहू को रोते हुए चुप करो। कोई यदि ज्वार मांग तो वह दे दूँ पर मेरी रोती बहू को चुप कराओ। बिच्छू उतारो।

अश्व (घोडा)

धरतीमां बळ सरज्यां बे जणां
अेक धरती ने बीजो आभ
        वधावो रे आवियो
आभे मेहुला वरसाविया,
धरतीअे झील्या छो भार
        वधावो.........।
धरतीमां बळ.........जणां
अेक घोडी ने बीजी गाय
        वधावो.........।
गायनो जायो रे हळे जूल्यो
घोडीनो जायो परदेश
        वधारो रे आवियो।[3]

1-2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 181, 55
3. लोकसाहित्य : तत्त्वदर्शन अने मूल्यांकन : सं. जयमल्ल परमार, पृ. 362

अर्थ: ईश्वर ने धरती पर दो बलवान सृजित किए एक धरती दूजा आसमान। अरे स्वागत करो। आसमानने वर्षा बरसाई धरतीने उस भार को झेल लिया। उसी तरह ईश्वर ने दो का सृजन किया एक घोडी और दूजी गाय। गाय का जना बैल हल में जोता गया और घोडी का बेटा परदेस गया।

तपसी (गीत साणोर)

लतालुंब गर्यवर्या, झाड पाड लीलुडां, आभने थोभ दइ पाड ऊभा।
तंबु जेम खेंचीया, अेम वेलडी तरु पर, चोमासे गर्यवर्या दीअे शोभा।(1)
रात दी सिंहना जियां रहोण छे, गडेडे मेघ जीं सिंह गाळे
वाण्य थी झोकमां माल गोळे वळे, फडक थी पशुडां थाय फाळे।(2)
गोळा सम माथाडां, तीन फूटां गजे, शोभती कान लग वाच चीरी।
लाल लाल जीभ जेम आगथी लहलहे, तमके आंख बे ज्योत तीरी।(3)
काळ कंटारजी डाढ विकराळ छो, ढालवा छाती ने गीवाधारी।
चार पग नोर ते जेम जमैया सज्या, भयानक रुप नरसिंह भारी (4)
जब्बर केशवाळी जाएये जटाळो जोगंधर, लटाऊं जटा छूट गयुं लपसी,
गर्यवर्या झाडने पहाडना गाळामां, तितिक्षा वेढतो सिंह तपसी(5)[1]

मोर

मोर तुं तो आवडां ते रुप क्यांथी लाव्यो रे,
मोरलो मरतलोक मां आव्यो,
लाल ने पीळो मोरलो अजब रंगीलो,
वर थकी आवे वेलो।
सती रे सोहामण सुंदरी रे
सूतो तारो शेर जगायो रे।
मोरलो................आव्यो।
ईगला ने पींगला मेरी आरजु करे छे रे
हजी मेरे नाथजी केम नाव्यो
कां तो शामळीअे तने छेतर्यो ने कां तो,
घर रे धंधा मां घेरायो रे
मोरलो मरतलोकमां आव्यो।[2]

अर्थ: अरे मोर तू इतना सौंदर्य कहाँ से लाया। मोर तो मृत्यु लोक (धरती) में आया। लाल व पीले रंगों वाला मोर अजीब रंगीला है। इसके आगमन से लगता है पति जल्दी आएँगे। सती सुहागिन सुंदर है इंगला और पींगला दोनों रानियाँ मोर से विनती करती हैं कि अभी तक मेरे स्वामी क्यों नहीं आए? या तो ईश्वर ने तुझे धोखा दिया या फिर मेरे पति व्यापार हेतु काम में फॅस गए है।

1-2. लोकसाहित्य : तत्त्वदर्शन अने मूल्यांकन : सं. जयमल्ल परमार, पृ. 383-384, 395

मारा हीरागळ मोरला

मारा हीरागळा मोरला ऊडी जाजे,
जे उडी जाजे ने सामे वडले जाजे। मारा०
मारा डोक केरो हारलो लेतो जाजे,
अे लेतो जाजे................ जाजे। मारा०
मारा नाक केरी नथडा लेतो जाजे,
अे, लेतो................ जाजे।
मारा हाथ केरो चूडलो लेतो जाजे,
अे, लेतो................ जाजे।
मारा पग केरां कडलां लेतो जाते,
अे, लेतो जाजे ने सामे वडले जाजे। मारा०[1]

अर्थ: अरे मेरे प्यारे हीरे से कींमती मोर तू उड़जा और उड़कर सामने वाले वटवृक्ष पर जा बैठना। चाहे तो तुझे मैं अपने गले का हार, नाक की नथनी, हाथों का चूड़ा व पाँव के कड़े, तोड़े, पायल लेते जाना पर उडकर जा वहीं बड के पेड़ पर बैठ व प्रियतम का संदेश दे।

पोपट (तोता)

तारा बापुनो पाळेल पोपटो
मारी मातानी नीरेल चण
मारो लाल पियारो पोपटो
मारो काकानो पाळेल पोपटो
मारी काकीनी नीरेल चण
मारो लाल पियारो पोपटो
मारा वीरानो पाळेल पोपटो
मारी भाभीनी नीरेल चण
मारो लाल पियारो पोपटो।[2]

अर्थ: तेरे पिता का पाला हुआ तोता व माता ने उसे चुगने का दाना दिया व तो मेरा लाल रंग का प्यारा तोता है। मेरे चाचा का पाला हुआ तोता व चाची ने दिया चुगने को दाना, वहतो मेरा प्यारा लाल तोता है। मेरा भाई का पाला हुआ तोता भाभी ने दिया चुगने को दाना। वह तो मेरा लाल रंग का प्यारा तोता है।

मारा पोपट

में रे पोपट, तने वारियो रे, पोपट।
रासडे रमवा आव्य, मारा पोपट

---
1. सौरभ रास-गरबा : सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ 62
2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 424

जाजे जीवाजीनी मेडीओ रे, पोपट
जीवाजीनी राणीयुं छेल, मारा पोपट।
तुजने घडावशे घूघरा रे, पोपट।
हरखे घडावशे हार, मारा पोपट।[1]

अर्थः रे तोते मैं ने तो तुझे टोका था रोका था। तू रास खेलने आ वहॉ से तू जीवाजी का महल की छत पर जाना जहाँ जीवाजी की रानियाँ होंगी। जो तेरे लिए पांव के घुँघरु व गले का हार बनवा देंगी।

कोयलडी रिसाणी

हां हां रे कोयलडी रिसाणी,
मारा वीरनी कोयलडी रिसाणी,
अेने कोण मनावा जाय। कोयलडी०
रथ जोडी नणदीबा नीसर्या,
वळो वळो भाभलडी घेर, कोयलडी, हां०
नणदीं, तमारी वाळई नै वळुं,
कोई आवे तमारो वीरो, कोयलडी रिसाणी।
मारी दोढ बदाम नी भाभलडी,
कांई लाखुंनो मारो वीरो। कोयलडी रिसाणी । हां[2]

अर्थः कोयल को प्रतीकात्मक रुप से लिया गया है। प्रत्यक्ष कें भाभी जो रुठी है उसका गीत है। देखो, देखो कोयल रुठ गई है। मेरे भाई की कोयल (भाभी) रुठ गई है उसे कौन मनाने जाए? अतः रथ तैयार कर ननदजी निकली।कहने लगीं भाभी वापस घर चलो। भाभी बोली तुम्हारे कहने पर नहीं लौटूँगी। यदि तुम्हारा भाई आएगा तो ही लौटूँगी। ननद बोली (मनहीमन) मेरी देढ़ बादाम की सी कीमत वाली भाभी और कहाँ लाखों में एक ऐसा मेरा भैया।

(१९) मदिरा संबंधी गीत

दारुडो

के दारुडो ने पीधा होय तो मानो माणाराज
काल्य अतारे उतारा ने करतां माणाराज
आज अतारे ओटा ओसरी सूनी, मारी राधानार,
ओहो गोरी! मरघानेणी।
दारुडो.............. माणाराज।
काल्य अतारे दातणियांने करतां माणराज

1-2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 168, 105

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

आज अतारे कणेरी कांब सूनी, मोरी राधानार
ओहो. .... । दारुडो
काल्य अतारे अंधोल्युं ने करता माणाराज
आज अतारे त्रांबाकूंडियुं सूनी मोरी राधानार,
ओहो गोरी ! मरघानेणी । दारुडो०[1]

मघरो दारु

अरधानो सीसो आण्यो छे
ने मधरो दारु मारो छे ।
इनेलाणे लाणे पायो छे
ने................... छे ।
मारा पग केरी कांबियुं छे - ने मधरो०
इ दारुडामां डूलियुं छे - ने मधरो०
मारी केडय केरो घाघरो छे - ने मधरो०
इ दारुडामां डूल्यो छे - ने मधरो०[2]

अर्थः दारु नशा संबंधी गीत है कि आधे पैसों को शराब की बोतल खरीदी गई है। पति कहता है उसमें रहित सारी दारु मेरी है। इसे पिलाया है। औरत कहती है इसी निक्कमी शराब में मेरे पाँव की पायल, कमर बंध, वस्त्र सभी डूब चुके हैं। सबकुछ इस मुई शराब की भेंट चढ चुका है।

दारुअे दव लाग्यो

छेतरीने दारु पाया वाघरीओ
छेतरीने दारु पायो रे लोल।
थोडो पीधोने घणो चड्यो
थोडो पीधो ने.........रे लोल।
दारुअे दव लाग्यो वाघरीओ,
दारुअे दव लाग्यो रे लोल।
घर दारुडामां डूब्यु वाघरीओ,
घर दारुडामां डूब्यु रे लोल।
खेतर दारुडामां डूब्यु वाघरीओ,
खेतर दारुडामां डूब्यु रे लोल।
वाडीमां चीभडा वाव्या वाघरीओ,
वाडीमां चीभडा वाव्या रे लोल।
माणेकचोक वेचवा चाल्या वाघरीओ,

1-2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 186

माणेकचोक वेचवा चाल्या रे लोल।
वेची हाटीने घेर आव्या रे लोल।
सांजना पीठामां पेठा वाघरीओ,
सांजना पीठामां पेठा रे लोल।[1]

अर्थः स्त्री गाती है कि बदमाशो ने नीच लोगोंने धोखे से मेरे प्रियतम को दारु पिला दी। पिलाई तो कम थी पर उसे चढ अधिक गई। इसी शराब ने घर में आग लगाई है जिसमें सारा घर डूब गया। खेत खालिहान सब डूबे। खेतों में उगाए, फिर माणेक चौक में बेचने गए। बेच बाच कर घर लौटे जो पैसे मिले उसे शाम का दारु के अड्डे पर मधुशाला में जा घुसे, वहीं सब कुछ होम दिया।

(२०) खेल परक गीत

सोळे सोगठां

साव रे सोनेरी सोळे सोगठां रे, कई रुपानी चोपाट जो ने
भेरु भडीने बेठा रमवा, रम्या रम्या बाजियुं बे चार जो ने।
देर हार्यो ने भोजाई जीतीयां, देर ने कांई चटके चडी रीस जो ने।
रीसभर्यो भोजाईने मारियां, मारी छे कांई अवळी बवळी ठांट जो ने।
मारी डाबा पगनी मोजडी, लडतां पंखी संदेशो लइ जाय जो ने।
जइने केजे दादाना देशमां, वीरो मारो सो छोडे छे स्वार जो ने।
अधर चाले रे घोडी रोझडी, सौनां घोडा सडके चाल्यां जाय जो ने।
भूखा चाले रे घोडी रोझडी, सौनां घोडा खाए खातां जाय जो ने।
कां तो, बेनी, पाडुं कांगरियो गढ जो ने, कांतो राठोडने मारी,
बाळनो रंडापो, वीरा दोयलो, रंडापामां आसुं वीरमगाम जो ने
सामु आपुं धंधुकुं धोळकुं, वीरमगाममां मेल लालबाई जो ने।[2]

अर्थः देवर भौजाई शतरंज खेलने बैठे है। सारे को सारी गोटियाँ सोने की है वह रुपा की (मँहगी धातु) शतरंज बिछी है। सभी मित्रगण भी उपस्थित थे। दो चार बाजियाँ खेली गईं। देवरजी हार गए भौजाई जीतगई। जिससे देवर को खीज उत्पन्न हुई वह रुठ गए। रुठकर लगा भौजाई को मारने उल्टे सुल्टे झापड़ लगा दिए। अपने बाँए पाँव की मोजड़ी (जूती) से भी मारा। भौजाई रोकर पक्षी से कहने लगी मेरा संदेशा लेकर जाओ। मायके में मेरे दादाजी के देश जा कहना। अरे मेरा भाई तो सौ घोडो पर सवार रहता है और उस की रोझडी घोड़ी तो सबसे तेज जमीन से ऊँची चलती है बाकी सभी के घोड़े सड़कों परही रेंगते है। भाई की घोड़ी भूखी रहकर भी ऐसी चाल चलती है जबकि अन्य के घोड़े खाण खाते है। बहन की व्यथा सुन भाई क्रोधित हो बहन से कहता है, यदि बहन तू कहे तो तेरे ससुर का महल जो उसे तोड दूँ या तेरे पति

1. रासडानो रग - खोडीदास भा. परमार, पृ. 108
2. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 431

राठोड को मौत के घाट उतार दूँ। बहन बोली तब दुःख और बढ़ जाएगा। क्योंकि छोटी उम्र में विधवा बनना बडा दुसह्य है। सारा वीरमगाम विधवापन में अश्रु सार रहा है। मैं तुझे सामने से धोळका, धंधुका देती हूँ (चढाई हेतु)। वीरमगाम (जगह का नाम) में लालबाई का महल जो है।

संताकूकडी (लुकाछिपी खेल)

लविंग केरी लाकडीअे रामे सीताने मार्य जो।
फूल केरे दडूलिये सीताअे वेर वाळ्यां जो।
राम तमारे बोलडीअे हुं नदीअे नाळुं थइश जो।
तमे थशो जो नदीअे नाळुं हुं धोबीडो थइश जो।
राम तमारे बोलडीअे हुं परघेर दळवा जइश जो।
तमे जशो जो परघेर दळवा, हुं घंटूलो थइश जो।
राम तमारे बोलडीअे हुं जळ माछलडी थइश जो।
तमे थाशो जो जळ माछलडी, हुं माछीडो थइश जो।
राम तमारे बोलडीअे, हुं आकाश वीजळी थइश जो।
तमे थशो जो आकाश वीजळी, हुं मेहुलियो थइश जो।
राम तमारे बोलडीअे हुं बळीने ढगलो थइश जो।
तमे थशो जो बळीने ढगलो, हुं भभूतियो थइश जो।[1]

अर्थः श्री रामजी और माता सीता दोनो पति पत्नी आपस में आनंद प्रमोद करते हुए कल्पना में लुकाछिपी का खेल खेलते है। स्वामी अपनी प्रियतमा को हर किसी स्थल पर, जो चाहे वेश में भी पकड पकड मीठी तरीके से खीजा रहा है। लौंग रुपी लकडी से रामने सीताजी को मारा और सीता माता ने फूल रुपी गेंद से भार बैर निकाल लिया। सीताजी बोली आपके बोल पर मैं नदी नाला बनूँगी,रामजी बोले यदि तुम नदीनाला बनोगी तो मैं धोबी बन जाऊँगा। सीताजी बोली मैं दूसरों के घर पीसने जाऊँगी रामजी बोले तो मैं अनाज पीसने वाली चक्की बन जाऊँगा। सीताजी बोले राम आपके बोल पर मैं जल की मछली बन जाऊँगी, राम बोले तो फिर मैं जल मछली पकडने वाला मछुआरा बन जाऊंगा। तुम्हें ढूँढ पकड़ लूँगा। सीताजी बोली मैं आकाश की बिजली बन जाऊंगी तो रामजी बोले मैं बादल वर्षा बन तुम्हें पकड लूंगा। अंत में सीताजी गुस्से से बोलीं रामजी आपके बोल पर मैं जलकर ढेर हो जाऊंगी, रामजी बोले तो मैं भभूत राख बन जाऊँगा और तुम्हें ढूँढ ही लूँगा।

(२१) मृत्युगीत (छाजियां – राजिया – मरसियां)

हर हरि करतां आणां रे आइवां
    तेडां आइवां श्रीरामनां रे, हवे आ शेनो वार?
संम्या ते मांची हीरे भरी,

1. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति) – सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 107

बेसण करतेला जाव रे ! हवे आ शेनो वार?
बेसण करशुं रे वावडी,
वासो हरिने दरबार रे ! हवे आ शेनो वार?
सरग नी शेरीअे नदी घणेरी,
नदीअे केम उतरशे रे? हवे आ शेनो वार?
करनो छोकरो ब्राह्मण गाय आपे,
पूछडे वळगेला जाशुं रे ! हवे आ शेनो वार?
सरग शेरीअे कांटा घणेरा,
कांटामां केम चलाशे रे, ! हवे आ शेनो वार?
करनी छोकरी होय तो शेरी रे वाळे,
ते पुन्ये चाल्यां जाशुं रे, हवे आ शेनो वार?[1]

अर्थः स्त्रियां मृत्यु के बाद छाती कूटते हुए रोते हुए गाती हैं अरे हरि हरि का स्मरण करो अब तो अंतिम घडी आ गई, श्रीराम का बुलावा आगया। अब काहेकी देर। मृत्यु शैय्या हीरे से जड़ित है उस पर अब बैठना है काहेकी देर। उस पर तो शय्या करेंगे ही क्योंकि अब प्रभु के दरबार में ही निवास करना है। स्वर्ग की गली में (रास्ते) में काफी सारी नदियाँ है कैसे पार उतरेंगे? स्वयं का बेटा ब्राह्मण को गौदान करेगा? उसी की पूँछ पकड़ वैतरणी नदी पार कर स्वर्ग पहुँचेंगे। स्वर्ग के रास्ते में काँटे भी ज्यादा है उस पर कैसे चला जाएगा? स्वयं की बेटी जो होगी वह झाड़ू से गली साफ करेगी उसी के पुण्य के सहारे स्वर्ग चले चलेंगे। अब काहे की देर।

अभेवान नो राजियो

अभिमन चड्यो रे रणवाट, उत्तरा राणीने आणां मोकल्यां,
अभिमन गयो दोशीडाने हाट, सिरबंध वसावे मोंघा मूलनां।
अे तो वसाव्या वार–कवार, जेवां पहेर्यां तेवा ऊतर्या?
राणी रुवे रे रंग मोहेलमां, दासी रुवे रे दरबार,
घरमां रुवे रे घर बंधवा, पोपट रुवे रे पांजरे,
घोड़ा रुवे रे घोडारमां, हाथी रुवे रे हलकार,
वनमां रुवे लीलां झाडवां, छोरु रुवे रे घर आंगणे,
चोरे रुवे चारणभाट, हाटे रुवे रे हाटवाणिया।[2]

सं.श्री कनैयालाल जोशी (गु.लो.सी.मा.म. 8 से)

लीली लींबुडीनी छाय

लीली लींबुडीनी छाय, मरघलो बोल्यो रे क्रोध मां
ओय बापजी, हाय हाय रे।

---

1. गुजरातनां लोकगीतो : ले. मधुभाई पटेल, पृ. 244-245
2. गुजरातनां लोकगीतो : खोडीदास भा. परमार, पृ. 169

मरघले अेमना दीकराने जगाड्या, ओय बापजी हाय हाय रे
दीकरानां रामबाण छूटशे रे, उडतां मरघलां तने मारशे रे
ओय............... रे।
लीली लींबुडीनी छाय, मरघलो बोल्यो रे क्रोधमां।
ओय..............रे।
मरघले अेमनी वहुवारुं ने जगाडी रे, ओय बापजी हाय हाय रे।
वहुवारुं नां रामबाण छूटशे रे, उडता मरघलां तने मारशे रे।
ओय बापजी हाय हाय रे।[1]
संपादक - कनैयालाल जोशी (लो. सा.मा.मणको - 4 में से)

हरियो

दन उग्यो अेम रयो घेरे आव रुडा राजवि, हरियो राजवि हाय हाय हाय।
तांबा कोंडि जळ भरि घेरे आवो रुडा राजवि, हरियो राजवि हाय हाय हाय।
नावण बेळा वै गई घेरे आवो, रुडा राजवि, हरियो राजवि हाय हाय हाय।
सोना झारी जळ भरी घेरे आवो, रुडा राजवि, हरियो राजवि हाय हाय हाय।
दातोंण वेळा वै गई घेरे आवो, रुडा राजवि, हरियो राजवि हाय हाय हाय।
जम्या वेळा वै गई घेरे आवो, रुडा राजवि, हरियो राजवि हाय हाय हाय।
ढळ्या ढोलिडा अेय रया घेरे आवो, रुडा राजवि, हरियो राजवि हाय हाय हाय।
पोढण वेळा वै गै घेरे आवो, रुडा राजवि, हरियो राजवि हाय हाय हाय।[2]
संपादक - डॉ. एल.डी. जोशी (वागडलो लोकगीतो)

अर्थ: मृत्यु के पश्चात् स्त्रियाँ गाती है अरे रे दिन जैसे उदित होता है वैसे ही प्रकाशित हो घर आओ प्यारे राजाजी हाय हाय। तांबे की गागर भरी पडी है नहाने के बेला बीत गई हाय राजाजी। सोने का कलश पानी से भरा पड़ा है दातुन करने की बेला बीत चुकी हाय राजाजी। भोजन भी परोसकर रखा है घर आ जाओ राजाजी खाने का समय बीत गया घर आ जाओ हाय। आपके विश्राम हेतु चारपाई पलंग बिछा दिए है ऐसे ही पडे है सोने की बेला व्यतीत हो चुकी राजाजी घर आ जाओ। हाय हाय।

परोळियां (वृद्ध नरनारी के मृत्यु पश्चात् – बारहवें दिन तक प्रातः काल घर के आंगन में खडी हो स्त्रियां परोळियां गाती है)

मां बाइ राम राम रे

पाछली ते रातना परोळिया रे राम.......राम।
सूरज उग्यो ने रथ जोडियां रे, मां बाई राम राम रे।
मोत नी मोबत्युं वाग्युं रे, मां बाई राम राम रे।

1-2. गुजरातनां लोकगीतो : खोडीदास भा. परमार, पृ. 170, 173

सरघा पर शरणायुं वाग्युं रे, मां बाई राम राम रे।
दीकरा आवीने रथ रोकियां रे, मां बाई राम राम रे।
मझियारा वेंची हवे शुं करुं रे, मां बाई राम राम रे।
आ त्रिकमराय ना तेडां पाछा नै फरै रे, मां बाई राम राम रे।[1]
कंठस्थ : झवझीबाई चौहाण (गाम - लाखावाड)

अर्थः पिछली रात का । राम बाई राम। सूरज ने उग कर रथ तैयार कर लिया। इधर मौत का न्यौता बिगुल बज गया। स्वर्गपुरी में शहनाइयाँ गूँज रही है। तभी बेटे ने आ रथ को रोका। बँटवारा किया, बेचा बाचा अब या क्या करुँ हाय राम ये प्रभु का बुलावा जो आया है वापस पीछे ठेला नहीं जाएगा।

(२२) भजन (हरि कीर्तन)

कोई रामने संभारो तारुं मटी जायघोर अंधारु
घणा रे जुगथी फेरा फरतो आव्यो जीव दुखियारो रे। तारु०
भूलवणीमां तमे शीद भमो छो? माथे सदगुरु तारो रे। तारु०
भूंडा माणसनी भलाइ करतो, चरतो ओखद चारो रे। तारु०
भीड पडे त्यारे हरिने संभारे, हवे मने पार उतारो रे। तारु०
गुरु गोविंद मारा दोनो रिसाणा, नहि रे ऊगरवानो आरो रे। तारु०[2]

अर्थः स्त्रियाँ ईश्वर भजन करते गाती है कि राम को याद करो, स्मरण करो तो तुम्हारा जीवन का अँधेरा मिट जाएगा। कई जन्मों से दुखियारा जीव अनेक फेरे फिरता रहा है। तुम भूलभूलैया में काहे भटक रहे है तेरे माथे पर सतगुरु का आशीर्वाद है। बुरे आदमी की भी भलाई की, सभी को झूठन साफ की। जब कष्ट पड़ता है तब प्रभु का स्मरण कर कहते है अब मुझे पार उतारो। मेरे तो गुरु और गोविंद दोनो ही रुठ गए है। इसमें से उबरने का कोई रास्ता नजर नहीं आता।

राम भजन

तमे रामैयानुं भजन भूलसो ना भई
वारे वारे मनखो आवे नहि,
आ तो काया हवे हालवानी थई
काची माटीनो कोट बंधाणो
कांगरे कांगरे उडी गया कई। आतो०
पांचाळीनां वहाले चीर ज पूर्या
चीर खेंचवाथी तेनी गादी तो गई। आतो०
दुष्ट अधर्मी रावण कहाव्या,
सीता हरवाथी अेनी लंका तो गई। आ तो०[3]

---

1. गुजरातनां लोकगीतो : खोडीदास भा परमार, पृ 174
2-3. गुजरातनां लोकगीतो : ले. मधुभाई पटेल, पृ 237-238

अर्थः भजन का अर्थ इस प्रकार है कि आप श्रीराम का स्मरण करना, भजना भूलना मत क्योंकि बार बार यह मनुष्य देह नहीं मिलेगा। अब यह काया भी समाप्त होने को आई। कची मिट्टी का यह घडा (मानवदेह) न जाने कब फूटेगा किसी को ज्ञात नहीं। द्रौपदी के वस्त्र भगवानने ही बढ़ाकर लाज रखी परंतु चीरहरण करने वालो की गद्दी तो छिन गई। दुष्ट अधर्मी रावण कहलाया और सीता का हरण करने से उसकी लंका तो हाथों से चली गई अर्थात् सब कुछ नाशवान है प्रभु को भज लों।

भजन

नारायणनुं नामज लेतां, वारे तेने तजियो रे (टेक)
मनसा वाचा कर्मणा करीने, लक्ष्मीवर ने भजिये रे। नारा०
कुळने तजिये कुटुंब ने तजिये, तजिये मा ने बाप रे,
भगिनी सुत दारा ने तजिये, जेम तजे कंचुकी साप रे। नारा०
प्रथम पिता प्रहलादे तजियो, नव तजियुं हरिनुं नाम रे,
भरत शत्रुघ्ने तजी जनेता, नव तजिया श्री राम रे। नारा०
ऋषि पत्नी श्री हरिने काजे, तजिया निज भरथार रे,
तेमां तेनुं कांइये न गयुं, पामी पामी पदारथ चार रे। नारा०
व्रजवनिता विठ्ठल ने काजे, सर्व तजी वन चाली रे,
भाणे नरसैंयो वृंदावन मां, मोहनवरशुं माली रे। नारा०[1]

अर्थः नारायण भगवान का नाम लेने से जो रोकता है उसका त्याग करना चाहिए। मन वचन और कर्म से लक्ष्मपति विष्णुजी को भजना चाहिए। जिस प्रकार सर्प अपनी केंचुली का त्याग करता है उसी प्रकार हमें भी कुल, कुटुंब, मां बाप, भाई, बहन, पुत्र सभी का त्याग कर प्रभु भजन करना चाहिए। सर्वप्रथम प्रहलाद ने पिता तो त्याग किया परंतु हरि का नाम स्मरण न छोडा। भरत शत्रुघ्न ने मॉ कैकेयी को त्याग दिया पर श्रीराम को न छोडा। ऋषि पत्नी ने प्रभु के कारण स्वयं के पति जीवन साथी का त्याग किया उसमें उसका कुछ भी नहीं गया परंतु अनमोल पदार्थ श्रीप्रभु प्राप्त किए। व्रज की स्त्री प्रभु के कारण सबकुछ त्याग कर वन में चली। वृंदावन जा कर भगवान श्रीकृष्ण में मन लागा उन्हें ही अपना लिया।

वैष्णवजन तो तेने कहीये, जे पीड पराई जाणे रे,
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे। वैष्णव०
सकळ लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे,
वाच काछ मन निश्चळ राखे, धन धन जननी तेनी रे। वैष्णव०
समद्रष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे,
जिह्य थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे । वैष्णव०
राम नाम शुं ताळी रे लागी, सकळ तीरथ तेना तनमांरे। वैष्णव०
वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवार्या रे,
भणे नरसैंयो तेनुं दरशन करतां, कुळ इकोतेर तार्यां रे। वैष्णव०[2]

1-2 गुर्जर साहित्य सरिता, नरसिंह महेता - अमृतलाल भ. याज्ञिक - पृ. 26-27

* जूनुं तो थयुं रे, देवळ जूनुं तो थयुं,
मारो हंसलो नानो ने, देवळ जूनुं तो थयुं। मारो०
आ रे काया रे हंसा डोलवारे लागी रे,
पडी गया दांत, मांयली रेखुं तो रह्युं। मारो०
तारे ने मारे हंसा, प्रत्युं बंधाणी रे,
उडी गयो हंस पांजर पडी रे रह्यु। मारो०
बाई मीरां कहे प्रभु गिरिधर ना गुण,
प्रेमनो प्यालो तमने पाऊं ने पीऊं। मारो०[1]

अर्थ: मींराबाई का प्रसिद्ध भजन है कहा गया है कि यह देह रुपी मंदिर तो अब पुराना हो गया। आत्मा रुपी हंस छोटा है और देह रुपी मंदिर पुराना हो गया। अब यह काया भी हिलने लगी है, मुख से दॉत निकल गए बस सिर्फ सुखरेखा ही रह गई। अरे हंस (पक्षी) व आत्मा तेरी मेरी देह आत्मा की प्रीत तो अत्यंत पुरानी है। अरे देह रुपी पिंजरे को छोड़कर हंस रुपी आत्मा उड़गई खाली पिंजरा (देह) पड़ा रहा। मींराबाई गिरधर के गुण गाती है कि श्रीकृष्ण के प्रेम का प्याला मैं स्वयं पीऊं व तुम्हें भी पिलाऊँ।

मन नो डगे

मेरु रे डगे ने जेनां मन न डगे
मर ने भांगी रे पडे भरमांड रे,
विपद पडे पण वणसे नहि,
इ तो हरिजनमां परमाण रे। मेरु रे०
भाइ रे। नित्य रेवु सतसंग मां ने
जेने आठे पोर आनंद रे
संकलप विकलप अेके नहि उरमां,
जेणे तोडी नाख्यो माया केरो कंद रे। मेरु रे०
भाई रे। भगति करो तो अेवी रीते करजो पानबाई।
राखजो वचनुंमां वीश्वास रे,
गंगासती अेम बोलियां
तमे थाजो सतगुरुजीनां दास रे। मेरु रे०[2]

देखाडुं अे देश

वीजळीने चमकारे मोती परोवुं, पानबाई।
नहितर अचानक अंधार थाशे,
जोतजोतामां दिवस वया गया, पानबाई।
अेकवीश हजार छसोने काळ खाशे

1 गुर्जर साहित्य सरिता, मीरांबाई- सं. सुरेश दलाल, पृ. 45
2. सोरठी संतवाणी - सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 37

भाई रे । जाण्या जेवी आ तो अजाण छे पानबाई ।
आ तो अधूरियां नो केवाय,
आ गुपत रसनो खेल छे अटपटो,
आंटी मेलो तो पूरण समजाय । वीजळीने०
भाई रे । निरमळ थैने आवो मेदानमां, पानबाई ।
जाणी लियो जीवनो जात,
सजाति विजातिनी जुगति बतावुं ने
बीबे पाडी दऊं बीजी भात । वीजळीने०
भाई रे । पिंड ब्रह्मांड थी पर छो गुरु, पानबाई ।
तेनो देखाडुं हुं तमने देश,
गंगा सती अेम बोलियां रे,
त्यां नहि मायानो जरीअे लेश. वीजळीने०[1]

*****

1 सोरठी सतवाणी - सं. झवेरचद मेघाणी, पृ. 47-48

उपसंहार

राजस्थानी एवं गुजराती लोकगीतों में साम्यः

	गुजराती		राजस्थानी
1.	कान कुँवर नी झूलड़ी - गीत नं. 24, रढियाळी रात, भाग-2, पृ. 35 जिसकी टेक इस प्रकार है - कोई ने जड़ी होय तो देजो मारा कान कुंवरनी झूलडी।	1.	इस का राजस्थानी प्रतिरुप प्रचलित है। कोई ने लाधी होय तो दीजो रे म्हारा कान्हकँवर री झूमरी।
2.	तने वालुँ कोण? गीत नं.50 र. रात भाग-2, पृ. 67। इस गीत की टेक है - राती रे रंग चूड़ी ल्यो ।	2.	टेक में नहीं परंतु भावों में ठीक मिलता जुलता हुआ गीत है - ढोला मारुणी विसकी टेक है - आमू जी पाक्या नींबू पाकण लाग्या।
3.	कुंजलडी रे गीत नं. 53, र. रात भाग-2, पृ. 74। इस गीत की पहली चार पंक्तियाँ राजस्थानी गीत में थोडी भिन्नता के साथ मिलती है। गीत क कुंजलडी रे संदेशो अमारो, जाइ वालम ने के जो जी रे। माणस होय तो मुखोमुख बोले, लखो अमारी पांखलडी ।।	3.	इसी भाव का गीत राजस्थानी के संदेसा के गीतों में है। पहली दो पंक्तियाँ कुरझाँ गीत में - उडती कुँझडियाँ संदेसो म्हारो पिव ने देजो रे। अंतिम दो पंक्तियाँ माणस हवाँ तो मुप कैवाँ, म्हाँ सूँ कह्यो प न जाय। लिख म्हारी सोवन चाँचली ए गोरी अरे रुनाळी पाँख।
4.	रंग भीलड़ी गीत नं. 92 र.रात भाग-2 यह जसमा ओडणी के सतीत्व का गीत है।	4.	राजस्थानी में भी जसमा ओडणी और सुरता भीलणी नाम के प्रसिद्ध नारी सतीत्व के गीत है।
5.	काचबो वर गीत सं. 99 र.रात भाग.2।	5.	थोडे शाब्दिक हेरफेर के साथ इसी भाव का और इसी नाम का गीत राणो काछबो राजस्थानी ये बहुप्रचलित व लोकप्रिय है।
6.	नो दीठी गीत नं. 15, र. रात भाग 1, पृ. 27 टेक नो दीठी परमार रे। इस प्रकार की एक सी कथा वाले गुजराती गीत के अंत में रहस्य का पता चल वैषम्य जाता है। कोठे पर ताजे खून से लथपथ चूनरी और बक्से में रखी कोरी ओढ़नी और बिंदिया ने प्यारी क ापता बता दिया।	6.	पपइयो गीत ठीक इसी भाव का है। नवबधू को घर छोड पति कमाने के लिए विदश गया। सास बहू का निर्वाद एक घर में न ही सका। अंतः में सास बहू के प्राण ले कर रही। बारह वर्ष के बाद प्रवासी पुत्र घर लौटकर माँ से अपनी प्राण प्रिय पत्नी के बारे में पूछता है। वह कहाँ है? माता टालमटोल कर जाती है। कहीं हो तो बताए? अंत में रहस्य ही रहता है।

गुजराती		राजस्थानी	
7	तेजमल - गीत र. रात भाग-3 पृ. 24	7.	यही गीत थोडे से हेर फेर के साथ राजस्थान में सजना के नाम से प्रसिद्ध है।
8.	रढियाळां रे मोती गीत जिस में कन्या आदर्श वर के लिए दादाजी से विनती करती है। दीकरी दादाजी ने विनवे ऊँचो ते वर ना खोळशो आदि।	8.	इसी से मिलता जुलता राजस्थानी गीतों ने बनडी का गीत है - काची दाख हेठे बनडी पान चावै फूल सूँघै। करै ए बाबाजी सूँ बीनती। बाबाजी देस देता परदेस दीजो, म्हारी जोड़ी से वर हेर ज्यो।

इस प्रकार ऐसे अनेको गीत है जहाँ दोनों प्रदेशों को साम्यता नजर आती है। गीतों की दुनिया ही निराली है। कुछ अन्य साधारण भावनाएँ देखें-

1. राजस्थानी व गुजराती दोनों में आम, पीपल, बड़, आदि वृक्षों को पारिवारिक व कौटुंबिक जीवन का प्रतीक मान कर उनकी समृद्धि द्वारा जीवन की समृद्धी लक्षित की गई है।
2. राजस्थानी में जैसे कुरझ और कौए को संदेश वाहवु बनाया गया वही गुजराती में कोयल, मोर को माना गया है।
3. बहू का ससुराल में अस्वतंत्र और संतापयुक्त जीवन, सास, जेठ, जेठानी, ननद आदि द्वारा व्यंग्य बाणों से बिद्ध होना दोनो स्थानों पर बराबर रुप से दिख पडता है।
4. इसी के विपरीत दोनो जगह पर बहू के सुख स्वप्नों का केन्द्र पीहर ही है और व टकटकी लगाए भाई और पिता के लिवा ले जाने की आशा करती रहती है।
5. चरखा, चक्की, सरोवर, कुँआ, खेत आदि संस्थाएँ वह स्तंभ है जिनके ईर्द गिर्द लोक काव्य की सुंदर कल्पनाएँ केंद्रित है। ऋतु, पर्व, मेले, त्यौहार ने हजारो गीतों को जन्म दिया।
6. सम्मिलित कुटुंब प्रथा दोनो जगह दिखाई पडती है तथापि बहू की अवस्था एक सी है।

अंत में इन सभी पर गौर करने के पश्चात् कहना चाहूँगी कि व्यावहारिक द्रष्टि से देखें तो उचित यहाँ जान पडता है कि लोकसाहित्य के आदर्शो और संस्कृति को छोड नहीं सकते। भूतकाल से ही भारतवर्ष का इतिहास हमें बताता है कि यह देश धर्मप्राण, अध्यात्मप्रिय और आदर्शवादी रहता आया है। हम अपने राम, कृष्ण, रामायण, भागवत गीता को विस्मृत नहीं कर सकते। इस भारत की अमर संस्कृति का इतिहास मनोहर रुप में इन लोकगीतों में सुरक्षित मिलता है। भला, इन्हें कैसे भूला सकते हैं। आज भी हमारे गाँवों में जाकर देखें तो इसी संस्कृति की बहुलता मिलेगी। संतान के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक के समय का मानव जीवन गीतों में अंकित है। जिनमें सच्ची भारतीय संस्कृति का दर्शन मिलता है।